सामाजिक अध्ययन कक्षा VI

Government of Telangana

Department of Women Development & Child Welfare - Childline Foundation

When abused in or out of school.

To save the children from dangers and problems.

CHILD LINE 1098 NIGHT & DAY

24 HOUR NATIONAL HELPLINE

When the children are denied school and compelled to work.

When the family members or relatives misbehave.

1098 (Ten...Nine...Eight) dial to free service facility.

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरित

सामाजिक अध्ययन कक्षा VI

सामाजिक अध्ययन

कक्षा VI

Free

SOCIAL STUDIES (Hindi Medium)

CLASS VI

तेलंगाणा सरकार द्वारा प्रकाशित हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरित

SCERT TELANGANA

मौलिक कर्तव्य

मौलिक कर्तव्य........... ये भारत के हर नागरिक के कर्तव्य होंगे–

(अ) संविधान के प्रति दृढ़ होंगे तथा इसके आदर्शों और संगठनों का आदर करेंगे, जैसे राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गीन।

(आ) उन पवित्र आदर्शों का पोषण और अनुकरण करेंगे, जिन्होंने हमारे राष्ट्रीय संघर्ष को प्रेरणा प्रदान की।

(इ) भारत की संप्रभुता, एकता और पवित्रता का समर्थन करेंगे और रक्षा करेंगे।

(ई) देश की रक्षा करेंगे और आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय सेवा प्रदान करेंगे।

(उ) धार्मिक, भाषायी और क्षेत्रीय आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय सेवा प्रदान करेंगे। भारत के लोगों में एकता, शांति तथा बंधुत्व की भावना का विकास करेंगे, नारी के प्रतिष्ठा में बाधक प्रथाओं का त्याग करेंगे।

(ऊ) हमारी मिलीजुली संस्कृति की बहुमूल्य विरासत का आदर करेंगे और संरक्षण करेंगे।

(ए) प्राकृतिक पर्यावरण के साथ वनों, झीलों, नदियों और जंगली जीवों की रक्षा करेंगे और सुधार करेंगे और सजीव जीवों के लिए करूणा रखेंगे।

(ऐ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवता और अन्वेषण की भावना का विकास करेंगे।

(ओ) सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करेंगे और हिंसा का परित्याग करने की शपथ लेंगे।

(औ) व्यक्तिगत और सामुदायिक क्रियाकलापों के हर क्षेत्र में श्रेष्ठता के लिए प्रयत्न करेंगे, जिससे कि राष्ट्र प्रयास और उपलब्धि के उच्चतर स्तरों तक निरंतर बढ़ सकें।

(अं) जो माता-पिता या अभिभावक है, वे अपने बच्चों की शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करेंगे, उस स्थिति में जब रक्षित व्यक्ति छः और चौदह वर्ष की आयु के बीच हो।

- भारत का संविधान

भाग IV अ (धारा 51 अ)

Right of Children to Free and Compulsory Education (RTE) Act, 2009

The RTE Act is meant for providing free and Compulsory Education to all Children in the age group of 6 – 14 years and came into force from 1st April 2010.

Important provisions of RTE Act

- Ensure availability of schools within the reach of the children.
- Improve School infrastructure facilities.
- Enroll children in the class appropriate to his / her age.
- Children have a right to receive special training in order to be at par with other children.
- Providing appropriate facilities for the education of children with special needs on par with other children.
- No child shall be liable to pay any kind of fee or charges or expenses which may prevent him or her from pursuing and completing the elementary education. No test for admitting the children in schools.
- No removal of name and repetition of the child in the same class.
- No child admitted in a school shall be held back in any class or expel from school till the completion of elementary education.
- No child shall be subjected to physical punishment or mental harassment.
- Admission shall not be denied or delayed on the ground that the transfer and other certificates have not been provided on time.
- Eligible candidates alone shall be appointed as teachers.
- The teaching learning process and evaluation procedures shall promote achievement of appropriate competencies.
- No board examinations shall be conducted to the children till the completion of elementary education.
- Children can continue in the schools even after 14 years for the completion of elementary education.
- No discrimination and related practices towards children belonging to backward and marginalized communities.
- The curriculum and evaluation procedures must be in conformity with the values enshrined in the constitution and make the child free of fear and anxiety and help the child to express views freely.

SCERT TELANGANA

सामाजिक अध्ययन
कक्षा VI

संपादक

श्री सी.एन. सुब्रहमण्यम, एकलव्य, एम.पी.

प्रो. आई. लक्ष्मी, इतिहास विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. एम कोदंडराम, राजनीतिशास्त्र विभाग, पी.जी. कालेज, (उ.वि.वि.) सिकिंद्राबाद

प्रो. के. विजयबाबू, इतिहास विभाग, काकतीय विश्वविद्यालय, वंरगल

डॉ. एम.वी श्रीनिवासन, सहायक प्रो.
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. एम.वी.एस.वी. प्रसाद, सहायक प्रो.
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

डॉ. सी. दयाकर रेड्डी, सहायक प्रो.
उस्मानिया कॉलेज फॉर वुमेन, कोठी, हैदराबाद

श्री के. सुरेश मंची पुस्तकम्, हैदराबाद

प्रो. जी. ओंकारनाथ, अर्थशास्त्र विभाग
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. एस. पद्मजा, भूगोल विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो.ए.सत्यनारायण (सेवानिवृत्त), इतिहास विभाग,
उस्मानिया विश्व विद्यालय, हैदराबाद

प्रो.के.कैलाश, राजनीतिशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्व विद्यालय, हैदराबाद

डॉ. के. नारायण रेड्डी सहायक प्रो. भूगोल विभाग
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

श्री अरविंद सरदाना, निदेशक, एकलव्य, भोपाल, म.प्र.

श्री राममूर्ति शर्मा
शिक्षा विभाग, पंजाब सरकार

श्री एलेक्स. एम् जार्ज
एकलव्य, एम.पी.

सलाहकार लिंग संवेदनशीलता
श्रीमती चारु सिन्हा, IPS
निदेशक, A.C.B तेलंगाणा, हैदराबाद

पाठ्य पुस्तक विकास समिति

श्रीमति बी.शेषुकुमारी निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा
हैदराबाद

श्री बी. सुधाकर, निदेशक
सरकारी पाठ्य पुस्तक प्रिंटिंग प्रेस
तेलंगाणा, हैदराबाद

डॉ. एन. उपेन्दर रेड्डी
प्रोफेसर और अध्यक्ष पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तक विभाग
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा., हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

कानून का आदर करें — शिक्षा से बढ़ें

अधिकार प्राप्त करें — विनम्रता का व्यवहार करें

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरण 2018-19

© Government of Telangana, Hyderabad.

First Published 2012

New Impressions 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana.

We have used some photographs which are under creative common licence. They are acknowledge at the end of the book.

This Book has been printed on 80 G.S.M. S.S. Maplitho Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by Government of Telangana 2018-19

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana.

लेखकगण

डॉ. के. लक्ष्मारेड्डी, वरिष्ठ लेक्चरर, डी.आई.ई.टी., करीमनगर
श्री एम. नरसिम्हा रेड्डी, जी.एच.एम.जेड., पी.एच.एस., पेद्दाजगमपल्ली, वाई.एस.आर. कड़प्पा
श्री के. लक्ष्मीनारायण, लेक्चरर, डी.ई.आई.टी., कृष्णा
श्री के. सुब्रहमण्यम्, लेक्चरर, डी.ई.आई.टी., कर्नूल
श्री एम.पापय्या, लेक्चर एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा, हैदाराबाद
श्रीमती टी.एस. मल्लेश्वरी, लेक्चरर, एस.आई.ई.टी., हैदराबाद
श्री कोरीवी श्रीनिवास राव, एस.ए., एम.पी.यू.पी. विद्यालय, पी.आर. पल्ली, श्रीकाकुलम
श्री यू. आनंद कुमार, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., पथापलवंचा, खम्मम
श्री बी. श्रीनिवासु, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., सावेल, निजामाबाद
री शेख रहमतुल्ला, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., भाकरापेटा, वाई.एस.आर. कड़प्पा
श्री सी.एच. राधाकृष्णा, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., वेंकटापुरम, श्रीकाकुलम
श्रीमती बी. सरला, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., इंदुकुरूपेट, पी.एस.आर. नेल्लूर
श्री बी. शंकर राव, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., देवुपल्ली, विजयानगरम
श्री मोहन रेड्डी, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., येनमनगंडला, महबूबनगर
श्री आयाचितुल लक्ष्मणराव, एस.ए., जी.एच.एस., धगंरवाडी, करीमनगर
डॉ. आर. गणपति, लादेला, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., आत्मकुर, वरंगल
श्री गड्डमीदी रतांगपाणि रेड्डी, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., पोलकमपल्ली, मूसापेट, महबूबनगर
श्री वंगूरि गंगीरेड्डी, एस.ए., जेड.पी.एच.एस., कोनदुर्ग, महबूबनगर
डॉ. चक्किनाल श्रीनिवास, जी.एच.एम., जी.एच.एस., दुर्गम्मगड्डा, करीमनगर
श्री एन. जगन्नाथ, एस.ए., जी.एच.एस., कुलसुमपुरा, हैदराबाद

समन्वयक

श्री जे. राघवुलु, प्रो. एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
श्री एम. पापय्या, लेक्चरर, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
श्री एस. विनायक, सह-समन्वय, सी एंड टी विभाग, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
श्री एम. नरसिम्हा रेड्डी, जी.एच्.एम., जेड.पी.एच.एस., पेद्दाजगमपल्ली, वाई.एस.आर. कड़प्पा
श्री कोरीवी श्रीनिवास राव, एस.ए.एम.पी.यू.पी. विद्यालय, पी.आर. पल्ली, श्रीकाकुलम

हिन्दी अनुवाद समन्वयक

डॉ. पी. शारदा, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

हिन्दी अनुवादक

श्री सय्यद मतीन अहमद, राज्य हिंदी संसाधक
डॉ. विनिता सिन्हा, हिंदी महाविद्यालय, हैदराबाद
डॉ. अर्चना झा, हिंदी महाविद्यालय, हैदराबाद
जी. किरण, मलकपेट, हैदराबाद
शोभा महेश्वरी, गुजराती हाईस्कूल, हैदराबाद
अनिता सामर्थ, हैदराबाद
श्री सुरेश कुमार मिश्रा, राज्य संसाधक
कविता, हैदराबाद
एन. हेमलता, रंगारेड्डी
अनिल शर्मा, हैदराबाद
ए.वी. रमणा, हैदराबाद

चित्रकार

श्री कुरेला श्रीनिवास, एस.ए. पोचमपल्ली, नलगोंडा
श्री बी. किशोर कुमार, एस.जी.टी.एम.पी.यू.पी.एस्. अलवाला, अनुमुला, नलगोंडा
श्री पी. आंजनेयलु, जियोमैपर, सीईएसएस-डीसीएस, हैदराबाद

SCERT TELANGANA

छात्रों को पत्र

'पूरे दिन खेत और घर में काम के पश्चात् जब बहुत थककर मेरी माँ नीचे लेट जाती है, तो मैं उनके पास बैठ जाता हूँ और आश्चर्य करता हूँ कि नारी का जीवन इतना कठिन क्यों होता है? यदि मैं घर के बाहर जाऊँगा, तो मुझे कई अलग-अलग तरह के लोग मिलेंगे, लोग जो भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते हैं और जो भिन्न-भिन्न रिवाजों का पालन करते हैं, मैं सोचता हूँ कि वे कौन हैं और क्यों इस तरह के अलग-अलग प्रकार के लोग हैं। मैं समाचार पत्र पढ़ता हूँ और मुझे पता चला कि अधिक प्रयासों से हमारा भोजन उत्पन्न करने वाले हमारे किसान निराशा से पीड़ित हैं। मुझे आश्चर्य है कि किसने उन्हें निराश और आशाहीन बना दिया। शहर की गलियों से गुजरते हुए मैं विशाल और सुंदर भवन, सड़कें, मंदिर, मस्जिद और गिरिजाघर देखता हूँ। मैं आश्चर्यचकित होता हूँ कि किसने इन्हें बनाया और किस लागत पर बनाया हैं? मैं झोपड़पट्टी भी देखता हूँ कि जहाँ अति भाग्यहीन परिस्थियों में हजारों लोग रहते हैं और मैं आश्चर्य करता हूँ कि उनके पास रहने के लिए जगह और इतने सुंदर भवन क्यों नहीं हैं?

मेरे बुजुर्गों ने भी इनमें से कुछ समस्याओं के बारे में चर्चा की और सही लोगों को मत देने और चुनने के बारे में बातचीत की और मैं विस्मित हूँ कि किसने हम पर शासन किया और कैसे किया? मेरे दादा-दादी पुराने जमाने की कहानियाँ सुनाते हैं, जब वहां राजा और रानी थे और उस समय की भी जब भगवान और संत लोगों के बीच विचरते थे। मैं आश्चर्य करता हूँ कि क्या ये चीजें वास्तव में संभव हैं?

मेरे पास कई प्रश्न हैं, जिनके लिए मुझे हमेशा आश्चर्य होता है कि क्या किसी के पास उनके उत्तर है? कदाचित किसी भी व्यक्ति को पूरे उत्तर नहीं पता है और कदाचित किसी भी व्यक्ति को उनमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर पता नहीं होंगे? संयोग से मेरे लिए उन्हें जानना आवश्यक है। मैं कैसे पता कर सकता हूँ। कौन मेरी सहायता करेगा?'

प्रिय मित्रों,

जो प्रश्न आपके मस्तिष्क में उत्पन्न हो रहे हैं, वे कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न हैं, जिनके उत्तर सभी के लिए जानना आवश्यक है। इनके उत्तर आसानी से नहीं दिये जा सकते, क्योंकि उनमें से अधिकांश के निश्चित उत्तर नहीं हैं। सही अर्थों में कई प्रश्नों के उत्तर अलग-अलग लोगों द्वारा अलग-अलग दिये जा सकते हैं। शायद समस्याओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के पश्चात् आपको भी अपने स्वयं के उत्तर देने होंगे। प्रश्न पूछने और उनके उत्तर देने के लिए विभिन्न प्रणालियों के क्रियान्वयन द्वारा सामाजिक विज्ञान जिस समाज में हम रहते हैं, उसे समझने का प्रयास करता है। यह हमें यह भी समझने में मदद करता है कि क्यों अलग-अलग लोग प्रश्नों के अलग-अलग उत्तर देते हैं- उदाहरण के लिए यदि आप किसी से पूछेंगे, स्कूल की तुलना में कॉलेज में लड़कियाँ क्यों कम हैं, आपको अलग-अलग लोगों से अलग-अलग उत्तर मिलेंगे। यदि आप पूछेंगे कि कॉलोनियों और स्लम् साफ क्यों नहीं किये जाते, आपको फिर से अलग-अलग उत्तर मिलेंगे। लोग इन प्रश्नों के अलग-अलग उत्तर क्यों देते हैं? सामाजिक विज्ञान इस समस्या को भी समझने का प्रयास करता है।

सामाजिक विज्ञान समस्या के भिन्न-भिन्न उत्तरों का सिर्फ संचय नहीं करता है। वे उसके अध्ययन के लिए कठोर प्रणाली लाने का प्रयास करता है। वह समस्याओं को समझने का प्रयास करता है कि वह कैसे विकसित हुई, कैसे और क्यों इनमें परिवर्तन आया, वे ये देखने का प्रयास करते हैं कि संपूर्ण पृथ्वी पर ये एक जैसी हैं या विश्व के विभिन्न स्थानों पर ये बदलती हैं और वह इनके बारे में विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने का प्रयास करता है। क्या अतीत में भी कॉलेजों में लड़कियों की संख्या कम थी? क्या संपूर्ण विश्व के कॉलेजों में लड़कियों की संख्या कम थी? क्यों? लड़कियों को कॉलेज जाने से कौन रोकता था? वे माता-पिता क्या कहते हैं, जो अपनी लड़कियों को कॉलेज नहीं भेजते हैं? वे माता-पिता क्या कहते हैं, जो लड़कियों को कॉलेज भेजते हैं? लड़कियाँ क्या कहती हैं? अध्यापक क्या कहते हैं? सामाजिक वैज्ञानिक मुख्य प्रश्नों के उत्तर देने के पहले इन सभी को मिलाते हैं। किंतु कोई भी सामाजिक वैज्ञानिक आपको अंतिम और निश्चित उत्तर नहीं दे सकता और यह आपको तय करना है कि कार्य करने के लिए कौनसा उत्तर अधिक निश्चित और उपयोगी है।

-संपादक

इस पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक आपके सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का भाग है या अपने आस-पास के समाज के अध्ययन के लिए आप जो विभिन्न कार्य कर रहे हैं, उनका एक भाग है। फिर भी याद रखिए कि यह उस पाठ्यक्रम का एक छोटा भाग है। सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम अपेक्षा करता है कि आप जो जानते हैं, उसे कक्षा में बाँटिये और उसका विश्लेषण कीजिए। इन सबसे ऊपर यह अपेक्षा करता है कि आप प्रश्न पूछिए- सोचिए कि वस्तुएँ जैसी हैं, वैसी क्यों है? यह, यह भी अपेक्षा करता है कि आप और आपके मित्र कक्षा से बाहर बाजार, पंचायत या म्यूनिसिपालिटी ऑफिस, गाँव के खेतों, मंदिरों और मस्जिदों तथा म्यूजियम जाएँ और विभिन्न बातें पता कीजिए। आपको कई लोगों जैसे किसान, दुकानदार, उपदेशक, ऑफिसरए आदि लोगों से मिलिए और चर्चा कीजिए।

यह पुस्तक आपके सामने कई तरह की समस्याएँ रखेगी और आपको उनका अध्ययन करके अपने स्वयं के निश्चय पर पहुँचने के लिए तैयार करेगी। इस पुस्तक की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके पास उत्तर नहीं है। सही अर्थों में यह पुस्तक वास्तव में पूर्ण नहीं है। यह तभी पूर्ण हो सकती है, जब आप और आपके मित्र तथा अध्यापक अपने स्वयं के प्रश्न और अनुभव प्रस्तुत करेंगे और कक्षा में हर बारीक विषय पर चर्चा करेंगे। आप इस पुस्तक की कई बातों से असहमत हो सकते हैं- उसे कहने में घबराइए नहीं, केवल अपने कारण बताइए। आपके मित्र आपसे असहमत हो सकते हैं, लेकिन समझने का प्रयत्न कीजिए कि उनके विचार भिन्न क्यों हैं। अंत में अपने स्वयं के उत्तर पर आइए। आप अपने उत्तर से निश्चिंत नहीं होंगे- आप अपने मन को निश्चिंत करने के लिए और अधिक जानना चाहते होंगे। ऐसी स्थिति में अपने प्रश्नों की सूची बनाइए और उन्हें पता लगाने में सहायता करने के लिए अपने मित्रों, अध्यापकों व बड़ों से विनती कीजिए।

यह पुस्तक सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने में सहायक होगी जैसे- भूमि और लोगों की विविधता के बारे में, लोग रोजी-रोटी कैसे पाते हैं, इस के बारे में, लोगों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति किस प्रकार होती है और वे उसकी देख-रेख कैसे करते हैं। किस तरह हमारे समाज के सभी लोग एक समान नहीं है और कैसे लोगों में समानता लाने का प्रयत्न करना चाहिए, किस प्रकार लोग विभिन्न भगवानों की पूजा विभिन्न पद्धतियों से करते हैं और अंतिम रूप से वे एक दूसरे से कैसे संपर्क रखते हैं तथा एक संस्कृति बनाते है, जो उनके द्वारा बाँटी जाती है।

पहाड़ों, मैदानों, नदियों और समूहों इनमें से कुछ विषयों को समझने के लिए आपको पृथ्वी के बारे में अध्ययन करना पड़ सकता है, दूसरों को समझने के लिए आपको यह जानना पड़ सकता है कि सैकड़ों या फिर हजारों वर्षों पहले क्या हुआ था। किंतु सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आपको बाहर जाकर अपने आस-पास के विभिन्न प्रकार के लोगों से बातचीत करनी पड़ सकती है।

जब आप कक्षा में यह पुस्तक पढ़ोगे, आपके सामने कई प्रश्न आएंगे- रूकिए और उन प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए। पाठ को शीघ्र समाप्त करना उतना महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि प्रश्नों पर चर्चा और क्रियाकलाप भी करना है।

कई पाठ ऐसी परियोजनाएँ सुझाते हैं, जिन्हें करने में कुछ दिन लग सकते हैं। ये परियोजनाएँ आपको सामाजिक विज्ञान संबंधी पूछताछ विश्लेषण तथा प्रस्तुतीकरण के कौशलों के विकास में योग्य बनाती हैं- पाठों में क्या लिखा है उसे याद रखने से अधिक यह महत्वपूर्ण हैं।

कृपया याद रखिए कि पाठ में क्या दिया गया है, आपको उसे याद करना नहीं है, बल्कि उसके बारे में सोचिए और उसके बारे में अपनी स्वयं की राय बनाइए।

- अभ्यास और मूल्यांकन के लिए हम पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त विषय वस्तु से संबंधित मानचित्र, तालिकाओं और आरेखों का उपयोग कर सकते हैं।
- चर्चाइएँ, साक्षात्कार का आयोजन वाद-विवाद और परियोजनाएँ पाठ के मध्य में या सीखने की क्षमता को सुधारें के बाद दी गयी हैं। इनका उद्देश्य छात्रों में सामाजिक चेतना, संवेदात्मक और सकारात्मक अभिरुचि का विकास है। इसीलिए उन्हें अवश्य करवाना चाहिए।

निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरण 2018-19
SCERT TELANGANA

राष्ट्र-गीत

- रविंद्रनाथ टैगोर

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे!
भारत भाग्य-विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा
द्राविड़, उत्कल बंग।
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे।
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!!

प्रतिज्ञा

- पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

"भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं।

मैं अपने देश से प्रेम करता हूं और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भंडार पर मुझे गर्व है।

मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूंगा।

मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा गुरुजनों का आदर करूंगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रतापूर्वक व्यवहार करूंगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करूँगा।

मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूं।

उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।"

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरण 2018-19

अनुक्रम

क्र.सं.		पृष्ठ	महीना
	I. पृथ्वी पर विविधता		
1.	मानचित्र बनाना और पढ़ना	1-8	जून
2.	भूमंडल (ग्लोब) पृथ्वी का नक्शा	9-14	जून
3.	भू-रचना (भाग–अ)	15-18	जुलाई
	पेनमकुरु कृष्णा डेल्टा का एक गाँव (भाग–ब)	19-26	जुलाई
4.	डोकूर - पठार पर एक गाँव	27-35	जुलाई
5.	पेनुगोल - पहाड़ियों में बसा गाँव	36-43	जुलाई
	II. उत्पादन, विनिमय और जीवनशैली		
6.	भोजन एकत्रित करने से लेकर भोजन उत्पादन करने तक – आदि मानव	44-56	अगस्त
7.	हमारे समय में खेती/कृषि	57-64	अगस्त
8.	कृषि उत्पादों में व्यापार (भाग–अ)	65-72	अगस्त
	कृषि उत्पादों में व्यापार (भाग–ब)	73-79	अगस्त
	III. राजनैतिक व्यवस्था और सरकारी तंत्र		
9.	जनजातियों में सामुदायिक निर्णय	80-84	सितंबर
10.	साम्राज्यों और गणराज्यों की आवश्यकता	85-92	सितंबर
11.	पहला साम्राज्य	93-102	सितंबर
12.	प्रजातांत्रिक सरकार	103-111	अक्तूबर
13.	ग्राम पंचायत	112-119	नवंबर
14.	नगरों में स्थानीय स्वशासन सरकार	120-126	नवंबर
	IV. सामाजिक संस्थाएं और विविधताएं		
15.	हमारे समाज में विविधता	127-134	नवंबर
16.	लिंग में समानता की ओर	135-142	दिसंबर
	V. धर्म और समाज		
17.	पूर्वकालीन धर्म एवं समाज	143-153	दिसंबर
18.	ईश्वर के प्रति भक्ति एवं प्रेम	154-161	जनवरी
	VI. संस्कृति और संचार		
19.	भाषा, रचनाएँ एवं महान ग्रंथ	162-168	जनवरी
20.	शिल्पकला और भवन	169-180	फरवरी
21.	तेलंगाणा में हरियाली	181-184	फरवरी
	पुनरावृत्ति और वार्षिक परीक्षाएँ		मार्च

SCERT TELANGANA

भारत का संविधान अभिमत

हम समस्त भारतवासी, शपथ लेकर निर्णय करते हैं कि हमने अपने लिए एक सर्व प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की संवैधानिक रचना कर ली है तथा समस्त नागरिकों के हित में समान रूप से यही स्वीकार्य है।

न्याय : सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक

स्वतंत्रताः विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, श्रद्धा तथा कार्याचरण में।

समानताः पद तथा अवसरों की तथा इन सभी में इसका विकास।

परस्पर सद्भावः प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सद्भाव के साथ-साथ राष्ट्र की एकता एवं संगठन की सुरक्षा को निश्चित करते हैं।

आज 26 जनवरी 1949 को हम घोषणा करते हैं कि हमने इस संविधान को स्वीकार कर लिया है, इसी पर कार्याचरण करेंगे तथा यही हम पर लागू होगा।

Subs. by the constitution [Forty-second Amendment] Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)

Subs. by the constitution [Forty-second Amendment] Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

SCERT TELANGANA

अध्याय 1

मानचित्र बनाना और पढ़ना
(Reading and Making Maps.)

मानचित्र अलग-अलग स्थानों की कई चीजों के बारे में हमें बताते हैं कि वे कहां हैं? समुद्र में पहाड़ों पर अथवा रेगिस्तान में, वे कितने गर्म या सर्द या गीले हैं। वहाँ किस तरह के पेड़-पौधे उगते हैं। कैसे लोग रहते हैं, कौन सी भाषा बोलते हैं एवं अपने घरों में जो कार्य वे करते हैं, इत्यादि। मानचित्र के द्वारा आप किसी भी स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। संभवतः एक मानचित्र हर चीज नहीं दिखा सकता है, इसके लिए हमें भिन्न भिन्न मानचित्र (भौगोलिक मानचित्र, प्रबंधकीय मानचित्र, ऐतिहासिक मानचित्र, आदि) के द्वारा सारी जानकारी हम पाते हैं। क्या हम सीखेंगे कि मानचित्र कैसे बनाए और उसको किस तरह पढ़ें।

जिला का मानचित्र (राजनैतिक)

District Map (Political)

आपने कई तरह के मानचित्र अपनी कक्षाओं में देखे होंगे। उनमें कुछ भारत के, कुछ तेलंगाणा के रहे होंगे। आज हम अपने जिले के मानचित्र का अध्ययन करेंगे।

- आप अपने जिले के दो या तीन मानचित्र लाइए।
- उसमें अपने गाँव, शहर पास के गाँव शहर, नदियाँ एवं जल स्रोत को रेखांकित कीजिए।
- सड़क, रेलवे स्टेशन, आदि के बारे में कुछ जानकारी देखिए।
- क्या आप भिन्न-भिन्न स्थानों की दूरियों के बारे में पता लगा सकते हैं?

एक खेल

छात्रों का एक दल एक स्थान का नाम लिखेगा और गोपनीय पद्धति से शिक्षक को देगा। दूसरी टीम उस जगह के बारे में प्रश्न पूछ सकती हैं। उत्तर हाँ या नहीं में मिलेंग। उदाहरण स्वरूप दूसरे वर्ग के छात्र इस तरह के प्रश्न कुछ सकते हैं। क्या यह प्रवेश महबूबनगर जिले में है? क्या यह प्रांत तटीय प्रदेश है? वह जिला केंद्र का नाम है क्या?

इस तरह दूसरे दल के छात्र प्रथम दल के द्वारा चुने प्रदेश को पूछे गए प्रश्नों के आधार पर पहचानेंगे। अध्यापक उनके खेल का निरीक्षण करते हुए कितने प्रश्नों के उत्तर सही दिए गए उन्हें रिकार्ड में दर्ज करें। वही विजेता है।

मल्लिका के घर के रास्ते के मानचित्र का रेखांकन

लैला और मल्लिका एक-दूसरे से निज़ामाबाद में 'रेड क्रॉस सर्विस एक्टिविटी' पर मिलती है। वहाँ वे अभिन्न मित्र बन जाती हैं। मल्लिका वेंकटापुरम में रहती है और लैला आदिलाबाद में। लैला ने योजना बनायी कि आने वाली छुट्टियों में वह मल्लिका के घर आएगी। मल्लिका को एक पत्र लिखकर उसने बस-स्टाप से उसके घर पहुँचने का पता पूछा। मल्लिका ने प्रसन्नता से अपने गृह स्थल का विस्तृत विवरण मानचित्र के साथ भेजा।

SCERT TELANGANA

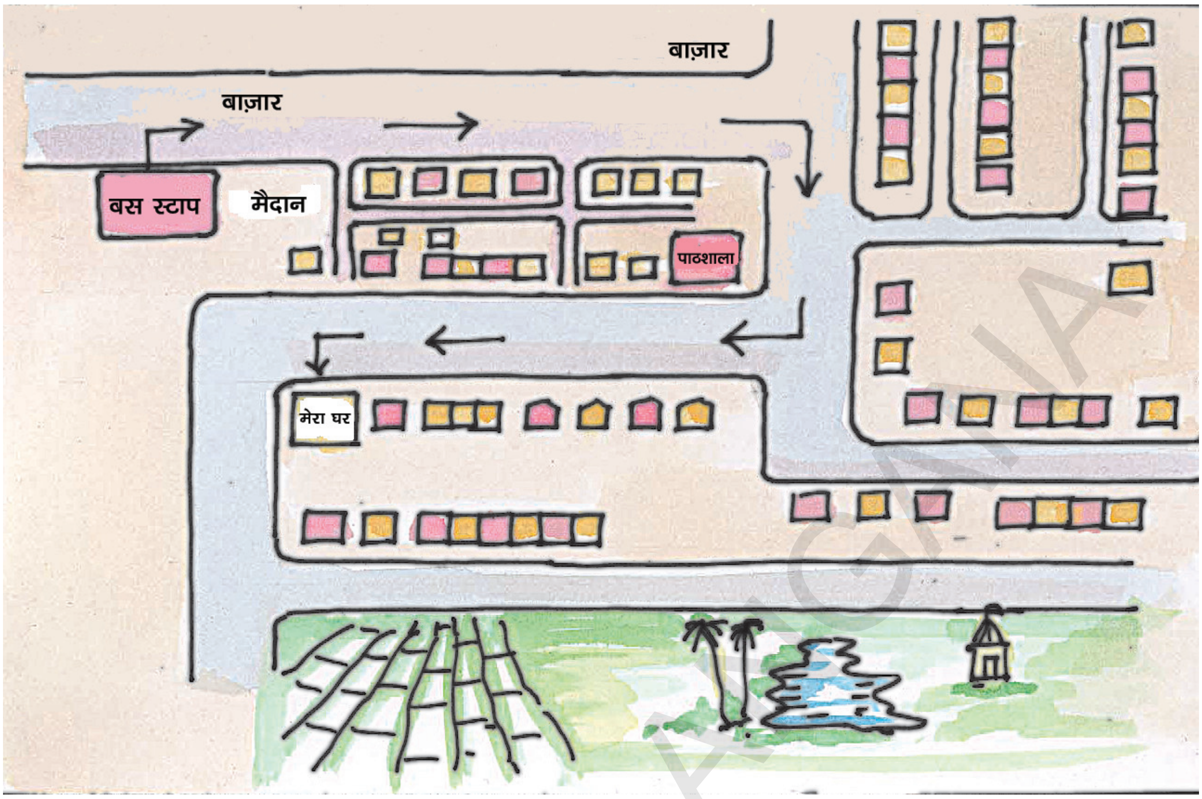

चित्र 1.1 सामान्य मानचित्र

- क्या आप अपने स्कूल से घर के मार्ग का नक्शा बना सकते हैं?
- क्या आप सोचते हैं कि मानचित्र की सहायता से बस स्टाप से मल्लिका के घर का रास्ता पा सकते हैं ?
- लैला अगर मल्लिका के घर पहुँचती है, तो कितने मोड़ होंगे? क्या उन मोड़ों पर कोई भू-भाग चिह्न है?
- क्या तुम बता सकते हो लैला किस दिश में चली? (उत्तर अथवा पूरब)
- क्या तुम बस स्टॉप से मल्लिका के घर की दूरी बता सकते हो?

हम अंतिम दो प्रश्नों के उत्तर उपर्युक्त मानचित्र की सहायता से नहीं दे सकते है।

लैला समस्या में फँस गयी है, उसे बस-स्टैंड से घर की दूरी का अनुमान नहीं है। जब वह मल्लिका के घर पहुँची, तो बोली ओह ! मल्ली मैं थक गई। तूने नक्शे में दूरी बतायी ही नहीं है। अगर मुझे पता होता कि इतनी दूर आना है, तो मैं ऑटो ले लेती।

'माफ करना लैला, मैं दूरी बताना भूल गयी। लेकिन अब अगर तुम यहाँ आओ तो दक्षिण वेंकटापुरम के लिए ऑटो लेना। मेरा घर इसी इलाके में है।' मल्लिका ने उत्तर दिया।

'मुझे कैसे पता चलेगा कि यह उत्तर वेंकटापुरम है या दक्षिण'? लैला ने पूछा।

'यह बहुत सरल है। अब तुम मेरे घर पहुँच गयी हो, जो कि गाँव के दक्षिण में है, तो इसके विपरीत में उत्तर होगा। वैसे क्या तुम्हें दिशा देखने आती है?' मल्लिका ने पूछा।

दिशाएँ

नीचे दिये गये चित्र को ध्यान से देखिए।

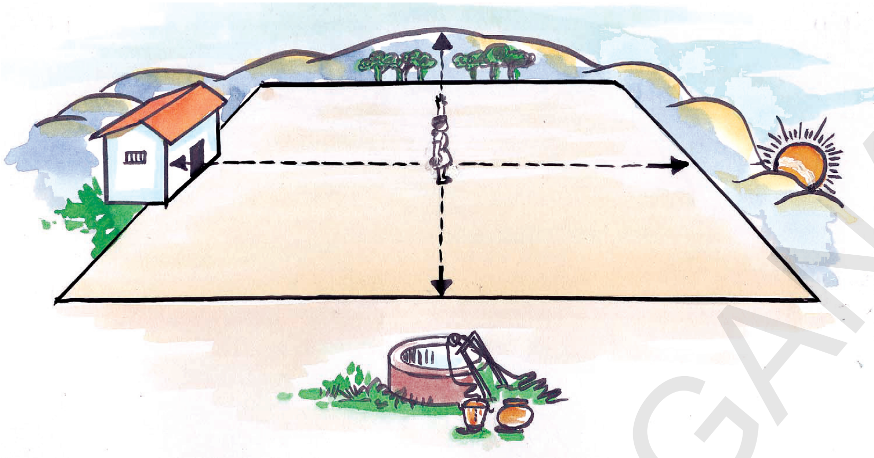

चित्र 1.2 दिशाओं की पहचान

मध्य में खड़ी लड़की उगते हुए सूरज की तरफ खड़ी है। अब नीचे दिये गये तालिका को भरिए।

क्रम सं.	दिशा	उस दिशा के सूचक/वस्तु
1	पूर्व	सूरज, सड़क
2	दक्षिण	
3	उत्तर	
4	पश्चिम	

यदि आप पूरब की ओर खड़े होंगे, तो आपकी दायी ओर की चीजें दक्षिण की तरफ होंगी, बायीं ओर की चीजें उत्तर की ओर होंगी, वहीं आपके पीछे पश्चिम होगा।

चलिए दिशाओं को अच्छी तरह से समझने के लिए हम एक खेल खेलें।

दायीं तरफ के चित्र को ध्यान से देखिए। अब हर किसी से एक प्रश्न पूछते है।

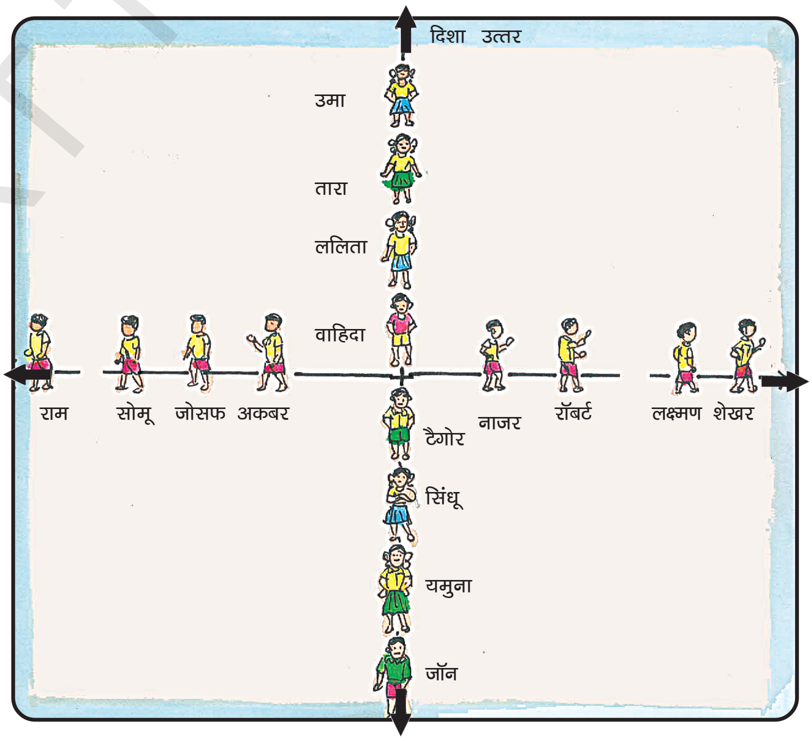

चित्र 1.3 दिशाएँ

SCERT TELANGANA

- ललिता .... जॉन की दिशा में है।
- ललिता.................... उमा की दिशा में है।
- नाजर शेखर की भी.................... दिशा में है।
- नजर राम की भी ....दिशा में है।
- लक्ष्मण सोनू के किस दिशा में है?
- लक्ष्मण शेखर की .... तरफ भी है।
- तारा जॉन की .... दिशा में है।

इसे करने के बाद लैला बोली, 'वाह ! अब मैं समझी कि दिशाएँ हमेशा किसी चीज से संबंधित होती हैं। हम किस जगह से किसी चीज को देखते हैं, वह उसकी दिशा निर्धारित करता है।'

- अपनी कक्षा में दिशाओं की पहचान कीजिए और समान रेखा से प्रश्न पूछिए।

मानचित्र में दिशाएँ

साधारणतः मानचित्र ऐसे बनाये जाते हैं कि उत्तर ऊपर की तरफ और दक्षिण नीचे की तरफ हो, इसमें पूरब दाईं एवं पश्चिम बाईं तरफ होता है।

कभी-कभी कुछ विशेष कारणों से दक्षिण ऊपर या बायीं तरफ हो सकता है। लेकिन तब उत्तर दिशा को विशेष रूप से सूचित किया जा सकता है।

तेलंगाना के राजनैतिक मानचित्र को दीवार पर टाँगिए एवं उसे देखकर उसकी सहायता से इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- महबूबनगर, विकाराबाद से किस दिशा में है ?
- हैदराबाद के किस दिशा में यादाद्रि है ?
- खम्मम से सूर्यापेट किस दिशा में है ?
- क्या कोमरमभीम जिला आदिलाबाद के पूर्व में स्थित है ?
- यदि आपको मंचिर्याल से पेद्दापल्ली जाना है, तो आप किस दिशा में यात्रा तय करेंगे?

कुछ और प्रश्न बनाइए और आपस में पूछिए।

स्केल या मानचित्र पर दूरी

इस सुहानी शाम में मल्लिका लैला को गांव का नहर दिखाने ले गयी एवं पुल के ऊपर चढ़े। पुल पर 6 लैंप पोस्ट है, जो कि समान दूरी पर स्थित है। हर लैंप पोस्ट के बीच की दूरी 100 मीटर है। पुल की लंबाई 500 मीटर है। नीचे दिये गये चित्र को दखिए–

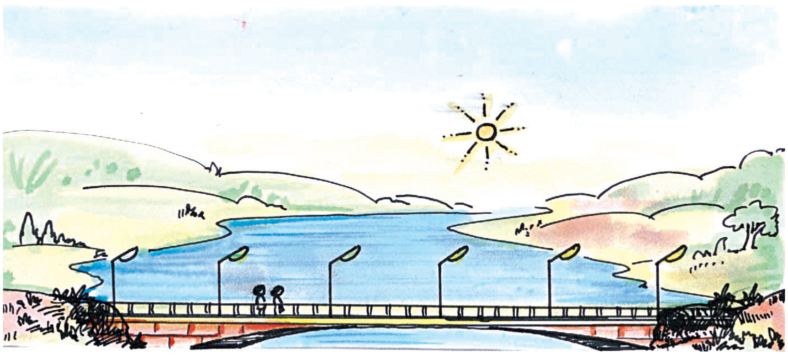

चित्र 1.4 लैला और मल्लिका पुल पर टहल रही है

SCERT TELANGANA

जब वे वापस लौटे तो लैला पुल और लैम्पपोस्ट का रेखा चित्र बनाना चाहती थी, ताकि वह उसे अपने साथ ले जा सके। जब वह लैम्प पोस्ट बना रही थी, तो उसने यह ध्यान रखा कि उनमें बराबर दूरी बनाए। पहले एवं अंतिम के बीच की दूरी 500 मीटर था रेखाचित्र पुल से काफी छोटा था।

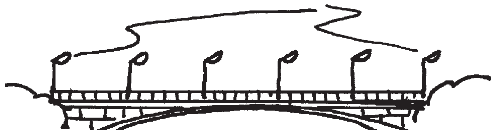

चित्र 1.5 लैला द्वारा बनाया गया पुल

लैला के मॉडल में पहले से अंतिम लैम्प पोस्ट की दूरी का पता लगाइए। इस तरह से आप यह देख सकते हैं कि दो लैम्प पोस्ट के बीच की वास्तविक दूरी . . . . . . मीटर है एवं कुल दूरी . . . . . . मीटर।

जबकि रेखा चित्र पर वही दूरी. . . . . . से.मी. एवं . . . . . . है। इस तरह से हम ब्रिज की वास्तविक लंबाई एवं रेखाचित्र के बीच संबंध स्थापित किया जा सकता है।

इन दोनों जगहों को जोड़ने वाली रेखा को मापिए एवं दूरी का पता लगाइए।

इस चित्र के द्वारा हम पुल और रेखाचित्र के बीच की दूरी के संबंध को बता सकते हैं।

5 से.मी. रेखाचित्र पर = ... मीटर में पुल की लंबाई

1 से.मी. रेखाचित्र पर = ...मीटर में पुल की लंबाई

इसी को मापक (स्केल) कहते हैं।

इस तरह मानचित्र पर दूरी दर्शायी जाती है।

मानचित्र में सदैव उपयोग किये गये मापक का वर्णन होता है एवं इनके द्वारा हम वास्तविक दूरी का पता लगा सकते हैं। यदि मापक (स्केल) को मानचित्र में ध्यान से देखेंगे तो मापक अनुपात व वास्तविक दूरी के बीच के अंतर को लिया जाता है। इसे भिन्न रूपों से किया जाता है।

पैमाना सूचना (Statement Scale): इस पैमाने में 1 से.मी. केलिए 1 कि.मी. आदि पदों से सरल वाक्यों में पैमाना बताया जाता है। इस सरल सूचना पैमाने में मानचित्र के दो प्रश्नों की बीच की दूरी 1 से.मी. होती है तो भूमि पर वास्तविक दूरी 1 कि.मी. रहती है।

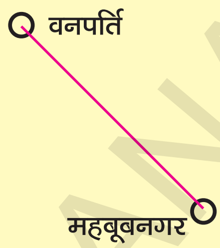

ऊपर दिये गये रेखाचित्र में महबूबनगर एवं वनपर्ति के बीच की दूरी को सीधी रेखा से दर्शाया गया है। इनके बीच की वास्तविक दूरी 50 कि.मी. है।

इन दोनों स्थानों को जोड़ने वाली रेखा को मापिए एवं दूरी का पता लगाइए।

वास्तविक दूरी महबूबनगर एवं वनपर्ति के बीच________

रेखाचित्र में दर्शायी गयी दूरी______

क्या अब आप मापक का पता लग सकते हैं ?

यदि मानचित्र में वह 1 से.मी. है, तो वास्तव में भूमि पर यह कितनी दूरी होगी ?

1 सें.मी. . . . . .कि.मी.

अब अपने जिले के नक्शे को देखिए एवं अपने गाँव से दूसरे गाँव और शहर की दूरी का पता लगाइए।

एक धागे की सहायता से मानचित्र में भारत के तटीय प्रांत की लंबाई माप कर, वास्तविक लंबाई को मापक की सहायता से पता कीजिए।

SCERT TELANGANA

प्रतीक

आप जानते हैं कि असली स्थानों के चित्र बनाने के लिए मानचित्र काफी छोटे होते हैं। उदाहरणतः हम बस स्टैण्ड, स्कूल या मल्लिका के घर का चित्र नहीं बना सकते, क्योंकि इससे मानचित्र पर अधिक स्थान की आवश्यकता होगी। इसलिए मानचित्र पर प्रतीकों का उपयोग करते हैं।

आपने देखा होगा कि जिलों के मानचित्रों में ग्राम व शहर डॉट या वृत्त से सूचित किया जाता है। मानचित्रों के जरूरतानुसार प्रतीकों का इस्तेमाल किया जाता है। परंतु कुछ सामान्य प्रतीक जिन्हें पारंपरिक प्रतीक कहते हैं, उनका भी प्रयोग होता है। नीचे दिया गया मानचित्र पूर्ण है प्रतीकों, मापक एवं दिशाओं से।

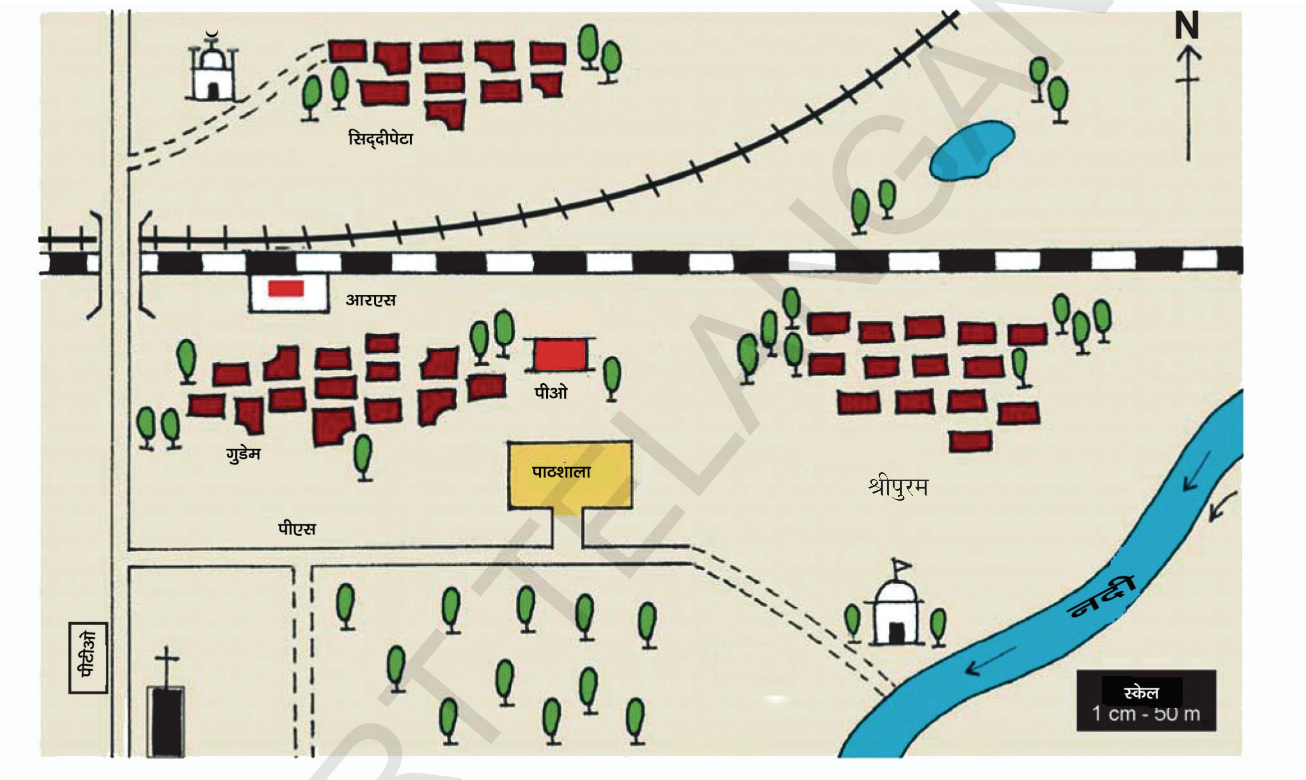

चित्र 1.6 मानचित्र को पढ़िए और पता लगाइये कि कैसे हम चिह्नों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

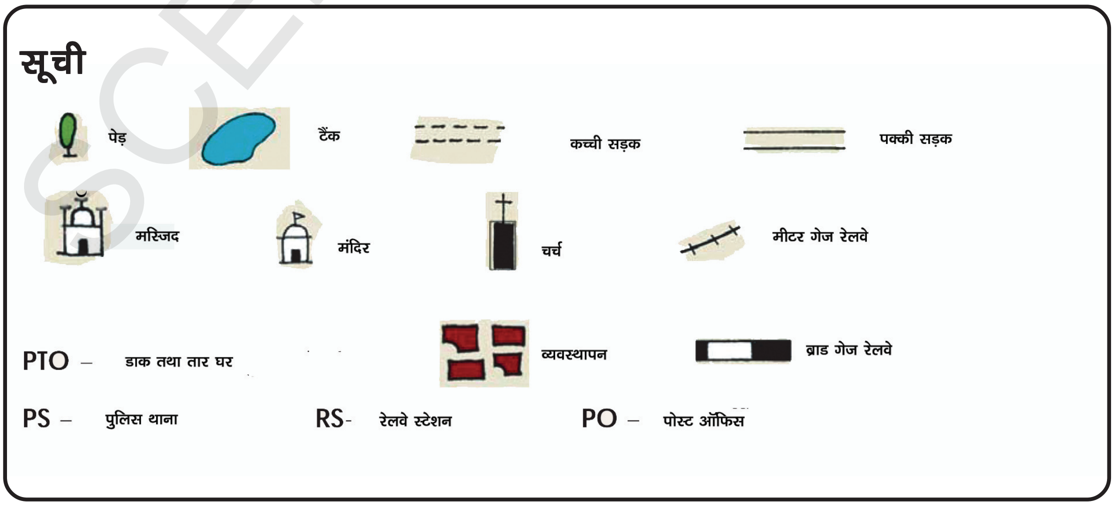

SCERT TELANGANA

मानचित्र के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- चर्च से किस दिशा में नदी बहती है ?
- श्रीपुरम ग्राम के दक्षिण में किस तरह का पथ है ?
- श्रीपुरम के पास किस तरह की रेलवे लाइन है ?
- रेलवे स्टेशन के किस दिशा में पुलिस स्टेशन है ?
- रेलवे पटरी के उत्तर में स्थापित ग्राम का नाम बताएं ?
- यदि आप मानचित्र में स्थित स्कूल में है, तो स्कूल से बाहर आने पर कौनसी दिशा में होंगे ?

शब्द

रेखाचित्र

मानचित्र

मापक (स्केल)

दिशा

अपने अध्ययन का विकास कीजिए।

1. विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का संग्रह कर उनका अध्ययन कीजिए। यदि किसी प्रकार का संदेह है, तो अध्यापक से समझे। (AS_5)
2. मंडल हेडक्वार्टर और जिला हेडक्वार्टर के बीच की दूरी मापिए, मानचित्र की दूरी और वास्तविक दूरी को। (AS_5)
3. क्यों वास्तविक दूरी जो भूमि की है, वह मानचित्र में कम है। (AS_1)
4. जब हम मानचित्र बनाते हैं, तो प्रतीकों की आवश्यकता होती है, समझाइए। (AS_5)
5. प्रतीकों का चित्र बनाइए, विभिन्न जल स्थान धार्मिक स्थल और पब्लिक ऑफिस को दर्शाइए। (AS_5)
6. अपने घर का रेखाचित्र बनाइए और इसे मानचित्र में बदलिए। (AS_5)
7. आपके निरीक्षण में मानचित्र की महत्वपूर्ण विशेषताएँ कौन–सी है ? (AS_1)
8. पृष्ठ सं-6 में 'प्रतीक' पढ़िए, वर्णन कीजिए। (AS_2)
9. अट्लास में विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का निरीक्षण कीजिए। निम्न तालिका की पूर्ति कीजिए। (AS_3)

क्र.सं.	मानचित्र का नाम	प्रतीकों का प्रयोग	विशेषताएँ

SCERT TELANGANA

परियोजना

अपनी कक्षा का एक मानचित्र बनाइए, जिसमें ये निर्देश हों।

अ) पहले अपनी कक्षा के उत्तर से चारों दिशाओं को ढूंढ़ें।

आ) सभी दीवारों, दरवाजे, खिड़कियाँ, ब्लैकबोर्ड, आलमारी बेंच आदि की सूची बनाइए, जिन्हें आप मानचित्र में दिखाना चाहते हैं। प्रत्येक के लिए एक प्रतीक अपने नोट बुक में बनाइए।

इ) अपनी कक्षा का रेखाचित्र बनाइए, उसकी दीवारों एवं वस्तुओं के स्थित होने की जगह के साथ। ध्यान रखिए उत्तर का दीवार रेखाचित्र में सबसे ऊपर हो।

ई) सब छोटे समूह बनालें और प्रत्येक दीवार की लंबाई मापिए और रेखाचित्र में दूरियों के बारे में लिखिए।

उ) उचित मापक को चुनकर कक्षा का मानचित्र बनाइए। एक मीटर के लिए 1 से.मी. की दूरी होगी। अगर दीवार 7 मी. लम्बी है, जो 7 से.मी. को रेखा अपने कागज पर खींचिए।

ऊ) बाहरी दीवार बनाने के बाद, खिड़की, दरवाजे, आदि के सही जगह के लिए 'प्रतीक' बना लिजिए।

ए) एक इंडेक्स (तालिका) प्रतीकों का बना लीजिए, जिसमें मापक का भी उल्लेख हो।

ऐ) तुलना कीजिए स्वयं बनाए गए मानचित्र का एवं अपने दोस्तों द्वारा बनाए गए मानचित्र का और गलतियो को सुधारें।

SCERT TELANGANA

अध्याय 2

भूमंडल (ग्लोब) पृथ्वी का नक्शा
(GLOBE - A MODEL OF THE EARTH)

एक शाम को सुंदर और कल्पना चांद को देख रहे थे। सुंदर ने पूछा– 'यदि हम चंद्रमा पर जाते हैं, तो पृथ्वी कैसी दिखेगी? वहाँ से हम क्या देख सकते हैं? कल्पना ने कहा कि वे सरलता से इसका पता इंटरनेट पर लगा सकते हैं। बाद में उसने उन्हें पृथ्वी की कुछ तस्वीरें दिखाई जो चंद्रमा से ली गई थी।

चित्र 2.1 चंद्रमा पर पृथ्वी का उदय

क्या पृथ्वी नीले चांद की तरह नहीं दिखती? यह नीली दिखती है क्योंकि पृथ्वी का एक बड़ा भू-भाग समुद्र से ढका है। ऊपर की तस्वीर में हम पृथ्वी का केवल वही भू-भाग देख सकते हैं, जहां सूरज का प्रकाश है।

◆ क्या आप व्याख्या कर सकते हैं कि तस्वीर में पृथ्वी के नीचे का भाग क्यों नहीं दिख रहा है?

पृथ्वी एक गेंद के आकार में

इस चित्र में आप देख सकते हैं कि पृथ्वी का आकार चंद्रमा जैसा है।

कक्षा में ग्लोब लेकर जाइए। निश्चित कीजिए कि पाँच या छ छात्रों के एक समूह के पास ग्लोब हो। ग्लोब पृथ्वी का नक्शा है, जो पृथ्वी के आकार को दिखाता है, भूमि और जल, महाद्वीप और समुद्र एवं विश्व के प्रमुख देशों को।

चित्र 2.2 गोलक

SCERT TELANGANA

- प्रत्येक छात्र-छात्रा अपने हाथ में एक ग्लोब ले और इसे ध्यान से देखें। देखो। पृथ्वी कैसे घूमती है?
- अपने अध्यापक की सहायता से उत्तरी ध्रुव दक्षिण ध्रुव और भूमध्य रेखा को अंकित करे।

आप देख सकते हैं कि पृथ्वी एक गोलाकार गेंद की तरह दिखती है। आप देख सकते हैं कि मनुष्य कैसे खड़ा होता है ? इसमें देखा जा सकता है कि जो व्यक्ति खड़ा है, उसका निम्न भाग बाद्य की तरह नीचे है और मध्य भाग जैसे पृथ्वी से गिर जाएगा। हम कभी भी पृथ्वी पर से नहीं गिरते, क्योंकि पृथ्वी बहुत चुंबक कि तरह हमें पकड़कर रखती है।

गोलाभ आकार

वस्तुतः पृथ्वी न पूर्णतः गोल है न पूर्णतः वर्तुलाकार। यह दोनों ध्रुवों पर थोड़ा दबी हुई है। उत्तर दक्षिण ध्रुव और पतला उभार। यह बहुत कम होने के कारण बहुत से मानचित्र या गोलक नहीं दिखाते हैं।

पृथ्वी के आकार के बारे में एक रुचिकर तथ्य है कि किसी एक दिशा में एक बिंदु से यदि हम यात्रा प्रारंभ करते हैं, तो बिना मुड़े फिर उसी बिंदु पर आ जायेंगे। इसे ग्लोब पर प्रयास करो।

भारत तथा यूरोप के प्राचीन वैज्ञानिकों ने यह पता लगाया कि पृथ्वी एक गेंद की तरह या गोलाकार में है। 1492 के आसपास कोलंबस जैसे नाविक जो इटली की अनवेशक थे यूरोप से भारत पहुँचने की आशा से अपनी यात्रा आरंभ की थी।

- ग्लोब देखिए एवं यह पता कीजिए कि कोलंबस अमेरिका किस रास्ते से गए थे और किस तरह भारत पहुँच पाए।

महासागर और महाद्वीप

जैसा कि आप ग्लोब पर देख सकते हैं कि पृथ्वी का अधिकतर भाग पानी से भरा है। यदि आप समुद्री किनारे रहते हैं, तो आपने बंगाल की खाड़ी देखी होगी।

- क्या आप समुद्र को कुछ शब्दों में परिभाषित कर सकते हैं या उसका चित्र बना सकते हैं ?
- क्या आप समुद्री पानी एवं पीने के पानी में अंतर बता सकते हैं ?

सागर एवं महासागर सैकड़ों किलोमीटर तक फैले हुए हैं। जहाँ सिर्फ पानी ही पानी है। सागर के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा केवल जहाज से की जा सकती है। इसमें कई दिन या महीने लग सकते हैं।

- एक महासागर जम गया है, उसका नाम बताइए ?
- ग्लोब देखें एवं पाँच महासागरों के नाम लिखिए।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

- आपके हिसाब से सबसे बड़ा महासागर कौनसा है, रेखांकित कीजिए?

SCERT TELANGANA

सामान्यतः हम समुद्र में नहीं रह सकते हैं। हम पृथ्वी पर रह सकते हैं। ग्लोब पर आप विशाल भू-भाग पाएंगे, जिन्हें महाद्वीप कहा जाता है। मुख्यतः सात मुख्य महाद्वीप है।

- सात महाद्वीपों के नाम पता कर कर नीचे लिखिए।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....
7. ....

- इनमें से एक महाद्वीप हमेशा बर्फ से ढका रहता हे। इस महाद्वीप के बारे में पता लगाइए।

क्या यह रुचिकर नहीं है कि उत्तरीय एवं दक्षिणी ध्रुव हमेशा बर्फ से ढके रहते हैं ? एक ध्रुव तो बर्फ से बना महासागर है, वहीं दूसरे में बहुत सारा बर्फ एकत्रित हो गया है, जिसे बर्फ का अंटार्कटिक ढाल कहते हैं।

- ग्लोब में भारत को ढूँढ़िए और उस महाद्वीप का नाम बताइये, जिसमें यह स्थित है।
- इसी तरह कुछ और जाने-पहचाने देशों को ग्लोब में ढूँढ़िए।

ग्राम, शहर, नगर, महाद्वीप उस पर बसे हैं, यह भू-भाग ही है, जहाँ पर आप पहाड़, घाटी, खदान, कारखाने, इत्यादि पायेंगे।

ग्लोब पर दिशाएँ

आपने पिछले पाठ में चार दिशाओं के बारे में पढ़ा था। आप उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव का पता लगा सकते हैं, दायीं ओर में पूरब है, वहीं बायी ओर में पश्चिम। पृथ्वी हमेशा पश्चिम से पूर्व कि ओर चक्कर काट्ती है। भूमंडल को घूमाकर पता लगाने की प्रयत्न करे कि यह कैसे होता है।

आपने ध्रुवों को देखा होगा। ध्रुव क्या है ? ध्रुव पृथ्वी के विपरीत अंतों के बिंदु हैं। आप इन्हें जोड़ती हुई एक काल्पनिक रेखा बनाए। इसी रेखा के चारों ओर पृथ्वी चक्कर काट्ती है।

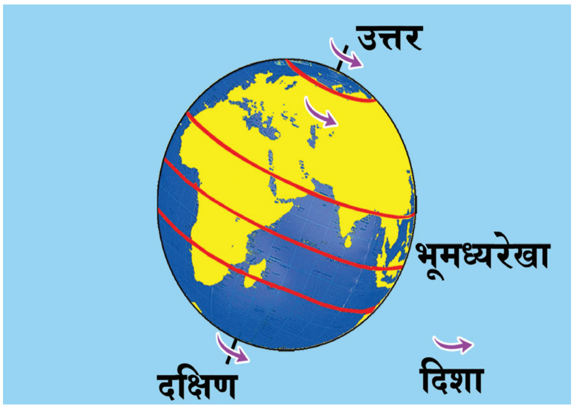

चित्र 2.3 ध्रुव पर भ्रमण

इसे अच्छी तरह से समझने के लिए भूमंडल पर भूमध्य रेखा से ध्रुवों तक तीन-चार बिंदुओं को अलग-अलग रंगों से अंकित करो। अब ग्लोब को घूमाकर देखो।

SCERT TELANGANA

आप पाएंगे कि ध्रुवों पर बिंदु अपने स्थान पर स्थित है। भूमध्य रेखा पर स्थित बिंदु का क्या हुआ ?

भूमंडल पर रेखाएँ

भूमंडल पर आप कई रेखाएँ देखेंगे। कुछ उत्तर से दक्षिण तो कुछ पूर्व से पश्चिम की ओर है। यह काल्पनिक रेखाएँ भूमंडल एवं मानचित्रों पर स्थानों को अवस्थित करने में सहायता करती है। ये रेखाएँ कैसे बनायी जाती हैं, इसके बारे में अगली कक्षाओं में पढ़ेंगे। अब हम कुछ महत्वपूर्ण रेखाओं पर ध्यान देंगे।

ग्लोब में जो अक्षांश और देशांश ध्रवों की जानकारी हमारे पूर्वज जैसे आर्यभट्ट जगहों के बारे में बताने के लिए सक्षम रहते थे।

अंक्षास

यह वह रेखाएँ हैं, जो पश्चिम से पूर्व की ओर बनायी जाती हैं। क्या आप इन्हें अंकित कर सकते हैं। इनकी लंबाईयों की तुलना कीजिए। क्या आपको लगता है कि ये समान लंबाई की होगी ?

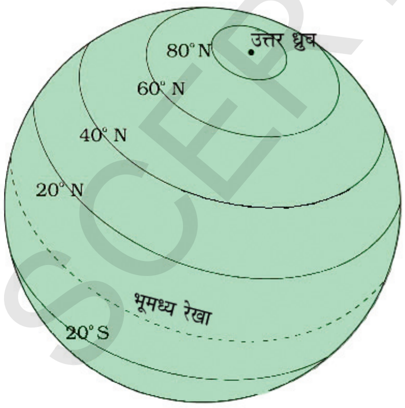

चित्र 2.4 गोलक पर अंक्षाश

इन रेखाओं में सबसे लंबी भूमध्य रेखा है, यह भूमंडल को दो बराबर भागों में बांटती है। इन भागों को गोलार्थ कहते हैं। भूमध्य रेखा को पहचानिए तथा उन महाद्विपों को नोट कीजिए, जहाँ से यह गुजरती है। साथ ही साथ उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्थ को भूमंडल में पहचानिए। किस गोलार्थ में भारत स्थित है? किस गोलार्थ में जल-भाग, भू-भाग से ज्यादा है ?

रेखांश

ये रेखाएँ एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक जाती हैं। ये रेखाएँ समांतर होती है। ग्रीनवीच रेखा (0 डिग्री रेखांतर) तथा अंतर्राष्ट्रीय दिनांक रेखा दो मुख्य रेखांतर हैं। इसी को 180° पूर्व पश्चिम रेखांतर कहते हैं। इनके बारे में अगली कक्षाओं में जानिएगा।

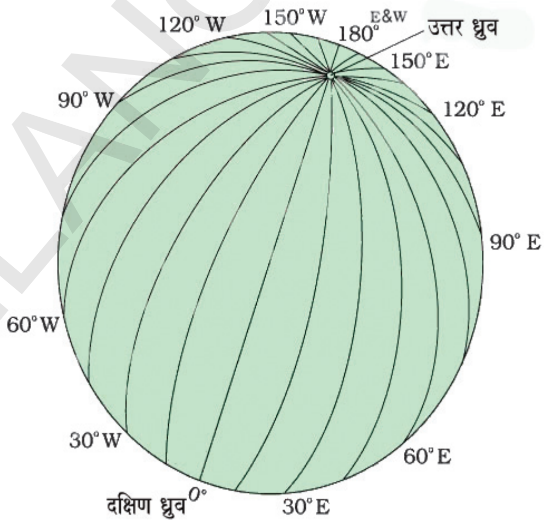

चित्र 2.5 गोलक पर रेखांश

साथ मिलकर रेखांतर व दिशांतर मानचित्र पर स्थानों को अवस्थित करने में सहायता करती है। यदि आप किसी स्थान के अंक्षास व देशांतर को जानते हैं, तो उसे मानचित्र या ग्लोब पर सरलता से अवस्थित कर सकते हैं।

मुख्य शब्द

अक्षांस

रेखांश

अंतर्राष्ट्रीय दिनांक रेखा

ध्रुव

SCERT TELANGANA

अपने अध्ययन का विकास कीजिए।

1. अगले पृष्ठ पर विश्व के मानचित्र का रेखांकन करें, महाद्वीपों एवं समुद्रों को पहचान कर उनके नाम लिखिए। मुख्य अंक्षास के नाम भी लिखिए। (AS_5)
2. रमेश ने कहा– 'पृथ्वी समतल है' तुम क्या कहते हो? (AS_1)
3. रोजी ने चूड़ी को लट्टू की तरह घुमाया, तुम्हें उसका आकार कैसा दिखाई दिया ? (AS_1)
4. सूचनाएँ एकत्र कीजिए अन्वेषण की , जैसे कोलंबस ने की। (AS_3)
5. गेंद पर अंक्षास और रेखांश चित्रित कीजिए । (AS_5)
6. 'सूरज हमेशा पूरब में उगता है' इसका कारण पता लगाइए ? (AS_1)
7. क्यों हम काल्पनिक रेखाएँ मानचित्र या ग्लोब पर बनाते हैं ? (AS_1)
8. पृथ्वी के बारे में जानने के लिए वैज्ञानिकों और नाविकों ने क्या प्रयत्न किया है? (AS_6)
9. तस्वीरों का अवलोकन कीजिए और बॉक्स में रंगे गए अर्द्धगोलाभों के नाम लिखिए ? (AS_5)

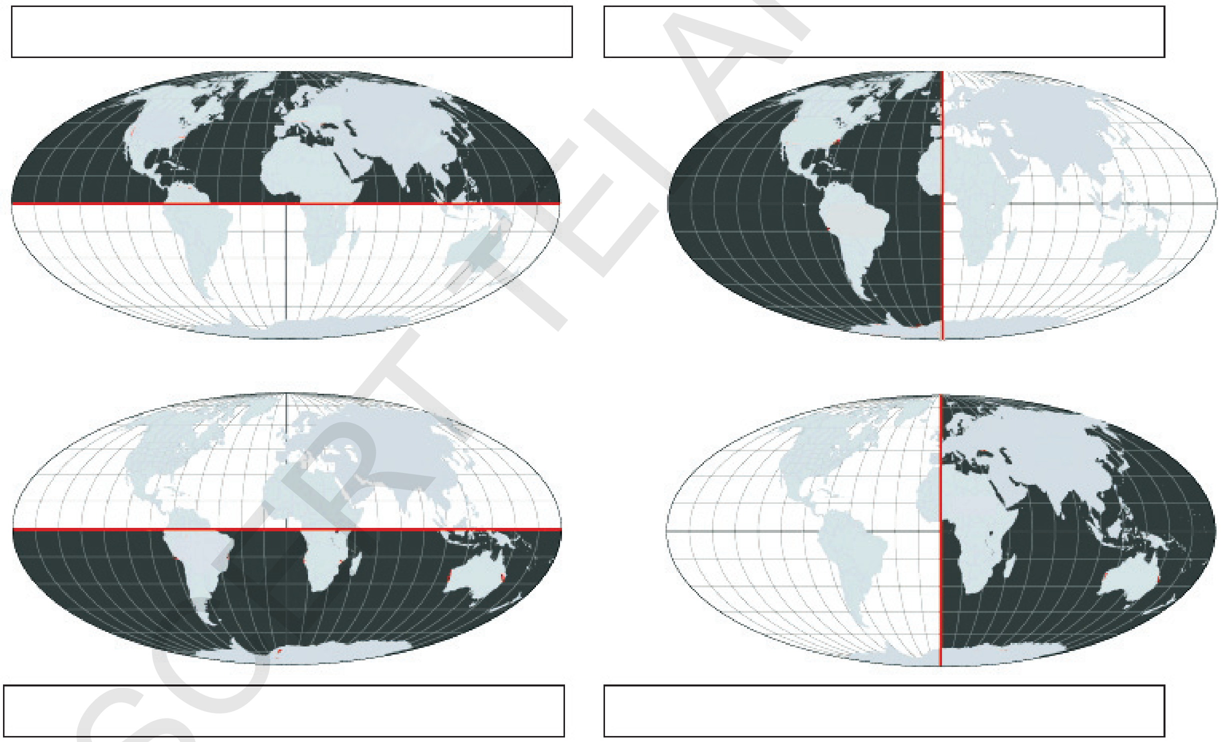

SCERT TELANGANA

Fig. 2.6 संसार का बहि चित्र

SCERT TELANGANA

अध्याय

3

भाग–अ

भू - रचना

(Land forms)

जिस भूमि पर हम रहते हैं, वह समतल या एक समान नहीं होती, बल्कि विभिन्न आकारों और ऊँचाई में रहती है। कुछ स्थानों पर यह ऊँची होकर अत्यधिक ढलान वाले पहाड़ों और पर्वतों का रूप धारण कर लेती है और अन्य स्थानों में यह लम्बी विस्तृत होने के लिए निचली और समतल हो सकती है। जैसे–जैसे आप एक स्थान से दूसरे स्थान जाओगे, आप स्थान की ऊँचाई में अंतर देख सकते हो। यह 'क्षेत्र के प्राकृतिक रूप' के नाम से जाना जाता है।

मुख्यतः तीन प्रकार की भू–रचनाएँ हैं। पर्वत, मैदान और पठार। तुमने कई पहाड़ों को अवश्य देखा होगा या कुछ पर्वत श्रेणियों के स्थानों पर भी गये होंगे। पर्वत बहुत ऊँचे होते हैं और उन पर बहुत कम समतल भूमि के साथ अत्यधिक ढलान होती है।

भारत के मानचित्र में हिमालय, अरावली, विंध्य, सत्पुड़ा पहाड़ियों का निरीक्षण कीजिए। यह हमारे देश की प्रसिद्ध पर्वत श्रेणियाँ है।

हमारे राज्य में भी आदिलाबाद, निर्मल, जगित्याल, महबूबनगर, नागरकर्नूल, भद्राद्रि जयशंकर जिले में फैले हुए पर्वतश्रेणियाँ जहाँ-तहाँ हम देख सकते हैं। ये आदिलाबाद और निर्मल के सातमल पहाड़ियाँ, महबूबनगर और नागरकर्नूल के बालघाट पहाड़ियाँ, विकाराबाद जिले के अनंतगिरि पहाड़ियाँ, पेद्दापल्ली जिले और जयशंकर जिले के कंदिकल पहाड़ियाँ और जगित्याल जिले के राखी पहाड़ियाँ हैं। इन्हें मानचित्र में निरीक्षण कीजिए।

पठार भी ऊंची भूमि है, लेकिन इसमें अधिक समतल भूमि के साथ बीच–बीच में कुछ पहाड़ भी होते हैं। भू–क्षेत्र कुछ ऊबड़-खाबड़ होने के साथ–साथ असमतल होते है। लेकिन पर्वतों की तरह यह अत्यधिक ढलाऊँ नहीं होते। भारत का बड़ा पठारी क्षेत्र है, जो दक्कनी पठार कहलाता है।

भारत के दक्कनी पठार के पश्चिमी ओर ऊँचे दलानवाले प्रांत को पश्चिम की घाटियाँ कहते हैं। तेलंगाना का अधिक भू-भाग दक्कनी पठार में होने के कारण, इस प्रांत को तेलंगाना का पठार कहते हैं।

चित्र : 3.1 पहाड़

CERT TELANGANA

चित्र 3.2 मैदान

इसके विपरीत मैदान बहुत सामान्य ढलान के साथ समतल होते हैं। नदियों के बहाव से रुकने वाली मिट्टी से यह प्रांत बनाते हैं। सिंधु और उपनदियों ने पंजाब के मैदान को बनाया। गंगा नदी उत्तर प्रदेश, बिहार, और पश्चिम बंगाल राज्यों से बहते हुए गंगा मैदान का निर्माण किया है। इन दो विशाल मैदानी भागों को मिलाकर गंगा-सिंधू मैदान कहा जाता है। पूर्वतटीय मैदान भारत के पूर्वी दिशा में बंगाल की खाड़ी से लगा हुआ है। तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, ओडीशा और पश्चिम बंगाल राज्यों का अधिकतर भाग पूर्वतटीय मैदान में है। भारत के पश्चिम में पश्चिम तटीय मैदान है। कौन से राज्य इसमें आते हैं। पता कीजिए।

चित्र 3.3 पठार का प्राकृतिक दृश्य

भूमि के ऊपरी रचनाएँ पर्वत, मैदान आदि को प्राकृतिक लक्षण कहते हैं। तेलंगाना राज्य विभिन्न प्राकृतिक रचनाओं से भरा है। 17 वें पृष्ठ में मानचित्र-1 देखिए। हमारे राज्य के पश्चिम में ऊपरी तेलंगाना का पठार है। गोदावरी, कृष्णा नदियाँ इसी पठार से पूर्व दिशा में बहती हैं। इन दोनों के बची बीचे हुए प्रांत को निचला तेलंगाना का पठार कहते हैं। इसका ढलान भी पूरब की ओर है। नगरद्वय हैदराबाद-सिकिंद्राबाद, रंगारेड्डी, महबूबनगर, नलगोंडा, नगर ऊपरी तेलंगाना पठार में हैं, जबकि वरंगल, करीमनगर नगर निचले तेलंगाना पठार में आते हैं।

इन भू भागों और इनमें लोग किस तरह रहते हैं, इनके बारे में और अधिक जानकारी हम अगले अध्यायों में लेंगे।

- पर्वतों, मैदानों और पठारों के चित्र देखिए और देखिए कि इनमें से कौनसा आपके क्षेत्र के समान है?
- तेलंगाना के मानचित्र को देखिए, जो भू-भाग को दर्शाता है- पता कीजिए। इनमें से कौनसे ऊपरी निचले तेलंगाना पठार में आते हैं-

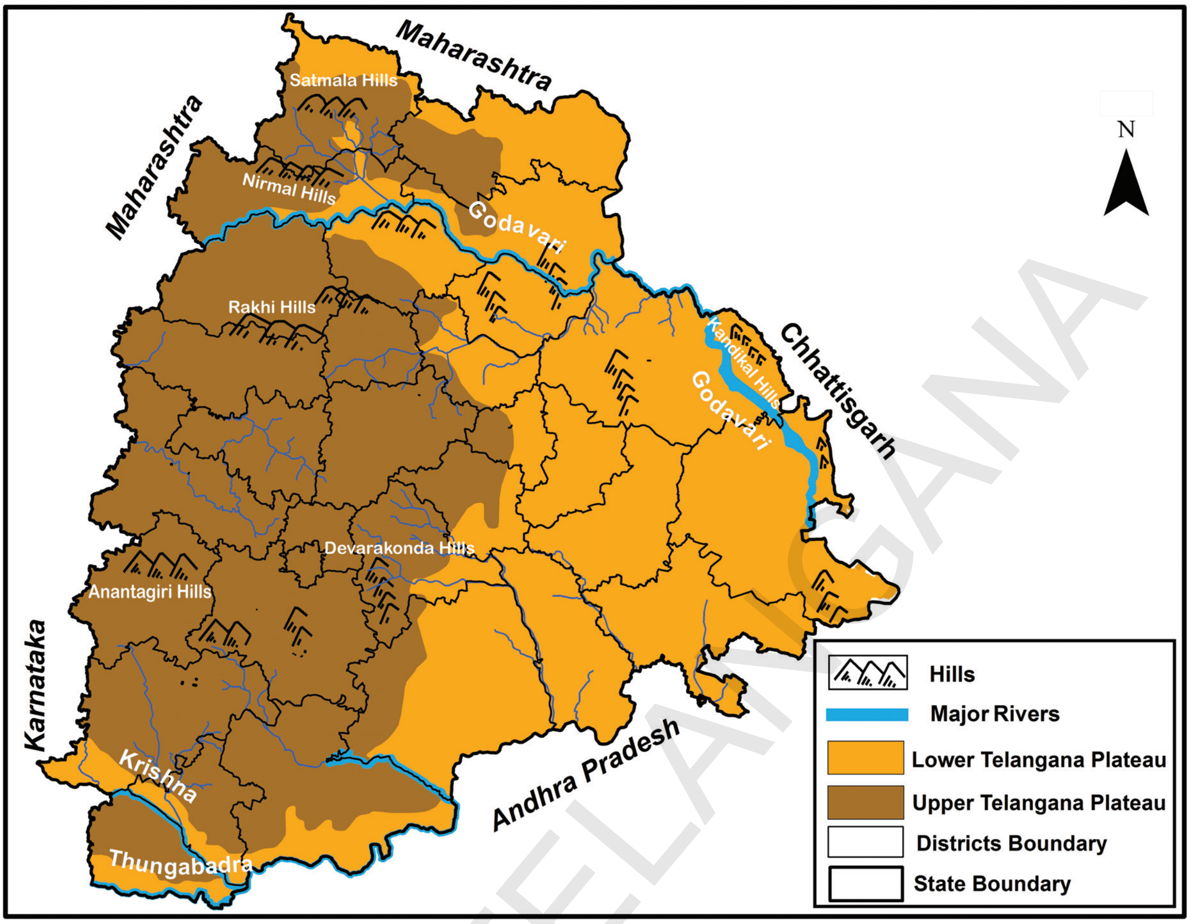

मानचित्र-1 तेलंगाणा का प्राकृतिक मानचित्र

> भुवनगिरि, भद्राचलम, सिद्दिपेट, मंथनि, मंचिर्याल, शादनगर, सिरिसिल्ला, चेन्नूर, कामारेड्डी, विकाराबाद।
>
> - अनंतगिरि पहाड़, देवरकोंडा पहाड़, निर्मला के पहाड़, सिर्नपल्ली पहाड़ किन जिलों में हैं?

डेल्टा

हमारे राज्य की दो मुख्य नदियाँ गोदावरी और कृष्णा पश्चिमी घाट से बहती हैं और विस्तृत डेल्टा बनाने के बाद समुद्र में मिल जाती हैं। गोदावरी नदी निर्मल जिले के बासर में हमारे राज्य में प्रवेश करती है। गोदावरी कृष्णा नदियाँ तेलंगाना पठार में अनेक छोटी नदियों को अपने अंदर मिलाकर, बड़े डेल्टा प्रांत का निर्माण, कर अंत में बंगाल की खाड़ी में मिल जाते हैं। क्या आप तटीय मैदानों में इन नदियों द्वारा बनाये गये दो त्रिभुज देख सकते हैं ? (चित्र-3.4)

समुद्र में मिलने से पहले एक नदी कई छोटी नदियों में बँट जाती है। इस क्षेत्र में वह बहुत सी मिट्टी और रेती जमा करती है, जिससे डेल्टा बनता है। यह प्रायः त्रिभुज बनाती है। प्रति वर्ष नदियों में आने वाली बाढ़ का पानी अपने साथ ह्यूमस मिट्टी (सड़ी हुई पत्तियाँ और पेड़-पौधे) के साथ रेती लाती हैं और उन्हें बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में जमा कर देती हैं। इस तरह प्रति वर्ष बाढ़ डेल्टा की मिट्टी को अधिक समृद्ध बना देती है।

- आपके विचार में डेल्टा मिट्टी को नदियों पर स्थित बांध किस प्रकार प्रभावित करेंगे ?
- भारत और डेल्टा के अंतर्गत आने वाले जिलों के नाम पता करो ?
- गोदावरी नदी पर बनाया गया सबसे बड़ा बाँद पहचानो।
- कृष्णा, गोदावरी नदी से मिलने वाली कम से कम दो उपनदियों के नाम पता करो।
- मेदक जिले में बड़ा बांध बनाना का संभव नहीं?

चित्र 3.4 कृष्णा और गोदावरी डेल्टा

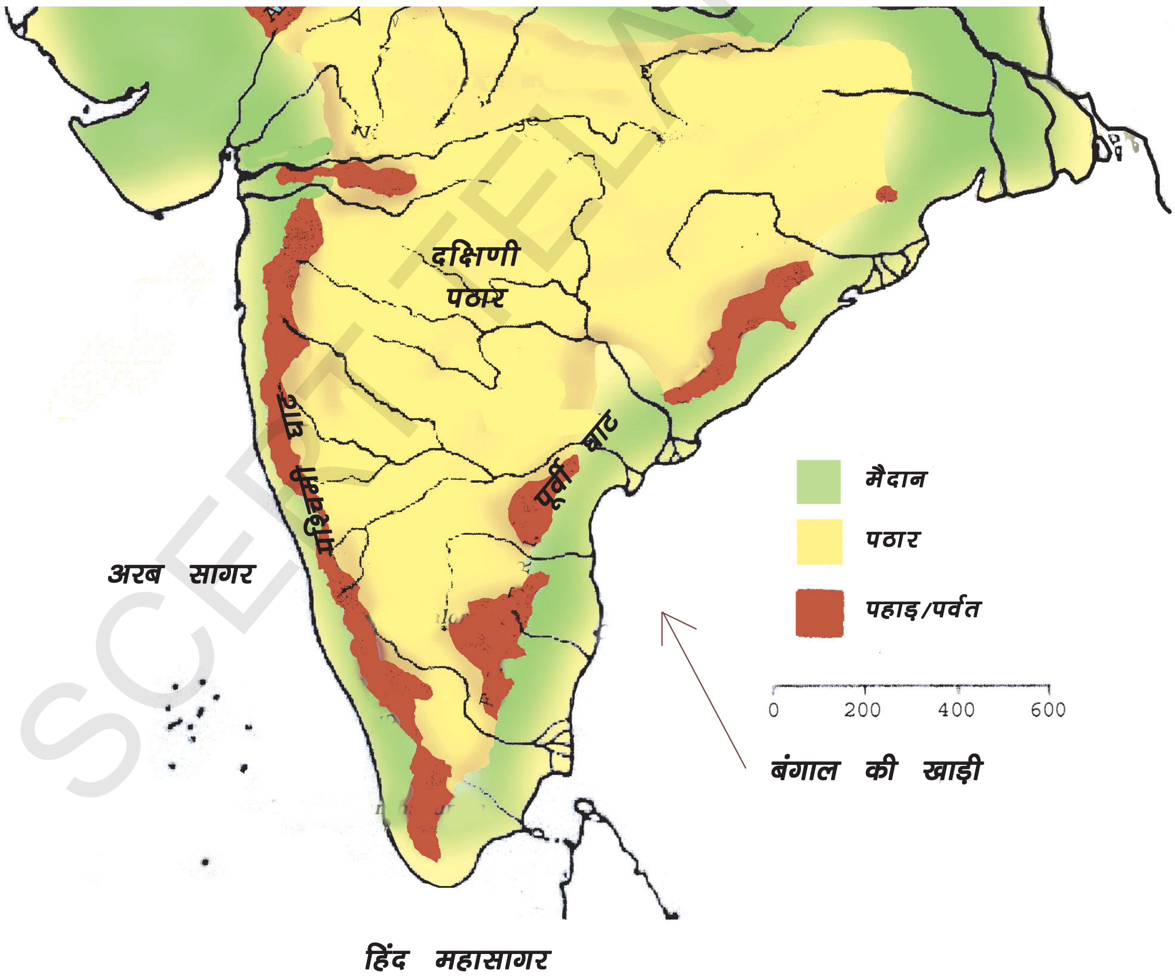

मानचित्र -2 भारत का दक्षिणी पठारी क्षेत्र

SCERT TELANGANA

अध्याय 3

पेनमकुरू
कृष्णा डेल्टा का एक गाँव

भाग–ब

(Penamakuru - A Village in the Krishna Delta)

हम देखना चाहते थे कि डेल्टा गाँव के लोग किस प्रकार रहते हैं। हम विजयवाड़ा से निकल कर वय्युरू शहर पहुँचे। पूरा प्रदेश मैदानी था, ढलान का नामोनिशान नहीं था। हमने कई नहरों और हरे पेड़ों की पंक्तियों वाले जलाशयों को पार किया।

बंदर नहर

बंदर नहर विजयवाड़ा में प्रकाशम बैरेज पर कृष्णा नदी से निकलती है। यह गाँव के उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्वी दिशा की ओर बहती है। इस नहर का पानी छोटे मैदानी मार्गों द्वारा खेतों तक ले जाया जाता था। पेनमकुरू गांव कृष्णा नदी (जो गांव के पश्चिम से कुछ किलोमीटर दूर से बहती है) और बंदर नहर के बीच स्थित है।

चित्र 3.5 पेनमकुरू का मैदानी प्राकृतिक दृश्य

चित्र 3.6 बंदर नहर के किनारे झोपड़ियाँ

प्रकाशम बाँध (बैरेज)

विजयवाड़ा शहर कृष्णा डेल्टा की चोटी पर उसके उत्तरी किनारे पर स्थित है। ब्रिटिश शासकों द्वारा 1853 में विजयवाड़ा में नदी पर एक बाँध बनाया गया। यह अब प्रकाशम बैरेज कहलाता है। इस बाँध द्वारा पानी नहरों को भेजा जाता है और लगभग बारह लाख एकड़ भूमि की सिंचाई के लिए उपयोग में लाया जाता है।

मिट्टी

पेनमकुरू में मिट्टी अधिकतर उपजाऊ अलुवियल काली मिट्टी होती है। नदियों द्वारा जमा की गयी मिट्टी अल्लुवियल मिट्टी या 'ओंड्रु भूमि' कहलाती है। अलुवियल मिट्टी भारी होती है और इसमें पानी सोखने की क्षमता अधिक होती है। इसमें पोषक तत्व भी अधिक होते हैं। क्या आप सोचतें हैं कि ऐसी मिट्टी में अच्छी फसल होगी?

15 फीट की गहराई तक हम चिकनी काली मिट्टी (नल्ला रेगड़ी भूमि) पा सकते हैं। वर्षा से वे बहुत चिपचिपी हो जाती है और लंबे समय तक नमी बनाये रखती है। जब वह सूख जाती है, तब उसमें दरार पड़ जाती है– इसके कारण जो होता है, वह 'स्व जोतन' कहलाता है और जो उर्वरता बढ़ाता है।

पश्चिम और दक्षिण में नदी के समीप गाँव के कुछ भागों में रेतीली मिट्टी (इसुका भूमि) होती है।

इस क्षेत्र की अधिकतर मिट्टी उपजाऊ होती है और यदि पानी उपलब्ध हो तो एक वर्ष में दो से तीन फसल भी उगाना संभव है।

- मिट्टी में नमी के स्तर और अन्न उत्पादन के बीच क्या संबंध है?
- नहर, सड़क, गाँव का केंद्र और घर और झोपड़ियाँ पहचानने के लिए मानचित्र को ध्यान से देखिए।
- बंदर नहर से निकलने वाले मैदानी जल मार्गों को देखने के लिए पेनामकुरू गाँव का मानचित्र देखिए।
- आपके विचार में नहर के द्वारा जिन भागों की सिंचाई होती है, उनमें धीरे-धीरे रंग भरिए।

वर्षा और सिंचाई

इस क्षेत्र में दक्षिण पश्चिमी मानसून जून से अक्तूबर तक वर्षा होती है। नवंबर से मई तक बहुत कम वर्षा होती है। अच्छी धूप और गर्म तापमान के कारण संपूर्ण वर्ष से अन्न उत्पन्न करना संभव है। अक्तूबर के बाद वर्षा नहीं होती, इसीलिए नहरों, कुँओं या टैंक के पानी से भूमि की सिंचाई की जाती है।

गाँव के पूर्वी भाग की भूमि जो नहरों के समीप और नीचे स्थित है, सरलता से नहरों के पानी से सींची जा सकती है। पश्चिमी और पूर्वी भागों की ओर की भूमि ऊँचाई पर है और नहर के पानी से सरलता से सींची नहीं जा सकती। ऐसे क्षेत्रों में किसान बोरवेल का उपयोग करते हैं।

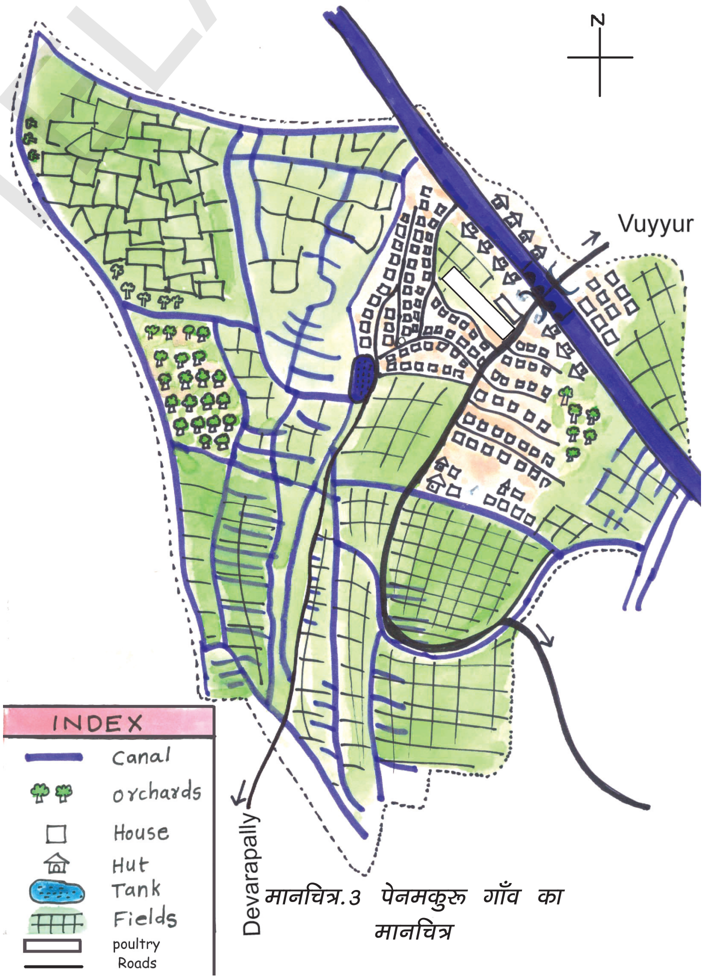

मानचित्र.3 पेनमकुरू गाँव का मानचित्र

SCERT TELANGANA

पेनमकुरू, जो कृष्णा नदी के बहुत समीप है, वहां केवल 15 से 25 फीट खोदने से ही भूमिगत जल प्राप्त किया जा सकता है। इसी कारण बोरवेल खोदने का खर्चा बहुत कम होता है। पूरे क्षेत्र में विद्युत संचार होता है। अधिकतर बोर पम्प बिजली से चलने वाले सबमर्सिबल पम्प है।

चित्र 3.7 धान और गन्ने के खेतों की सिंचाई करती बोरवेल

इसीलिए तटीय मैदानों में प्रचुर मात्रा में पानी होता है। यदि पाँच महीने अच्छी वर्षा होती है, वहाँ नदियों के पानी से कृत्रिम नहर सिंचाई होती है और वहाँ बहुत ही कम निचले स्तर पर प्रचुर मात्रा में भूमिगत जल हो सकता है। कुछ वर्षों से ऊपरी भूमि, जो नहर के पानी से आसानी से नहीं सींची जा सकती, वहाँ बोरवेल के द्वारा भूमिगत जल का उपयोग बढ़ गया है।

- क्या आपके क्षेत्र में जून से अक्तूबर महीनों के बीच वर्षा होती है ?
- क्या आपके क्षेत्र में खेती के लिए पर्याप्त वर्षा होती है ?
- कृष्णा डेल्टा के मैदानी क्षेत्र और आपके क्षेत्र में पानी की उपलब्धता की तुलना कीजिए ?

तूफान और बाढ़

कृष्णा जिला हमारे राज्य के अधिकतर बाढ़ प्रवृत्त जिलों में से एक है। हर कुछ वर्षों में जब इन क्षेत्रों में बहुत भारी वर्षा होती है, तब बाँध भर जाते हैं। बड़े बाँधों से अतिशय जल छोड़ा जाता है। तब नदी के साथ-साथ बाढ़ का पानी गाँव के निचले भागों में भी पहुँच जाता है। यह विनाशकारी और उत्पादकारी दोनों हो सकता है। बाढ़, तूफानों के कारण भी आती है। जो तेज हवाओं के साथ समुद्र से भारी वर्षा लाती है, जो पेड़ों और झोपड़ियों को गिरा देती है। पेनमकुरू भाग्यशाली है, क्योंकि यह ऊँची भूमि पर है और 1997, 2006 या 2009 के सबसे विनाशकारी बाढ़ के समय भी अधिक प्रभावित नहीं हुआ।

- क्या आप सोच सकते हैं कि बाढ़ विनाशकारी और उत्पादकारी दोनों क्यों हो सकती है ?
- अतीत में आयी महत्वपूर्ण बाढ़ों और उस समय क्या हुआ, इस बारे में अपने बुजुर्गों से पता कीजिए।
- बाढ़ों और तूफानों से होने वाली क्षतियों को हम कैसे कम कर सकते हैं ?

उपज

धान की खेती विस्तृत रूप से पूरे तटीय मैदानों में विशेष रूप से कृष्णा जिले में की जाती है। अधिकतर भूमि, विशेषकर निचले क्षेत्रों में (पल्लम) धान उगायी जाती है। पौधाघर में धान मानसून फसल जो 'सलवा' कहलाती है, जून/जुलाई के महीनों में बोई और फिर अन्यत्र रोपण की जाती है। वे प्रायः अधिक पैदावार वाले प्रकार का धान उगाते हैं। जैसे एम.टी.यू. 2716, स्वर्ण और बी.पी.टी.। इसकी उत्पादन अक्तूबर और नवंबर के आस-पास की होता है। मुख्य खेती के कार्य हल जोतना, भूसे से अनाज अलग करना, ढुलाई का काम, आदि ट्रैक्टर से किये जाते हैं। अन्यत्र रोपण का कार्य अभी भी मुख्य रूप से

SCERT TELANGANA

चित्र 3.8 हल्दी, गन्ना और केले के खेत

पुरुष और औरतें दोनों के द्वारा मिलकर किया जाता है। दिसंबर के महीने से वे 'ढ़ालवा' नामक फसल उगाते हैं। यह या तो धान या दाल की फसल होती है।

पिछले कुछ वर्षों से कई किसान धान के स्थान पर गन्ने की खेती कर रहे हैं। गन्ना खेतों में नौ महीनों से एक वर्ष तक रहता है और इसकी उत्पादन फरवरी-मार्च के आस-पास होती है। तब अगले वर्ष द्वितीय फसल के लिए यह फिर से उगाया जाता है। इन खेतों को पूरे साल देखभाल की आवश्यकता होती है और यह कार्य मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा किया जाता है।

ऊपरी भूमि में गाँव वाले हल्दी, रतालू और केले की खेती करते हैं। वर्षा के आने के साथ ही ये बोये जाते हैं और फरवरी-मार्च में इसकी पैदावार काटी जाती है। गन्ना, हल्दी, रतालू और केले जैसी फसलें बाजार में बेचने के लिए उगायी जाती हैं और गाँव में उपयोग में नहीं लायी जाती हैं।

पुराने समय में पेनमकुरू के किसान ऊपरी भूमि पर मसूर, मूंग और जवार-बाजरा की खेती करते थे। इसके लिए अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती। तथापि आजकल इन फसलों के बदले सब्जियों और गन्ने की खेती की जा रही है, जिसके लिए सिंचाई आवश्यक है।

सब्जियाँ

इस गाँव के ऊपरी भाग (मेरका या गरूवू भूमूलू) सब्जियाँ उगाने के लिए अनुकूल है। निचली भूमि में यदि धान की दूसरी उपज के लिए पर्याप्त जल नहीं है, तब वे सब्जियों की खेती करते हैं। प्रायः वे बैंगन, भिंडी, ढोंडकाय (धरकिन्‌स) रिजगाकद्दु और पत्तागोभी की खेती करते हैं। ये सब वय्युरू के रैतू बाजार में बेची जाती है। ग्रीष्मकाल के समय किसान अपने खेतों का उपजाऊपन बढ़ाने के लिए 'जिलुगु' या 'पिल्लीपेसरा' की खेती करते हैं। ये लेगूमिनस हरी खाद वाली फसल होती है, जो मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ाती है। 30 से 40 दिनों के बाद ये फसलें फिर से मिट्टी में जोती जाती है।

बाग

कृष्णा नदी के किनारे और पेनमकुरू के ऊपरी भागों में हम कई फलों के पेड़ और अमरूद, सपोटा (**चीकू**), पपीता के बगीचे देख सकते हैं। किसानों ने हमें बताया कि नदी के समीप की मिट्टी में अधिक रेती होती है। मिट्टी में नमी को बनाये रखने की क्षमता बहुत कम होती है। इसलिए धान जैसी फसल रेतीली मिट्टी में ठीक से नहीं होती। फल के पेड़ अच्छी तरह से उगते हैं, क्योंकि उनकी जड़ें मिट्टी में गहराई तक पहुँचकर पानी ग्रहण करती हैं। इसीलिए नदी के समीप की भूमि फलों के पेड़ उगाने के लिए उपयुक्त है।

सिंचाई, बाजार और बदलती फसलें

हमने देखा है कि खाद्यान्न उगाने में बदलाव आया है, जैसे जवार-बाजरा, धान और दालों के बदले नकदी फसलें जैसे गन्ना, सब्जी, फल और हल्दी। यह सिंचाई की वृद्धि से

SCERT TELANGANA

संभव हो सका, क्योंकि इन फसलों को अधिक पानी की आवश्यकता होती है और दूसरी वस्तुओं जैसे बीजों और खाद की खरीदी के लिए ऋण की उपलब्धतता से भी संभव हुआ।

- आप क्यों सोचते हैं कि यह परिवर्तन हो रहा है ?
- किस प्रकार यह किसानों के लिए लाभदायक है ?
- क्या यह भी कुछ समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है ?

भूमि स्वामित्व, कारतकारी

पेनामकुरू में लगभग 750 परिवार रहते हैं। इनमें से 10 परिवारों के पास 10 एकड़ या इससे अधिक भूमि है। लगभग 150 परिवारों के पास 5 एकड़ भूमि है और शेष परिवारों के पास कोई भूमि नहीं है। भूमि संपन्न किसानों की भूमि में या तो इनकी पट्टेदारी होती है या उनके खेत में ये मजदूरों के रूप में काम करते हैं।

- पेनामकुरू में मिट्टी के प्रकार है– (सही उत्तर पर निशान लगाइए)

  अ. रेतीली/पथरीली

  आ. रेतीली/चिकनी मिट्टी

  इ. काली/रेतीली
- निम्न में से कौनसा कथन सही है–

  अ. रेतीली मिट्टी नमी को सोखती है

  आ. काली मिट्टी अधिक नमी को सोखती है

  इ. काली–रेतीली मिट्टी नमी को सोखती है
- पेनामकुरू के किसान ____________ मिट्टी में धान उगाते हैं।
- फलों के बाग कृष्णा नदी के किनारे पर हैं, क्योंकि ____________
- यदि आप गांव में रहते हैं, बोरवेल की गहराई क्या है ? पानी तक पहुँचने के लिए आप किन परतों को खोदेंगे ?
- आपके क्षेत्र में भूमि की सिंचाई कैसे होती है ?

घर

चित्र 3.9 रतालू की फसल काटते मजदूर

इन गाँवों में अधिक संख्या में व्यवसायों और जातियों का पालन करने वाले लोग करते हैं। मुख्य गाँवों में केवल भू-स्वामित्व वाले लोगों का निवास होता है। दूसरे लोग नहरों के किनारे पर पास के छोटे गाँवों में और गाँव के दक्षिण में रहते हैं। गांव के बीच में हमें किराने की दुकानें, बैंक, आर.एम.पी. डॉक्टर, मेडिकल दुकानें, वेल्डिंग की दुकानें, नाई की दुकान, नाश्ते, आदि की दुकानें मिलती हैं।

यहाँ पर गाँव में घरों और अन्य भवनों के चित्रों का संग्रह है। नीचे दिये गये चित्रों को देखिए और उनका वर्णन कीजिए। छतों, दीवारों, चाहरदीवारी, आदि के बीच के अंतरों और समानताओं को बताइए।

चित्र 3.10 किसानों के घर

चित्र 3.11 झोपड़ी

चित्र 3.12 छोटे किसानों के घर

चित्र 3.13 सड़कें और घर

पशुपालन

गाँव की संपूर्ण भूमि पर खेती की जाती है और वहाँ पर जानवरों के चरने के लिए अधिक भूमि नहीं होती है। इसीलिए केवल कुछ बैल, गाय, भैंस और भेड़ खेतों में काम करने तथा अन्य उद्देश्यों के लिए पाले जाते थे। आपके विचार में वे जानवरों को क्या खिलाते होंगे?

टोकरी की बुनाई, सुअर पालन और मछली पकड़ना

बंदर नहर के किनारे 20-30 टोकरियों की बुनाई करने वाले परिवार रहते हैं। वे काम के लिए इस गाँव में आये थे। टोकरियाँ बनाना, चूहों को पकड़ना और सुअरों को पालना उनके मुख्य व्यवसाय थे। जगन्नाथ नंचरय्या 30 वर्ष पहले यहाँ आकर बस गये थे। उसने टोकरियाँ बनाने के लिए नहरों के किनारे से खजूर के वृक्ष की छड़ियाँ एकत्रित कीं। वह और उसकी पत्नी प्रतिदिन 5-6 टोकरियाँ बनाते थे और पास के गाँवों में बेच देते थे। उनका पड़ोसी कट्टा शिवय्या टोकरी के पिंजरों की सहायता से मछलियाँ पकड़ता था/ और उसे नजदीक के गाँवों में बेच देता था।

मुर्गीपालन

गाँव में पूर्ण मशीनीकृत मुर्गी पालन केंद्र है। पानी की आपूर्ति निप्पलों द्वारा और भोजन की आपूर्ति कन्वेयर से की जाती है। इस मुर्गी पालन केंद्र में लगभग 80,000 मुर्गियाँ हैं, जो प्रतिदिन 50,000 तक अंडे देती है। ये अंडे विजयवाड़ा और अन्य राज्यों जैसे सम और बिहार को एजेंटों द्वारा भेजे जाते हैं। मुर्गी ड्रॉपिंग को पासके क्षेत्रों के किसानों को मछली के भोजन के रूप में बेचा जाता है।

चावल मिल

इस गाँव में चावल की मिल है। इस चावल मिल के मालिक किसानों से धान खरीदते हैं और चावल तैयार करके अन्य स्थानों पर बेचते हैं।

मुर्गी पालन और चावल मिल कृषि पर आधारित हैं, इसीलिए ये कृषि उद्योग कहलाते हैं। यह मैदानों की एक आम विशेषता है। वे आसानी से आवश्यक कच्चा माल अपने उत्पाद के लिए बाजार प्राप्त कर लेते हैं। उन्हें दूरस्थ बाजारों में भिजवाने के लिए भी आसानी होती है।

चित्र 3.14 मुर्गी पालन केंद्र

चित्र 3.15 चावल मिल

चित्र 3.16 टोकरी बनाना

सड़क परिवहन और बाजार

इस क्षेत्र में सड़क जाल बहुत विकसित है। जो बहुत से शहरों और नगरों से संबंध स्थापित करता है। यह उत्पाद के व्यापार में सहायक होता है।

इस गाँव के किसान पासके शक्कर के कारखानों को गन्ने बेचते हैं, जो वुयुरु में स्थित है। वुयुरु और विजयवाड़ा में स्थित 'रैतु बाजार' को सब्जियाँ और केले भेजते हैं। दलालों के द्वारा धान खेतों में ही बेचा जाता है।

चित्र 3.17 रैतु बाजार को सब्जियां और फल भेजना

मजदूरों की उपलब्धता

इस गाँव के बहुत से लोग इस गाँव में ही नौकरी करते हैं। कुछ कृषक मजदूर समीप के गाँवों से भी आते हैं।

10वीं और उससे अधिक पढ़ने वाले युवक इलेक्ट्रिशियन, ऑटो ड्राइवर और मैकेनिक का काम कर रहे हैं।

मुख्य शब्द

पर्वत
पठार
मैदान
तट
तूफान
बाढ़

अपना ज्ञान बढ़ाइए

1. पेनमकुरु गाँव में किस प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं? (AS_1)
2. मैदानों में रहने वाले गरीब और भूमिहीन परिवार किस तरह रोजी-रोटी कमाते हैं? (AS_1)
3. तुम्हारे विचार में पेनमकुरु की तरह मैदानी गाँवों में खेती में क्या कठिनाइयाँ आती हैं? (AS_1)
4. क्या आपके विचार में गाँव के किसानों की यह सही योजना होगी कि सिर्फ गन्ने या हल्दी की खेती की जाए? अपने तर्क बताइए। (AS_4)
5. कृष्णा डेल्टा के समान मैदानों में बहुत घनी आबादी और उसमें बहुत अधिक संख्या वाले लोग रहते हैं। (AS_1)
6. तेलंगाना और आंध्रप्रदेश के मानचित्र में विभिन्न भू-रचनाओं को दर्शाकर, रंग भरिए। (AS_5)

   अ) मैदान-हरा आ) पठार-पीला इ) पर्वत-बैगनी रंग
7. दस्तकारी कार्य करनेवालों को सरकार से कैसी सहायता मिल रही है। (AS_6)
8. तेलंगाना का नैसर्गिक रूप का विवरण दीजिए। (AS_1)

SCERT TELANGANA

अध्याय

4

डोकूर - पठार पर एक गाँव

(Dokur - A Village on the Pla-teau)

पिछले अध्याय में हमने कृष्णा डेल्टा में प्रचुर पानी व उर्वर भूमि वाले गाँव को देखा है। कल्पना कीजिए कि, जिस गाँव में वर्षा की कमी, पानी की ज्यादा सुविधा न होना, उर्वर भूमि न हो, उस गाँव में जीवन कैसा होगा? क्या अंतर होगा? कक्षा में चर्चा कीजिए।

दक्खिनी पठार

तीसरे अध्याय के मानचित्र-1 में तेलंगाना राज्य को देखिए। आप यह जान लेंगे कि तेलंगाना राज्य मुख्य रूप से पठार है। उसी अध्याय के मानचित्र-2 से इसकी तुलना करें। यह देखेंगे कि यह प्रांत विस्तृत दक्कन पठार का भाग है। दक्कन पठार के एक ओर पश्चिम की घाटियाँ, दूसरी ओर पूर्वीघाटियाँ हैं। दोनों ओर के समुद्र तटीय मैदान से दक्कन का पठार ऊँचाई पर है। इस पठार में पश्चिम से पूर्व की ओर ढलान है। इस प्रांत को समझने के लिए महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश राज्यों में बह रही गोदावरी नदी के मार्ग का अवलोकन कीजिए।

कृष्णा डेल्टा के प्रांतों की भाँति समतल न होकर, पठार में छोटे पहाड़, पर्वत मालाएँ, पहाड़ होते हुए उनके बीच समतल भूमि रहती है। फलस्वरूप आवास प्रदेश, सिंचाई की भूमि का उपयोग कम परिमाण में ही संभव है। यह प्रांत पथशीला होता है और मिट्टी की परत बहुत पतली होती है। पठार का और प्रमुख अंश वर्षा की कमी है। इस तरह के कष्टदायक प्रांतों में लोग किस तरह जीवनयापन करते हैं, हमने जानना चाहा। तेलंगाना के पठार में महबूबनगर जिले का डाकूर गाँव जाकर अध्ययन किया।

डोकूर गाँव

डोकूर गाँव देवरकद्र मंडल में है। यह महबूबनगर शहर से लगभग 25 कि.मी. की दूरी पर है। इस गाँव का पुराना नाम डाकूर था। लुटेरा अर्थ वाले 'डाकू' शब्द से यह नाम पड़ा। पहले कभी इस गाँव की चारों ओर के धने जंगलों की झाड़ियों में आसानी से छुपने की सुविधा के कारण लुटेरों की टोलियां यहाँ रहती थीं। अब इस गाँव को डोकूर कहते हैं।

चित्र 4.1: डोकूर गाँव का प्रवेश द्वार

SCERT TELANGANA

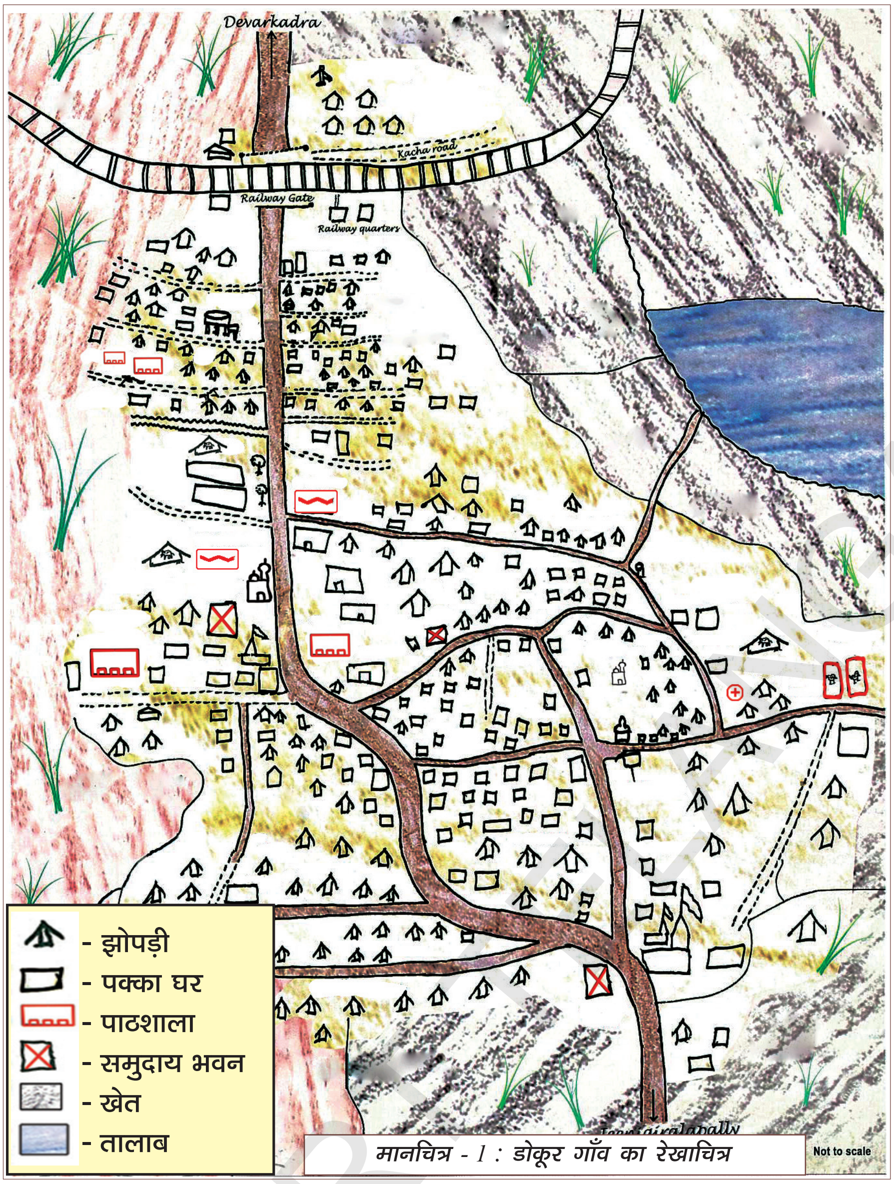

मानचित्र - 1 : डोकूर गाँव का रेखाचित्र

- डोकूर गाँव के रेखाचित्र का मानचित्र देखिए। इसके आधार पर घरों के प्रकार, यातायात साधनों का वर्णन करें। इसको अपने गाँव या अन्य गाँव से तुलना करें जिसे आप जानते हैं।
- जब हम गाँव में गये थे तब तालाब सूखा हुआ था। फिर भी उसके नीले रंग में दर्शाएँ हैं। तालाब के सूखने के क्या कारण हो सकते हैं?

वातावरण, वर्षा

फरवरी से जून तक रहनेवाले गर्मी के मौसम में तापमान 40^0 सेल्यिसय तक रहता है। नवंबर से जनवरी के बीच सर्दी के मौसम में दिन का तापमान 20^0 - 30^0 सेल्यिस के बीच रहता है। जून के अंत से अक्तूबर तक यहाँ वर्षाकाल रहता है। इस प्रांत में वर्षा बहुत कम होती है, क्रम छोड़कर भी वर्षा नहीं होती। एक साल से दूसरे साल की वर्षा में बहुत अंतर होता है। इसीलिए पहले ही हम वर्षा का अनुमान नहीं कर सकते। वर्षा के अभाव के कारण अकाल जैसी परिस्थिति उत्पन्न होती है। फ़सल सूख जाती है। कम वर्षा के कारण तालाब नहीं भरते, भू-गर्भ जल का स्तर नहीं बढ़ता। आदमियों और जानवरों के लिए पेयजल की समस्या भी खड़ी हो जाती है। सिंचाई जल की सुविधा न होने के कारण कृषि कार्य करना बहुत कष्टदायक हो जाता है। ऐसे उलझे वर्षों में लोगों को दूसरे रोज़गार के मौकों को ढूँढना पड़ता है। इस तरह कम वर्षा की दर वाले वर्ष बार आने से इस प्रांत को अकाल ग्रस्त प्रांत कहते हैं।

SCERT TELANGANA

- इस प्रांत में कृष्णा डेल्टा प्रांत की वर्षा दर में क्या अंतर है?
- अपने प्रांत में पिछले दस सालों में वर्षा दर जिस पर निर्भर हो, क्रम छोड़कर हुई होगी। अपने बड़ों से पूछकर जान लीजिए।

मृदाएँ (भूमि)

इस गाँव में आधी कृषि भूमि लाल मृदा की है। ये मृदाएँ ज्याद गहरे नहीं होते और ना ही उपजाऊ होते हैं। फसल ने विकास केलिए आवश्यक पोषक पदार्थ की इस मृदा में कमी है। इनमें रेत का प्रतिशत अधिक होने के कारण जल के ज्यादा रोक नहीं सकते, जिस के कारण फसल की जड़े मजबूत, गहरे नहीं बढ़ते। एक फ़सल की सिंचाई के बाद इस मृदा के खोये हुए पोषक पदार्थों को स्वतः फिर प्राप्त करने दूसरी फसल बोये बिना कुछ समय के लिए वैसे ही छोड़ देना पड़ता है।

काली मृदा वाले प्रांत में इनकी गहराई 60 से.मी. होती है। इस गाँव में बहुत कम परिमाण में कृषि भूमि काली मृदावाली है। पठार के दूसरे प्रांतों की रेगड़ उतनी उपजाऊ नहीं है, लेकिन काली मृदा फसल के लिए उपयोगी है। ये काली मृदाएँ उपजाऊ, होती हैं, अपने अंदर आर्द्रता को अधिक समय तक जमा रखती हैं। इसलिए बहुत समय तक फसल होती रहती है। ये मृदाएँ जब आर्द्र होती हैं। तब चिकनी, जब सूख जाती है तब मजबूत हो जाती हैं। ये काली मृदाएँ बहुत उपजाऊ होती हैं।

बंजर और पथरीली ज़मीन इस गाँव के भूमि में 30 प्रतिशत तक है। इसमें ज्यादा पत्थर होने के कारण सिंचाई के योग्य नहीं है।

जलसंसाधन-तालाब और जलाशय

डोकूर गाँव का प्रधान जल स्रोत बड़ा तालाब है। डोकूर गाँव से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित देवरकद्र, तालाब भरने पर ही इस तालाब में पानी पहुँचता है। डोकूर का बड़ा तालाब में पानी पहुँचता है। डोकूर का बड़ा तालाब भरने के बाद इसके निकट के चाकलि कोयिकुंटा, वानिवंपु, बड़िवंपु जलाशयों में पानी पहुँचता है। अर्थात् माला में मोतियों की भाँति ''श्रृंखलाबद्ध तालाब है'' हैं।

बहुत ज़माना पूर्व इन तालाबों की खुदाई हुई। क्योंकि इससे वर्षाकाल के बाद भी बारिश में पानी को एक व्यवस्थित रूप में प्रयोग कर सकें। कम वर्षाकादर प्रांत होने के कारण बारिश के पानी को यथासाध्य संग्रह करके रखने के लिए इस प्रकार के श्रृंखलाबद्ध तालबों की पद्धति को आविष्कार हुआ। इन तालाबों के कारण अड़ोस-पड़ोस कुँओं में जल का स्तर बढ़ जाता है।

समूचे तेलंगाना में इस 'श्रृंखलाबद्ध तालाबों' की पद्धति देखेंगे। इस तरह के निर्माण के लिए पठार किस तरह अनुकूल होते हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

चित्र 4.2: पथरीली बंजर ज़मीन, चारों ओर पहाड़

SCERT TELANGANA

चित्र 4.3: पानी से भरा तालाब और उसमें खरपतवार देखिए

उतना ही नहीं, तालाब की एक ओर का हिस्सा कब्जाग्रस्त हो रहा है।

गाँव वयस्क किसान वेंकट रेड्डी ने अपने बीते दिनों का स्मकरण करते हुए कहा कि ''पहले हर परिवार से एक व्यक्ति आकर, तालाब की मिट्टी निकालना, घासफूर निकालना जैसे कार्य करता था। सब मिलकर तालाब में मछली पकड़ते थे। पकड़ी गई मछलियाँ गाँव के बीच एक जगह दालकर सब बाँट लेते थे।''

आजकल धान की फसल की सिंचाई तालाब के पानी से न होकर, उसके नीचे डाले गए नल कूपों के पानी से हो रही है। कभी इस तालाब से 400 एकड़ ज़मीन की सिंचाई होती थी। सभी वर्गों के लोगों के लिए यह तालाब उपलब्ध था। आजकल अधिकर भूमि की सिंचाई नलकूपों पर निर्भर है।

- पहले तालाबों की व्यवस्था कैसे काम करती थी? पानी का संग्रह बनाए रखने, सिंचाई के पानी, भूगर्भ जल स्तर को बनाए रखने में ये कैसे सहायक होते थे?
- 'श्रृंखलाबद्ध तालाबों' की व्यवस्था आजकल लाभदायक स्थिति में क्यों नहीं हैं?

कुएँ, नलकूप

गाँव में ऐसे कुँए थे जिसमें 40, 60 फीट के अंदर पानी होता था। लेकिन थे कुएँ आज सूख गए हैं। कम वर्षा वाला प्रांत होने के कारण, तालाब खराब होकर उनसे पानी ज़मीन में न उतरने से इन कुओं में पानी नहीं हैं। आज कल लोग कुँए नहीं खुदवा रहे हैं।

पठार प्रांत में ज्यादा गहराई में भूगर्भ जल नहीं रहता है। लेकिन आजकल हर कोई नलकूप चाह रहे हैं। कुछ ही नलकूपों में पानी निकलने की संभावना के कारण पानी के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। हर कोई नलकूप खोदने के कारण कुछ दिनों से भूगर्भ जल और कम होता जा रहा है। कभी 100 -150 फीट पर पानी था, अब कुछ जगह 300 फीट, और कुछ प्रांतों में 300 फीट और कहीं 500 फीट तक खोदना पड़ता है। नलकूपों की खुदाई खर्चीला है, निम्न उदाहरणों से पता चलता है कि इनमें विफ़ल होने की संभावना ज्यादा है।

मोगलन्ना नमक छोटे किसान ने बताया है कि 'नलकूप की खुदाई में एक लाख का खर्च होता है।' उसने चार नलकूप खुदवायें जिसमें से एक में ही जल उपलब्ध हुआ। जिससे केवल एकड़ ज़मीन की सिंचाई होती है। उसी तरह गाँव के बड़े किसान नरेंदर रेड्डी ने बताया कि 'उन्होंने अपनी 20 एकड़

चित्र 4.4: नलकूप द्वारा पहुँचता हुआ सिंचाई पानी

SCERT TELANGANA

ज़मीन में 15 नलकूप खुदवाए जिनमें से केवल दो में पानी निकला।

नलकूप खर्चीला है, विफल होने की संभावना ज्यादा रहने पर भी सभी किसान इस पद्धति को अपना रहे हैं। पहले जब तालाबों की व्यवस्था अच्छी थी तब तालाब के नीचे वाली भूमि से, कुओं से छोटे किसानों को अच्छे अवसर उपलब्ध थे। लेकिन अब पूंजी लगाकर बहुत अंदर से भूगर्भ जल प्राप्त करने से केवल बड़े किसान ही लाभ उठा सकते हैं।

- इस गाँव में सिंचाई सुविधा में आए बदलाव पर चर्चा कीजिए।
- मैदानी क्षेत्रों के गाँव में सिंचाई सुविधाओं की पठारी गाँव में उपलब्ध सिंचाई सुविधाओं से तुलना कीजिए।
- इस गाँव की सिंचाई सुविधाओं को अपने गाँव से तुलना कीजिए।

कृषि-फसलें

डोकूर गाँव के किसान, कपास, मूँगफली, एरंडी, धान, बाजरा, लोबिया, अरहर जैसी फसलें उगाते हैं। पहले लोग प्रधानतया खाने की फसल में तिलहनों को उगाते थे। काली रेगड़ में कपास उगाते थे। लाल मृदा में मूँगफली, एरंडी बोते थे। जंगली सुअरों की समस्या के कारण मूंगफली की सिंचाई परिमाण कम करके एरंडी की बुआई कर रहे हैं। दुमट मिट्टी में बाजरा उगाते थे। अरहर, लोबिया की फसलें दूसरी फसलों के साथ मिश्रित खेती के रूप में सिंचाई कर रहे हैं।

भूगर्भ जल से स्तर में ह्रास-समस्या की गंभीरता।

इस पठारी प्रांत के किसाने व्यापारी फसलें उगाने के लिए अधिक नलकूपों की खुदाई कर रहे हैं। वर्षा से प्राप्त जल से भी अधिक जल का उपयोग इन नलकूपों द्वारा हो रहा है। फलस्वरूप वर्ष में कुच ही दिन बाद कुओं में पानी कम हो रहा है। नलकूपों का पानी सुख जा रहा है। कारण पता करके चर्चा कीजिए। इससे निपटने के क्या आय हो सकते हैं।

बड़ा तालाब और संपेंग जलाशय के पानी में धान की सिंचाई होती है। जलाशय में गड्ढे खोदकर मोटरों की सहायता से पानी पहुँचाया जाता है। अगर जलाशय सूख जाए तो धान की फसल भी सूख जाती है।

अक्तूबर-जनवरी महीनों के बीच नलकूपों के आधार पर धान, मूँगफली की सिंचाई होती है इसे रबी के फसल कहते हैं। किसानों का कहना है कि एक एकड़ में 20-30 किंटल की धान की उपज होती है। रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाओं की कीमतों बढ़ने से, हारवेस्टरों के उपयोग से पिछले दशकों से कृषि खर्च बढ़ रहा है। परंपरागत खाद का उपयोग कम हो गया है।

- इस गाँव के वर्षाकालीन खरीफ़ की फसलों, रबी फसलों को पहचानिए।
- मूंगफली फसल की सिंचाई में उत्पन्न क्या समस्याएँ हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।

फल-वाटिकाएँ

डोकूर के कुछ किसानों के पास आम और संतरे की फल वाटिकाएँ हैं। इन फसलों के लिए धान की फसल से भी कम जल की आवश्यकता होती है। मूंगफली की फसल के अनुकूल भूमि में ही इन्हें उगाया जा सकता है। इन फल-वाटिकाओं में रबी में मूंग फली की सिंचाई होती है। इस प्रांत के बड़े किसान सिंचाई का पानी पहुँचाने छिड़काव (स्प्रिंकिल्स) सिंचाई पद्धति का अनुसरण कर रहे हैं।

चित्र 4.5: छिड़काउ सिंचाई वाल संतरे का बाग

क्या? डोकूर में भूमिका उपयोग सुस्थिर है?

पर्यावरण वेत्ताओं का विश्वास है कि, हमारी भूमि का उपयोग ऐसा करें जो आने वाली पीढ़ियों तक उपजाऊ रहे। हमें सुस्थिर भू-उपयोग पद्धति का पालन करना चाहिए। अर्थात ज़मीन की उर्वरता की रक्षा करना, भूगर्भ जल का संरक्षम होना चाहिए। जंगल, चरागाह और सिंचाई भूमि के बीच संतुलन होना चाहिए।

- भूमि को उपजाऊ कैसे बनाया जा सकता है?
- गाँव में फसल की पद्धति का निर्णय किसान सब मिलकर लेना संभव है क्या?
- चरागाह, जंगल के उत्पादन किस तरह बांट लेते हैं।

अन्य रोजगार

केवल छह महीने तक ही कृषि कार्य मिलते हैं। इसलिए छोटे किसान कृषिकर्मचारी रोजगार के लिए शहर, नगरों की ओर देशांतर गमन कर रहे हैं। हैदराबाद ही नहीं दूसरे राज्य जैसे गोवा, महाराष्ट्र के पुणे जैसे प्रांतों को जाकर, फिर जून में वापिस आते हैं। कृषि से निर्दिष्ट अन्य का विश्वास न होने के कारण गाँव के किसान अपने रोजगार के लिए कृषि से हटकर दूसरे काम भी करते हैं।

पशुपालन

डोकूर गाँव के कुछ किसान पशुपालन भी करते हैं। सरकारी सहकारी समितियों को दूध बेचते हैं। दूध में रहने वाली चिकनाई के प्रतिशत के आधार पर उसकी कीमत मिलती है। किसानों ने बताया कि लीटर के लिए 35 से 40 रुपये मिलते हैं। दूध के लिए भैंसों को पाला जाता है।

डोकूर में कम भूमि रखनेवाले 20 परिवार ऐसे हैं जो जीविका के लिए भेड़ों के पालन पर आश्रित हैं। वर्षाकाल में भेड़ गाँव की संयुक्त भूमि में चरते है। भेड़चरवाहा नागाराजु ने बताया कि ‘गाँव के अड़ोस-पड़ोस में जो रियल एस्टेट की ज़मीन है उसमें और मज्यम पहाड़ियों में भी भेड़ चराते हैं।

भिन्न कृषि पद्धति

हमने यह देखा है कि इस प्रांत की मृदाएँ उपजाऊ नहीं है। वर्षा का दर भी बहुत कम है इसलिए वर्षा पर निर्वाह नहीं हो सकता। अर्थात हर वर्ष मूंगफली जैसी फसल की सिंचाई के लिए रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करना, नलकूपों पर निर्भर रहना है। लेकिन तीसरी समस्या भी है। वह हैं बीमारियों और कीटाणुवों की समस्या। इनकी रोकथाम के लिए किसान कीमती कीटनाशक दवाइयों का उपयोग कर रहे हैं। इन पद्धतियों में बदलाव के लिए कुछ किसान कुछ समय से विचार कर रहे हैं। इनका विचार है कि जा सकता है। केवल एक ही व्यापारी फसल मूँगफली की ही सिंचाई न हो बल्कि कई खाद्य फसलों की बुआई हो। पुराने तालाबों की मरम्मत, पानी आनेवाली नहरों में सुधार लाकर खेतों को सिंचाई पानी पहुँचाने का प्रयत्न हो रहा है। कीटाणुओं की रोकथाम के लिए नीमरक्ष जैसे क्रमिक पद्धतियों का अनुसरण कर रहे हैं। अपना विचार, माता-पिता का विचार क्या है? घर में, कक्षा में चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

चित्र 4.6: चरतेहुए भेड़

गर्मी के मौसम में भेड़ों के साथ नलगोंडा, कर्नूल जिलों को जाकर उन्हें वहाँ चराते हैं। हमारी वार्षिक आप लगभग एक लाख है।

अन्य कार्य

डोकूर में कृषि से हटकर दूसरे कामों में लकड़ी का काम, लुहार का काम, चावल की मिल में जैसे काम हैं। गाँव में बढ़ई का काम करने वाले को परिवार हैं। घर बनाने के लिए दरवाजे, खिड़कियाँ छत जैसे ये लोग बनाते हैं। ये लोग अपने कामों के लिए बिजली के औजार उपयोग में ला रहे है। गाँव में बढ़ई का काम करने वाले प्रभाकराचारी ने कहा कि उसकी मासिक आय 3000 रुपये है। गाँव में लुहार का काम करने वाले दो, तीन परिवार हैं।कृषि में कान आने वाले वस्तुओं की मरम्मत के साथ ये लोग वेलिडंग भी करते हैं। इनके अतिरिक्त गाँव में एक चावल की मिल (Rice Mill) भी है।

सरकारी व गैर सरकारी नौकरी करने वाले 20 परिवार गाँव में हैं। वाहन चालक, वाहन किराये पर चलाने वाले भी हैं।

व्यापार-यातायात

उगाये गए धान को देवरकद्र के कृषि बाजार में बेचते हैं। कपास को जड़चर्ला और मदनपुरम (वनपर्ति रोड) में बेचते हैं। गाँव में कुछ तोल मशीन हैं। गाँव में बहुत सारे किसान इनका उपयोग करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि बाज़ार की तोल मशीन सही नहीं होते। किसानों की समस्याओं में से एक यह है कि व्यापारी लोग अपनी मर्जी की कीमत निर्धारित करते हैं। बहुत सारे किसान रासायनिक उर्वरक, कीटनाशी दवाइया और बीज खरीदने के लिए इन व्यापारियों पर निर्भर है। इसलिए उनके द्वारा निर्धारित कीमत पर फसल बैचवी पड़ती है। जिस वर्ष अच्छी फसल नहीं होती है उस वर्ष वे उधार न चुकाने के कारण किसान व्यापारियों के श्रृणी बने रहते हैं। कुछ लोगों को तो अपनी ज़मीन तक छोड़नी पड़ती है।

- किसान व्यापारियों पर क्यों निर्भर हैं? कौनसी व्यापार व्यवस्था किसानों को न्याय दिलायेगी? चर्चा कीजिए।
- गाँव में कृषि के अतिरिक्त और काम कैसे बढ़ा सकते हैं?
- क्या आपके गाँव में सरकारी रोजगार योजना है? इसके कारण किन परिवारों को लाभ हो रहा है?

चित्र 4.7, 4.8 & 4.9 : निम्न व्यक्तियों को काम पहचानिए, वर्णन कीजिए।

चित्र 4.7

चित्र 4.8

चित्र 4.9

SCERT TELANGANA

गाँव की बस्ती

2011 की जनगणना के अनुसार इस गाँव में 570 परिवार हैं। कुल जनसंख्या 3400 है। इनमें विभिन्न जातियों के 350 परिवारों के पास गाँव की ज़मीन है। बाकी 220 परिवार इस गाँव और पड़ोंसी गाँवों में मजदूरी के कामों पर निर्भर हैं। इनके पास आधे एकड़ से भी कम ज़मीन है। ये सब कृषि मज़दूर हैं। इससे पहले हमने जान लिया है कि ये काम के लिए देशांतर गमन करते हैं।

भूमि रखने वाले 350 परिवारों में 30 एकड़ भूमि का स्वामित्व रखनेवाले बड़े किसान तीन, चार हैं। अधिकतर किसानों के पास आधे से पाँच एकड़ भूमि है। अर्थात किसानों में अधिकतर छोते किसान हैं।

पहले घर मिट्टी की दीवारों से, छत ठीकरों सेबने होते थे। लकड़ी का उपयोग बहुत कम होता था। जो घर नए बना रहे हैं उनमें ईट, लोहा, कंकर का मिश्रण का उपयोग हो रहा है। करीब के खदानों से पत्थर मिट्टी आसानी से मिलते हैं। गरीब लोग घर की छत घास या अस्बस्तास से बनाते हैं। गाँव के लगभग ज्यादा घरों में बिजली की सुविधा है।

पहले डोकूर गाँव के लोग पेयजल के लिए कुँओं पर निर्भर थे। आजकल नलकपों से पानी टंकी में चढ़ाकर पेयजल नालियों के द्वारा घरों में पहुँचाया जा रहा है। दो दिन में एक बार यह पानी मिलता है। सरकारी संस्था द्वारा लगाये गए नल पाइप सभी घरों में हैं।

मार्ग - बाज़ार

गाँव में किराना, मुर्गी का मांस, तरकारी, पान आदि बेचने के बाज़ार हैं। महबूबनगर से डोकूर के लिए बस की सुविधा है। राष्ट्रीयराजमार्ग 44 को मिलाने वाली देवरकद्र से वनपर्ति को जानेवाली कुछ बसें डोकूर से होती हुई गुज़रती हैं। गाँव के लोग अधिकतर शेर आटों में यात्रा करते हैं। गाँव की उत्तर दिशा में डोकूर रेल्वे स्टेशन है। वहाँ तीन पैसेंजर गाड़िया रुकती हैं।

चित्र 4.10

चित्र .4.11

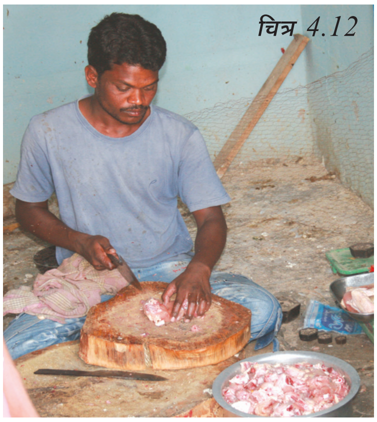

चित्र 4.12

चित्र 4.10, 4.11 & 4.12 : बाज़ार के कुछ दृश्य

SCERT TELANGANA

चित्र 4.13

चित्र 4.14

चित्र 4.13 & 4.14 : डोकूर के लिए यातायात साधन

मुख्य शब्द

पठार   तालाब   भूगर्भ-जल   भू-रचनाएँ   भेड़ पालन

अपना ज्ञान बढ़ाइए

1. कृष्णा डेल्टा के, पठारी प्रांत के नलकूपों की तुलना कीजिए। (AS_1)
2. पेनमकूर और डोकूर में फसलों की तुलना कीजिए। समानताएँ, भिन्नताएँ क्या है? (AS_1)
3. क्या? डोकूर जैसे गाँव में कृषि लाभदायक है? (AS_4)
4. इस प्रांत में यदि वर्षा की दर में बढ़ोत्तरी हो तो गाँव में कैसे परिवर्तन होंगे? (AS_4)
5. आपके गाँव में कौन-कौन से कृषि से हटकर कार्य हैं? एक के बारे में जानकारी एकत्रित करें। (AS_4)
6. निम्न के बारे में एक वाक्य में विवरण लिखिए। (AS_1)

क्र.सं.	अंश	डोकूर
1.	मृदाएँ	
2.	जल	
3.	फसलें	
4.	व्यापार	
5.	व्यवसाय	

7. 32वें पृष्ठ में पहला अनुच्छेद पर्यावरवेत्ताओं...हमारी...पढ़कर अपने विचार लिखिए। (AS_2)

परियोजना

आप पठारी प्रांत में रहते होंगे। भूमि का विभाजन मेट्टा, तरी दो तरह से होता है। परंपरागत रूप से मेट्टा भूमि में तिलहन, तरी में पानी की सिंचाई से धान की फसल होती है। अगर आप गाँव रहते हैं तो पता कीजिए कि गाँव में मृदाएँ कितने प्रकार की हैं। उन्हें आपके गाँव में क्या कहते हैं। कैसे वर्णन करेंगे? अपनी भाषा में मृदा का वर्णन कैसे करेंगे? एक तालिका बनाइए, इस गाँव में विभिन्न मृदाएँ इन विषयों में कैसे होते हैं लिखिए। पानी ग्रहण करने का गुण (ज्यादा, कम), पानी संजोये रखना (ज्यादा, कम) रेती का प्रतिशत (ज्यादा, कम) मृदा का रंग। डोकूर में बताए गए विभिन्न प्रकार की मृदाओं के बीच का भेद पहचानिए, उन्हें अपनी गाँव की मृदाओं से तुलना कीजिए।

अध्याय 5

पेनुगोलु - पहाड़ियों में बसा गाँव

(Kunavaram - A Village on the Hills)

पिछले दो अध्यायों में हमने तटवर्ती कृष्णा डेल्टा और सूखे पठारी क्षेत्रों में ग्रामीण जीवन का अध्ययन किया। इस अध्याय में हम और एक भिन्न पहाड़ी क्षेत्र के गाँव के जीवन का अध्ययन करेंगे। आप कभी पहाड़ी क्षेत्र में गये होंगे या आप वहाँ रहते होंगे। क्या आप एक पहाड़ के बारे में बता सकते हैं? वहाँ पर आप क्या पाते है? वहाँ के निवासी क्या करते हैं?

चित्र 5.1 बाइसन पहाड़ों का क्षेत्र - पेनुगोलु

पूर्वी पर्वत मालाएँ

तेलंगाना दकनी पठार का एक भाग है। इस पठार के एक ओर पूर्वी पर्वत मालाओं के हैं। तेलंगाना के पर्वत इन्हीं पूर्वी पर्वत मालाओं के हैं। ये जयशंकर जिले के पूर्वी सीमा में हैं। तेलंगाना का मानचित्र देखकर इन प्रांतों को दर्शाएँ। ये पर्वत छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, ओडीशा राज्यों में फैले हुए हैं।

पर्वतों में रहने वाले लोग सवरा, कोंडादोरा, गदब, गोंड, मन्नेदोरा, मुख दोरा, कोया आदि जनजातीय वर्ग के हैं। इन मूल वासियों की अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत है। बहुत सारे लोग वन उत्पादन के संग्रह शिकार पर अपनी जीविका कमा रहे हैं। इन लोगों को जंगल एवं मंगल की संपत्ति के बारे में अपार ज्ञान है। फिर भी आजकल ये वर्ग के लोग जीवन की विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं। कुछ समस्याओं के बारे में इस अध्याय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

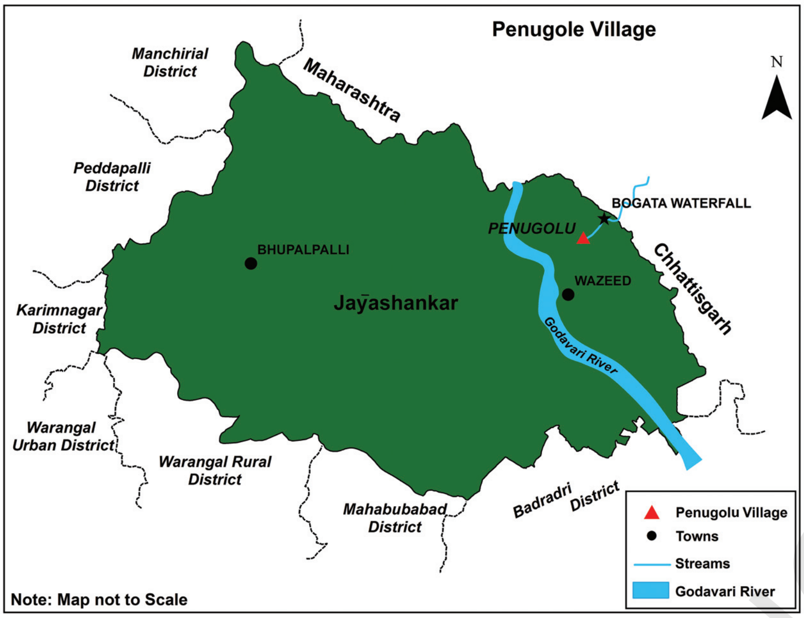

पेनुगोलु गाँव के बारे में जानना चाहते थे। इस प्रांत के बारे में अध्ययन करके, वहाँ की जनता से बात-चीत करके जो जानकारी प्राप्त किए हैं, वो यहाँ दी जा रही है।

वाजेड मंडल में गोदावरी नदी तटीय प्रदेश में पर्वतों पर पेनुगोलु है। (चित्र-1 देखिए) यहाँ कोया जनजातीय वर्ग के लोग रहते हैं। कोया का अर्थ 'पर्वतों में रहनेवाला अच्छा आदमी' ये लोग कोया भाषा में बात करते हैं। ये लोग पड़ोसी राज्य ओड़ीशा, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश के पर्वतीय प्रांतों में रहते हैं। बहुत सारे कोया लोग पर्वतों को छोड़कर आदिलाबाद, करीमनगर, वरंगल, पूर्वगोदावरी के कुछ प्रांतों में स्थिर निवासी बन गये। ऐसे लोग कोया भाषा में बात-चीत नहीं करते। ये लोग तेलुगु भाषा का उपयोग करते हैं।

इस गाँव के चारों और पहाड़ियाँ हैं। उत्तर में छत्तीसगढ़ का कर्रे पहाड़ी या नल्लपहाड़ी दक्षिण में वंक मामिड़ी पहाड़, पूर्व में कल्लुकुंटल पहाड़, पश्चिम में छोटा कुम्मरि लंकार, बड़ा कुम्मरि लंका हैं। ऊपर के चित्र में इन पहाड़ों को दर्शाएँ।

उत्तर में नल्लपहाड़ से बहनेवाली नल्लम देवी नहर जहाँ गोदावरी नदी में मिलती है वहाँ वाजेड मंडल है। वाजेड की पहाड़ियों के नीचे स्थिति गुम्मडि दोड्डे गाँव पहुँच गये। यहाँ से पैदल रास्ता पहाड़ों पर जाता है। यह रास्ता पतला और ढलान पर है, अगर किसी का पैर फिसल जाय तो वो खाई में गिर जाएंगे। रास्ते में चीकुपल्ली के पास प्रसिद्ध बोगता झरने को देखा। जैसे ऊपर चढ़ते गए गहरे जंगल, पेड़ काटकर साफ़ की गई ज़मीन इन पहाड़ों में जगह-जगह दिखाई दी। लाल जैसे ऊपर चढ़ते गए गहरे जंगल, पेड़ काटकार साफ़ की गई ज़मीन दिखाई दी। ऐसी साफ भूमि उन पहाड़ों में जगह-जगह दिखाई दी। लाल मिट्टी वाली यह भूमि उतनी उपजाऊ नहीं है। उस खेत में बड़े-छोटे पत्थर ज्यादा हैं। मंडल केंद्र वाजेडु से यह 20 कि.मी. की दूरी पर है।

चित्र 5.2: बोगाता झर

SCERT TELANGANA

चित्र 5.3 वनों के बीच वृक्षहीन क्षेत्र

आग लगा दी जाती है। बारिशें आने पर भूमि राख से भर दी जाती है। बारिश होने पर जून महीने में वे बीज बोते हैं या फसलों के बीज छिटका (इधर-उधर डालना) देते हैं। वे ना तो कुदाली या हल का उपयोग करते हैं ना खाद का।

पोडु

कोया लोग पोडु नामक भिन्न प्रकार के फसल उगाते हैं। पहाड़ी क्षेत्रों में 'पोडु' पद्धति का प्रयोग प्राचीन काल से होता है। इसे झुमिंग खेती भी कहते हैं। इसका प्रयोग कोंडा रेड्डी जैसे जनजाती के लोग करते हैं। इसका प्रयोग आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी व्यापक रूप से होता है।

हर एक गाँव वाले खेती करने के लिए निर्दिष्ठ प्रांत रहते हैं। इस प्रकार से खेती करते समय वन भूमि के एक टुकड़े को साफ़ करके जला दिया जाता है। फिर इस स्थान पर कई वर्षों तक खेती की जाती है। और फिर से उसे वन उगने के लिए छोड़ दिया जाता है। फिर वे लोग दूसरे भाग के वृक्षों को काटकर भूमि पर कुछ वर्षों के लिए खेती करते हैं।

पहाड़ों में नवंबर के आस-पास बारिश बंद हो जाती है। कोया लोग दिसंबर में जंगल के कुछ क्षेत्रों में कुल्हाड़ी से साफ़ करके पेड़ के लट्ठों को सूखने के लिए कुछ महीनों तक खेतों में छोड़ देते हैं। अप्रैल या मई के महीनों में उनमें

हल का प्रयोग करने से मिट्टी की ऊपर सतह के बह जाने की आशंका होती है और ऐसा होने से भूमि अनुपजाऊ हो जाती है, इसी कारण ढलान वाले खेतों पर हल का उपयोग नहीं किया जाता। राख और सूखे पत्तों से भूमि उपजाऊ बनती है। किसान भूमि को बहने से रोकने का प्रयास करता है। सि जनजाति की प्रमुख फ़सल जवार, मक्का, मोटा अनाज, मूँग और अरहर जैसी दालों तथा बैंगन, तिल, हरी मिर्ची, अंबाड़ा भी उगायी जाती है। ये लोग फसलों को उगाने के लिए वर्षा पर आधारित होते हैं। इससे उन्हें लगभग छः महीने के लिए पर्याप्त अनाज मिल जाता है।

चित्र 5.4 लकड़ी की सहायता से बीज बोना

SCERT TELANGANA

ये खेत जंगल के पास होते हैं। इसलिए जानवर व पक्षी फसल पर आक्रमण करते हैं। कोया लोग मचान बनाकर दिसंबर तक फसलों की रक्षा करते हैं।

इसी प्रकार वे लोग पुनः उस खेत के टुकड़े पर खेती करते हैं, जो थोड़े समय के लिए छोड़ दिया गया था। पोडु भूमि पर 3 या 4 साल खेती करके कुछ साल तक छोड़ दिया जाता है और भूमि के दूसरे क्षेत्र में खेती की जाती है।

हम पहले पढ़ चुके कि 'पोडु' भूमि पर कुछ सालों तक खेती करके कुछ तक छोड़ दिया जाता है और भूमि के दूसरे क्षेत्र में खेती की जाती है। पहले लगभग 2 से ढाई एकड़ भूमि को खेती के लिए साफ किया जाता है। एक एकड़ 'पोडु' भूमि पर लगभग 250 किलो जवार उगता है। इस प्रकार प्रत्येक परिवार लगभग 600 किलो जवार के अतिरिक्त 150 से 250 किलो मोटा अनाज उगा लेता है। फिर भी आजकल केवल एक या डेढ़ एकड़ पर ही खेती की जा रही है, जिसके कारण अनाज कम मात्रा में उपलब्ध हो रहा है। जंगल का फैलाव कम होने के कारण 'पोडु' करके छोड़ दिया गया खेत को वे पहले से कम समय पर खेती (पोडु) करने वापिस आ रहे हैं। खेती के लिए मेड कल समय होने के कारण पहले जैसा उपजाऊ नहीं बन पा रही है।

- आजकल पोडु खेतों का क्षेत्र की कमी के कारण क्या है?
- क्या आपको ढलाऊ खेतों में खेती का कोई अन्य तरीका पता है?
- राख फसल उगाने में कैसे सहायता करती है?
- आपके क्षेत्र में भी जंगली जानवर खेतों पर आक्रमण करते हैं। लोग अपनी फसलों को बचाने के लिए क्या करते हैं?

पिछवाड़े में सब्जियों का बगीचा

झोपड़ियाँ बड़े स्थानों में बनी होती हैं। घर के चारों ओर बाँस की बाड़ लगायी जाती है। वे लोग भूमि को समतल बनाकर मिट्टी को उपजाऊ बनाने के लिए जैविक पदार्थ डालते हैं। यह उनका सब्जियों का बगीचा है। यही उनके खाद्य पदार्थों का मुख्य स्त्रोत है। इसमें मक्का, बीन्स, लौकी, हरी मिर्च, इत्यादि उगायी जाती है। कुछ लोग मुर्गीपालन करते हैं तो कुछ लोग भेड़, बकरी, कुत्ते पालते हैं।

चित्र 5.5 घर-घर के आसपास सब्जियों का बगीचा

चित्र 5.6 वनों में धनुष से शिकार

ये बाँस के अगले सिरे से ली जाती हैं। इनकी ऊपरी परत उतारने के बाद पकाया जाता है। ये बहुत स्वादिष्ट मानी जाती हैं। इन परिवारों का मुख्यतः आहार गर्मियों में ताटिकल्लु (ताड़ी नीरा) होता है। परिवार के सभी सदस्य मिलकर खेती का काम व जंगल में शिकारी आदि करते हैं। खेती व पशुपालन अधिकतर पुरुष करते हैं। वन उत्पादन का संचय तथा टोकरी बुनना आदि महिलाएँ व बच्चे करते हैं।

वे संता नामक साप्ताहिक बाजार में वस्तुओं को बेच देते हैं। इसमें मुख्य रूप से महुआ की बीज को बेचते हैं। इनसे प्राप्त धन का प्रयोग वस्त्र और अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए करते हैं।

वनोपज (लकड़ी के अलावा वन उत्पादन)

जैसा हमने देखा कि पोडु और सब्जी वाटिका से प्राप्त उपज परिवारों के लिए पूरे साल भर के लिए पूरी नहीं पड़ती। इसलिए वनों की उपज का संग्रह और शिकार करना इन लोगों के लिए आवश्यक हे। जंगल उनके लिए खाद्य पदार्थो का अच्छा गोदाम है और वे पूरे साल इस पर निर्भर रहते हैं। ये कबीले पूरे साल में अलग-अलग मौसम में अलग-अलग खाद्य पदार्थ जैसे फल, कंद, दालें, इत्यादि निश्चित समय में संचय करते हैं।

फसल पकने के समय व उसके कुछ समय बाद को छोडकर कोंडा रेड्डी कबीले की स्त्रियाँ जीवन निर्वाह के लिए जँगली खाद्य के सँग्रह में व्यस्त रहती हैं। शहद और बाँस की कलियाँ ये दो महत्वपूर्ण खाद्य उनके द्वारा संग्रह किए जाते हैं। वे बाँस की सीढ़ी की मदद से विशाल पेड़ों पर चढ़कर शहद एकत्र करती हैं। कोमल बाँस की कलियों को 'करि कोम्मुलु' कहा जाता है।

सूची बनाईए।

- आप कौनसा जँगली खाद्य पदार्थ खाते हैं ?
- क्या आपने कभी जँगल से कोई खाद्य पदार्थ एकत्रित किया है ? यदि किया है तो अपना अनुभव बताइये ?

पीने का पानी

इस क्षेत्र में नदी और कुएँ नहीं होते। चट्टानी क्षेत्र में कुएँ खोदना बहुत कठिन है। वे पीने का पानी नीचे दिखाए गए प्राकृतिक झरने जैसे स्त्रोत से लाते हैं। या ये छोटे झरनों के लिए मैदानी क्षेत्र में जाते हैं। गोदावरी नदी में

मिलने वाली धाराएँ बहती हैं। वहाँ से पानी लेने गाँव वालों को 30 मिनट चलना पड़ता है।

बाँस

जँगल में बहुत बाँस है। वे कबीले के जीवन का हिस्सा हैं। ये बाँस का उपयोग अपने लिए करते हैं तथा इसके अलावा टोकरियाँ, छन्नी, मुर्गियों के पिंजड़े बनाकर 'संता' में बेचते हैं।

बहुत से क्षेत्रों में पेपर मिल वाले इन लोगों से मिलों को बाँस की आपूर्ति करने का आग्रह करते हैं। यह रुपये प्राप्त करने का अतिरिक्त साधन है। प्रारम्भ में दाम कम दिये जाते थे, पर पिछले कुछ वर्षों में दाम क्रमशः बढ़ गये हैं। 150 रुपये प्रतिदिन मज़दूरी मिलती है।

बाँस की वस्तुएँ बेचकर प्राप्त किया धन से स्थानीय बाजार से चावल, कपड़े बर्तन जैसी चीजों के खरीदने में प्रयोग किया जाता है।

- बांस का उपयोग पेपर मिल में, जनजातियों के जीवन में इसके उपयोग में क्या अंतर है, चर्चा कजिए।

घर और निवास स्थान

नीचे दिखाए चित्र के अनुसार वे लोग मिट्टी, बाँस और घाँस से बने छेटे घरों में रहते हैं। घर का अगला हिस्सा जानवरों को रखने व बाँस का काम करने में उपयोगी होता है। पीछे सब्जी वाटिका होती है। घर के चारों ओर घरों के बीच दूरी होती है। व रक्षा कवच होती है।

पेनुगोलु में घर पहाड़ियों पर होते हैं। कुल मिलाकर यहाँ 32 परिवार रहते हैं।

चित्र 5.7: घर को पानी लाते हुए लोग

जनसँख्या 124 है। यह आवास अस्थायी होते हैं। कभी महामारी या किसी अन्य कारण से ये लोग अपनी बस्तियाँ कहीं और बसा लेते हैं।

- *पठार भूमि व पहाड़ों के निवास के बीच क्या अंतर व समानता होती है?*

रीति-रिवाज

पेनुगोलु वासी प्रकृति की पूजा करते हैं। त्यौहार भी ऋतुओं के बदलाव को सूचित करते हैं। वे पत्थर की मूर्ति की पूजा करते हैं जो इमली के पेड़ के नीचे रहती है इसे मुत्यालम्मा कहते हैं। वे कद्दु की भी

चित्र 5.8 बांस से बनी झोपड़ी

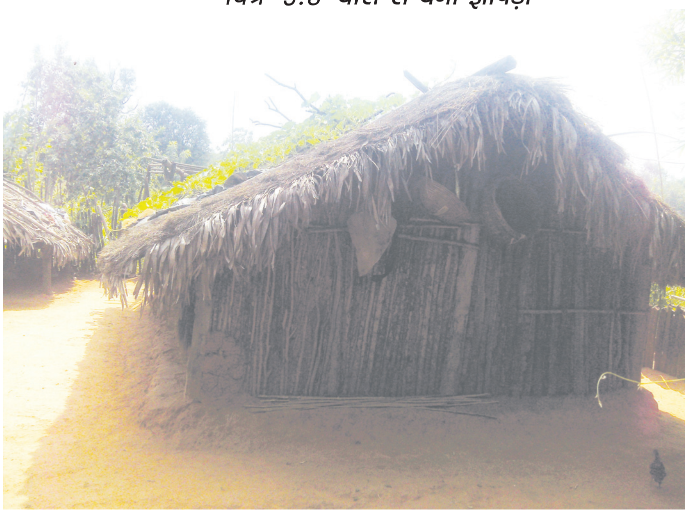

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरण 2018-19

पूजा करते हैं। वे एल्लानम्मपदम (भूमि पूजना) कोडतला त्यौहार (पेद्दला पंडुगा) भीमिली पंडुगा (फेस्टीवल ऑफ इप्प पूव्वू) आदि त्यौहार मनाते हैं। वे सितंबर में कोडतला त्यौहार मनाते हैं। हरा त्यौहार भी एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। सभी मुख्य कार्य जैसे खेती, फसल काटना, फलों का संचयन, इत्यादि इस त्यौहार के बाद शुरू होता है। त्यौहारों के समय अलग-अलग बस्तियों में रहने वाले लोग भी आपस में मिलते हैं।

Fig 5.9 : Gamanu - place of worship

कोया लोगों का भविष्य

ये पहाड़ी कबीलों के लोग प्राचीन काल से ही एक जीवनशैली का अनुसरण करते हैं। ये हल की खेती, खनन और कारखाने के मुकाबले पर्यावरण को कम हानि पहुँचाती है। वे उपयोगी वनों को नष्ट नहीं करते। यहाँ तक कि जंगल को खेती के लिए काटने के बाद वे पुनः उगाने के लिए कुछ वर्षों तक खाली छोड़ देते हैं।

उन्हें वन पर्यावरण की बहुत विस्तृत जानकारी होती है। उसके साथ-साथ हमें याद रखना चाहिए कि ऐसे लोगों को बड़े जंगलों की आवश्यकता होती है और उन्हें उसका प्रयोग करने के लिए रोकना नहीं चाहिए।

- पठारी क्षेत्रों की खेती की निरंतरता के बारे में हमने जानकारी ली। इन तीनों गाँवों की जीवनशैली की तुलना करें।
- अपनी जीवन शैली पर कोया लोगों को अधिकार प्राप्त हो, इसके लिए क्या कदम उठाने चाहिए।

इन लोगों की आवश्यकताएँ सीमित होने और वन संपदा प्रचुर होने पर भी ये सदा इस पर आधारित नहीं रह सकते। इनकी जीविका बहुत समय से संकट में है। वन अधिकारियों ने पोडु खेती को रोकने का प्रयत्न किया। पेपर मिलों द्वारा बाँस के अत्यधिक उपयोग के कारण वन धीरे-धीरे जर्जर होते जा रहे हैं। जंगल के पर्यावरण, जंगल में मिलने वाले फलों के बारे में उन्हें अपार ज्ञान है। इनकी आवश्यकताएँ बहुत कम हैं।

वो जिस जंगल में रहते हैं वहाँ अपार संपत्ति है। यह जानकर लगता है कि वे प्रकृति में किस समन्वय के साथ जी रहे हैं। क्या? ऐसा जीने का अधिकार उन्हें नहीं रहना चाहिए?

इस गाँव में पाठशाला, अन्य सुविधाएँ बहुत कम है। यहाँ केवल जनजातीय प्राथमिक विद्यालय है। माध्यमिक विद्यालय, दवाखाने की सुविधा के लिए 20 कि.मी. स्थित मंडल केंद्र वाजेडु तक जाना ही पड़ता है।

SCERT TELANGANA

Fig 5.10 : Path way leading to Penugolu village

मुख्य शब्द

कबीला बांस सब्जी-वाटिका वन-उत्पाद

अभ्यास प्रश्न

1. कोया जनजातियाँ किस प्रकार से उनके आस-पास के वनों पर आधारित हैं? (AS_1)
2. पहाड़ी क्षेत्र में जीविका के विभिन्न साधनों के बारे में बताइये? (AS_3)
3. फसलें उगाने एक प्रांत से दूसरे प्रांत को कोया लोग क्यों जाते हैं? (AS_1)
4. तीनों गांवों की समानताओं और असमानताओं के बारे में बताइये? (AS_1)
5. पिछले तीन पाठों के उपशीर्ष पढ़िए। इन तीनों गाँवों विभिन्न विषय निम्न तालिका में लिखिए। (आवश्यक होते और रेखाएँ जोड़िए। कोई अंश किसी गाँव में नहीं है तो सूचना नहीं है लिखिए।

उपशीर्षक/शीर्षक	पर्वतीय गाँव	पठार पर गाँव	नदी के समीप गाँव

6. अब आप का गाँव/शहर जिस भू रचना में हैं, कल्पना करो कि उससे भिन्न भू-रचना में है उसके बारे में लिखिए। (AS_4)

चर्चा :

पेड़ अगर न हों तो क्या होगा? उसका प्रभाव, अपनी जिम्मेदारी पर चर्चा कीजिए।

अध्याय 6

भोजन एकत्रित करने से लेकर भोजन उत्पादन करने तक - आदि मानव

(From Gathering Food to Growing Food - The Earliest People)

SCERT TELANGANA

क्या आप विस्मित है कि आपके द्वारा खाया जाने वाला भोजन आपके परिवार ने कैसे प्राप्त किया? भोजन कैसे उत्पादन किया जाता है और इस प्रक्रिया में किन औजारों का प्रयोग किया जाता है? किसने इन औजारों का आविष्कार किया था?

क्या आप उन लोगों के जीवन की कल्पना कर सकते हैं, जिन्होंने किसी प्रकार की फसलें नहीं उत्पादित की थी और जो केवल प्राकृतिक रूप से उत्पन्न चीजों को इकट्ठा करके जीवित रहते थे।

हजारों वर्ष पूर्व रहने वाले लोगों के जीवन के अभिप्राय को जानने के लिए नीचे दिये गये चित्रों को देखिए।

चित्र: 6.1

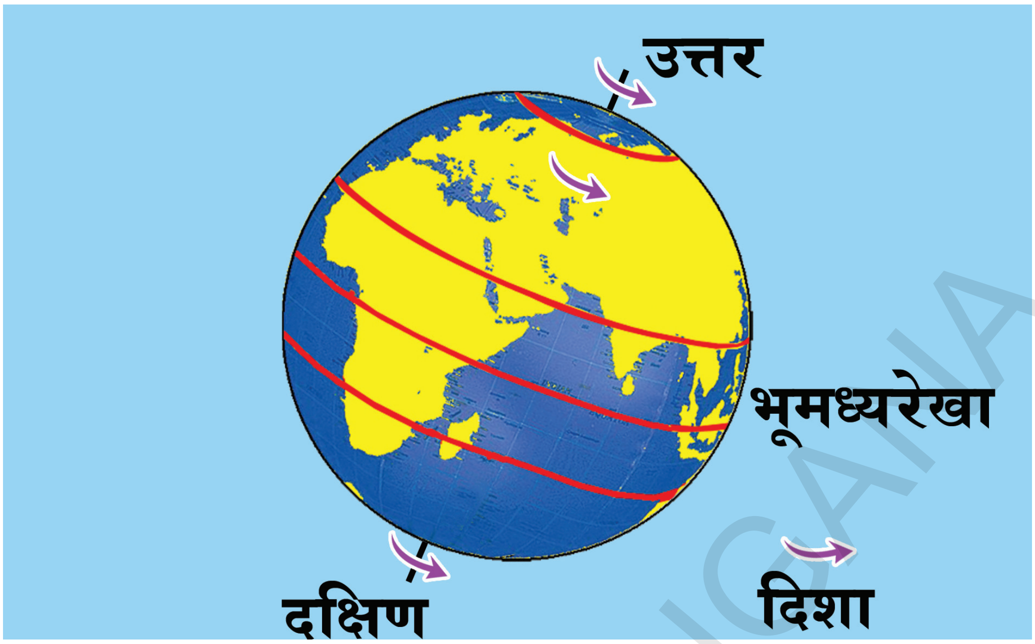

चित्र : 6.2 *आहार एकत्रित करते हुए आदिमानव*

- ऊपर दियेगये चित्रों में लोग अपना भोजन किस प्रकार एकत्रित कर रहे हैं ?
- वे लोग किस प्रकार के कपड़े पहने हुए हैं ?
- इन चित्रों में आपको पाँच या छः प्रकार के औजार और हथियार मिल सकते हैं। क्या आप उनकी पहचान कर सकते हैं ?
- दूसरे चित्र को ध्यान से देखिए। पुरुष और स्त्री वन से क्या ला रहे हैं ?
- चित्र में वे लोग जो काम कर रहे हैं, उसका वर्णन कीजिए।

भोजन एकत्रित करना और शिकार करना-

हजारों वर्ष पूर्व सभी लोग वनों में स्वाभाविक रूप से उत्पन्न फल, फूल, शहद, जंगली धान्य और खाने योग्य कंद तथा मूल एकत्रित करके तथा पक्षियों और जानवरों का शिकार करके जीवित रहते थे। वे कोई फसल नहीं उगाते थे और कोई जानवर नहीं पालते थे।

- क्या आप उन चीजों की सूची बना सकते हो, जिन्हें उगाया नहीं जा सकता, किंतु वनों से एकत्रित किया जा सकता है ? आप उन्हें खाने के लिए कैसे तैयार कर सकते हैं ?

यदि आपको वन में भेज दिया जाए, तो क्या आप यह पता लगाने में सक्षम हों सकेंगे कि वहां पर किस प्रकार का खाने योग्य भोजन मिलता है ? आपके लिए यह जानना आवश्यक है कि किस प्रकार का भोजन खाने योग्य होता है और वह कहाँ उत्पन्न होता है और उसमें फल कब लगते हैं ? आपके लिए यह भी जानना आवश्यक है कि इसे कैसे खाना चाहिए ? क्या उसे कच्चा खाया जा सकता है ? उसे पकाना चाहिए या किसी और वस्तु के साथ बाँधना या गाड़ना चाहिए या पानी में भिगोना चाहिए ?

शिकार करने के लिए भी शिकारियों के लिए शिकार किये जानेवाले जानवर के बारे में अंतरंग रूप से जानना आवश्यक है। वह दिन का अलग-अलग भाग कहाँ व्यतीत करता है ? वह कहाँ से खाता है या पानी पीता है ? वह किस रूप में हानिकारक है ? उसके शरीर के विभिन्न भागों के क्या उपयोग हैं ? अनेक पीढ़ियों से पहले ही आदि मानव ने इन सब बातों को सीखा और उन्हें अपने बच्चों को सीखाया।

SCERT TELANGANA

- क्या आप आदि मानव की भोजन की आदतों और अपनी स्वयं की भोजन की आदतों के बीच की विभिन्नताओं और समानताओं के बारे में सोच सकते हैं ?
- क्या आप सोचते हैं कि वे लोग आपके जैसे कपड़े पहनते थे ? वे क्या पहनते होंगे ?

पत्थर के औजार

आज हम इस्पात से बनी मशीनें, ट्रैक्टर और औजारों का उपयोग करते हैं। आदि मानव भी औजारों का उपयोग करता था, किंतु ये औजार पत्थरों, हड्डियों और लकड़ी से बने होते थे। पहले बड़े पत्थरों को सावधानीपूर्वक दूसरे पत्थरों से तोड़ते हुए नुकीला बनाया जाता था। इन पत्थरों के औजारों से लोग माँस काट सकते थे, कंद के लिए जमीन खोद सकते थे और जानवरों का शिकार कर सकते थे।

हजारों वर्षों के बाद उन्होंने कठोर पत्थर से अच्छे और छोटे टुकड़े बनाना शुरू किया।

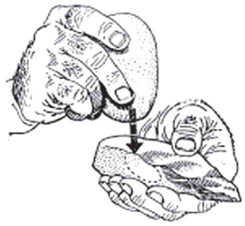

चित्र 6:3 पत्थरों से औजार कैसे बनाये जाते हैं: एक प्रकार की तकनीक यहां दिखायी गयी है।

ये टुकड़े 'माइक्रोलिथ' कहलाते थे। वे लकड़ी या हड्डी के हैंडिलों से जोड़े जाते थे, जो बाद में चाकू, बाण और हंसिया जैसे उपयोग किये जाते थे। ये हथियार मिट्टी को खोदने, छाल के लिए पेड़ों को काटने, जानवरों की त्वचा को निकालने, चमड़े को साफ करने, चमड़े से कपड़े सीने, माँस और हड्डियों को काटने, फलों और जड़ों को काटने तथा जानवरों के शिकार के लिए उपयोग किया जाता था।

चित्र 6:8 (A) प्राचीन पत्थर की कुल्हाडी (B) माइक्रोलिथ के उपयोग:पत्थर हंसिया

चित्र 6:4 (A), (B) प्रारंभिक औजार जो अधिकांश नागरकर्नूल जिला के आमराबाद में खुदाई में पाये गये।

चित्र 6:5 नागरकर्नूल जिला के आमराबाद में खुदाई में पाये गये पत्थरों के टुकड़ों से बाद में बनाये गये औजार

चित्र 6:6 नलगोंडा के येल्लेश्वरम में खुदाई में मिली पत्थरों से बनी ब्लेडें

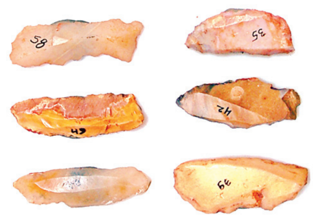

चित्र 6:7 आदिलाबाद के धानापुर से प्राप्त माइक्रोलिथ

SCERT TELANGANA

आदि मानव द्वारा उपयोग में लाये गये ये औजार अभी तक हैं और हम उनके द्वारा उपयोग किये गये औजारों के अध्ययन से आदि मानव के जीवन तथा उन स्थानों के बारे में सीख सकते हैं, जहां से वे मिले हैं।

- आज लोग पत्थरों का उपयोग किन उद्देश्यों के लिए करते हैं?

आग

आदि मानव के द्वारा आग की खोज से उनके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आया। प्रायः वे दो पत्थरों को रगड़कर आग उत्पन्न करते थे। आग ने उन्हें कच्चे माँस के स्थान पर भुना हुआ माँस खाने में समर्थ बनाया। यह पके हुए भोजन की आरम्भ काल था। उन्होंने आग का उपयोग जंगली जानवरों को दूर रखने तथा गुफाओं में प्रकाश उपलब्ध करने के लिए भी किया। उपयोग करने के लिए लकड़ी को बहुधा आग पर गर्म करके कठोर बनाया जाता था।

- आजकल हम आग का उपयोग किसके लिए करते हैं।
- आदि मानव के जीवन की अनुभूति प्राप्त करने के लिए कपास या सूखी पत्तियों के पास दो कठोर पत्थरों को रगड़कर आग बनाने का प्रयास कीजिए।

- क्या आप आदि मानवों के लगातार एक स्थान से दूसरे स्थान जाने का कारण सोच सकते हैं?
  - o क्या होगा यदि एक दल एक क्षेत्र के सभी फल और जानवरों को खत्म कर देगा?
  - o क्या पशु एक ही स्थान पर रहते हैं या घूमते रहते हैं?
  - o क्या एक ही स्थान पर पूरे वर्ष पानी उपलब्ध होगा?
- आज भी कई लोग एक स्थान से दूसरा स्थान बदलते रहते हैं। स्थान बदलते समय वे अपने साथ किस प्रकार की वस्तुएँ ले जाएँगे?
- जब आदि मानव प्रवास करते थे, वे अपने साथ क्या ले जाते थे?
- क्यों आधुनिक समय के लोग खानाबदोशी जीवन नहीं व्यतीत कर रहे हैं, बल्कि घर बनाकर एक ही स्थान पर रह रहे हैं।

धुमक्कड़ जीवन

आदि मानव छोटे समूहों में गुफाओं या पेड़ों या चट्टानों के नीचे रहते थे। वे घर नहीं बनाते थे। एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हुए सही अर्थों में वे चलनशील जीवन व्यतीत करते थे। लोग जो निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान खानाबदोश घूमते हैं वे कहलाते हैं।

Fig.6.9: Cave painting in Pandavulagutta (Regonda, Jaishankar District)

SCERT TELANGANA

चित्रकारी

आदि मानव गुफाओं और पत्थर आश्रयों की दिवारों पर पशुओं और शिकार संबंधी चित्र उतारते थे। विभिन्न रंगों के पत्थरों का चूर्ण बनाकर पशुओं की चर्बी में मिलाया जाता था। तब बम्बू की कूची से पत्थरों पर चित्र बनाये जाते थे। शायद इस तरह के चित्र बनाना उनके लिए कुछ धार्मिक महत्व रखता था।

- क्या आप के स्थान पर (शहर या गांव में) लोग त्यौहार और धार्मिक कार्यों के संबंध में चित्र या डिजाइन बनाते हैं ?

तेलंगाना में पाषण कालीन आश्रय

पाषाणयुगीन पूर्व ऐतिहासिक काल के मनुष्य हमारे राज्य के विभिन्न प्रांतों में जीवित थे। उनके द्वारा बनाए गए पत्थर के औज़ार राज्य के सभी जिलों में उपलब्ध हुए हैं। वे प्रांत हैं, जयशंकर जिले में एक्कल, नागरकर्नूल जिले के अमराबाद नलगोंडा जिले के एलेश्वरम, पेद्दापल्ली जिले के रामगुंडम्, आदिलाबाद में उट्नूर, निजामाबाद जिले के आरमूर, संगारेड्डी के मंजीरा खाई, भद्राद्रि जिले के चरला।

- अध्यापकों की सहायता से अपने जिले में स्थित शैलाश्रयों के दर्शन कीजिए। अपने प्रांत के वस्तु संग्रहालय में पत्थर के औज़ार देखिए।

छोटे पत्तर, पाषाण चित्रकला आश्रय

पूर्व एतिहासिक काल के तेलंगाना के लोग बड़ी संख्या में अपने छोटे पत्थरों के औज़ार, चित्रों को यहाँ छोड़कर चले गये थे। इस तरह के चित्र जयशंकर जिले के तिरुमलगिरि गाँव में पांडव पहाड़ी में स्थित शैलागुफ़ा की दीवारों पर उपलब्ध हुए हैं।

यह पाषाण चित्रकला ने विश्व में तेलंगाना को विशिष्ट स्थान दिलाया। ऐतिहासिक पूर्व युग से काकतीय या पद्मनायका के राजाओं के काल तक अर्थात यह चित्रकला के काल तक अर्थात यह चित्रकला बारह हज़ार वर्ष पूर्व से पाँच हज़ार वर्ष पूर्व तक एक विशिष्ट स्थान प्राप्त की थी।

- चित्र 6.9 में पांडव पर्वत की गुफ़ाओं के चित्र देखिए। क्या देखा? चित्रों के बारे में वर्णन कीजिए। उसमें आदिवासियों द्वारा बनाए चित्रों को देखा? पुराने चित्रों पर ही उसे क्यों बनाया होगा।

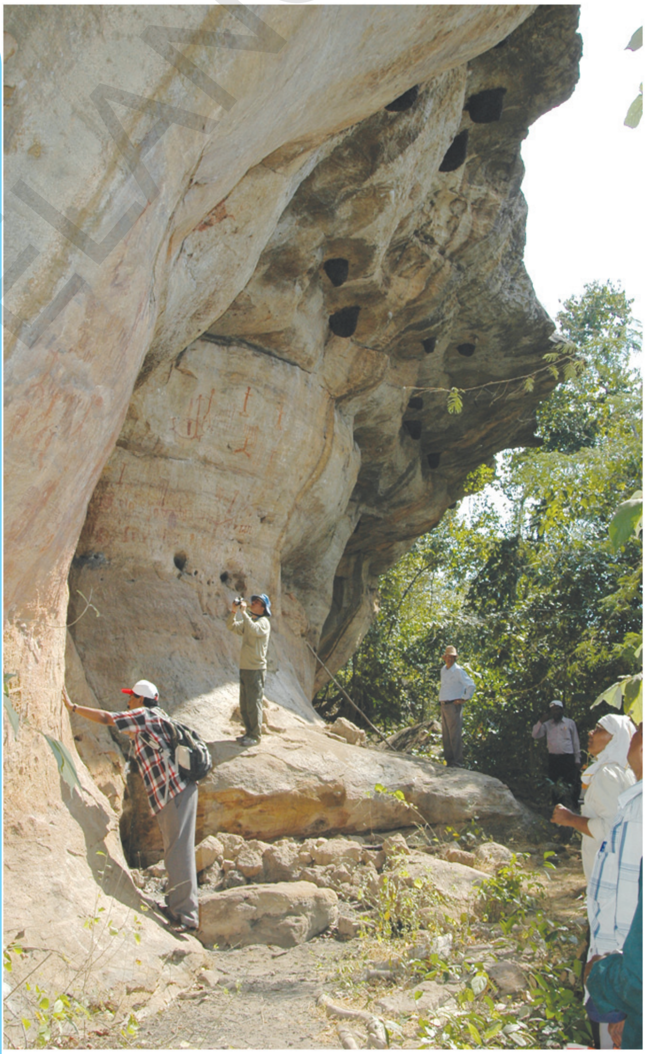

चित्र 6.10 खम्मम जिला, पेनुबल्लि मंडल, रामचंद्रापुरम के नीलाद्रि पर्वतों में स्थित शैलाश्रय

SCERT TELANGANA

पाषण चित्रकला में शिकार, लड़ाई के दृश्य, शहद का संग्रह, नृत्य और संगीत आदि दिखाए गए हैं। बैल, भैंस, ऋषभ, हिरण, हाथी, जंगली, बकरी, बाघ, घड़ियाल, बिच्छू, सुअर, कछुआ, मेंढक, कीड़े, मछली, चिपकली, बंदर, रींछ, पक्षियों में चील, बगुला, मोर, कौआ, मधुमक्खियाँ, तितली के साथ रेखागणित के चिह्न, मानवचित्र तीर, समान छुरी, हंसिया जैसे आयुध दिखाई देते हैं।

- चित्र का रंग कैसा है? इन चित्रों को उतारने रंग और तूलिकाएँ बनाने के लिए किन वस्तुओं का उपयोग हुआ होगा? क्या आप पता कर सकते हैं?
- नीचे दिए गए आप के राज्य के मान चित्र में पाषाण चित्रकला आश्रयों को दशाईएँ।

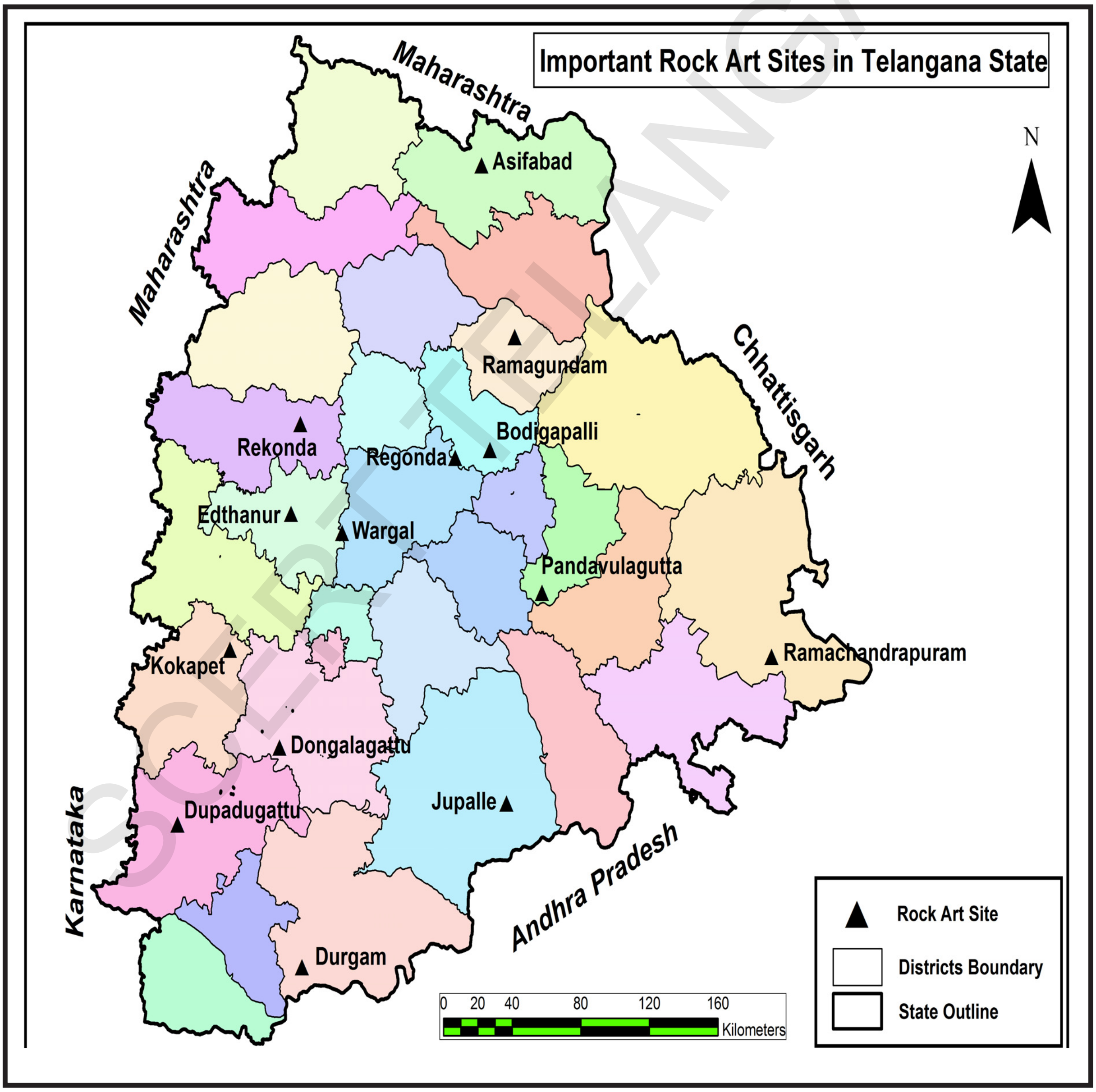

चित्र 1 तेलंगाना के महत्वपूर्ण पाषाण चित्र कला स्थल

शिकारी- हमारे समय में जमाकर्ता

संसार के विभिन्न भागों में आज भी कई लोग शिकार और खाना इकट्ठा करके अपना जीवनयापन करते हैं। हमारे स्वयं के राज्य में भी यनाडीस और चेंचु अभी-अभी तक इस तरह रहते थे। विद्वानों ने उनके बीच रहकर उनके जीवन को समझने का प्रयत्न किया।

संसार में किये गये इस तरह के कई अध्ययनों द्वारा इतिहासकारों ने उन लोगों के जीवन की कल्पना की, जो हजारों वर्ष पूर्व जंगलों में रहते थे।

चित्र 6.11 (a)

चित्र 6.11 (b)

चित्र 6.11 (c)

चित्र 6.11 a, b, c 80 वर्ष पूर्व चंचू शिकारी जमाकर्ता

सहकारी जीवन

हमने देखा कि आदि मानव छोटे-छोटे समूहों में रहते थे और बंजारा जीवन व्यतीत करते थे। यह प्रतीत होता है कि औरतें और पुरुष दोनों शिकार और भोजन एकत्रित करने के काम में भाग लेते थे। औरतें और बच्चे भोजन एकत्रित करने और छोटे पशुओं का शिकार करने में अधिक सक्रिय थे। बड़े पशुओं का शिकार करने के लिए उन्हें पीछे दूर-दूर तक जाना पड़ता था, जिसमें कई दिन लगते थे। यह काम अधिकतर पुरुषों द्वारा किया जाता था।

शिकार-जमाकर्ता अपने द्वारा एकत्रित किया गया भोजन समूह के सभी सदस्यों के साथ बाँटते थे। वहाँ भोजन संग्रह के अवसर नहीं थे, क्योंकि इसमें मुख्य रूप से खराब होने वाली वस्तुएँ जैसे माँस, मछली, पत्तियाँ, कंद और जँगली धान की कम मात्रा होती थी। धान और दालें जो आज हम

खाते हैं शीघ्र खराब नहीं होती। उन्हें महीनों सुरक्षित रखने के लिए हमारे पास शीशे और डिब्बे हैं। किंतु आदि मानव इतनी भारी वस्तुएँ नहीं रख सकते थे, क्योंकि उन्हें निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान घूमना पड़ता था।

क्योंकि वे संपूर्ण भोजन को बाँटते थे और वनों के स्त्रोतों तक स्वतंत्र रूप से बिना किसी रोक-टोक के पहुँच सकते थे। शिकारी जमाकर्ताओं के बीच कोई भी अमीर और गरीब नहीं था। वे सभी समान थे और एक-दूसरे के साथ समानता का व्यवहार करते थे। वे सभी महत्वपूर्ण निर्णय भी एक-दूसरे के साथ परामर्श कर लेते थे।

वन्य पशुओं का शिकार करने पर भी शिकारी जमाकर्ताओं में वनों, पेड़ों और पौधों, पशुओं, नदियों और पहाड़ों के लिए बहुत आदर था। वे प्रायः उनकी पूजा किया करते थे, ताकि वे हमेशा पर्याप्त भोजन पा सकें।

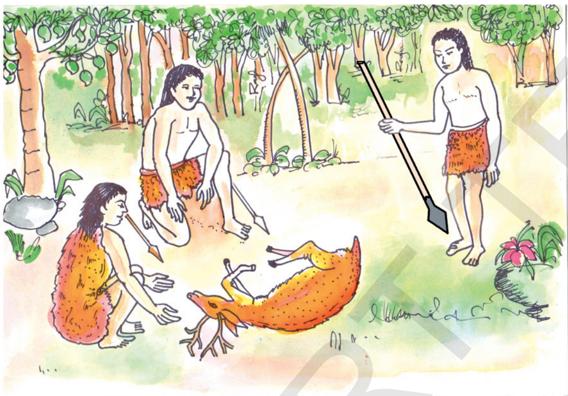

चित्र 6.12 शिकार किये गये हिरण को आभार प्रदान करते हुए

हम आदि मानवों के जीवन की कल्पना कर सकते हैं, जो जंगलों में शिकार और भोजन एकत्रित किया करते थे।

- आदि मानव भोजन का संग्रह अधिक समय के लिए क्यों नहीं कर सकते थे?
- क्या आपके विचार में यदि शिकारीजमाकर्ता भोजन आपस में नहीं बाँटते थे, तो इससे समस्या उत्पन्न हो सकती थी?
- क्यों उनके बीच कोई भी गरीब लोग नहीं थे?

- क्या आपको आदि मानवों के द्वारा मारे गये पशु को धन्यवाद प्रदान करने और आज के किसानों के द्वारा फसल की पूजा करने में कोई समानता दिखाई देती है?

जमा करने से अनाज उगाने तक

हजारों वर्षों तक मनुष्य ने शिकार और भोजन इकट्ठा करके जीवन यापन किया। लगभग केवल 12000 वर्ष पूर्व ही उन्होंने अनाज उगाना शुरू किया। उन्होंने अपने जीवन का तरीका क्यों बदला? आइए पता करते हैं।

लगभग 12000 वर्ष पहले संसार के मौसम में बहुत परिवर्तन हुआ था, जैसे कि यह अधिक से अधिक गर्म होता गया। इससे प्राकृतिक वनस्पति में बड़े परिर्वतन हुए, क्योंकि जंगलों के बड़े भाग घास के मैदानों में परिवर्तित किये गये थे। ये घास के मैदान गाय-बैल, भेड़ और बकरियों जैसे पशुओं के लिए चारा उपलब्ध करवाते थे। यहाँ पर मनुष्यों के द्वारा खाया जाने वाला धान्य भी होता था। जब उन्होंने इन घाँसों और पशुओं से अपना घनिष्ठ संबंध बनाना आरंभ किया, तभी उन्होंने धीरे-धीरे उन पर नियंत्रण करने की कोशिश की। यह पौधों और पशुओं का 'पालतूकरण' (डोमैस्टीकेशन) कहलाता है। आइए देखें इसका क्या अर्थ है और इससे आगे क्या होता है?

अन्न उत्पादन और पशु पालन

आदमी, औरतें और बच्चे संभवतः उन स्थानों का निरीक्षण करते थे, जहां खाद्यान्न पौधे पाये जाते थे, कैसे बीजों से नये पौधे अंकुरित किये जाते हैं आदि। शायद तभी से उन्होंने पौधे की देखभाल करना आरंभ किया- पशु-पक्षियों से उनकी रक्षा करना ताकि वे उग सके और बीज विकसित हो सके। बहुत से लोग जो घाँस के मैदानों में रहते थे, जहाँ खाने योग्य धान्य उगता है, खाने के लिए इन धान्यों पर निर्भर रहना और उन्हें उगाना आरम्भ किया। इस प्रकार से पृथ्वी के विभिन्न भागों में रहने वाले विभिन्न समूहों के लोग किसान बने।

विभिन्न स्थानों के विभिन्न लोगों ने धान, गेहूँ, जौ, दालें, जवार, बाजरा, कंद और सब्जियाँ उगाना सीखा। जब लोग एक दूसरे के संपर्क में आए, तब उन्होंने एक दूसरे से विभिन्न प्रकार की फसलें और सब्जियाँ उगाना और उनका उपयोग करना सीखा।

इसी प्रकार शायद लोगों ने विनीत पशुओं को अपने कैम्प के पास आने और घाँस तथा अन्य शेष बचा हुआ भोजन खाने को दिया। उन्होंने इन पशुओं को अन्य जंगली जानवरों से भी बचाया होगा।

इस प्रक्रिया में चरवाहों को बहुत से लाभ हुए, जैसे माँस, पशुओं की खाल और दूध नियमित रूप से प्राप्त होने लगा। तत्पश्चात वे बैलों और गधों को सामान ढोने और खेत जोतने के काम में लाने लगे।

पालतूकरण

प्रायः लोग उन पौधों और जंतुओं को चुनते थे, जो अच्छी पैदावार देते थे और शीघ्र बिमार नहीं होते थे। ऐसे पौधों के बीजों को चुना जाता या केवल चुने हुए पशुओं का ही प्रजनन करवाया जाता था। इस प्रकार लोगों द्वारा देखभाल किये जाने वाले पौधे और पशु जंगली पौधे और पशुओं से भिन्न हो गये। जब लोग चुने हुए बीज बोते थे और जब तक उनमें फल न लग जाए, तब तक उनकी रक्षा करते थे या जब वे चुने हुए पशुओं को प्रजनन के लिए चुनते थे और अपने स्वयं के उपयोग के लिए उनकी रक्षा करते थे, तब यह पालतूकरण (डोमेस्टिकेशन) कहलाता है।

इस प्रकार कई सौ वर्षों तक लोगों ने अपने लिए लाभदायक पशुओं और पौधों को कुछ विशेष प्रकार से पाला और उत्पन्न किया।

- क्या आप सोचते हैं कि किसान अभी भी अगले वर्ष के लिए बीज चुनने के लिए पालतूकरण प्रकार का उपयोग करते हैं ?

- आपके विचार में लोग अपने द्वारा उगाने के लिए चुनी गयी फसल की रक्षा कैसे करते थे ?
- प्रजनन के लिए चुने गये पशुओं की रक्षा लोग कैसे करते थे ?

सच है कि सभी लोग फसल उगाने और पशु पालने का काम नहीं करते थे। कई लोगों ने जंगल में शिकार और जमाकरने का काम जारी रखा। और फिर उसी तरह सभी लोग खेती का काम नहीं करते थे। प्रारंभ में कई लोग स्थान बदल खेती जैसे 'पोडू' (इसके बारे में आप 6 पाठ में पढ़ेंगे) और फसल उगाने के साथ-साथ जंगलों से खाना जमा करना और थोड़ा बहुत शिकार भी किया करते थे।

कुछ लोगों ने अनुभव किया कि खेत जोतने और खाद मिलाने से मिट्टी की उर्वरता बनाये रखी जा सकती है। जबसे उन्होंने हल और पशु खाद का उपयोग शुरू किया, उन्हें हर कुछ वर्षों बाद उर्वरक भूमि की खोज के लिए जाना नहीं पड़ा। इसका यह अर्थ भी हुआ कि उन्हें खेती को पशुपालन के साथ जोड़ना पड़ा, जिनकी आवश्यकता हल चलाने, परिवहन और मिट्टी में खाद मिलाने के लिए थी।

स्थायी जीवन

जब लोगों ने पेड़-पौधे उगाना शुरू किया, उन्हें पौधों की देखभाल करने, पानी देने, जंगली पौधों को हटाने, पशुओं और पक्षियों को भगाने के लिए-धान पकने तक एक ही स्थान पर लम्बे समय तक रहना पड़ता था। उपज के समय उन्हें इतना अन्न मिलता था कि वे पूरा एक साथ नहीं खा सकते थे। इसे लम्बे अंतराल तक संचित करना पड़ता था-लगभग छः महीने से एक वर्ष तक। इन सबका अर्थ है कि लोगों को एक स्थान पर रहना और धान्य संचय करने के लिए घर बनाना आवश्यक हो गया।

जब एक स्थान पर रहना अनिवार्य हो गया, तो उन्होंने पत्थर, लकड़ी, मिट्टी और सूखी घाँस की

SCERT TELANGANA

झोपड़ियाँ बनायी। धान्य, पानी, दूधए आदि का संचय करने और पकाने के लिए बर्तनों की आवश्यकता थी। इसके कारण विभिन्न प्रकार के बर्तन बनाये गये। उन बर्तनों को सुंदर बनाने के लिए उन्होंने इसे रंगना और सजाना भी आरंभ किया। खाना पकाने के लिए चूल्हे और अनाज आदि पीसने के लिए पत्थरों की भी आवश्यकता थी। जब पुरातत्ववेत्ताओं ने आदि कृषक लोगों के स्थानों को खोदा, उन्हें सामान्यतः झोपड़ियों के निशान, बर्तनों के अवशेष, चूल्हे, माइक्रोलिथ ओर पीसने वाले पत्थर मिले। कभी-कभी उन्हें कुछ ऐसे धान्य भी मिले, जो आग में अधिक भूने गये थे और इसीलिए अभी तक सुरक्षित थे।

चित्र 6.13 एक पुराना घड़ा : आप के विचार में इस घड़े में क्या रखा जाता था?

चित्र 6.14 पुरातत्ववेत्ताओं को 12000 वर्ष पूर्व संचित किये गये भोजन के अवशेष मिले।

आदि कृषकों को पेड़ और शाखाएँ काटकर वनों को साफ करने की आवश्यकता थी। उन्होंने एक नये प्रकार के पत्थर का अविष्कार किया जो पुरातत्ववेत्ताओं के द्वारा 'न्यूलिथिक' कहलाता है।

आदि मानव विशेष पत्थर चुनते थे, जिसे एक कुल्हाड़ी की धार के समान आकार दिया जाता था। तब इस कुल्हाड़ी के सिरे को लकड़ी के हैंडल से जोड़ा जाता था। नये औजारों से फसल उगाकर आदि मानव ने जो प्रक्रिया आरंभ की, जिसने उनके जीवन के सभी विषयों को बुनियादी रूप से बदल दिया। इस नये प्रकार के पत्थरी औजार के बाद पूर्व कृषि का यह काल नवीन पाषाण युग कहलाने लगा।

चित्र 6.15 लकड़ी से कुल्हाड़ी का सिरा बाँधा हुआ जो नागरकर्नूल जिला के अमराबाद में खुदाई से प्राप्त हुआ।

चित्र 6.16 नवीन पाषाणी औजार जो पत्थरों को तोड़कर बनाये गये। महबूबनगर जिला के सेरूपल्ली की खुदाई में प्राप्त हुए।

स्त्रोत : आँध्र प्रदेश राज्य पुरातत्व म्यूजियम, हैदराबाद।

SCERT TELANGANA

- आपके विचार में उन्होंने धान्य संचय करने के लिए क्या किया होगा ?
- लोग जो अनाज उगाते थे, उन्हें लम्बे समय तक एक ही स्थान पर क्यों रहना पड़ता था ?
- आदि मानवों द्वारा उपयोग की गयी झोपड़ियों की कल्पना कीजिए और चित्र उतारिए। आपके विचार में वे तुम्हारे घर से किस प्रकार भिन्न हैं ?

भारत में लगभग 10,000 वर्ष पूर्व बुलिचिस्तान से 5000 वर्ष पूर्व कश्मीर से और कुछ चार या पाँच हजार वर्ष पूर्व बिहार से कृषि करने के प्रारंभिक प्रमाण मिले हैं।

दक्कन में डोमेस्टिकेशन के प्रारंभिक सबूत तेलंगाना, आँध्र प्रदेश और कर्नाटक की सीमाओं में से प्राप्त हुए हैं। इन राज्यों में कई स्थानों पर राख के टीले पाये गये हैं।

पुरातत्ववेत्ताओं का विश्वास है कि लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व इन क्षेत्रों के शिकारियों ने पशु पालन आरंभ किया था। पशुओं को विशेष स्थानों पर जहां बहुत सा गाय का गोबर सूखाया और जमा किया जाता था। उन्हें संभवतः त्यौहार के दिनों पर जलाया जाता था, जिससे राख के टीले बन जाते थे। ऐसे राख के टीले अपने राज्य में नागरकर्नूल और आंध्र प्रदेश राज्य के कर्नूल, अनंतपुर जिलों में पाये गये हैं। गाय के गोबर की राख के साथ-साथ न्यूलिथिक पत्थर कुल्हाड़ियाँ पत्थर की ब्लेडें और हाथ से बने हुए प्रांरभिक घड़े भी पाये गये। कुछ हजार वर्षों के बाद इनमें से कई लोगों ने कृषि करना और गाँवों में बसना भी आरंभ किया।

तेलंगाणा में नवीन पाषाण युग

तेलंगाणा के वरंगल ग्रामीण, वरंगल शहरी, जनगांव, जयशंकर, सिद्दीपेट, नागरकर्नूल, महबूबनगर, करीमनगर और आदिलाबाद जिलों में अधिक संख्या में नवीन पाषण युगीन आश्रय उपलब्ध हुए।

वरंगल कोमरमभीम जिले के पोलकोंडा में हुए खुदाइयों में जलाई गई मिट्टी और उससे बनाये गए अनेक छोटे पत्थरों के औज़ार, हाथ से बनाये गए घड़े, अनाज संग्रह रखने वाले पात्र उपलब्ध हुए। इससे यह पता चलता है कि तीन हज़ार तीन सौ साल पहले यहाँ मनुष्य रहते थे।

मुख्य शब्द

शिकारी जमाकर्ता	पत्थर के औजार	माइक्रोलिथ
खानाबदोश	सहकारी जीवन	पालतूकरण (डोमेस्टिकेशन)
चरवाहे	पोडू खेती	स्थायी जीवन
न्योलिथिक (नवीन पाषाण)	पुरातत्ववेत्ता	

SCERT TELANGANA

अपना अधिगम बढ़ाइए

1. आपके विचार में आदि मानव सूती और ऊनी कपड़े क्यों नहीं पहनते थे? (AS_1)
2. आजकल आप फल काटने के लिए किन औजारों का उपयोग करते हैं? यदि ये औजार उपलब्ध न हो तो आप क्या करेंगे? (AS_4)
3. आदि मानव के औजारों के साथ आधुनिक काल के औजारों की तुलना कीजिए। (AS_1)
4. आदि मानव एक स्थान से दूसरे स्थान क्यों जाते थे? जिस कारण से आज हम यात्रा करते हैं, उससे वे किस तरह से समान और भिन्न हैं? (AS_1)
5. तेलंगाना के मानचित्र में निम्न लिखित पत्थर कला स्थलों को दर्शाइए– (AS_5)

   अ. आसिफ़ाबाद　　आ. पांडवुलगुट्टा　　इ. कोकापेट

   ई. दुर्गम　　उ. रेगोंडा　　ऊ. रामचंद्रपुरम
6. आजकल के किसानों और चरवाहों का जीवन नवीन पाषाण युग के लोगों से किस प्रकार भिन्न है, तीन प्रकार बताइये? (AS_1)
7. आदि मानव के पालतू जानवरों और कृषि उत्पादनों की एक सूची तैयार कीजिए और प्रत्येक के बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखिए। (AS_3)
8. यदि चूल्हे और पीसने के पत्थर नहीं होते, तो यह हमारे भोजन को किस तरह प्रभावित करता? (AS_4)
9. पांच प्रश्नों तैयार कीजिए, जो आप एक पुरातत्ववेत्ता से पूछना चाहते हैं? (AS_4)
10. नीचे दिये गये चित्र में कई वस्तुएँ हैं। इनमें से कौनसी वस्तुएँ शिकार जमा करने वाले लोगों से संबंधित नहीं हैं? कौनसी वस्तुएँ शिकार जमा करने वाले लोगों और कृषक दोनों से संबंधित हो सकती हैं? इनमें अंतर स्पष्ट करने के लिए विभिन्न चिह्न लगाइए। (AS_1)

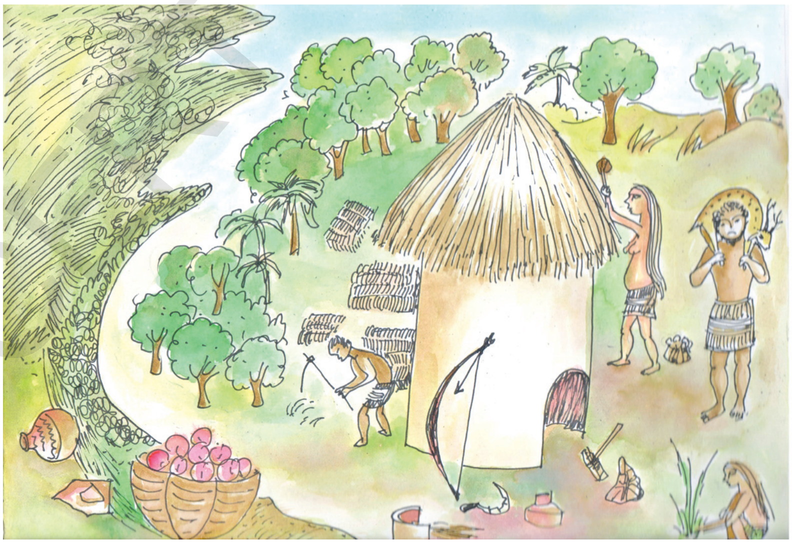

चित्र 3.21

11. क्या आप कैसे कह सकते हैं कि, जानवरों को वश में करने से आदिम मानवों का जीनव आसात हुआ?(AS_6)
12. पृष्ठ सं-47 के 'धुमक्कड़ जीवन' पैरा पढ़कर, अपने विचार लिखिए। (AS_2)

12. नीचे दिये गये संकेतों के आधार पर वर्ग पहेली सुलझाइए।

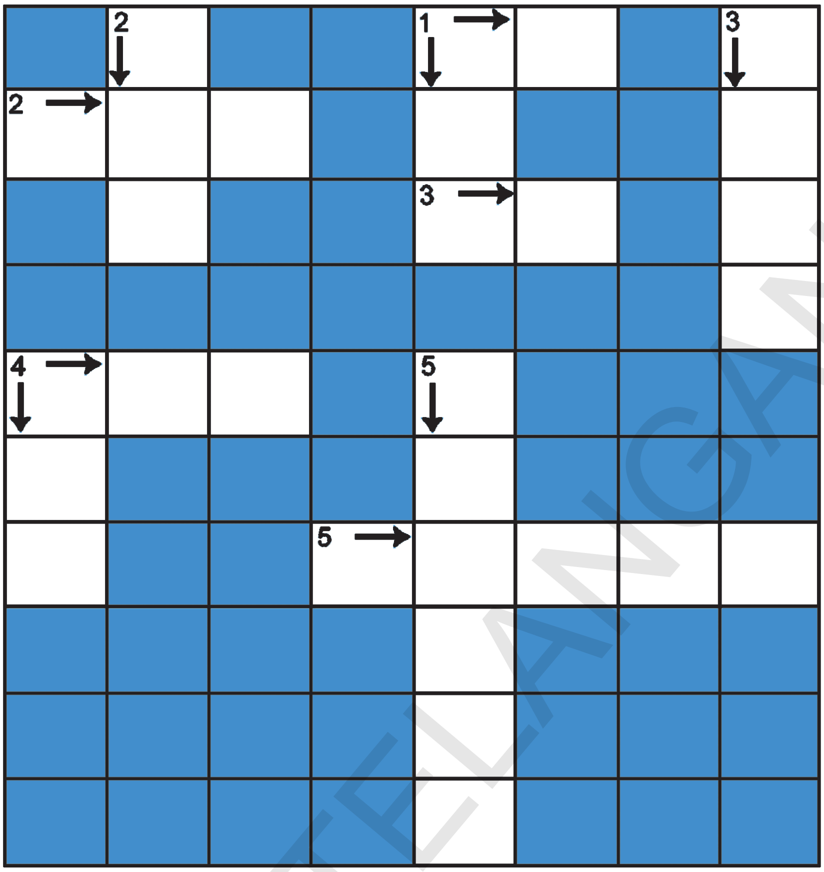

संकेत :

बांये से दांये :

1. ये आदि मानव कच्चा मांस किससे जलाते थे। (2).
2. ये लोग यातायत के लिए इस पशु को उप्रयोग करने थे। (3).
3. उनकी फसल का एक अनाज। (2).
4. आदि मानव भूमि को उपजाऊ बनाने किसका उपयोग करते थे। (3).
5. सबसे पहले फसल उगाने से बना जीवन। (5).

ऊपर से नीचे:

1. आदिमानव के पास बचे आहार के लिए यह सुविधा नहीं थी। (3).
2. तेलंगाना, आंध्र की सीमा में यह ढेर मिले। (3).
3. आदिमानव जंगल में इसकी पूजा करते थे। (4).
4. इससे बनो औज़ार उपयोग में लाते थे। (3).
5. निरंतर एक प्रांत से दूसरे प्रांत में भ्रमण करने वाले। (6).

परियोजना

पता कीजिए यदि आपके निवास के समीम कोई पत्थर चित्रकारी स्थल है, तो अपनी कक्षा के साथ उस स्थल का भ्रमण कीजिए? रिपोर्ट लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 7

हमारे समय में खेती/कृषि

Agriculture in Our Times

वेंकटापुरम में मूँगफली की खेती का समय था। किसानों ने नवंबर के आखिरी हफ्ते में मूँगफली के बीज बोये और फरवरी में फसल काटी। गाँव के रास्ते में रमा, लक्ष्मम्मा और पद्मा को हमने मूँगफली के खेतों में नाश्ता करते देखा। हम उनके काम के बारे में जानकारी लेने लगे।

वेंकटापुरम- मूँगफली के खेत में खेतिहर मजदूर

लक्ष्मम्मा ने बताया कि 'झुलसाने वाली धूप में खेतों में बैठकर मूँगफली उखाड़ना बहुत कठिन है। हमारा मालिक रवि उखाड़ी हुई मूँगफली के हिसाब से मजदूरी देता है। हमें तेजी से काम करना पड़ता है, वरना पूरे दिन की मेहनत के बाद 100-150 रुपये भी नहीं मिल पाते।'

*हमने पूछा कि 'तुम सब **इस समय बहुत** व्यस्त रहते होंगे?'*

'हाँ, पर हमें साल में केवल कुछ हफ्ते ही ऐसा काम मिलता है, वरना सरकारी योजनाओं में काम को ढूँढ़ना पड़ता है या खाली बैठना पड़ता है' पद्मा ने कहा।

*सरकारी **योजनाओं** में भी कुछ ही हफ्तों के लिए काम मिलता है' रमा ने कहा।*

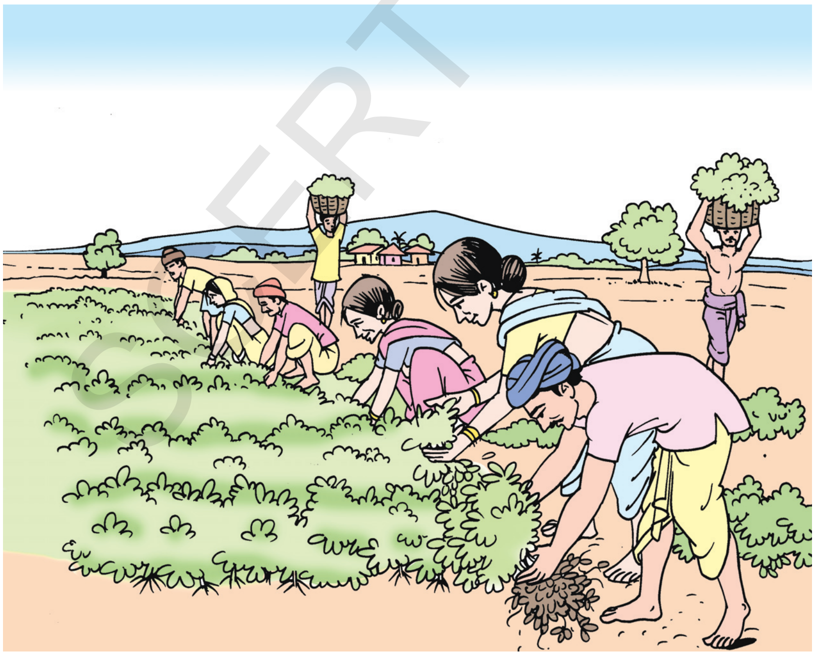

चित्र 7.1 मूँगफली की फसल की कटाई

'पता नहीं क्यों आवश्यक खाद्य पदार्थ, सब्जियाँ, कपड़ों और बच्चों की लेखन सामग्री के दाम तेजी से बढ़ते हैं, पर हमारी मजदूरी नहीं बढ़ती' लक्ष्मम्मा ने कहा।

सामान्यतः औरतें 100-130 और पुरुष 200-250 रुपये रोज कमाते हैं। कटाई या बुआई के समय स्त्रियाँ 120-150, जबकि पुरुष मजदूर 150-200 रुपये रोज

पाते हैं। सरकारी योजनाओं में स्त्री–पुरुष दोनों 150 रुपये प्रतिदिन पाते हैं गैर–कृषि कामों जैसे रेत को ढोना, ईंटों को ढोना तथा निर्माण कार्य में उन्हें थोड़ा अधिक 300 रुपये आदमी को और 180–200 रुपये औरत को मिलते हैं। पर ऐसा काम बहुत कम होता है।

'गैर कृषि काम यहां कैसे मिलेंगे? इसके लिए हमें कस्बों और शहरों में जाना पड़ेगा' पद्मा ने कहा।

'पड़ोसी गाँव के कुछ किसान फूल और अंगूर उगाते हैं। जो नियमित **रूप से काम पर** जाते हैं और काम सीख चुके हैं, केवल उन्हें ही वहाँ काम मिलता है। हम दूर जाकर अंगूर के या फूलों के खेत में अचानक काम कैसे कर सकते हैं, वह भी साल में कुछ दिनों के लिए? वे छोटे बच्चों को आने नहीं देते, मैं अपने बच्चों को कैसे छोड़ सकती हूँ?' लक्ष्मम्मा ने भी कहा।

'हम सरकारी योजनाओं में काम करते हैं, क्योंकि वहाँ विशेष योग्यता की **आवश्यकता** नहीं होती' रमा ने कहा।

रमा, लक्ष्मम्मा तथा पद्मा की तरह अन्य निर्धन मजदूरों के परिवारों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। औरतों को घर के काम जैसे बच्चों को स्कूल भेजना, खाना बनाना, पानी व लकड़ियाँ लाना, इत्यादि काम भी करने पड़ते हैं।

तेलंगाना में 2/5 ग्रामीण लोग खेतिहर मजदूर हैं। इनमें से बहुत कम लोगों के पास छोटी सी जमीन है, बाकी लोगों के पास वह भी नहीं है। भले ही गैर कृषि कामों में कमाई अधिक है, पर ऐसे काम ग्रामीण इलाकों में कम हैं। इसलिए वेंक्टापुरम के अधिकांश परिवार कस्बों व शहरों में बस गये हैं।

- वेंकटापुरम के श्रमिकों को कैसा काम मिलता है?
- साल भर में अपने खर्चों को पूरा करने के लिए श्रमिक क्या करते हैं?
- विभिन्न संदर्भों में स्त्रियों और पुरुषों की मजदूरी की तुलना कीजिए। यह भेद क्यों होता है?

वेंकटापुरम में छोटे किसान

श्रमिकों से बात करते हुए देख रवि, उनका मालिक हमसे बात करने के लिए आये। रवि मूँगफली की फसल काटने के लिए केवल एक या दो आदमियों और अनेक औरतों को रखता है। सामान्यतः पुरुष मूँगफली के पौधों को उखाड़ने बांधने और एक जगह एकत्रित करने का काम करते हैं। स्त्रियाँ पौधों से मूँगफली उखाड़ने का काम करती हैं।

'मैं केवल कटाई के समय श्रमिकों को लगाता हूँ, दूसरे कार्य मैं अपने परिवार और पड़ोसी किसानों की मदद से करता हूँ।' रवि ने कहा।

रवि की बेटी भी मूँगफली उखाड़ रही थी। रवि ने बेटी को कॉलेज इसलिए नहीं भेजा, क्योंकि फीस और अन्य खर्चे उसके सामर्थ्य के बाहर थे। इसलिए वह खेतों में काम करती है।

रवि के पास 4 एकड़ भीमि और एक बोरवेल है। पहले वह गाँव के तालाब से पानी लेता था। आजकल पानी उसके खेतों तक नहीं पहुँच पाता है।

लगभग पाँच वर्ष पूर्व 75,000 रुपये उधार लेकर उसने बोरवेल खुदवाया था।

SCERT TELANGANA

पहले दो तीन सालों तक उसने साल में दो फसलें उगायीं। पिछले साल से पानी केवल एक फसल के लिए ही पूरा हो रहा है।

'मैंने दलाल से बीज और खाद के लिए रुपये उधार लिए थे। ऋण चुकाने के लिए मुझे मूँगफली बाजार से कम दामों पर उसी को बेचनी पड़ती है। उसने मुझे फोन भी किया है अपनी उपज देने के लिए।'

'तुम बैंक से ऋण क्यों नहीं लेते?' हमने पूछा।

'बैंक सख्त जरूरत के भी हमें ऋण देना नहीं चाहते। अधिकतर हमें दलालों और महाजनों पर निर्भर रहना पड़ता हैं।'

रवि जैसे किसानों के बीज, खाद और कीटनाशकों के लिए धन उधार लेना पड़ता है। अगर बीज अच्छे नहीं हैं या खाद अच्छी तरह से इस्तेमाल नहीं हुई अथवा फसल में कीड़े लग जायें, तो फसल की उपज कम होती है। उपज कम होने पर किसान कई बार ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाते हैं, क्योंकि वे दलालों और महाजनों से ऋण लेते हैं,

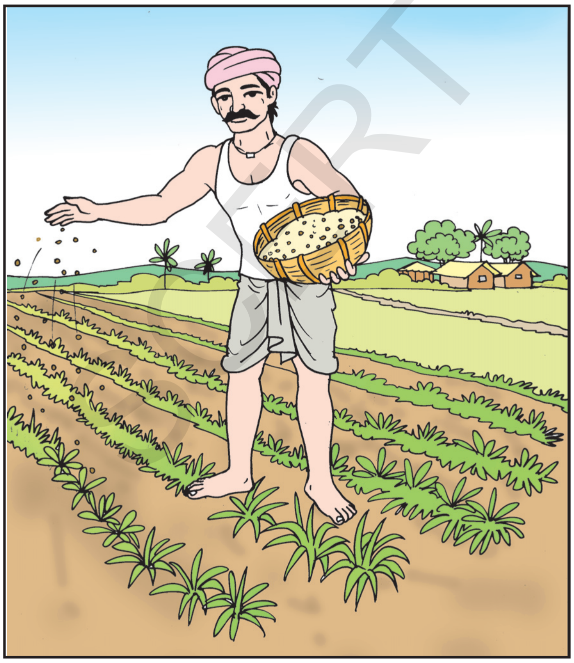

चित्र 7.2 किसान द्वारा खाद का प्रयोग

इसलिए अपनी फसल उन्हीं लोगों को कम दामों पर बेचनी पड़ती है। परिवार के पोषण के लिए उन्हें और रुपया उधार लेना पड़ सकता है। जल्दी ही ऋण इतना बढ़ जाता है कि वे कितना भी कमाएँ ऋण नहीं चुका सकते। कई बार फसल किसी कारण से नष्ट हो जाती है, परिणाम गंभीर परेशानी होती है। आजकल छोटे किसानों की परेशानी बढ़ रही है। इतना कि उससे निकलने का उपाय किसानों के पास नहीं है।

अनुबंध खेती

कुछ किसानों ने इस समस्या से निपटने के लिए कंपनियों से विशेष फसलों के उत्पादन और वितरण का अनुबंध किया। आँध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में कंपनियों ने पाम, चावल, खीरा, कोको, आवला, मक्का, मूँगफली, सोयाबीन, रुई और मिर्ची उगाने का अनुबंध किसानों के साथ किया है। कंपनियाँ अनुबंध करने पर किसानों को अधिक मदद देकर खेती का विशेष तरीका अपनाना सिखाती है। वे फसल को पहले से तय कीमत पर खरीदकर उसमें से लागत घटाकर कीमत देती है। कंपनियाँ उपज को कच्चे माल के रूप में अपने उत्पादनों (जैसे चिप्स व टमाटर सॉस या दवाई) के लिए उपयोग करती है या सीधे दूसरे देशों को निर्यात कर देती है।

कई किसानों ने इसका स्वागत किया, क्योंकि फसल उगाने के लिए उन्हें अग्रिम राशि मिलती है और निश्चित कीमत भी। फिर भी किसानों को कमजोर फसल का नुकसान उठाना पड़ता है। अगर फसल उत्तम किस्म की नहीं हुई, तो कंपनी फसल खरीदने से मना करकर किसानों को परेशानी में डाल सकती है। अच्छी उपज के लिए किसान रासायनिक खाद की अधिकता से उपयोग करते हैं और

भूमिगत पानी का भी अतिरिक्त उपयोग करते हैं। ऐसा करने से भूमिगत पानी का स्त्रोत कम होकर, मिट्‌टी की गुणवत्ता कम हो सकती है। अक्सर छोटे किसान आमतौर पर अपनी खेती के लिए रखे गये खेतों को अनुबंध खेती के लिए प्रयोग करते हैं और इससे उनके घर अनाज की समस्या उत्पन्न होती है।

- फसल कटाई के समय छोटे किसान मजदूरों को काम पर क्यों लगाते हैं ?
- क्या छोटे किसान खेती के द्वारा घरेलू आवश्यकताओं को पूरा कर पाते हैं ?
- छोटे किसान अपनी मजदूरी वस्तुओं के बजाय रुपयों के रूप में क्यों लेना चाहते हैं ?
- आपके क्षेत्र में अनुबंधित किसान हैं, तो उनके अनुभवों को जानिए ?

छोटा किसान-बनाम मजदूर वेंकटापुरम में

हमने एक ऐसा घर देखा, जिसके आगे मूंगफली की फसल से लदा ट्रैक्टर खड़ा था। घर में रहने वाले रामू नामक किसान से हमने बातचीत की। वह रवि की तरह एक छोटा किसान है।

उसने बताया कि 'अगर आप खेती के बारे में जानना चाहते हैं, तो एक बड़े किसान के पास जाएं।'

'तुम्हारे घर के सामने ट्रैक्टर खड़ा देखकर हमने सोचा तुमसे चर्चा करें।' हमने कहा।

'ओह ! ये मेरा नहीं है। मैं विजय कुमार नामक बड़े किसान के लिए काम करता हूँ। वह मेरे खेतों को पानी वितरित करता है और मैं आवश्यकता पड़ने पर उससे रुपये भी उधार लेता हूँ।'

रामू के पास दो एकड़ जमीन है, जो गाँव के तालाब पर आधारित है। गाँव के थोड़े बड़े किसानों ने तालाब का पानी किसी तरह अपने खेतों की तरफ मोड़ लिया और उसके खेतों की सिंचाई की चिंता भी नहीं की। चार साल पहले रामू ने विजय कुमार से उधार लेकर बोरवेल खुदवाया था, 500 फीट खुदवाने के बाद भी पानी नहीं आया। इसलिए रामू ने बोरवेल पानी से खेतों की सिंचाई के सपने देखने छोड़ दिए। अब उसे कर्ज चुकाना है। वह केवल खरीफ की फसल के समय ही खेती करता है। वह भी रवि की तरह कटाई के समय मजदूरों को लगाता है।

क्योंकि उसके खेतों की कमाई केवल तीन महीनों के लिए ही पर्याप्त होती है, उसे विजय कुमार के खेतों पर काम करना पड़ता है। विजय कुमार उसके धान के खेतों को पानी देता है। बदलें में वह उसके बड़े धान और ईख के खेतों को पानी देता है और उसका बताया हर काम करता है। क्योंकि रामू को ट्रैक्टर वगैरह चलाना आता है, उससे खेत बोने और धान व अन्य चीजें बाजार ले जानी पड़ती है।

तेलंगाना के छोटे किसान

पाँच में से चार किसान तेलंगाना में रवि और रामू की तरह हैं। उनके पास कम जमीन और सिंचाई की कम सुविधाएँ हैं। उन्हें ऋण की बहुत आवश्यकता है और उन्हें रुपयों के लिए महाजनों और अमीर साहूकारों या दलालों के पास जाना पड़ता है। उन्हें अपनी उपज कम दामों में बेचने पर मजबूर किया जाता है। आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें दूसरों के खेत में काम करना पड़ता है।

SCERT TELANGANA

- रामू साल में दो या तीन फसलें क्यों नहीं उगा सकता ?
- छोटे किसान किस प्रकार बड़े किसानों पर निर्भर हैं ? रामू का उदाहरण दीजिए ?
- छोटे किसानों को बैंक आसानी से ऋण क्यों नहीं देते ?
- रवि और रामू की परिस्थितियों में क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं ?

एक बड़े किसान से बातचीत

रामू हमें अपने मालिक विजय कुमार के पास ले गया। विजय कुमार के घर के बड़े आहते में एक धान बोने वाला, एक थ्रेशर और एक ट्रैक्टर-टेलर देखा। मजदूर मूंगफली की फसल उतार रहे थे और 10-15 औरतों मूँगफलियाँ छील रहीं थीं। विजय कुमार ने बताया कि इस साल फसल अच्छी हुई है।

'तुम इसे कब बेचोगे ?'

'अभी नहीं, कई हफ्तों तक सूखने के बाद बेचूँगा।' विजय कुमार ने कहा। विजय कुमार के घर में बड़ा 'कल्लम' या धान सूखाने की जगह। उसके पास गोदाम जैसा बहुत बड़ा छप्पर धान खाद की बोरियाँ व दूसरे खेती संबंधी औजार रखने के लिए हैं।

विजय कुमार ने बताया कि 'नई मूँगफली के दाम कम मिलते हैं, इसलिए मैं उन्हें कुछ महीनों बाद सूखाकर बेचता हूँ। व्यापारी सूखी मूँगफली का दाम अधिक देते हैं।'

विजय कुमार के पास 25 एकड़ भूमि और 3 बोरवेल हैं। उसने कटाई मशीन और थ्रेशर खरीदने के लिए बैंक से 25 लाख

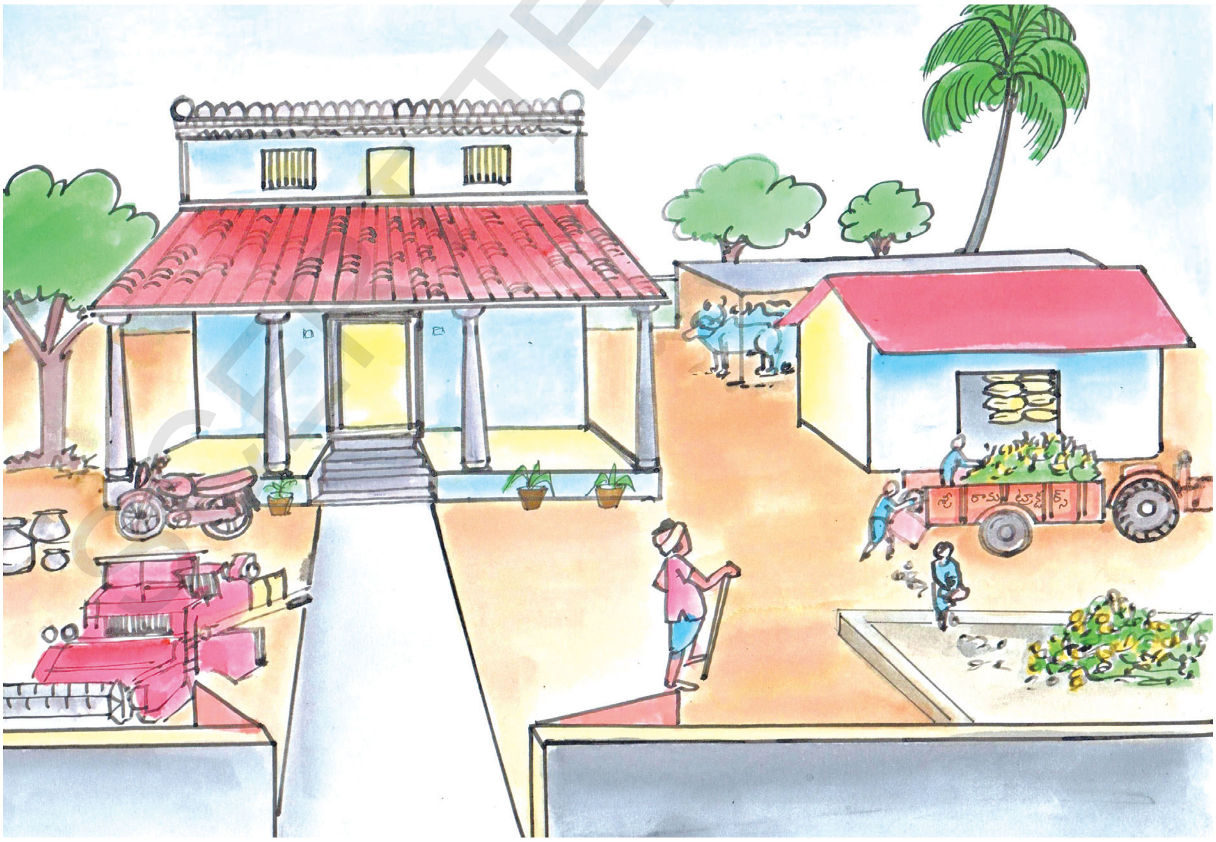

चित्र 7.3 विजय कुमार का घर

SCERT TELANGANA

रुपये का ऋण लिया था। वह उन उपकरणों को किराए पर देता है। वेंकटापुरम और उसके आस-पास के गाँव वाले इनका प्रयोग करते हैं। इस अतिरिक्त आय द्वारा विजय कुमार खेती के अन्य उपकरण बोरवेल, इत्यादि खरीद सका है। वह अन्य छोटे किसानों से जमीन पट्टे पर लेता है। विजय कुमार के पास 20 'मुर्रा' भैंस हैं, जिनका दूध वह बेचता है। गाँव में उसकी खाद की एक दुकान भी है, क्योंकि वह आवश्यकता के समय किसानों को उधार देता है, उसे खेतों में काम करने के लिए मजदूर आसानी से मिल जाते हैं। पास के गाँव में विजय कुमार का दूसरा घर भी है, जहाँ उसकी पत्नी और बच्चे रहते हैं।

हमारी बातचीत सुनकर विजय कुमार के 75 वर्षीय पिता भी उसमें शामिल हो गये। उन्होंने कहा कि 'आजकल खेती की बात करना ही बेकार है, पहले हम कम खाद और कम कीटनाशकों का उपयोग करते थे। पैदावार कम मगर स्थिर होती थी, फसल कभी नष्ट नहीं होती थी। आजकल हम बहुत अधिक खाद और कीटनाशक का उपयोग कर रहे हैं व ट्रैक्टर से खेत जोत रहे हैं। कटाई मशीनों व थ्रेशर का प्रयोग भी कर रहे हैं। फिर भी पैदावार नहीं बढ़ रही है। हमारे बहुत से पड़ोसियों की फसलें नष्ट हो गयी हैं।

- विजय कुमार अधिक दामों में कैसे बेच पाता है, जबकि अन्य किसानों को कम दामों में बेचना पड़ता है?
- विजय कुमार की खेती संबंधी उपकरणों की सूची बनाइये, कौनसे किसान इन्हें खरीद सकते हैं?
- विजय कुमार के आय के स्त्रोतों की सूची बनाइये?
- पुराने जमाने में जितनी उत्तम खेती आजकल नहीं है, विजय कुमार के पिता की बात से आप सहमत हैं? कारण बताइये?

तेलंगाना में खेती

कुछ सालों से तेलंगाना में खेती में बदलाव आया है। धान मुख्य फसल बनी रहने पर भी रागी, जवार और मक्का का स्थान नकदी फसलों जैसे कपास, गन्ना, मूँगफली, हल्दी व मिर्च ने ले लिया है। इन सभी फसलों पर बीज, पानी, खाद व कीटनाशक का खर्चा करना पड़ता है, जिसके लिए किसानों को ऋण लेना पड़ता है।

Fig. 7.4: Cotton Field

कुछ दशकों पहले तक अधिकांश किसान सिंचाई के लिए तालाबों और नहरों पर आधारित होते थे, आजकल आंध्र प्रदेश की आधी खेती बोरवेल पर आधारित है। इसके कारण भूमिगत जल में कमी आयी है और वर्षा पर निर्भरता बढ़ गयी है।

छोटे किसान इन सब कारणों से खेती में नुकसान को भोगकर दयनीय हो गये हैं। बहुत से

लोगों को अपनी जमीन बेचकर शहरों में मजदूरी करनी पड़ रही है। आजकल पाँच में से चार छोटे किसान ऐसे ही हैं।

बड़े किसानों को दूसरी तरफ नये उपकरणों से तथा कृषि उत्पादों की मांग बढ़ने से लाभ हो रहा है। वे डेयरी फार्म, मुर्गी पालन, दुकानों, स्कूलों व ऋण देने में अपना रुपया निवेश कर रहे हैं।

कृषि श्रमिक को गाँवों में नौकरी नहीं मिलती और उनकी मजदूरी भी नहीं बढ़ती है। सरकारी योजनाओं से थोड़ी मदद कुछ ही दिनों के लिए मिलती है। उनके परिवारों को विवश होकर गाँवों के बाहर या कस्बों में नौकरी की तलाश करनी पड़ती है।

मुख्य शब्द

मजदूरी	महाजन
ठेका/अनुबंध खेती	छोटे किसान
स्थानांतरण	कीटनाशक
खरीफ	नकदी फसलें

अपने ज्ञान में विकास

1. आप क्या सोचते हैं कि सरकार वेंकटापुरम के किसानों की सहायता करती है और स्थानांतरण पर रोक लगाती है? (AS_6)

2. तालिका को भरिए– (AS_3)

व्यक्ति	सामान्य समय में मजदूरी	कटाई के समय मजदूरी	इतर कृषि कार्यों में मजदूरी	सरकारी योजना में वेतन
पुरुष				
महिला				

3. आपके गाँव के बड़े किसान की तुलना वेंकटापुरम के विजय कुमार से कीजिए। (AS_1)

4. वेंकटापुरम में ऋण कौन लेता है? क्यों? (AS_1)

5. बैंक और महाजन किसानों को लोन कैसे देते हैं? क्या महाजन से लेना लाभदायक है। इसके अतिरिक्त अन्य क्या साधन है? (AS_4)

6. तेलंगाना में किसानों की स्थिति में सुधार कैसे ला सकते हैं? (AS_6)

SCERT TELANGANA

7. वेंकटापुरम के तीन किसानों की तुलना कीजिए और तालिका में भरिए। (AS_3)

क्र.स.	विषय	रवि	रामु	विजय कुमार
1	भूमि का आकार (एकड़ में)			
2	सिंचाई के स्त्रोत			
3	कृषि औजार और उपयोग			
4	खाद का उपयोग			
5	मूंगफली बेचने का तरीका			
6	अन्य कार्य			

8. छोटे व साधारण किसानों से संबंधित समस्याओं व सरकार द्वारा उनके निवारण के लिए किये गये उपायों के बारे में छपे समाचार एकत्र कीजिए। (AS_3)

9. आजकल सभी किसान खाद्य फसलों की अपेक्षा वाणिज्य फसलों पर अधिक ध्यान दे रहें है। इससे कौनसी समस्या उत्पन्न हो सकती है? (AS_4)

10. पृष्ठ 59 में अनुबंध खेती का अनुच्छेद पढ़िे। अपने विचार बताइए। (AS_2)

11. अट्लास की सहायता से मूँगफली की फसल वाले प्रांत दर्शाएँ। (AS_1)

परियोजना

1. एक अमीर और एक छोटे किसान का साक्षात्कार अपनी अध्यापिका की मदद से लें। उनकी खेती के बारे में जानकारी लें, वे कितने एकड़ में खेती करते हैं, क्या उगाते हैं, कैसे बेचते हैं, उनकी क्या कठिनाइयाँ हैं इत्यादि। इन जानकारियों की तुलना वेंकटापुरम की जानकारियों से करें ?

2. यदि आपका स्कूल शहर में है, तो अपनी गली या बस्ती में परिवारों के व्यवसायों की सूची बनाएँ। उन्हें स्वनियोजित, सामान्य श्रमिक और वेतनभोगी इन तीन श्रेणियों में बाँटे। चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय

8

भाग -अ

Part-A

कृषि उत्पादों में व्यापार

Trading Agricultural Products

SCERT TELANGANA

हम सभी प्रतिदिन चावल, बाजरा, दाल, सब्जियाँ, फल, दूध, चीनी, चाय, कॉफी, इत्यादि का सेवन करते हैं। इनमें से अधिकांश मुख्यतः गाँव के किसानों द्वारा उत्पादित किए जाते हैं और ये विभिन्न माध्यमों से हमारे पास पहुँचते हैं। क्या आप निम्नलिखित तालिका को भरकर उन वस्तुओं की सूची बना सकते हैं, जिनका प्रयोग हम प्रतिदिन करते हैं।

क्र.स.	श्रेणी	वस्तु	इन्हें हम कहाँ से प्राप्त करते हैं।
1.	अनाज		
2.	दाल		
3.	तेल		
4.	मसाले		
5.	सब्जियाँ		
6.	फल		
7.	चीनी		
8.	चाय/कॉफी		

लोगों को सड़क विक्रेताओं, संताओं तथा छोटी दुकानों से कृषि उत्पाद मिल जाते हैं। हाल ही के समय में किसान अपनी सब्जियां और फल रैतु बाजार में बेचते हैं। इस पाठ में हम इनमें से कुछ के कार्यों को सीखेंगे।

सड़कों पर सब्जियाँ बेचना

गौरी श्रीपुरम में रहने वाली एक छोटी सब्जी व्यापारी है। वह पास के थोक सब्जी बाजार से मौसमी सब्जियां खरीदती हैं और सब्जियों से भरी उस टोकरी को अपने सिर पर लेकर गलियों में जाकर बेचती है। वह घर-घर जाकर पूछती है कि क्या उन्हें सब्जियों की आवश्यकता है। गांव में दो-तीन अन्य महिलाएं भी इसी तरह से सब्जियां बेचती हैं।

गौरी प्रतिदिन अपने घर से सुबह 4 बजे निकलती है। वह थोक सब्जी बाजार सब्जियाँ खरीदने शहर जाती है। वह बस से आती-जाती है और आने-जाने में 25 रुपये खर्च करती है। वह अधिकतर सब्जियों को अपने घर में रखती थी और एक समय में टोकरी भर सब्जी ले जाती है। एक बार सब्जियाँ बिक जाती हैं, तो वह फिर घर जाती है और पुनः टोकरी भरकर बिक्री के लिए निकल

चित्र 8.1 गौरी अपने सर पर सब्जियाँ रखकर बेचने जाती हुई

पड़ती है। इस समयवह खाना भी पकाती है। बच्चों को खिलाती है और स्वयं भी खाती है। कई बार वह बहुत थक जाती है या कठिन कार्य करने में असमर्थ रहती हे, तो घर पर विश्राम करती है।

वह अपने ग्राहकों से क्या दाम लेती है? उदाहरण के लिए अगर वह 10 किलोग्राम टमाटर 100 रुपये में खरीदती है, वह उसे 15 रुपये प्रतिकिलो बेचती है, लेकिन वह पूरे टमाटर 15 रुपये प्रतिकिलो नहीं बेच सकती। उसे इन्हें खराब होने से बचाने के लिए 10 रुपये या 5 रुपये प्रति किलो भी बेचना पड़ता है। सुबह में वह टमाटर 15 रुपये प्रति किलो बेचती है और शाम तक हम उसे 8-9 रुपये प्रति किलो भी बेचते हुए पाते हैं। पूरे दिन में वह लगभग 100-150 रुपये तक कमा लेती है, जो उसके परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए कम होते हैं।

- क्या आप सोचते हैं कि वह टमाटर के दामों को 20 रुपये प्रति किलो बेचकर अपनी आमदनी बढ़ा सकती है?

गौरी अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा अगले दिन की खरीददारी के लिए रखती है। अन्यथा उसे साहुकार या स्वयं सहायता ग्रुप या थोक व्यापारी से उधार लेना पड़ता है। वे उसे पैसा देने के लिए इनकार नहीं करते, लेकिन वे शर्तो के बारे में बहुत सख्त होते हैं। अगर वह साहुकार से या व्यापारी से 500 रुपये लेती है, तो वे उसे 450 रुपये ही देते हैं और उसे अगले दिन 500 रुपये ही लौटाने पड़ते हैं। अगर वह एक ही दिन में सब्जियाँ नहीं बेच पाती हैं, तो उसके लिए गंभीर समस्या हो जाती है। वे जल्दी खराब हो **जाती हैं और कम दाम में बिकती हैं।**

गौरी हमारे राज्य के हजारों विक्रेताओं में से एक है। शहरों में कई विक्रेताओं के पास स्थाई जगह होती है, जो नगर पालिका से या निजी दुकान के मालिकों से किराए पर ली जाती है, कुछ तो नगर पालिका या नगर पंचायत को छोटी रकम अदा करके फुटपाथ पर भी बिक्री करते हैं।

गौरी जैसे व्यापारी बहुत कठिन जीवन व्यतीत करते हैं और कर्ज में डूबे रहते हैं। चूंकि वह साहूकार से उधार लेती है, इसीलिए उसकी कमाई का काफी हिस्सा ब्याज(वड्डी) चुकाने में चला जाता है।

- पैसा देने के लिए महाजन के क्या नियम और शर्ते होती हैं?
- आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि बैंक केवल स्थाई दुकानदारों और बड़े व्यापारियों को ही पैसा देती है?
- गौरी जैसी घर-घर बेचने वाले की सरकार कैसे सहायता करती है?

SCERT TELANGANA

साप्ताहिक मार्केट (संता)

क्या आप जानते हैं कि शहर के अलग-अलग इलाकों या छोटे शहरों में सप्ताह में एक दिन के लिए बाजार लगता है? इन बाजारों को संता कहा जाता है। व्यापारी एक संता से दूसरे संता जाते हैं और अपना सामान बेचते हैं। संता के व्यापारी कस्बों और शहरों के थोक विक्रेताओं की दुकानों से सामान लेते हैं और अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाते हैं। क्या आप विश्वास कर सकते हैं कि पूरे भारत में 25,000 से भी अधिक ऐसे कार्यरत संता हैं? ये गाँव और शहर दोनों क्षेत्रों में लगते हैं। आइए हम आँध्र प्रदेश में संता के बारे में कुछ जानकारी लेते हैं।

चौट्टुप्पल में रविवार संता

चौट्टुप्पल, याद्राद्रि जिले का एक छोटा सा कस्बा है। चौट्टुप्पल संता प्रत्येक रविवार को लगता है। 200 से अधिक व्यापारी सब्जियाँ, फल, कपड़े, माँस, मछली, सूखी-मछली, हाथ से बने और सिले सिलाए (रेडीमेड) जूते, सौंदर्य प्रसाधन (कॉस्मेटिक) रस्सी और पशुपालन के अन्य उपकरण, हँसिया और कई अन्य वस्तुओं की बिक्री करते हैं। आपको यहाँ भैंस, बकरी और भेड़ का व्यापार भी देखने मिलेगा। आस-पास के 40 गाँव के लोग चौट्टुप्पल में खरीददारी करने के लिए आते हैं।

चोट्टुप्पल संता में पशु, किराना और गैर-खाद्य वस्तुओं की बिक्री के लिए अलग-अलग स्थान आवंटित किये जाते हैं। सब्जी बिक्री के स्थान पर प्रत्येक विक्रेता का एक निश्चित स्थान होता है। पशुओं की बिक्री के लिए पशुओं को रखने के लिए सुविधाओं के साथ छप्पर भी उपलब्ध होते हैं।

सूखी मिर्ची की बिक्रेता इंद्रा

36 वर्षीय इंद्रा कई वर्षों से संता में सूखी मिर्च बेच रही है। वह कत्ताग्गूर गाँव की रहने वाली है, जो चोट्टुप्पल से लगभग 50 किलोमीटर दूर है। उसने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की है।

चित्र 8.2 सान्था

उसके एक बेटा और बेटी है, जो स्कूल में पढ़ रहे हैं। उसने इस व्यापार को अपने पिता से सीखा है। उसका पति भी यही व्यापार करता है। सूखी मिर्च बेचने के लिए वह सप्ताह में चार साप्ताहिक बाजार और तीन बड़े गाँव घूमती है। यह उसका साप्ताहिक यात्रा कार्यक्रम है–

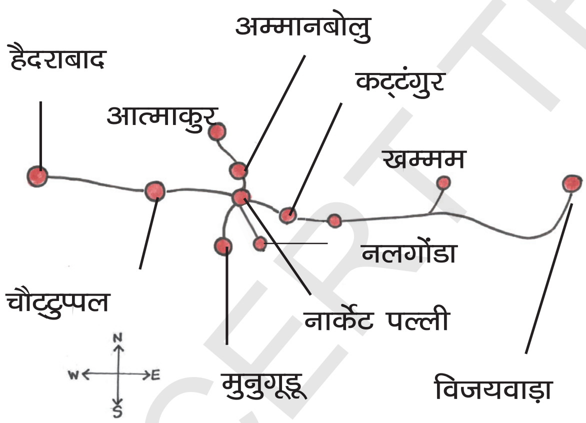

इंद्रा प्रतिदिन सुबह जल्दी उठ जाती है और घर के सभी काम खत्म करने के बाद मिर्च को झोले के साथ संता/गाँव के लिए निकलती है। वह करीब सुबह 10 बजे से मिर्च बेचना शुरु करती है और शाम 7 बजे खत्म करती है।

इंद्रा अन्य महिलाओं के साथ मिर्च का थैला लेकर लॉरी में बैठकर सान्था जारी है। वह सूखी मिर्च खम्मम के थोक विक्रेता से प्राप्त करती है। वह फोन पर थोक विक्रेता से संपर्क करती है और मिर्च खरीदती है। थोक विक्रेता पैसे लेने के लिए प्रत्येक शनिवार को उसके गाँव आता है।

मिर्च बेचने के लिए इंद्र लंबे समय तक एक स्थान पर बैठी रहती है, जो बहुत मेहनती काम है। सप्ताह में 6 दिन उसे अपने गाँव से विभिन्न स्थान पर जाना पड़ता है। वह एक दिन अपने गाँव में दुकान लगाती है, उसी दिन वह थोक विक्रेता को पैसे का भुगतान करती है।

इंद्रा एक दिन में लगभग 200 से 300 रुपये कमा लेती है। यह तय नहीं है कि हर बार उसे उच्च गुणवत्ता वाली मिर्च ही मिले। चूंकि वह फोन पर संपर्क करके मिर्च खरीदती है, इसीलिए वह प्रत्येक थैले को जांच नहीं सकती, कभी–कभी तो उसे निचली गुणवत्ता वाली मिर्च मिलती है, जिसके कारण उसे नुकसान उठाना पड़ता है।

अपने व्यापार को चलाने के लिए इंद्रा ने अपने गाँव के स्वयं सहायता समूह से 30,000 रुपये उधार लिए, जिसकी वह सदस्य है। वह इस उधार को 1200 रुपये प्रतिमाह की किश्त भरकर अदा करती है। उसको लगता है कि साहूकार से उधार लेने से अच्छा स्वयं सहायता से उधार लेना है, क्योंकि साहूकार उच्च ब्याज दर लगाते हैं (प्रतिमाह 3 रुपये प्रति सैकड़ा)। स्वयं सहायता समूह को वह प्रतिमाह 25 पैसा प्रति सैकड़ा ब्याज देती है। कम आय अर्जित करने वालों के लिए सरकारी योजना 'पाव्ला वड्डी' की कारण से यह हो सका है।

मिर्च जैसे कृषि उत्पाद के अलावा, संता में बड़ी संख्या में दैनिक उपयोग वाले औद्योगिक उत्पाद, जैसे कपड़े, टॉर्च, माचिस, बर्तन, उपकरण, टोकरियाँ, प्लास्टिक के सामान, आदि छोटे व्यापारियों द्वारा बेचे जाते हैं, ऐसे सभी व्यापारी शहर पंचायत को टैक्स के रूप में 10 रुपये कर के रूप में भुगतान करते हैं। यहाँ अलग और प्रसिद्ध संता हैं, जहाँ पशु, भेड़ और बकरियाँ भी बेची जाती हैं। इन्हें दूर–दूर स्थानों और पास

SCERT TELANGANA

के गाँवों से भी लाया जाता है। कई किसान यहाँ पशु खरीदने या बेचने आते हैं। ऐसे पशुओं को संता में दलाल होते हैं, जो लेन-देन में किसानों की सहायता करते हैं और अपना कमीशन लेते हैं।

संता में लगभग तीन-चौथाई व्यापारी महिलाएँ होती हैं। संता में सामान बेचना कई व्यापारियों का परंपरागत व्यापार है। इसका अर्थ है कि उनके परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी इस व्यापार को करते आ रहे हैं। संता में अधिकतर स्थान विशिष्ट व्यापारियों के लिए सुरक्षित होता है। उस स्थान पर कोई अन्य व्यापारी आकर अपनी दुकान नहीं लगा सकता। इसका अर्थ है कि विभिन्न संताओं में वे अपनी दुकान स्थित कर देते हैं और सप्ताह में एक बार वहाँ आते हैं। वे अपनी सुविधानुसार अपने मार्ग का फैसला करते हैं।

खासतौर पर सब्जी और फल जैसे खराब होने वाले कृषि उत्पाद बेचने वाले छोटे व्यापारी, गौरी की तरह ही समस्याओं का सामना करते हैं। चूंकि उनके घर संता से दूर होते है, इसीलिए उन्हें थोक बाजार से खरीदा हुआ पूरा सामान बेचकर ही जाना पड़ता है। उनके पास भंडारण की सुविधा नहीं होती है। संता व्यापारी अपना सारा सामान अपने घरों में रखते हैं। अगर वे खराब होने वाले सामान को शाम तक बेच नहीं पाते हैं, तो उन्हें यातायात का खर्चा उठाते हुए सामान को वापस ले जाना पड़ता है। कभी-कभी उन्हें बड़े नुकसान से बचने के लिए खरीदी से कम दाम में बेचना पड़ता है।

इंद्रा जैसी व्यापारी के अलावा पास के गांव के किसान और सब्जियां उगाने वाले भी अपने उत्पादों को बेचने के लिए संता में आते हैं। इस प्रकार से संता एक महत्वपूर्ण साधन हैं, जो आम आदमी की रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करता है और बड़ी संख्या में छोटे व्यापारियों, मजदूरों और परिवाहकों को उनकी आजीविका प्रदान करता है।

- स्थाई बाजारों के मुकाबले सान्था किस प्रकार से भिन्न हैं?
- क्या स्थाई बाजारों के होते हुए आपको संताओं की आवश्यकता है?
- आपके विचार में हम किस तरह से संताओं के छोटे व्यापारियों के जीवन को अच्छा बना सकते हैं?

तेलंगाणा में रयतू बाजार

अनाज और दाल जैसे अधिकतर कृषि उत्पाद सीधे थोक व्यापारियों को बेच दिये जाते हैं। छोटे व्यापारी इन वस्तुओं को उनसे खरीदकर उपभोक्ताओं को बेचते हैं। तथापि कुछ ऐसे बाजार भी हैं, जहां उत्पादक अपनी वस्तुओं को सीधे उपभोक्ताओं को बेचते हैं। 'रैतु बाजार' ऐसा एक बाजार है।

हमने रैतू बाजार के एक किसान रामगोपाल से साक्षात्कार किया। इस साक्षात्कार के कुछ अंश नीचे दिये गये हैं।

आपने इस बाजार में कब से आना शुरू किया?

मैंने इस बाजार में वर्ष 2003 से आना शुरू किया। मेरा पड़ोसी यहां वर्ष 2000 से आ रहा है।

क्या आपके जैसे किसान ही इस रयतू बाजार में बिक्री कर सकते हैं?

शुरुआत में इस बाजार को सरकारी अधिकारी हमारे गाँव में आकर चला रहे थे। हमें एक फोटो पहचान पत्र दिया गया था, जिसमें हमारा नाम, पता, उगाया गया अनाज और भूमि की सीमा, आदि जानकारियाँ रहती थी। फोटो पहचान के साथ केवल एक ही व्यक्ति को उसकी/उसके उत्पाद को बेचने के लिए रयतू बाजार में आने की अनुमति होती।

SCERT TELANGANA

चित्र 8.3 रयतू बाजार

विक्रेताओं को पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर दुकानें आवंटित की जाती थीं। हालांकि यह केवल किसानों के लिए बना था, मैंने स्वयं सहायता समूह के एक या दो मिलों और महिला व्यापारियों को भी देखा, जिनकी अपनी दुकानें थीं। जहाँ मिल वाले हमसे धान प्राप्त करते हैं, वहीं स्वयं सहायता समूह की महिला व्यापारी सब्जियाँ बेचती हैं, जो हमारे जिले में उगायी जाती हैं।

क्या आप अपने उत्पादों को बेचने के लिए कोई किराया देते हैं?

नहीं। मिल मालिक और स्वयं सहायता समूह व्यापारियों को इस मामले में, उन्हें अपनी जगह के लिए किराया देना पड़ता है।

आपने रैतु बाजार आना क्यों शुरू किया?

पहले मैं अपने उत्पादों को थोक बाजार में ले जाता था। थोक विक्रेताओं द्वारा तय किये गये दामों पर बेचने के अलावा मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। कई बार तो मुझे अपनी सब्जियों को बेहद सस्ते दामों में बेचना पड़ता था, जिससे उन पर किये गये खर्च की भरपाई भी नहीं हो पाती थीं। यहाँ मैंने पाया कि बाजार में 10-15 से भी अधिक गाँवों से मेरे जैसे किसान आते हैं। थोक बाजार में हम अजनबियों जैसे थे। वहाँ हमारे लिए कोई शौचालय नहीं था। हमारे पास अपनी सब्जियों के भंडारण के लिए कोई स्थान नहीं था।

आपके उत्पादों के लिए मूल्य कैसे तय किये जाते हैं?

इस कार्य के लिए बनायी गयी तीन किसानों की समिति के साथ विमर्श करने के बाद अधिकारी प्रतिदिन सुबह बाजार के उत्पादों के लिए मूल्य तय करते हैं। इसका सिद्धांत है कि मूल्य थोक बिक्री मूल्य से लगभग 25 प्रतिशत अधिक और फुटकर मूल्य से 25 प्रतिशत कम हो।

क्या आप सोचते हैं कि आपको ग्राहक रयतू बाजार से खुश हैं?

जी हाँ ! यहाँ न सिर्फ उन्हें फल और सब्जियाँ मिलती हैं, बल्कि दाल, इमली, मिर्च और खाद्य तेल जैसी कई अन्य आवश्यक खाद्य सामग्रियाँ भी मिलती हैं। उन्हें यह उचित दामों में मिलते हैं। मैं सब्जियाँ उगाता हूँ और जब मेरे ग्राहक सौदेबाजी करके खरीदते हैं, तो मैं अपनी खुशी बयान नहीं कर सकता। मुझे अपनी मेहनत का पूरा दाम मिलता है और ग्राहकों को उनके पैसों की पूरी कीमत। हम भी इंटरनेट पर अन्य बाजारों में वस्तुओं की कीमतों की जांच करते और बेचते।

क्या आपको इस बाजार के प्रयोग के दौरान किसी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ा?

हाँ, कभी-कभी, जब मैं देरी से आता हूँ, मेरे लिए तो अपनी सब्जियाँ बेचने के लिए अच्छी जगह पाना कठिन हो जाता है। मेरे पास केवल कोने की जगह बच जाती है। हमारी गाड़ियों को रखने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है और

SCERT TELANGANA

कभी-कभी यह जोखिम भरा होता है। मैंने यह भी पाया है कि किसानों की आड़ में लोग बाजार में सब्जियाँ बेचने आते हैं। बाजार से दूर रहने वाले किसानों को इन बाजारों से लाभ नहीं मिल पाता।

- रयतू बाजार में किसान केवल विक्रेता हैं- सही/गलत
- रयतू बाजार में लाभार्थी कौन हैं और क्यों ?
- रयतू बाजार में किसानों को क्या लाभ मिलता है ?
- रयतू बाजार में किस तरह से दाम तय किये जाते हैं ?

मुख्य शब्द

फुटकर व्यापार
ठोक विक्रेता
रयतू बाजार
बाजार
पाव्ला वड्डी
संता

चित्र 8.4 रयतू बाजार में दाम सूची

अपना ज्ञान बढ़ाएँ

1. कृषि वस्तुओं का व्यापार कैसे किया जाता है ? (AS_1)

2. निम्नलिखित मुद्दों पर गौरी, इंद्रा और रैतु बाजार में रामगोपाल के बीच के अंतर की सूची बनाएं- (AS_1)

	गौरी	**इंद्रा**	रैतु **बाजार में रामगोपाल**
व्यापार करने के लिए इन्हें पैसा कहाँ से मिलता है ?			
सामान कहाँ से बेचा जाता है ?			
कीमतें कैसे तय की जाती हैं ?			

3. फुटकर व्यापारियों को व्यापार करने के समय होने वाली कठिनाइयों की सूची बनाइए।(AS_1)

4. ऐसे कौनसे तरीके हैं, जिनके माध्यम से फुटकर व्यापारी अपनी आय बढ़ा सकते हैं?(AS_1)

5. साहूकारों की बजाय स्वयं सहायता समूह से उधार लेना बेहतर क्यों है?(AS_6)

6. साहूकार, बैंक से पैसा उधार लेने में क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं? (AS_1)

7. आपको क्यों लगता है कि थोक की दुकान के मुकाबले रयतू बाजार के माध्यम से बिक्री करना बेहतर है? (AS_1)

8. पृष्ठ सं- 66 में 'गौरी जैसे व्यापारी' अनुच्छेद पढ़िए। अपने विचार बताइए। (AS_2)

9. अपने जिले के मानचित्र में साप्ताहिक बाज़ार होने वाले स्थान अध्यापक की सहायता से दशाईएँ।(AS_5)

10. रयतू बाजार क्या है? इसके लाभ और कमियाँ क्या हैं? (AS_1)

11. पंचायत या नगर पालिका चौटुप्पल संता में व्यापारियों से पैसे इकट्ठा क्यों करती है? (AS_1)

परियोजना

1. किसी सब्जी विक्रेता से बात करने का प्रयास करें, ताकि उनके काम, आजीविका और समस्याओं के बारे में समझा जा सके?
2. समीप की संताओं में जाइए और वहां के कामकाज का निरीक्षण कीजिए तथा उसकी एक तस्वीर बनाकर अपनी कक्षा में लगाइए।

SCERT TELANGANA

अध्याय

8

भाग – ब

Part - B

कृषि उत्पादों में व्यापार

(Trade in Agricultural Products)

पिछले पाठ में आपने फुटकर व्यापार के कुछ विषयों को जाना – कैसे छोटे व्यापारी विभिन्न उत्पादों को गाँव और शहर में उपभोक्ताओं तक पहुँचाते हैं। इस पाठ में हम धान के थोक व्यापार के बारे में कुछ विषयों का अध्ययन करेंगे। इसे चावल मिल मालिकों और बड़े व्यापारियों द्वारा किसानों से बड़ी मात्रा में खरीदा जाता है। आइए देखते हैं यह कैसे होता है?

SCERT TELANGANA

कृषि बाज़ार चौक

रैतु बाजार की तरह कृषि बाजार प्रांगण (एएमवाई) एक बाजार है, जो सरकार द्वारा चलाया जाता है, जिसमें किसान अपने उत्पादों को बेचकर तुरंत भुगतान पाते हैं।

चंद्रशेखर नेल्लूर के निकट नरसापुर का एक किसान है। इस वर्ष उसके फसल अच्छी हुई है। लगभग 60 क्विंटल धान। उसने अपने धान के बस्तों को ट्रैक्टर में लादा और नेल्लूर के एएमवाई में लेकर आया। उसने अपने बस्ते उतारे और निलामी के लिए कतार में खड़ा हो गया।

लगभग सुबह10 बजे एएमवाई समिति के सदस्य आए और बस्तों पर एक पर्ची लगा दी, जिसमें किसान का नाम और क्विंटल में धान की मात्रा। लगभग 11 बजे थोक विक्रेता और चांवल की मिल के मालिक धान के लिए आए । इसके बाद समिति के सदस्यों ने एक किसान के पहले धान के ढेर से नीलामी शुरु की। चूंकि सरकार द्वारा 1080 प्रति क्विंटल का न्यून्तम समर्थन मूल्य (एएमसपी) घोषित किया गया, इसलिए निलामी इसी मूल्य से शुरु की गयी।

न्यूनतम समर्थन मूल्य

सरकार प्रति वर्ष विभिन्न फसलों, जैसे चावल, गेहूँ में निवेश के मूल्यों को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करती है। अगर कोई भी व्यापारी उच्च कीमत में इन्हें खरीदने के लिए तैयार नहीं होता है, तो भारतीय खाद्य एजेंसियाँ उत्पादों को किसान से न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद लेती है। इस प्रकार सरकार सुनिश्चित करना चाहती है कि किसान को उनके उत्पादों के लिए न्यूनतम मूल्य मिले। वैसे यदि कोई व्यापारी एमएसपी के अपेक्षा उच्च कीमत पर खरीदना चाहे तो किसान उसे बेचने के लिए स्वतंत्र है।

नीलामी में नीलाम किये जाने वाले धान के ढेरों के लिए बोलियाँ लगायी जाती हैं। बोलियों की कीमत खरीददार अपनी इच्छा के अनुसार लगाता है। एक बार व्यापारी द्वारा बोली लगा दी जाती है, एएमवाई समिति के अधिकारी धीरे–धीरे तीन तक गिनते हैं। अगर तीन गिनने से पहले दूसरा व्यापारी बढाकर बोली लगाता है, तो निलामी जारी रहती है। एएमवाई समिति अधिकारी अगली बोली पर तीन तक गिनता है, यदि तीन तक गिनती पूरी हो जाती है, तो फिर किसी अन्य बोली की इजाजत नहीं होती, अगर कोई लगाना चाहे तो भी।

चंद्रशेखर के धान के पास कई व्यापारी और मिल के दलालों की भीड़ जमा होती है। उन्होंने पाया कि उसकी धान सूखी है और बहुत कम थालू है। जब नीलामी शुरू हुई, तो व्यापारियों और चावल मिल के दलालों ने कीमतें बढ़ाना आरंभ कर दिया। धान की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए चंद्रशेखर को बड़े चावल मिल के दलाल के प्रति क्विंटल 1150 रुपये की कीमत का प्रस्ताव रखा। अन्य कई किसानों को उनके धान के लिए 1100 रुपये प्रति क्विंटल का मूल्य मिला।

चित्र 8.5 कृषि बाजार क्षेत्र

एएमवाई समिति के अधिकारी विभिन्न व्यापारियों द्वारा धान के ढेरों के लिए लगायी गयी बोलियों की कीमत को नोट करते हैं। वे कार्यालय लौटते हैं और व्यापारी का नाम तथा पर्ची संख्या को नोट करते हैं और चंद्रशेखर को व्यापारी द्वारा लगायी गई अधिकतम बोली की कीमत के बारे में सूचित करते हैं। वह बेचने के लिए राजी हो जाता है और समिति के सदस्य कीमत, धान की मात्रा और व्यापारी द्वारा अदा की जाने वाली कुल राशि को एक पर्ची पर लिखते हैं और उसे सौंप देते हैं।

अगर एक किसान व्यापारी द्वारा लगायी गयी अधिकतम कीमत की बोली पर भी अपना धान बेचने में कोई दिलचस्पी नहीं रखता, तो वह अगले दिन या एक सप्ताह तक इंतजार कर सकते हैं।

एएमवाई के धान खरीदने के लिए प्रत्येक व्यापारी को लाईसेंस फीस का भुगतान करना आवश्यक है। जब वे धान खरीदते हैं, तो खरीददारी के प्रत्येक 100 रुपये पर उन्हें समिति को 1 रुपया कमीशन देना पड़ता है। हालांकि किसानों को कुछ भी भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती, व्यवहार में, वे उतारने, सफाई और रख-रखाव के लिए प्रत्येक 100 रुपये पर 3.50 रुपये का भुगतान करते हैं। यह राशि व्यापारियों द्वारा किसानों को पैसे का भुगतान करते समय घटा कर दी जाती है।

- क्या आप सोचते है कि यह पद्धति उचित है?
- किसानों को इस प्रक्रिया से कैसे फायदा मिल सकता है?

एएमवाई में बिक्री करने वाले किसानों को कभी-कभी अपना कृषि उत्पाद को ढोने के लिए परिवहन तथा अन्य शुल्कों पर 10 रुपये प्रति क्विंटल तक खर्च करना पड़ता है। यह किसानों द्वारा गाँव में बिक्री करते समय किये गये भुगतान से कहीं अधिक है। मिल का दलाल चंद्रशेखर के पास आया और पर्ची पर निगाह डालने के बाद एएमवाई के शुल्कों को घटाकर पूरी राशि का भुगतान कर देता है।

SCERT TELANGANA

- क्या आप बता सकते हैं कि उनसे चंद्रशेखर को कितना पैसा दिया होगा ?

धान की कुल मात्रा

.... क्विंटल

प्रति क्विंटल दरों

रुपये...................... प्रति क्विंटल

कुल राशि........... x ....

= ....

लदाई और सफाई शुल्क

रु. 3.50 x ....

कुल राशि : .... - ....

=.............

- आपके विचार में किसानों द्वारा एएमवाई में अपने उत्पाद बेचने के क्या फायदे और नुकसान हैं ?

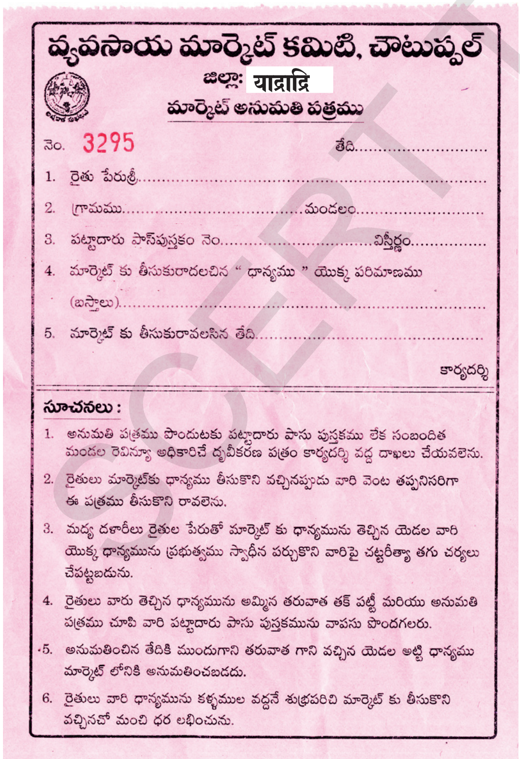

వ్యవసాయ మార్కెట్ కమిటి, చౌటుప్పల్

జిల్లా: यादाद्रि

మార్కెట్ అనుమతి పత్రము

నెం. 3295 తేది.............................

1. రైతు పేరుశ్రీ..

2. గ్రామము.................................మండలం.........................

3. పట్టాదారు పాస్‌పుస్తకం నెం.............................విస్తీర్ణం...............

4. మార్కెట్ కు తీసుకురాదలచిన " ధాన్యము " యొక్క పరిమాణము (బస్తాలు)..

5. మార్కెట్ కు తీసుకురావలసిన తేది...

కార్యదర్శి

సూచనలు :

1. అనుమతి పత్రము పొందుటకు పట్టాదారు పాసు పుస్తకము లేక సంబంధిత మండల రెవిన్యూ అధికారిచే ధృవీకరణ పత్రం కార్యదర్శి వద్ద దాఖలు చేయవలెను.
2. రైతులు మార్కెట్‌కు ధాన్యము తీసుకొని వచ్చినప్పుడు వారి వెంట తప్పనిసరిగా ఈ పత్రము తీసుకొని రావలెను.
3. మద్య దళారీలు రైతుల పేరుతో మార్కెట్ కు ధాన్యమును తెచ్చిన యెడల వారి యొక్క ధాన్యమును ప్రభుత్వము స్వాధీన పర్చుకొని వారిపై చట్టరీత్యా తగు చర్యలు చేపట్టబడును.
4. రైతులు వారు తెచ్చిన ధాన్యమును అమ్మిన తరువాత తక్ పట్టీ మరియు అనుమతి పత్రము చూపి వారి పట్టాదారు పాసు పుస్తకమును వాపసు పొందగలరు.
5. అనుమతించిన తేదికి ముందుగాని తరువాత గాని వచ్చిన యెడల అట్టి ధాన్యము మార్కెట్ లోనికి అనుమతించబడదు.
6. రైతులు వారి ధాన్యమును కళ్ళముల వద్దనే శుభ్రపరిచి మార్కెట్ కు తీసుకొని వచ్చినచో మంచి ధర లభించును.

चित्र 8.6 पावती–बाजार समिति

चंद्रशेखर जैसे किसान, जिनके पास पर्याप्त मात्रा में उत्पादन है, कृषि बाजार प्रांगण में ही बेचना पसंद करते हैं। सामान्य रूप से भुगतान में देरी नहीं होती है या गाँव में स्थान पर ही भुगतान शुल्क। चूंकि बिक्री खुली नीलामी द्वारा की जाती है। किसानों को बेहतर से बेहतर कीमत प्राप्त करने का अवसर मिलता है। कुछ एएमवाई में भ्रष्ट अधिकारी और व्यापारी हाथ मिला लेते हैं और किसानों को कम कीमत देते हैं, लेकिन यह हर स्थान पर नहीं होता है।

आँध्र प्रदेश में लगभग 300 एएमवाई हैं। इनमें लगभग एक चौथाई कृषि उत्पाद का व्यापार होता है। अब आप क्या सोचते हैं कि बाकी बचे तीन–चौथाई उत्पाद का क्या होता होगा ? यह कहाँ बेचा जाता होगा ? वे किसान एएमवाई में क्यों नहीं आते ? आइए पता लगाते हैं ?

चावल मिल वाले को बेचना

यह धान कटाई का मौसम था और नरसापुर गाँव का मल्लय्या केवल 14 क्विंटल धान ही निकाल सका। उसके खेतों में पैदावार कम हुई, क्योंकि वह आवश्यक मात्रा में खाद और कीटनाशकों का प्रयोग नहीं कर सका था।

चंदूलाल का गुमास्ता एक ट्रैक्टर में आया और निरीक्षण किया कि धान सूखी है और ज्यादा थालू तो नहीं है। गुमास्ता ने अपने ट्रैक्टर पर धान की बोरियाँ लादीं और अन्य किसानों से बोरियाँ लेने निकल पड़ा।

चावल की मिल में मल्लय्या के धान का वजन किया गया। यह 14 क्विंटल था। गुमास्ता ने मुट्ठी भर धान उठाया और चंदूलाल को दिखाने के लिए ले गया। चंदूलाल ने उसके सूखेपन के आधार पर धान की कीमत 950 रुपये प्रति क्विंटल तय की। यह व्यापारियों द्वारा कृषि बाजार प्रांगण से खरीदे जाने वाले धान की कीमत से कहीं कम थी– जहाँ यह लगभग

SCERT TELANGANA

1100 रुपये प्रति क्विंटल थी। मल्लय्या को पैसों की सख्त जरूरत थी और उसनें तुरंत ही भुगतान करने के लिए कहा। मौके पर ही भुगतान करने के लिए चंदूलाल ने 1.50 रुपये प्रति सैकड़ा की कटौती की (अर्थात 14.25 रुपये प्रति क्विंटल)। यह प्रक्रिया नेल्लूर में प्रत्येक व्यापारी और चावल मिल मालिकों द्वारा अपनायी जाती है।

आइए हम मल्लय्या की आमदनी का हिसाब लगाते हैं।

धान का वजन = 14 क्विंटल

चावल मिलर द्वारा तय की गयी धान की कीमत = 950 रुपये प्रति क्विंटल

14 क्विंटल की कीमत
= रुपये 950 x 14 = रुपये 13,300

तुरंत भुगतान के लिए की गयी कटौती
= रुपये 14.25 x 14 = रुपये 200

कुल देय भुगतान
=13,300 – 200 = रुपये13, 100/-

(अगर मल्लय्या और 15 दिन के लिए इंतजार करता, तो मौके पर कमीशन नहीं घटता)

- क्या आप अंदाजा लगा सकते हैं, क्यों मल्लय्या धान को इतनी कम कीमत में चंदुलाल को बेच रहा था? आगे पढ़ने से पहले कक्षा में इस विषय में संभव कारणों पर चर्चा करें।

चार महीने पहले मल्लय्या ने चंदूलाल से खाद और कीटनाशकों के लिए 5000 रुपये उधार लिए थे। इसी तरह चंदूलाल से कई अन्य किसान भी उधार लेते हैं। इसीलिए उन्हें चंदूलाल द्वारा तय की गयी कीमतों पर ही अनाज बेचने पर मजबूर होना पड़ता है। इसीलिए मल्लय्या को उसकी देय राशी का भुगतान करने की बजाए चंदूलाल उससे ब्याज पर ली गयी राशि और ब्याज को भी घटा देता है। अब देखते है कि मल्लय्या को अंततः कितनी राशि मिलती हैं।

मल्लय्या द्वारा उधार ली गयी राशि

मल्लय्या = 5000 रुपये

चार महीने का ब्याज
= 400 रुपये

कुल कटौती
= 5400 रुपये

धान के लिए दी जानी वाली राशि
= 13,100 रुपये

भुगतान की गयी कुल राशि

(13, 100रुपये - 5400रुपये) = 7700 रुपये

(ध्यान दे : सभी गणनाएं रुपये को पूर्णांक बनाने के लिए की गयी है।)

चित्र 8.7 चावल की मिल के लिए धान को ले जाते हुए

SCERT TELANGANA

आँध्र प्रदेश में मल्लय्या जैसे किसान चावल मिल मालिकों या अन्य साहुकारों या अमीर जमींदारों से उधार लेते हैं और अपनी फसल उन्हें बेचने पर मजबूर हो जाते हैं। उनके साथ तोलते और कीमत तय करते समय धोखा भी किया जा सकता है। किसानों को उधार देते समय चावल मिल के मालिक न केवल अपनी मिल के लिए कच्चा माल मिलने से सुनिश्चित हो जाते हैं, बल्कि उस माल को मनचाही कीमत पर भी प्राप्त कर लेते हैं।

- अगर मल्लय्या अपने धान को कृषि बाजार प्रांगण में बेचने में सक्षम होता, तो उसे कितनी कीमत मिलती ?
- मिल मालिक को बेचने पर उसका कितना हानि हुआ ?
- मिल मालिक की स्थान अगर वह बैंक से उधार लेता तो इससे क्या अंतर होता ?
- अगर मल्लय्या सरकारी बैंक से उधार लेता तो उसकी कमाई कितनी होती ?

वेंकटापुरम के बड़े किसान या जमींदार छोटे किसानों को पैसा उधार देते हैं और उनसे धान खरीदते हैं। वे अपनी फसल और अन्य किसानों से प्राप्त किया गया माल एएमवाई में, शहर के थोक विक्रेता धान व्यापारी या चावल मिलों को बेचते हैं। कई मायनों में जमींदारों के कर्जे तले दबे रहते हैं, वे उनसे पैसा, बीज, ट्रैक्टर, यहाँ तक कि पानी भी उधार लेते हैं। इसी कारण वे उन्हें अपना धान बेचने के लिए विवश होते हैं और जो कुछ भी जमींदार देते हैं, उसे स्वीकार कर लेते हैं। जो किसानों को उधार देते हैं, वे उनके ऋण की सुरक्षा के लिए फसल पर भी निगाह रखते हैं और किसान से उधार की भरपाई के रूप में उनके उत्पाद को ले जाते हैं। हांलाकि इस तरह से किसान अपने उत्पादों को संभव उच्च कीमतों पर बेचने में सक्षम नहीं हो पाते।

- जिस प्रकार से जमींदारों और चावल मिल मालिकों द्वारा वेंकटापुरम के किसानों से धान प्राप्त किये जाने के अंतर की तुलना और भेद का निरुपण करें।

दलालों के माध्यम से बिक्री

शांति भी वेंकटापुरम की रहने वाली एक अन्य किसान है। पति की मृत्यु के बाद उसने अपने खेतों की देखभाल करना प्रारंभ कर दिया। वह स्थानीय स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सदस्य है। जहाँ से उसने खेती के लिए 20,000 रुपये उधार लिए। 1.5 एकड़ की उसके खेत की फसल इस बार 14 क्विंटल थी। उसने सात क्विंटल वजन करके बेचने के लिए बगल में रख दिया, शेष घरेलू खपत के लिए रख दिया।

अगले दिन नलगोंडा के बड़े चावल मिल का एक दलाल (कमीशन ऐजन्ट) धान खरीदने के लिए गाँव आया और किसानों से संपर्क किया। उसके शांति के धान को देखा और मोलभाव करने के बाद से 1000 रुपये प्रति क्विंटल की कीमत की माँग की। जब उसने बस्तों का वजन किया, तो 7 क्विंटल था, लेकिन अगले दिन दलाल (कमीशन ऐजन्ट) ने तोला तो उसने कहा कि वह 6.5 क्विंटल था। उसने एसएचजी सदस्यों की उपस्थिति में उसे ठीक से तोलने पर जोर दिया। इस बार वजन 7 क्विंटल था। (कमीशन ऐजन्ट) ने धान लिया और शांति को 15 दिन बाद पैसे का भुगतान करने का वादा किया। दो सप्ताह बाद वह लौटा और शांति को 6825 रुपये दिया। उसने दलाली या कमीशन के तौर पर 25 रुपये प्रति क्विंटल काट लिया।

हम शांति से मिले और उससे कुछ प्रश्न किये। 'आपने किसी व्यापारी से उधार नहीं लिया। आप एएमवाई में क्यों नहीं बेचतीं ?'

SCERT TELANGANA

'नलगोंडा जाने के लिए मुझे ट्रैक्टर का किराया और लदान तथा उतराई के शुल्क देने पड़ते। मुझे मिलने वाले अतिरिक्त पैसे से परिवहन की कीमत की भरपाई नहीं हो सकती। साथ ही मुझे या मेर बेटे को खेतों में एक दो दिन का काम भी छोड़ना पड़ता। हमारे पास बेचने के लिए बहुत कम है। केवल वे किसान ही नलगोंडा जाते हैं, जिनके पास बहुत अधिक धान हो'। शांति ने उत्तर दिया।

'आप ऊँचें दाम क्यों नहीं माँगते, जबकि अधिकतर किसान एएमवाई और चावल मिलों में 1100 रुपये से 1150 रुपये में बेचते हैं?'

'ये दलाल इस तरह के उच्च मूल्य का भुगतान नहीं करते। हम इस मुसीबत से बच जाते हैं और घर से ही बेचने का इंतजाम हो जाता है।'

दलाल किसानों और शहर के चावल मिलों या धान के थोक व्यापारियों की मध्यस्थता करते हैं। वे शांति जैसों से कम मात्रा में धान प्राप्त करते हैं। उनके पास न तो स्थाई दुकान होती है और न ही व्यापार करने के लिए भंडारण की सुविधा। फसल काटने की ॠतु के दौरान वे प्रत्येक किसान के पास जाते हैं और उनसे धान खरीदने के लिए बातचीत करते हैं। वे पर्याप्त मात्रा में धान खरीदते हैं और थोक व्यापारियों चावल मिल मालिकों को सूचित करते हैं, जो माल ढोने के लिए गाड़ी और पैसा भेजते हैं। वे किसान और मिल वाले, दोनों से दलाली लेते हैं। इनमें से कुछ किसानों के लिए साहूकार के रूप में भी काम करते हैं। इस मामले में वे ब्याज सहित उधार की रकम भी काट लेते हैं, ठीक वैसा ही, जैसा हमने चंदूलाल के मामले में देखा।

- मल्लय्या केवल 935 रुपये प्रति क्विंटल प्राप्त करता था, जबकि शांति 975 रुपये प्रति क्विंटल मिला। क्या आप सोचते हैं कि यहां कोई अंतर है? यदि हाँ, तो कैसे?

तेलंगाना में धान व्यापार

तेलंगाना में उगाये जाने वाले धान अधिकतर बाजार में बेच दिया जाता है और किसान अपने प्रयोग के लिए केवल छोटा हिस्सा ही रखते हैं। शांति जैसे छोटे किसान द्वारा उत्पादित धान की काफी मात्रा को अपने खपत के लिए प्रयोग किया जाता है। बड़े किसान अपने उत्पाद को अधिकांश बाजार में बेचते हैं।

तेलंगाना के किसान अपनी फसल का लगभग तीन–चौथाई गाँव में और एक–चौथाई एएमवाई में बेचते हैं। बड़े किसान एएमवाई मे बेचते हैं। इन किसानों के पास अपने वाहन जैसे ट्रैक्टर होते हैं, जो इनके परिवहन के खर्चे को कम कर देता है।

गाँव में कई प्रकार के व्यापारी धान प्राप्त करते हैं– जमींदार, दलाल और छोटे चावल मिल मालिक। अधिकांश अवसरों पर कुछ एकड़ जमीन वाले मल्लय्या और चंद्रशेखर जैसे किसान होते हैं, क्योंकि उन्होने उनसे पैसा उधार लिया होता है।

कर्जदारी और धान की बिक्री

हमने देखा कि खेती करने के लिए छोटे और मध्यम किसान तेजी से पैसा उधार लेते हैं, विशेष तौर पर बीजों, खाद, कीटनाशक, सिंचाई सुविधाएँ, इत्यादि के लिए। क्योंकि इनके लिए नियमित बैंकों से ऋण लेने कठिन होता है, वे साहूकार, व्यापारी, मिल मालिकों, इत्यादि से उधार लेने पर विवश हो जाते हैं। एक बार किसान उनसे उधार ले लेता है, तो फिर उनके द्वारा तय कीमतों पर उन्हीं को बेचने के अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प नहीं रह जाता। धान व्यापारी न केवल कम कीमत देते हैं, बल्कि विभिन्न तरीकों से तोलने में भी हेराफेरी करते हैं। वे विभिन्न प्रकार से दलाली भी लेते हैं। इनमें से कई किसानों को देरी से पैसा मिलता है। चूंकि ये व्यापारी और जमींदार आवश्यकता के समय पैसा उधार देते हैं, किसान उन्हीं को अपना धान बेचना अच्छा समझते हैं।

SCERT TELANGANA

- विभिन्न उपायों के बारे में विचार कीजिए, जिससे किसानों को उनके उत्पादों के लिए सहीं कीमत मिले। इन उपायों के सकारात्मक और नकारात्मक विषयों पर कक्षा में विमर्श करें।

प्रमुख शब्द

कृषि बाजार प्रांगण

न्यूनतम समर्थन मूल्य

भारतीय खाद्य निगम

व्यापारी

कमीशन दलाल

अपना ज्ञान बढ़ाएँ

1. वेंकटापुरम में काम करने वाले विभिन्न धान व्यापारियों और उनके द्वारा प्रति क्विंटल धान की प्रस्तावित कीमतों की सूची बनाएँ। (AS_3)
2. यदि आप गाँव में रहते हैं, तो कौन धान खरीदता है, कीमतें कैसे निर्धारित की जाती हैं और विभिन्न व्यापारियों और जमींदारों द्वारा क्या कीमतें दी जाती हैं, जैसे विवरण एकत्र करें। (AS_3)
3. चावल की कीमत पता करने के लिए परचून की दुकान में जाएँ। इसकी तुलना किसानों को सौ किलो धान मिलने वाली कीमत से करें। (ध्यान रहे कि 1 क्विंटल – 100 किलोग्राम होता है।) (AS_1)
4. सरकार धान के लिए एक दाम निश्चित करें ?यह कहाँ तक आवश्यक है, अपने विचार बताईए। (AS_4)
5. आपको किस तरह से लगता है कि स्वयं सहायता समूह किसानों को लाभान्वित करते हैं ? (AS_4)
6. पृष्ठ 78, 79 में 'कर्जदारी, धान की बिक्री' अनुच्छेद पढ़े अपने विचार लिखिए। (AS_2)
7. कल्पना करों कि आपके गाँव के समीप कोई कृषि व्यापार क्षेत्र AMY नहीं है। किसानों को किस तरह की चुनौतियाँ को सामना करना पड़ता है। (AS_4)

परियोजना कार्य :

1. कुछ विद्यार्थियों को पास के एएमवाई में ले जाया जा सकता है। वहाँ की गतिविधियों को देखने के बाद एक भूमिका तैयार की जा सकती है, जिसमें उदाहरण सहित स्पष्ट किया जा सकता है कि कैसे व्यापारी धान और अन्य उत्पादों के लिए बोली लगाते हैं।
2. तेलंगाना के छोटे किसानों की दुर्दशा को समझाने के लिए एक लघु नाटक की पटकथा तैयार करें।

SCERT TELANGANA

अध्याय 9

जनजातियों में सामुदायिक निर्णय

Community Decision Making in a Tribe

अधिक संख्या में एक साथ रहने वाले लोग अपनी सामान्य समस्याओं पर निर्णय लेते हैं? वे आपस के झगड़ों को किस प्रकार निपटाते है? एक नेता की क्या भूमिका है और उसके बदले में उसे क्या मिलता है? ये सब कुछ अंश है, जो हम पढ़ेंगे। इस पाठ में हम यह पढ़ेंगे कि एक ऐसे समाज में निर्णय कैसे लिया जाता है, जिसमें एक ही जाति के लोग, जो कि एक ही समान स्थिति के हो।

जनजाति, समाज जहाँ सब बराबर है

कई अलग समाजों को हम जनजाति कहते हैं। आँध्र प्रदेश में चेनचु, कोडा रेड्डी, गोंड, कोया, यानादी, सवरास, आदि है। लगभग हमारे देश के प्रत्येक राज्य में एक या दूसरी जनजाति वनों में रहते हैं। इन सभी की जीवन पद्धति, भाषा और संस्कृति विभिन्न है। इन विभिन्नताओं के बाद भी इन्हें जनजाति क्यों कहते हैं? यह इसलिए है, क्योंकि इनके आपस में कुछ आचरण एक जैसे हैं। वे क्या है–

i. साधारणतः जनजाति के सभी सदस्य अपने आपको एक ही पूर्वज की संतान मानते हैं। अतः जनजाति के सभी सदस्य एक दूसरे को रिश्तेदार मानते हैं।

ii. वे यह मानते हैं कि उनके संसाधन जैसे भूमि, जंगल, मैदान और पानी सभी जनजातियों की सार्वजनिक संपत्ति है, न किसी एक परिवार या आदमी की। अतः जनजाति के सभी सदस्य इन संसाधनों का बँटवारा और उपयोग कर सकते हैं, पर अपने द्वारा बनाये गये नियमों के ढांचे के अनुरूप।

iii. जनजातियों में अमीर और गरीब के बीच में अधिक विभिन्नता नहीं है, क्योंकि सार्वजनिक संसाधनों में सभी का हिस्सा होता है। उदाहरण के लिए जनजाति भूमि को बराबर हिस्सों में जनजाति परिवारों के उनके परिणाम या आकृति के आधार पर बाँटा जाता है। कुछ संदर्भो में कुछ सालों बाद भूमि का पुनः विभाजन परिवारों में किया जाता है। कुछ जनजातियों में जनजाति के सारे सदस्य एक साथ भूमि खुदाई कर उसमें उत्पन्न हुई फसल को समान भागों में बाँट लेते हैं। कोई भी इस भूमि को बेच नहीं सकता, क्योंकि यह भूमि सारी जनजाति की संपत्ति है। कोई भी अपने उपयोग से अधिक भूमि को नहीं रख सकता।

SCERT TELANGANA

iv. अधिकतर जनजाति में परिवार के सभी सदस्य काम करते हैं, जैसे खेती, जंगल से खाना बटोरना, पशु चराना, कपड़े बनाना, टोकरी बनाना, घर बनाना, औजार बनाना आदि। यहाँ बहुत कम या नहीं के बराबर विशेष कारीगर है।

v. औरतें, आदमी और बच्चे सभी परिवार का काम बांट लेते हैं। कदापि जनजातियों के पुरुषों को स्त्रियों की अपेक्षा निर्णय लेने का अधिक अधिकार तथा योगदान होता है।

vi. जनजाति के लोग अपने जनजातीय देवता, पूर्वजों के लिए त्यौहारों और उत्सवों को मनाने को अधिक महत्व देते हैं, जिससे उनके कुल देवता और पूर्वज प्रसन्न हो सके। इन सभी के कुछ भिन्न पुराण कथा, रीति-रिवाज और गाने-नाचने तथा चित्रकारी की पद्धति है, जो सभी जनजाति के सदस्यों के लिए समान है।

- जनजातियों के मुख्य व्यवसाय क्या है ?
- किस तरह तुम यह कह सकते हो जनजाति के सभी लोग एक जैसे है ?

जनजाति एक बड़े क्षेत्र में कई छोटे गांवों या आवासों के रूप में बस गये हैं। तुमने एक ऐसा ही आवास कोन्डा रेड्डी जनजाति का देखा।

जनजाति अपने सार्वजनिक विषयों पर किस तरह निर्णय लेते हैं, वे अपने आपसी झगड़ों को किस तरह निपटाते हैं ? हम यह देखेंगे कि अदिलाबाद के जनजाति गोंडा इन सब विषयों को किस तरह संभालते हैं। हम यहाँ पर एक छोटा सा सारांश दे रहे हैं, जिसका उल्लेख हेयेमन्ड्राआफ की पुस्तक, जो आँध्र प्रदेश के गोन्ड जनजाति पर आधारित है।

जनजातियों के लोगों पर अध्ययन कर ज्ञानार्जन करने वाले विद्वानों को हम मानव विज्ञानी कहते हैं। ये जनजातियों के बीच रहकर उनके रीति-रिवाजों को, रहन-सहन, विश्वासों, निर्णय लेने की पद्धति, आदि पर जानकारी एकत्रित करते हैं। एक प्रमुख मानव विज्ञानी फरर हेयेमन्ड्राआफ आंध्र प्रदेश की जनजातियों पर अध्ययन करने 1940 में तेलंगाना आये। उन्होंने चेनचु, कोन्डा रेड्डी और गोन्ड जनजाति पर अध्ययन कर उनके बारे में पुस्तकें लिखीं। उन्होंने भारत की कई जनजातियों पर भी अध्ययन किया। विशेषकर उत्तर पूर्वी राज्यों में।

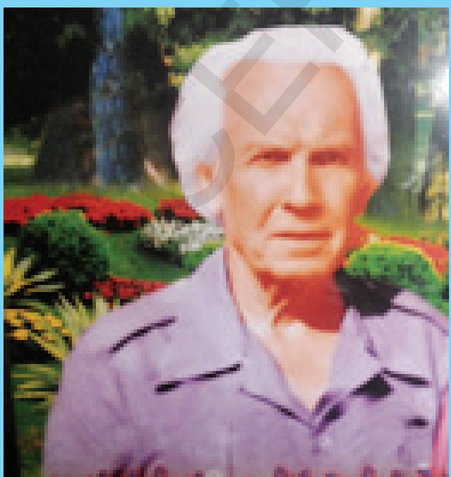

चित्र 9.1 फरर हेयेमनड्राआफ

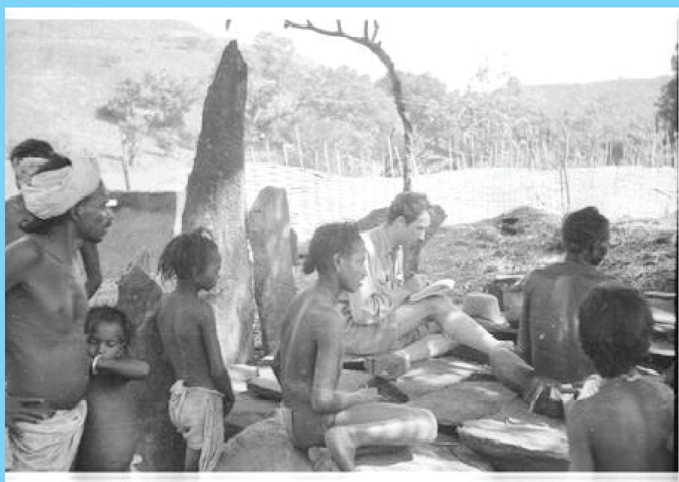

चित्र 9.2 हेयेमनड्राआफ चेंचु जनजातियों के बीच

SCERT TELANGANA

गोण्डा पंच या पटला

गाँव के मुखिया को अपना अधिकार गाँव के 'पंच' या गाँव के बड़े बुर्जुर्गों की सभा से लेना होता है। इस सभा की बात ही अंतिम होती है। उन विषयों पर जो पूरे गाँव के बारे में होती है, मुखिया केवल इस सभा का अध्यक्ष है। गाँव के पंच गोण्डा समाज के प्रतिनिधि है।

पंच नियमित रूप से नहीं मिलते, केवल आवश्यकता पड़ने पर ही मिलते हैं। जब कोई महत्वपूर्ण विषय के ऊपर चर्चा होती है, तो गाँव के बड़े उपस्थित होते हैं। औरतों और युवकों को सभा देखने की अनुमति है। औरतों को सभा में भाग लेने की अनुमति नहीं है। फिर भी वे अपने कष्टों को सामने रख सकती हैं।

पंच के प्रमुख कार्यों के अंतर्गत उत्सवों, त्यौहारों की तिथि, शादी के नियम या मृत्यु के रीति और आपसी झगड़े आते थे। पंच किसी पर भी जुर्माना लगा सकता है या इस बात पर मंजूरी कर सकता है कि वह आदमी गाँव छोड़ने तथा अन्य लोगों को यह आदेश दे सकता है कि वे उसके साथ संबंध न रखे।

जब किसी झगड़े में बहुत से गाँव के लोग होते हैं, तो सभी गाँवों के सभाओं के लोग संयुक्त पंचायत में मिलते हैं।

जब कोई झगड़ा पंच के सामने जाता है, तो पंच का पहला लक्ष्य उस झगड़े की सच्चाई को जानना होता है। उस समुदाय के बुजुर्ग लो कई प्रश्नों के द्वारा सच्चाई को जानने की प्रयत्न करते हैं। वे चश्मदीद गवाहों से भी सबूत माँगते हैं। इसके बाद पंच गोन्ड समुदाय के पारंपरिक रीति–रिवाजों की तथा इस तरह के झगड़ों में पहले लिये गये निर्णय की चर्चा करते हैं।

इसके बाद एक ऐसा निर्णय लेते हैं, जो दोनों पक्षों को स्वीकृत हो। जब सभी मुख्य अंशों पर वाद–विवाद समाप्त हो जाता है, तो एक बड़ा सदस्य समझौते का प्रस्ताव रखता है। इसका अर्थ यह है कि कोई भी निर्णय आखिरी होता है, क्योंकि पीड़ित आदमी कुछ बदलाव चाह सकता है। उसके या उसकी सहमति सुनने के बाद ही अंतिम निर्णय लिया जाता है।

- कौन गोन्ड पंच का सदस्य नहीं हो सकता?
- तुमको क्यों लगता है कि यह महत्वपूर्ण है कि सभी घरों का नेतृत्व पंच में होना चाहिए?
- किन अंशों को ध्यान में रख कर पंच निर्णय लेते हैं?

चित्र 9.3 गोन्ड पंचायत में चर्चा शुरू होने वाली है।

SCERT TELANGANA

एक दिन एक लड़की ने पंचायत में एक आदमी पर उसे छेड़ने का अभियोग लगाया और कहा कि उसने उस आदमी को थप्पड़ मारा,तो उसे मार कर जमीन पर गिरा दिया, पर बाद में वह निकलने में कामयाब हो गयी। फिर उस पर अभियुक्त आदमी से पूछा गया तो उसने अपनी गलती स्वीकारी। पंच ने लड़की से पूछा कि वह अभियुक्त को किस प्रकार की सजा देना चहाती है, इस पर लड़की ने कहा कि 'मेरी इच्छा है कि इसको सबसे अधिक अपमान करे और यह ये लिखकर दे कि वह मुझे आगे से तंग नही करेगा। पंच ने फिर उस आदमी को आदेशा दिया कि वे पंच के बीच में खड़े होकर सिर झुकाकर लड़की से माफी माँगे।

- क्या वह लड़की जिसने अभियोग लगाया निर्णय से संतुष्ट थी ?
- तुमको क्यों लगता है कि पंच ने उस पर आक्रमक व्यक्ति को शांत किया।

गाँव का मुखिया

हर एक गाँव में एक मुखिया होता है, जो वंश पारंपरिक है एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें बेटे/बेटी को पिता/माता की जमीन सहज रूप से उनकी मृत्यु के बाद मिलती है ये पंच के प्रति जिम्मेदारी निभाते हैं, पर कुछ परिस्थिति में यह एक अच्छा नेता या नायक होता है। पंचायत केवल कभी–कभी ही मिलती है पर मुखिया का काम रोज होता है, वह अक्सर उस परिवार का होता, जिसने उस गाँव को शुरू में बसाया हो। मुखिया को मुख्य काम गाँव की एकता बनाये रखना, बाहरी लोगों तथा सरकारी संस्थाओं से गाँव की ओर से बातचीत करना। वह गाँव के और भी सामुदायिक समन्वय कार्य करता है, जैसे उत्सव मनाना। वह गाँव के मेहमानों के मनोरंजन और भोजन की व्यवस्था करता है जिसके बदले गाँव के सभी, पुरुष साल में एक बार एक दिन उसके लिए मजदूरी करते हैं। ये उसके सहायक बन, उसकी भूमि को उसके परिवार वालों से अधिक जोदते हैं, ताकि मेहमानों को खिला सके।

जब भी मुखिया गुस्से में आकर गाँव वालों की इच्छाओं के विरुद्ध जाता है, तो पंच उसे हठाकर किसी अन्य को उसकी जगह दे सकते हैं या फिर दूसरे परिवार उस गाँव को छोड़कर किसी नई जगह पर बस सकते हैं।

- कौन मुखिया बनता है ?
- पंच और मुखिया के बीच क्या संबंध होता है ?
- मुखिया का प्रमुख कार्य क्या होता है ?
- मुखिया को कब हटाया जा सकता है ?

हमने देखा और समझा कि जनजाति के रीति–रिवाज में सभी वयस्क पुरुष सदस्य समुदाय के कार्यों में भाग लेते हैं। हमने यह भी देखा कि हर एक परिवार समुदाय के कार्यों में भाग लेता है और वे मुखिया से भी ताकतवार है। मुखिया सभी को मनाता है, ताकि समुदाय का हर एक सदस्य खुश रहे, क्योंकि उसे अपने स्थान को बचाना है, इसीलिए उनकी इच्छा के विरुद्ध नहीं जाता है।

- इस व्यवस्था के मुख्य विशेषताएँ और आने वाली प्रणाली की चर्चा करो ?
- निम्न के उत्तर गोंड पंचायत के बारे में पढ़ने के बाद दो ?

i. क्या तुम यह सोचते हो कि किसी अन्य समुदाय का व्यक्ति पंच का सदस्य बन सकता है ?

ii. हेयमेनडार्क के अनुसार एक प्रसिद्ध पट्ला के पास खेती की भूमि अप्रसिद्ध पट्ला से ज्यादा होती है, क्या तुम इसका विवरण दे सकते हो ?

हेयमेनडार्फ ने इस बात का उल्लेख किया कि यह व्यवस्था धीरे-धीरे 1940 से 50 से बदल रही है, क्योंकि गोन्डा गांवों में दूसरे समुदाय जैसे मराठा, तेलुगु आकर बस रहे हैं और आधुनिक पंचायत राज के चुनाव भी शुरू हो गये हैं। कई लोग सरकारी पुलिस और कचहरियों में जाकर अपने झगड़े निपटा रहे हैं, जिससे मुखिया अपना महत्व और स्थान चुनाव में चुने गये नये सरपंच के कारण खो रहा है।

हमने यह भी देखा कि मुखिया को अपनी सेवा के बदले में जनजाति द्वारा कुछ एक दिन उसके खेतों में मुफ्त मजदूरी करवाने का अधिकार है। उसे अधिक दौलत मिलती अन्य समुदाय के सदस्यों की तुलना में उसे अधिक धन मिलता है। पर उससे आशा भी की जाती है कि वह इस धन का इस्तेमाल जनजाति के खुशहाली या हित में करे। इस तरह का समझौता बहुत से जनजातियों में था।

मुख्य शब्द

विरासत

मानववैज्ञानिक शास्त्र

सामूहिक उत्सव

सामूहिक स्रोत

अपनी सीख में सुधार

1. तुम्हें क्यों लगता है कि यह पंच, पट्ला केवल जनजातियों संभव है? अगर समाज सब समान होने की भावना न हो तो क्या होगा? (AS_6)
2. क्या तुमने कभी अपने क्षेत्र में समुदायीक पंचायत के बारे में सुना है ? इसके कार्यों की चर्चा अपने अध्यापक, माता-पिता और बड़ों से करो, जो इसके बारे में जानते हो ? (AS_4)
3. पुलिस और कचहरी के बिना गोंड़ पंचायत में निर्णय सुनाते थे। क्या आप उचित मानते हैं। (AS_4)
4. अगर किसी जनजाति को पंचायत के निर्णय में अन्याय दिखता है, तो उसके बदले में कानूनी उपचार क्या है ? (AS_1)
5. तेलंगाना के मानचित्र में उन जिलों को दर्शाएँ जहाँ जनजातियों के लोग अधिक रहते हैं। (AS_5)

   अ) खम्मम आ) आदिलाबाद इ) महबूबनगर
6. पृष्ठ 83 में गाँव का मुखिया अनुच्छेद पढ़िए, व्याख्या कीजिए। (AS_2)

SCERT TELANGANA

अध्याय

10

साम्राज्यों और गणराज्यों का उदय

Emergence of Kingdoms and Republics

इससे पहले के पाठ में हमने पढ़ा कि कैसे जनजाति समाज के लोग अपने मामलों को कैसे निपटाते थे। तुमने उन राजाओं और सम्राटों के बारे में सुना होगा, जिन्होंने बड़े साम्राज्य चलाये। पता करते हैं कि ये पूर्व काल में कैसे शुरू हुए।

गंगा की घाटी में जनपदों से महा जनपदों तक

- भारत का मानचित्र देखकर उन मैदानी क्षेत्रों को पहचानें, जहां से गंगा और यमुना नदियाँ बहती हैं। आज के आधुनिक नगर दिल्ली, अलाहबाद, वाराणासी, लखनऊ, कानपुर और पटना को भी पहचानें। क्या आप ये सोचते हैं कि ये इलाके पेनामाकुर गाँव याडोकूर, पेनगोलू से मिलते जुलते हैं? आपनी कारण बतायें?

यह मैदान गंगा की घाटी कहलाता है (क्योंकि गंगा और यमुना हिमालय के पर्वतों और दक्कन के पठारों के बीच से बहती है) यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है, क्योंकि यहाँ अधिक वर्षा होती हैं। ये नदियाँ हिमालय से अपने साथ मिट्टी लाती है और पूरे साल भर बहती है।

आरंभ में अलग-अलग जनजातियों के लोग अपनी सुविधा अनुसार इस घाटी के हिस्सों में कृषि को अपना व्यवसाय बनाकर बस गये। इन जनजातियों के लोगों को संस्कृत भाषा में 'जना' व जिस स्थान पर ये बस गये उन स्थानों को जनपद कहते थे।

लगभग 4000 वर्ष पहले लोग अधिक संख्या में इन नदियों के किनारे बसने लगे। उन्होंने पत्थर, तांबा, पीतल लोहे के औजारों की सहायता से जंगल तथा भूमि को खोदकर उसमें धान व अन्य फसलें पैदा की। इन हिस्सों में बड़े-बड़े गाँव और शहरों का विकास हुआ तथा बहुत से लोग आकर यहाँ बस गये, जो प्रायः अधिकतर कई अलग जातियों से थे। बड़े समूहों में विकसित ऐसे गाँवों और शहरों को महाजनपद या बृहद जनपद कहते थे।

- अपने अध्यापक की सहायता से कुछ जन (जनजातियों) के नाम पता करो, जो पहले भारत में गंगा के मैदान में बस गये।
- जनपद से आप क्या समझते है? ये किस तरह महाजनपद से अलग है।

हमें महाजनपदों के बारे में कैसे पता चला?

हमें इन गाँवों और शहरों के बारे में दो प्रकार के स्त्रोतों द्वारा मता चलता है- पुरातत्व विभाग द्वारा अलग-अलग जगहों पर की गयी खुदाई तथा पुस्तकें, जिनकी रचना उस समय में हुई।

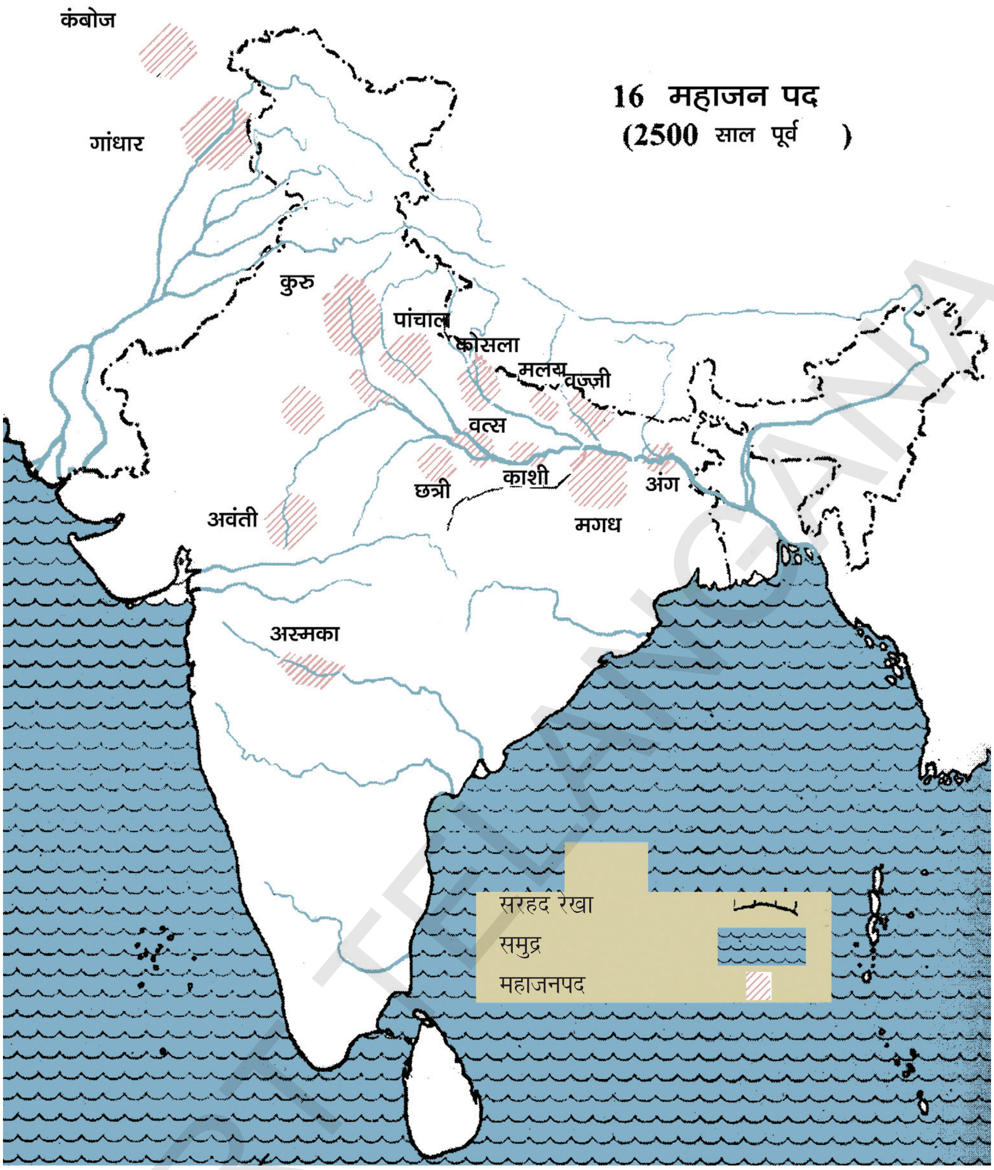

चित्र 1 महाजनपद

कुछ महत्वपूर्ण महाजनपद

- ऊपर दिये गये भारत के मानचित्र को देखें। यह उन विस्तृत जगहों को दिखा रहा है, जहाँ कुछ महा जनपद थे। यह उन मुख्य नगरों के नाम भी बता रहा है, जो महाजनपदों से जुड़े थे। तुम उस नदी का नाम भी पता कर सकते हो, जो इन महाजनपदों के बीच से बहती है। उन महाजनपदों और नगरों की सूची बनाओ, जो गंगा की घाटी पर स्थित थे।

महाजनपद	नगर

SCERT TELANGANA

पुरातत्व वेताओं ने गंगा की घाटी में कई जगहों पर खुदाई की और उस समय के लोगों की जीवनशैली की जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की। उस समय पुस्तकों की रचना अधिकतर वेदों को माननेवाले बौद्ध व जैन तीर्थांकारो द्वारा हुई।

यद्यपि ये धार्मिक किताबें थी, फिर भी ये उस समय के शहरों, गाँवों, राजाओं व शासकों के बारे में बहुत कुछ बताती हैं। ग्रीक जैसे दूर देशों के कुछ लोगों ने भी कुछ पुस्तकें लिखी। अलग-अलग स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी यहाँ है।

महाजनपदों के समय के कुछ महत्वपूर्ण पुरातत्व स्थल दिल्ली, अतरंवीकश, कौशम्बी (इलाहाबाद के पास), पटना, अयोध्या, राजगिर आदि।

उस समय लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तकें उपनिषद, धर्मसूत्र, दिगनिकाय, मजहीमा निकाय, होरोडोट्स, इतिहास और स्ट्रबोरेले आदि है।

- अगर एक पुरावेता दो हजार सालों बाद हमारे समय के गाँवों और शहरों की खुदाई करेगा, तो तुम्हारे अनुसार उन्हें क्या मिलेगा ?
- वे इस बात का पता कैसे लगायेंगे कि खुदाई के स्थल में गाँव था या शहर ?
- अगर एक पुस्तक यह कहती कि एक ऐसा गाँव या शहर था, जो पूरी तरह सोने या चाँदी का बना था और हजारों लोग बड़े-बड़े महलों में रहते थे। तो इस बात की पुष्टि कैसे करेंगे कि यह सच्चाई है या कल्पना ?

महाजनपदों के समय के गाँव

हम उस समय की कुछ पुस्तकों से यह जानकारी मिलती है कि कृषि का काम करने वाले भूमिअधिपति को गृहपति या गृहपति कहते थे, जो अक्सर अपने परिवार के सदस्यों के साथ खेतों में काम करते थे। इसके अलावा 'दास' और गुलाम को भी काम लगाते थे (वे उनके आत्मसमर्पण करने वाले तथा उनकी सेवा करनेवाले) और मजदूर 'भृतका' जो उसके खेतों और घरों में काम करते थे। अधिक धनी गृहपति के पास अधिक भूमि और गुलाम होते थे, जो उनके लिए काम करते थे। सामान्यतः वही आदमी गाँव का मुखिया बनता था, जिसके पास अधिक भूमि होती थी। वह गोन्ड पटला के जैसे ही गाँव का मुखिया था और उसके द्वारा ही राजा अन्य गाँवों से भी कर वसूल करते थे। वह न्यायाधीश की भूमिका और कभी-कभी पुलिसकर्मी बनकर गाँव में कानून और न्याय व्यवस्था बनाये रखता।

बहुत से गाँवों में कारीगर लोग जैसे लोहार जो कृषि के लिए उपयोगी व जरूरी औजार बनाता (जैसे हल, दराती, कुल्हाड़ी, तीर आदि), कुम्हार जो भोजन बनाने और अनाज को संग्रह करने के लिए घड़े बनाता, बढ़ई जो गाड़ियाँ, हल और फर्नीचर, आदि बनाता तथा जुलाहा जो गाँव के लोगों के लिए कपड़ा बुनता। अधिकतर गृहपति उन्हें वस्तुओं के बदले में अनाज देते थे। ये कारीगरी की वस्तुएँ कृषि के लिए जरूरी थी, पर गृहपतियों के पास इन्हें बनाने का समय और कारीगरी नहीं थी।

- गोन्ड जनजाति के गाँवों और महाजनपदों के गाँवों की तुलना कर उनकी समानता और असमानता का पता करें।
- गृहपति और कारीगरों के बीच के संबंध का वर्णन करें ?

महाजनपदों के शहर

अपने द्वारा बनाई गई तालिका में शहरों की सूची देखें। आपकी सोच में किस तरह के लोग यहाँ रहते थे ? उस समय के शहरों में भी आज

SCERT TELANGANA

की तरह से गरीब लोग रहते थे, जो दूसरों के लिए मेहनत कर कमाते थे। उनमें से कुछ दास और नौकर थे और अधिकांश लोग कारीगर थे, जो बेचने के लिए वस्तुएँ बनाते थे। वे क्या बनाते थे? वे सुंदर और बढ़िया घड़े बनाते थे, जिनकी माँग सभी बड़े शहरों में थी। वे महीन कपड़ा बुनते थे, जो महाजनपदों के अमीर लोग खरीदते थे। वे सोने और चांदी के आभूषण बनाते थे। वे कांसे, तांबे और लोहे के बर्तन और औजार बनाते थे। वे लकड़ी की गाड़ियाँ और फर्नीचर बनाते थे और भी कई तरह के व्यवसाय थे, जैसे सैनिक, लेखाकार, मेस्त्री, अश्वप्रशिक्षक, सफाई कर्मचारी, पानी ढोने वाले, लकड़ी व हाथी दाँत के नक्काशीकार। जबकि इनमें से कुछ वस्तुएँ (जैसे घड़े, ईंट, लोहे और कांसे की वस्तुएँ) खुदाई के दौरान बाहर आये, जिन्हें हम पुस्तकों के द्वारा भी जानते हैं।

और फिर कुछ बड़े व्यापारी थे, जो कारीगारों और गृहपतियों से सामान खरीदकर उन्हें अधिक लाभ पर दूर जगहों पर बेचते थे। वे दूसरे जगहों से भी खास चीजें लाकर अपने जनपदों में बेचते थे। वे अपना व्यापार एक कारवान के रूप में ले जाते थे, जिसमें अधिक संख्या में जानवर जैसे बैल, गधे और ऊँट होते जो दिन,रात, हफ्ते, महीनों की यात्रा से नदी, मैदान, पहाड़ और रेगिस्तान को पार करते। ये व्यापारी इतना लाभ पाते कि वे भव्य इमारतों में दर्जनों नौकरों और दास के साथ रहते, जो उनकी सेवा करते। इस तरह वह विलासिता का जीवन व्यतीत करते हैं।

चित्र 10.2 काली मिट्टी के रंगीन बर्तन, थालियाँ और कटोरे सामान्य बर्तन थे, जो रंगीन काली मिट्टी से बने थे। ये छूने में महीन थे और महा जनपदों के काल से पहले पाये गये।

- शहर में रहने वाले लोगों को अनाज दूध और माँस आदि की जरूरत पड़ती थी। तुम कैसे बता सकते हो कि शहर में रहने वाले बिना खेती के ये वस्तुएँ कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

शासक, सेना और कर

अधिकतर महाजनपदों पर राजाओं का राज था। इन राजाओं के पास अपनी सेना थी, ताकि लोग उनके आदेशों का पालन कर सके और अन्य कोई राजा उन पर आक्रमण न कर सकें। वे अपनी राजधानी में रहते थे और उसके चारों और मजबूत लकड़ी, पत्थर, ईट और मिट्टी से किले बनाते थे। (नीचे दिया गया चित्र देखें) इन सब जरूरतों के लिए बहुत सा खर्च होता था। सैनिकों और उनके परिवारों की जरूरतें, ईटें बनाने वाले जो लाखों ईटें बनाते उसकी मजदूरी, हजारों आदमी और औरतें जो सार्वजनिक इमारत को बनाने में काम करते उनकी मजदूरी।

- आपके विचार से शासक अपनी जरूरतों के लिए धन का प्रबंध किस प्रकार करता होगा?

चित्र 10.2 कौशाम्बी का किला

महाजनपदों के शासक ऐसे जनजातीय मुखिया या नेता से अलग थे। शासक अपनी प्रजा से कर की वसूली करते थे। उनके पास अधिकारी थे, जो गृहपतियों, कारीगरों और व्यापारियों से कर वसूली करते थे। अगर कोई कर देने से इनकार करता तो राजा के सैनिक उसे दंड देते। ये अधिकारी और सैनिक राजा के कर्मचारी थे, इसलिए ये राजा का आदेश मानते थे। राजा इस बात की भी जाँच करता कि उसके आदेशों का पालन साधारण लोग भी करें।

- महाजनपदों के शासकों के लिए सेना की जरूरत क्यों थी ?
- गोंड पटला और महाजनपद के राजा के बीच की आय और व्यय में क्या अंतर है ?

विशेष अवसरों में गोन्ड पटला को भी अपने गाँव को बाहरी आक्रमणकारियों से बचाना पड़ता ऐसी स्थिति में सभी गाँव वाले मिल जुलकर अपने गाँव की सुरक्षा के लिए लड़ते। हमने यह भी देखा कि वह अपने खेतों में गाँव वालों द्वारा की गयी एक दिन की अतिरिक्त मजदूरी से कमाया गया धन का खर्च गांव में उत्सव मनाने वा मेहमानों के मनोरंजन में करता। जनजाति के मुखिया को अमीर और ताकतवर बनाने में इस तरह की कमाई बहुत कम थी। साधारण आदमी तभी मुखिया के आदेश से सहमत होता, जब उसे यह तसल्ली होती कि उस आदेश में सबकी भलाई है।

यह चित्र (10.3) शिल्पकारी सांची के स्तूप से है, जो 2000 वर्ष पूर्व बनाया गया । तुम इसमें राजा को किस तरह पहचान सकते हो ?

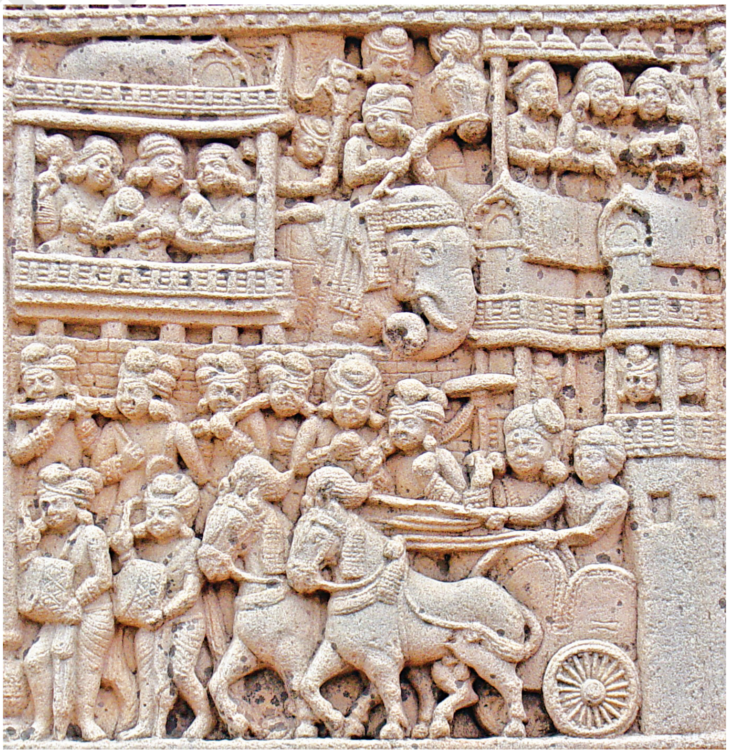

चित्र 10.3 राजा की सवारी शहर के किले से बाहर जा रही

SCERT TELANGANA

बहुत से शासकों की इच्छा थी कि वे अमीर और ताकतवर बने। वे दो रास्तों से यह कर सकते थे– पहला अपनी प्रजा से अधिक कर वसूल करना और दूसरा पड़ोसी राज्यों पर विजय प्राप्त करना। शासकों ने अपने गृहपतियों से नियमित रूप से कर वसूल शुरू किए जो खेती करते थे। गृहपतियों को अपनी फसल के छह समान भाग **करने पड़ते थे और** उसमे से एक भाग राजा को देना पड़ता था। इसे ''भागा'' कहते थे। कारीगर महीने में एक दिन राजा के लिए मुफ्त में काम कर, कर का भुगतान करते थे। गायों और भेड़ों के चरवाहे को पशुओं की उत्पत्ति को कर के रूप में देना पड़ता।

व्यापारियों को अपनी बेची हुई वस्तुओं के ऊपर कर देना पड़ता था। शिकारी तथा बटोरने वाले जो पास के जंगलों से थे, वे जंगल से इकट्ठा की गयी चीज और लकड़ी लाते थे। इस तरह राजा के पास बहुत सी किस्म की चीजें कर के रूप में जमा होती थी। इस काल के दौरान सिक्कों का उपयोग शुरू हुआ। कुछ कर सिक्कों के रूप में भी होते थे।

- अगर सभी को जबरदस्ती अपनी मेहनत की कमाई का एक भाग कर के रूप मे देना पड़े, तो उसका असर उन पर क्या पड़ेगा ?
- तुमको क्यों लगता है कि वे कर देने को तैयार हो गये ? क्या तुमको लगता है कि इस नयी व्यवस्था से उनको कुछ लाभ हुआ ?
- 'भागा' क्या है ? क्या हमारे समय की सरकार किसानों की फसल को इसी तरह लेती है ?

इतिहासकारों का मानना है कि इस समय के शासकों ने किसानों को सिंचाई और पैदावार बढ़ाने के नये तरीकों को अपनाने को प्रोत्साहन दिया होगा, ताकि अधिक पैदावार होने पर वे अधिक कर वसूल कर सकें। उसी तरह शासकों ने अपने राज्य के व्यापारियों को भी प्रोत्साहन दिया कि वे दूर स्थानों में व्यापार करें। शासक यह भी चाहते थे कि गाँव का मुखिया उन की ओर से कर वसूल करे। इस कार्य से मुखिया को अपने गाँव में अधिकार और स्त्रोतों को बढ़ाने का अवसर मिला।

शासक अक्सर आपस में लड़ा करते थे, ताकि वे नयी सीमाओं को अपने राज्य में मिला सकें। इन युद्धों में अधिकतर ऐसी सेना लड़ती थी, जो धन की माँग करती थी। पर ये सेनाएँ फसलों को बर्बाद कर, गाँवों को जला व लूट कर आम आदमी को भी हानि पहुँचाती थी। अक्सर युद्ध में हारे हुए राज्य के लोगों को बंदी बनाकर दास के रूप में गृहपतियों, व्यापारियों या अधिकारियों को बेचे जाते थे।

- उस समय के गाँवों को दृष्टि में रखकर एक गाँव की कहानी लिखने का प्रयत्न करे, जिस पर युद्ध का प्रभाव पड़ा हो और राजा को कर देता हो।
- महाजनपदों के शासकों ने कारीगरी और व्यापार को बढ़ाने मे अधिक रूचि क्यों दिखाई ?
- गाँव के मुखिया को राजा द्वारा कर लगाये जाने के आदेश से क्या लाभ हुआ ?

मगध- एक शक्तिशाली राज्य

क्या ऊपर की सूची में मगध का उल्लेख है। तुमने देखा होगा कि यह गंगा नदी के दोनों किनारों मे फैला है। नदी ने इस भूमि को अधिक उपजाऊ बनाया तथा गृहपति असानी से अपनी भूमि की सिंचाई कर सकते थे। नदी व्यापार तथा सेनाओं के लिए यातायात का

SCERT TELANGANA

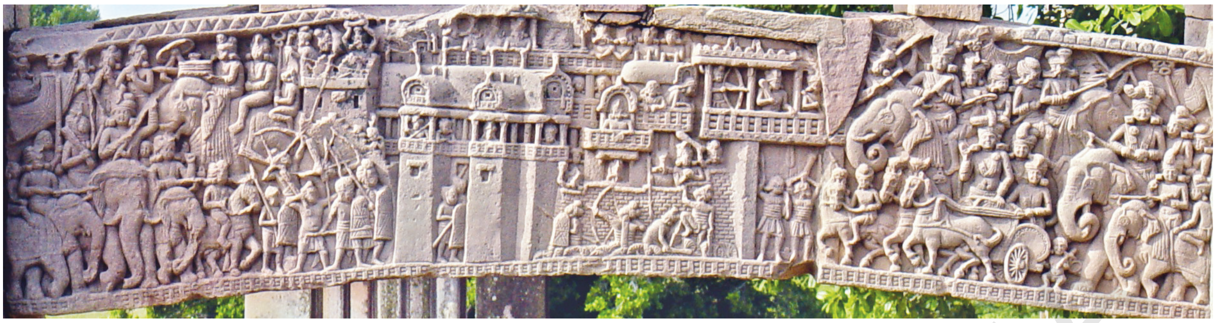

चित्र 10.4 सांची स्तूप में युद्ध का दृश्य

साधन थी। मगध के कुछ भाग में वन थे। हाथियों को वहाँ से पकड़कर उन्हें युद्ध में लड़ने का प्रशिक्षण देते थे। जंगल से लायी लकड़ी से किले, महल और रथ बनाये जाते थे। मगध के दक्षिणी भाग में लोहे की खानें थी, जिससे वे औजार आदि बनाते थे।

इन सब की वजह से मगध एक शक्तिशाली राज्य बन गया। बिंबिसार और उनके पुत्र अजातशत्रु पूर्व काल के राजा थे, जिन्होंने मगध को शक्तिशाली बनाया। महापद्मानंदा भी मगध का शक्तिशाली राजा था। ये सभी राजा अन्य राज्यों को जीतने के लिए अपनी सेना का उपयोग करते थे। महापद्मा नंदा के समय में राज्य का विस्तार भारत के उत्तर पश्चिमी भाग से ओड़िसा तक हुआ। हमे यह याद रखना चाहिए कि सभी महाजनपद पर मगध की तरह राजा का शासन नहीं था। बहुत से राजा, गोन्ड, मुखिया की तरह साधारण लोगों पर निर्भर हो ध ार्मिक कृत्य और त्यौहार आयोजन करते थे, जो पूरे राज्य के लिए कल्याणकारी होता।

- तुम किस तरह यह सोचकर बता सकते हो कि मगध के राजा ने उस राज्य की प्राकृतिक संपदा का उपयोग कर उस राज्य को शक्तिशाली बनाया होगा। मगध की प्राकृतिक संपदा और शासकों के द्वारा उसके उपयोग पर दो पंक्तियाँ लिखो।

वज़ी- एक गण

वज़ी जनपद मगध के उत्तर में स्थित था तथा यहाँ पर सरकार गण के रूप में थी। गण के कोई एक शासक न होकर, शासकों का समूह हुआ करता था। कभी–कभी हजारों आदमी एक साथ मिलकर राज्य चलाते थे और हर एक अपने आपको ‘राजा’ कहते थे। वे आपस में मिलकर सभाओं का आयोजन कर साधारण लोगों के हित में वाद–विवाद के बाद निर्णय लेते थे। हालांकि इन सभाओं में स्त्रियों, दासों और भत्ता कर्मचारी को भाग लेने की अनुमति नहीं थी।

बुद्ध और महावीर इसी गण से संबंधित थे, जो आगे चलकर सभी जनपदों से प्रसिद्ध उपदेशक के रूप में आदरणीय माने गये। शासकों के द्वारा इन गणों को जीतने व अधिपत्य करने की कोशिश के बावजूद 1500 साल से अधिक समय तक ये गण अस्तित्व में सक्रिय रहे।

मुख्य शब्द

साम्राज्य

गणतंत्र

जनपद

महाजनपद

दास

भत्रृका

गृहपति

SCERT TELANGANA

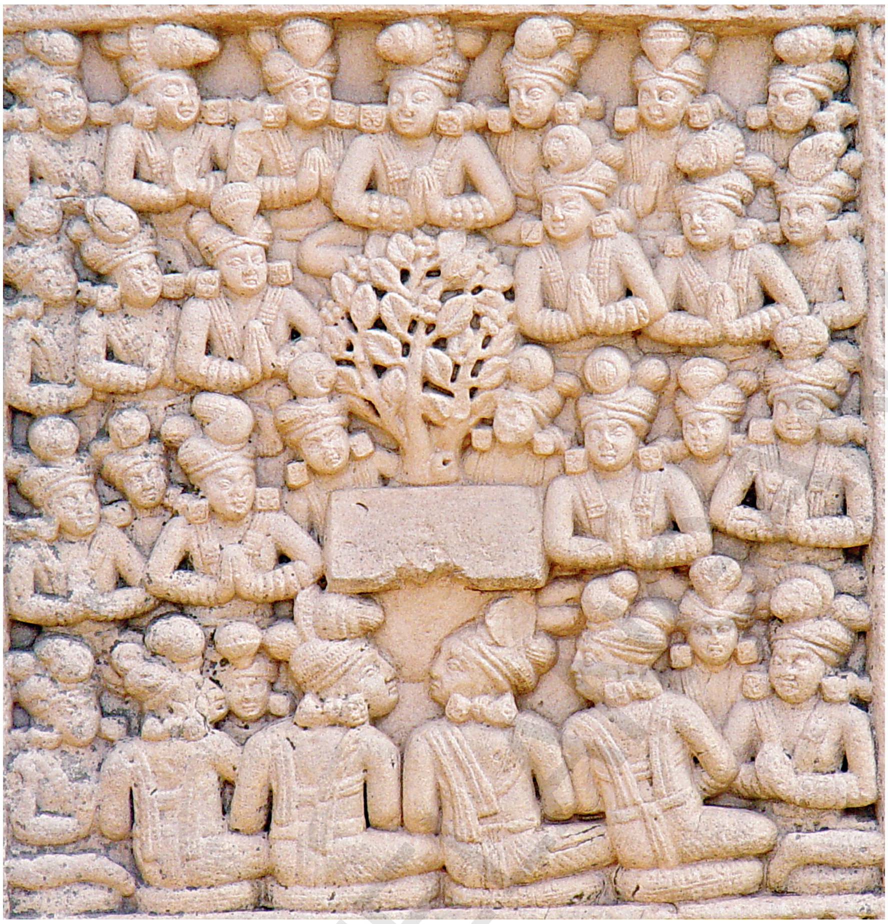

चित्र 10.5 सांची से लिया गया एक गणसभा का चित्र

स्वयं को सुधारे

1. गण से तुम क्या समझते हो ? वे किस तरह राजाओं द्वारा शासित राज्यों से भिन्न थे ?(AS_1)
2. गण और गोंडा पंच की तुलना कर उनमें समानताओं और असमानताओं को बताओ ?(AS_1)
3. क्या तुम उन अंतरों को दिखा सकते हो, जो आज की गाँव की व्यवस्था को और महाजनपदों के गाँव की व्यवस्था को अलग कर सके ? (AS_1)
4. पता लगाओ आज की सरकार कारीगरों से कैसे कर वसूल करती है ? क्या यह व्यवस्था महाजनपदों की व्यवस्था से मिलती है ? (AS_4)
5. पृष्ठ 87 में पाँचवा अनुच्छेद ''बहुत से गाँवों में कारीगार ....। पढ़िए। अपने विचार लिखिए।(AS_2)
6. भारत के मानचित्र में 16 जनपद दर्शाएँ। (पृष्ठों 86 में दिया गया मानचित्र देखें।) (AS_5)

अध्याय 11

पहला साम्राज्य

First Empires

महापद्मा नंदा के कुछ समय बाद चंद्रगुप्त मौर्य नामक एक युवक मगध का राजा बना। अपने मौर्य वंश की स्थापना की। (वंश का तात्पर्य यह है कि एक ही परिवार के सदस्य एक के बाद एक शासक बनते हैं)। चंद्रगुप्त के पुत्र बिंदुसार और पोते अशोक ने मगध पर शासन किया और उसका विस्तार भारत के उपखंडों तक किया। भारत के मानचित्र में राज्य का विस्तार देखें- उसका विस्तार आधुनिक अफगानिस्तान से लेकर दक्षिण में कर्नाटक और पूर्व में बंगाल तक है।

मौर्य साम्राज्य

एक बड़े राज्य को साम्राज्य तथा उसके शासक को सम्राट कहते हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि चंद्रगुप्त मौर्य भारत उपमहाद्वीप के आरम्भिक सम्राट थे। शुरूआत में मगध साम्राज्य मगध और उसके पास के इलाकों तक सीमित था। पर बाद में उस समय के सभी महाजनपद उसके अंग बन गये। इसके उत्तर पश्चिम मे हिंदुकुश पर्वत, भारत का रेगिस्तान, गुजरात, सिंध तथा गंगा की घाटी, मालवा का पठार, मध्य प्रदेश के विस्तृत जंगल, कृष्णा, तुंगभद्रा और गोदावरी की घाटी थी। क्या तुम इसका अनुमान लगा सकते हो कि यह इस साम्राज्य की विशालता तथा इसमें कितने अलग किस्म के लोग रहते थे। इस साम्राज्य के कुछ क्षेत्र जैसे गंगा और कृष्णा की घाटी, मालवा, गुजरात और पंजाब जैसे जगहों पर उपजाऊ भूमि होने के कारण बड़ी संख्या में गाँव और शहर बसे थे। कुछ अन्य क्षेत्र व्यापार और कारीगरी के लिए महत्वपूर्ण थे, जिनसे होकर कुछ ऐसे महत्वपूर्ण रास्ते गुजरते थे, जो बड़े शहरों, बंदरगाहों और अन्य देशों से जुड़ते थे। कुछ क्षेत्र में महत्वपूर्ण खनिज संपदा जैसे सोना और कीमती पत्थर, आदि मिलते थे।

- हमें किस स्त्रोत से मौर्य साम्राज्य के बारे में पता चलता है ?
- मौर्य साम्राज्य में व्यापार मार्ग को पहचानो। ये किस तरह मौर्य साम्राज्य के लिए महत्वपूर्ण थे ?
- महाजनपदों और साम्राज्य में क्या अंतर है ?

मौर्य सम्राट सभी अलग-अलग प्रदेशों और लोगों के पास से संसाधन और कर प्राप्त करता। सम्राट ऐसे विशाल साम्राज्य पर शासन कैसे करता था ? अगर कृष्णा की घाटी में कुछ गाँव कर देने से इनकार करे, तो इसकी जानकारी पटना में बैठे सम्राट को कैसे मिलेगी और वह कैसे अपनी सेना को आदेश देगा कि वे उन गाँवों को दंड दे। सेना किस तरह कृष्णा के घाटी के उन गाँवों को पहचान कर उन्हें दंड देंगी ? इन सभी कामों को करने में कितना समय लगेगा।

SCERT TELANGANA

हम कैसे जानते हैं?

हमें इस साम्राज्य के बारे में बहुत से किताबों द्वारा पता चलता है, जो उस समय लिखी गई। एक महत्वपूर्ण किताब अर्थशास्त्र है जो कि चंद्रगुप्त के मंत्री कौटिल्य द्वारा लिखी गई। दूसरी किताब मैगस्तानीस द्वारा लिखित है जो चंद्रगुप्त के दरबार में ग्रीक राजा का दूत था। हमें उस समय की बहुत सी चीजों के बारे में उन शिलालेखों से पता चलता है, जो अशोक के आदेश अनुसार साम्राज्य के अनेक भागों में खुदवाये गये।

अर्थशास्त्र

यह कहा जाता है कि चाणक्य या कौटिल्य जो कि चंद्रगुप्त के मंत्री थे, उन्होंने इस महत्वपूर्ण पुस्तक में बताया कि राज्यों को किस तरह जीता जाता है और राज्य चलाया जाता है। इस किताब में यह लिखा है कि राजा षड्यंत्रों से कैसे बचे, किस तरह हर व्यवसाय के लोगों पर कर लगा सके और भारत के अखण्ड के कौन से भाग में कौन सा स्त्रोत उपलब्ध है।

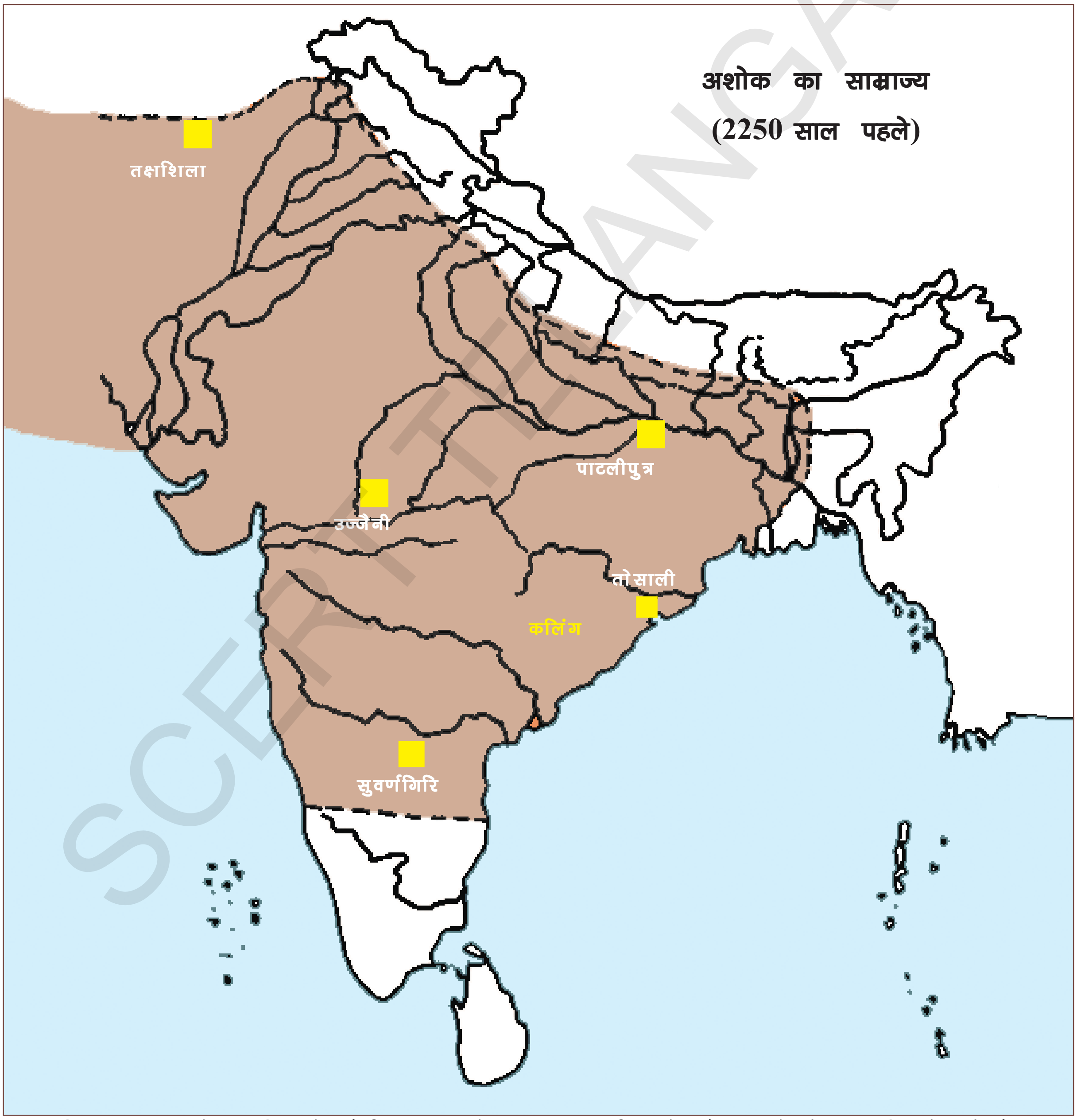

चित्र 1 भारत के मानचित्र में मौर्य साम्राज्य के कुछ महत्वपूर्ण शहरों और जगहों के नाम दिखाये गये हैं।

SCERT TELANGANA

मौर्य ने अपने साम्राज्य के अलग-अलग भागों पर अलग-अलग ढंग से शासन किया। पाटलीपुत्र के चारों ओर का क्षेत्र सीधे सम्राट के आधीन था। सम्राट ने कुछ अधिकारियों को नियुक्त किया, जो लोगों से कर वसूली करते थे तथा उन लोगों को दंड देते थे, जो शाही आदेशों को नही मानते थे। गुप्तचर अधिकारियों के काम और राज्य मे घटने वाली घटनाओं की जानकारी इक्कट्ठा कर सम्राट को देते। सम्राट को द्वारा दिये गये आदेशों को संदेश वाहकों द्वारा इन अधिकारियों तक पहुँचाते थे। सम्राट अपने मंत्रियों और शाही परिवार के सदस्यों की सहायता से अधिकारियों का निरीक्षण करता।

- किन पद्धतियों की सहायता से सम्राट सीधे अपने अधीन के क्षेत्रों को नियंत्रित करता था ?
- आपको क्यों लगता है कि सम्राट को अपने साम्राज्य के अंदर गुप्तचरों की जरुरत थी ?

कुछ ऐसे क्षेत्र और प्रांगण थे, जिन पर शासन प्रांगणों की राजधानी से होता, जैसे तक्षशिला, उज्जैन या सुवर्णगिरी। इन क्षेत्रों का राज्य वे शाही राजकुमार करते थे, जो राज्यपाल के रूप में भेजे जाते थे। ये अपने परगणों में खुद निर्णय ले सकते थे और प्रायः इनके अपने द्वारा चुने हुए अधिकारी और सेना होती थी, जो उनकी सहायता करते थे। सम्राट इन्हें दूतों द्वारा निर्देश भेजते थे। राज्यपाल को इसका अधिकार था कि वह अपने परगणों के मुख्य परिवारों की सहायता ले सके, जो उस क्षेत्र के रीति-रिवाजों और नियमों का पालन करते हैं।

इन परगणों के बीच क्षेत्रों के बीच में घने जंगल थे या फिर अधिक गाँव व शहर नहीं होते। फिर भी ये महत्वपूर्ण थे, क्योंकि इनसे जुड़ी सड़कों पर व्यापारी, सेना और दूत यात्रा करते थे। मौर्य इन्हें नियंत्रण में रखने के विशेष प्रयत्न करते थे। इन रास्तों की सहायता से मौर्य सुवर्णगिरी या तक्षशिला पहुँचते थे। सुवर्णगिरी जहाँ सोने की खाने थी और तक्षशिला अन्य देशों से व्यापारिक केंद्र था। वे इन जगहों से कर के रूप में पशु की खाल, जंगली जानवर, सोना तथा कीमती पत्थर आदि वसूल करते थे। प्रायः जंगल की जनजाति को इन सबसे अलग रहने की छूट थी।

- क्या तुम्हें लगता है कि मौर्य सम्राटों को बहुत से प्रदेशों से प्राप्त विविध प्रकार के स्त्रोतों की आवश्यकता थी ?
- तुम क्या सोचते हो कि किसानों, शिल्पकारों, व्यापारियों और जनजातियों और चरवाहों से कर के बदले में क्या मिलता होगा ?
- सुवर्णगिरी और तक्षशिला जैसे शहर मौर्य के लिए क्यों महत्वपूर्ण थे ?
- क्या तुम वह कारण बता सकते हो, जिसके कारण सम्राट पाटलीपुत्र परगणों और जंगलों में अलग-अलग प्रकार से शासन करते थे। क्या उन तीनों क्षेत्रों के लिए एक सा सामान्य नियम और कानून नहीं हो सकता ?

अशोक- एक असाधारण शासक

मौर्य शासकों में सबसे प्रसिद्ध अशोक था। वह पहला शासक था, जिसने अपने संदेश लोगों तक शिलालेखों द्वारा पहुँचाए।

अधिकतर अशोक के शिलालेखों की खुदाई प्राकृत में, ब्राम्ही लिपि में थी।

अशोक का कलिंग युद्ध

कलिंग तटीय ओड़िसा का प्राचीन नाम है (मानचित्र देखो)। अशोक ने कलिंग को जीतने के लिए युद्ध किया। पर इस युद्ध में हुई हिंसा और रक्तपात को देखकर उसने यह

SCERT TELANGANA

निर्णय लिया कि आगे वह फिर कभी युद्ध नहीं करेगा। पूरे संसार के इतिहास में अशोक ही ऐसा सम्राट था, जिसने युद्ध जीतने के बाद लड़ना छोड़ दिया।

अशोक के शिलालेखों में कलिंग युद्ध का वर्णन

अशोक ने एक शिलालेखा में यह घोषणा की कि राजा बनने के आठ साल बाद उसने कलिंग जीता, जिसमें लगभग डेढ़ लाख लोग को पकड़कर बंदी बनाए गए और एक लाख लोगों से ज्यादा मारे गये।

इस घटना ने मुझे उदास कर दिया? क्यों?

जब कभी भी एक स्वतंत्र भूमि पर विजय प्राप्त की जाती है। लाखों लोग मरते और युद्ध में बंदी बनते हैं। ब्राहमण और भिक्षु मारे गये। लोग जो अपने सगे संबंधियों और मित्रों, दासों, नौकरों पर दया की भावना रखते हैं मारे जाते हैं या फिर वे अपनों को खो देते हैं

इसी कारण मैंने धमा को अपनाने का और सीखने का निर्णय लिया। मेरा यह विश्वास था कि मैं लोगों को धमा के द्वारा एक अच्छे ढंग से जीत सकूँगा न कि बल प्रयोग से।

मैंने अपना यह संदेश शिला लेख पर खुदवाया है, ताकि मेरे पुत्र और पौत्र कभी युद्ध की बात न सोचे। इसके बजाय वे धमा को फैलाने का मार्ग सोचे।

('धमा' प्राकृत शब्द है, जो संस्कृत में 'धर्मा' है।)

- कलिंग के युद्ध ने अशोक का दृष्टिकोण युद्ध के प्रति कैसे बदला?
- अशोक ने अपने कलिंग युद्ध पर विचारों को शिलालेखों पर क्यों खुदवाया?

- उपखण्ड के लोगों पर युद्ध के रोके जाने का क्या प्रभाव पड़ा?

अशोक का धमा क्या था?

अशोक का धमा में न ही पूजा थी न ही बलि। उसका यह मानना था कि जिस तरह एक पिता अपने बच्चों को सीखाने की कोशिश करता है, वैसे ही वह अपने प्रजा को भी निर्देश देगा। उस पर बुद्ध के उपदेशों का प्रभाव हुआ। बहुत सी ऐसी समस्याएँ थी, जिससे उसे कष्ट होता। उसके साम्राज्य में लोग विभिन्न धर्मों का पालन करते थे, जो कभी आपस में लड़ाई का कारण बनते थे। दासों और जानवरों को हीन दृष्टि से देखा जाता। इसके अलावा लोग आपस में और पड़ोसी से लड़ते थे। अशोक को ऐसा लगा कि यह उसका कर्तव्य है कि वह उन्हें रोके और समस्या का समाधान करे। इसके लिए उसने धमा महामप्रत्रा को नियुक्त किया जो एक जगह से दूसरी जगह जाकर लोगों को उपदेश देता था। इसके अलावा अशोक ने अपने संदेश पत्थरों, स्तंभों पर खुदवाये और अपने अधिकारियों को यह आदेश दिया कि वह अशिक्षित को यह पढ़कर सुनायें।

चित्र 11.1 सम्राट अशोक

अशोक ने दूतों को भेज कर धमा का विस्तार सिरिया, मिश्र, यूनान और श्रीलंका जैसे दूसरे देशों में किया।

उसने सड़कों का निर्माण किया, कुएँ खुदवाये और सराय बनवाये। इसके अलावा उसने मनुष्य और पशु दोनों की चिकित्सा के लिए प्रबंध किया।

अपने अनुयायियों के लिए अशोक का संदेश

'लोग बहुत सी परंपराओं का पालन करते हैं, जब वह बीमार पड़ते हैं, बच्चों का विवाह करते है,जब उसके यहां शिशु का जन्म होता है या फिर वे जब किसी यात्रा पर जाते हैं वे उपयोगी नहीं होती। लोग अगर इन परंपराओं की जगह अन्य फलदायक परंपराओं को अपनायें, तो अच्छा था। ये दूसरी परंपराएँ क्या हैं ?

ये हैं- दासों और नौकरों के साथ दयापूर्ण व्यवहार, एक दूसरे का आदर करना, सभी जीवों को एक दृष्टि से देखना। ब्राह्मणों और भिक्षुओं को उपहार देना।

यह गलत है कि एक के धर्म की प्रशंसा करें और दूसरे की बुराई एक दूसरे के धर्म का आदर करना चाहिए।

अगर कोई अपने धर्म की प्रशंसा करे, दूसरे के धर्म की निन्दा करे, तो वह अपने ही धर्म की अधिक हानि करने वाला होगा।

अतः हमें एक दूसरे की भावनाओं और धर्मो को समझकर उनको आदर देना चाहिए।'

- अशोक धर्मो के द्वारा किन-किन समस्याओं को सुलझानाचाहते थे ?
- दासों और नौकरों के साथ बुरा व्यवहार क्यों होता था ? आपको क्या लगता है कि सम्राट के द्वारा उनमें सुधार हो सकता है। अपने प्रश्नों का उत्तर दें ?

- अशोक ने धमा का प्रचार सामान्य लोगों में करने के लिए क्या-क्या प्रयत्न किये ?
- अशोक ने रीति-रिवाजों के स्थान पर किसे प्रोत्साहन दिया ?
- मानचित्र में सिरिया, मिश्र, श्रीलंका देशों को ढूंढें और पटना के साथ उनके रास्तों का पता कीजिए।

दक्कन के राज्य और साम्राज्य

जब मौर्य ने दक्कन पर आधिपत्य (गोदावरी नदी से कृष्णा-तुंगभद्रा नदी घाटी तक) किया, तभी एक बड़े क्षेत्र में गाँवों और छोटे शहरों का विकास शुरु हुआ, जहाँ लोहे के औजार व अन्य चीजें बनाकर बेची जाती थी। कुछ जगहों पर सोने की खानें थी, जहाँ आभूषण बनाये जाते थे। दूसरे भाग में घना जंगल था, जहाँ शिकारी, बटोरने वाले और चरवाहे छोटे झुंड में रहते थे।

मुख्यतः इन क्षेत्रों में वे लोग रहते थे, जो आपस में जन्म के या फिर शादी के रिश्तों से जुड़े थे। इस तरह एक दूसरे से जुड़े हुए समूह को हम जाति या वंश कह सकते हैं। इन जाति के कुछ महत्वपूर्ण आदमी शक्तिशाली मुखिया के रूप मे उभर कर आये, इन्होंने आपसी झगड़ों को मिटाया। ये धीरे-धीरे शक्तिशाली और अमीर बनकर पूरी जाति के क्षेत्र पर राज करने लगे।

- पूर्व काल के अधिक नगरों के दुर्ग थे और चारों ओर मजबूत दीवारें थी। इसकी क्या जरुरत थी ? इससे नगरों को क्या सामना करना पड़ा?
- ऐसी कौन-सी समानताएँ थी, जिसके कारण गंगा की घाटी और

कृष्णा–तुंगभद्रा की घाटी में गाँवों और शहरों का बसना शुरु हुआ ?

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद कई जातियों के मुखिया छोटे राजा बन गये। ऐसे कुछ लोगों में शातवाहन या आंध्र वाले थे, जो एक विशाल साम्राज्य बनाने में सफल हुए, जो नर्मदा नदी के तट से कृष्णा और गोदावरी के डेल्टा तक फैला हुआ था। सबसे महत्वपूर्ण शातवाहन राजा गौतमी पुत्र शतकर्णी वशिष्टी पुत्र पौलमी और यज्ञश्री शतकर्णी थे। इनका राज लगभग 2000 वर्ष पूर्व लगभग 200 वर्षों तक था। इनमें से कुछ ने धान्य कटका अमरावती, के पास जो कृष्णा नदी के तट पर है, उसे राजधानी बनाया। शातवाहन शासकों ने यह कोशिश की कि वे विविध जाति के मुखिया और छोटे राजाओं को अपने आधिपत्य में ला सके। पर उन्हें इस बात की छूट थी कि वह अपने क्षेत्र में बिना किसी रोकटोक के काम कर सके।

कई मुखिया, उनके परिवार की स्त्रियाँ, व्यापारी आदि का बौद्ध मठों और स्तूपों के निर्माण में अधिक योगदान था, जैसे अमरावती, बट्टी प्रोलु, वडला मानु आदि। इस काल में कई दूर स्थलों के साथ व्यापार थे, जैसे बंगाल, रोम। हमें खुदाई में रोम के कई सिक्के और मिट्टी के पात्र मिले। व्यापारी लोग अपना सामान एक जगह से दूसरी जगह नौका द्वारा ले जाया करते थे। ये समुद्र के तटीय क्षेत्र तथा कृष्णा नदी का उपयोग कर राज्य के अंदर के शहरों तक पहुँचते थे। जैसे अमरावती।

चित्र 11.2 गौतमीपुत्र शतकर्णी का चित्र सिक्के पर

शातावाहनों के काल में कोटिलिंगाल

कोटिलिंगाल, तेलंगाना के जगित्याल जिले में जहाँ गोदावरी नदी और बड़ीनहर मिलती हैं। श्रीपाद एल्लंपल्ली परियोजना के ऊपरी भाग में है। यह प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों थी। शातावाहनों की प्रथम राजधानी कोटिलिंगाल थी। वहाँ हुए खुदाइयों में शातवाहनों से पूर्व की, शातवाहनों, इश्वाकुओं के काल के चांदो के सिक्के, बहुमूल्य मिट्टी के पात्र, चीनी के पात्र अधिक संख्या में उपलब्ध हुए हैं। जली हुई ईटों से चारों और दीवार

चित्र 11.3: कोटिलिंगाल सिक्के

बनाहुआ कुँआ भी उपलब्ध हुआ। शातवाहन वंश के स्थापनक श्रीमुख, उसके बाद के शासक कन्हा शातकर्णी के काल के अनेक सिक्के उपलब्ध हुए। कोटिलिंगाल में अनेक द्वारों वाला मिट्टी का किला और चारों ओर बुर्ज दिखाई देते हैं।

इतना ही नहीं अपने राज्य में फणिगिरि, नेलकोंडापल्ली, कोंडापूर, दूलिकट्टा, पेद्दबंकूर, कीसरगुट्टा में बौद्ध स्तूप, वहार, चैल्य उपलब्ध हुए।

चित्र 11.4: कोटिलिंगाल घड़ों के टुकड़े

SCERT TELANGANA

- क्या आप भी घर बनाने के लिए जली ईटों का उपयोग करते हैं? गंदे पानी की निकासी के लिए पानी की टंकी और पाइप लाइन भी है?
- क्या आपने लुहार की भट्टी को देखा है? उसके बारे में कक्षा में वर्णन कीजिए।
- मानलीजिए आप एक व्यापारी हैं। पेद्दाबंकूर से रोम को उत्पाद कौन ले जाते हैं। इसके आधार पर एक कहानी लिखिए।

यह कैसे हुआ कि कुछ जातियों के मुखिया छोटे राजा बन गये।

बल्लारी जिले के मयाकादोनी में प्राप्त शिलालेख

- इस छोटे से शिला लेख को पढ़ो, जो एक गाँव के निकट मिला। यह शातवाहन शासकों के समय का था।

शातवाहन राजा श्री पौलमी के शासन काल के आठवें साल में स्कंदनाग जो कि पौलमी का महासेनानी था। इसका जनपद शातवाहन जिले के वेपुरा में था, जिसका मुखिया कुमारदत्त था। यहाँ के एक गृहपति संवा जो कि इस गाँव का रहने वाला तथा कुंटा जाति का था, उसने यह तालाब खुदवाया।

1. कौनसी जाति के लोग वेपुरा गाँव में रहते थे ?
2. इसका मुखिया कौन था ?
3. कौन उस जनपद का अधिपति था, जहाँ यह गांव बसा है ?
4. तुम्हें क्या लगता है कि गृहपति संवा ने तालाब क्यों बनवाया ?

शातवाहन वंश के पतन के कुछ समय बाद एक नया शाही परिवार इक्षवाकु ने शासन कार्य संभाला और अपने राज्य की स्थापना विजयपुरी को राजधानी बनाकर की। जो कृष्णा नदी के किनारे नागार्जुन कोण्डा पर स्थित था। इस वंश के प्रमुख राजा चंतामुल और वीरपुरुषदत्ता थे। इन राजाओं ने कई मुखिया और छोटे नेता में एकता लाने के लिए उनके परिवारों में शादियाँ की। उसी तरह वे एक दूसरे से अलग दिखाने के लिए अधिक व्यय वाले यज्ञ जैसे अश्वमेधा, वाजपेया, आदि संपन्न कर ब्राह्मणों को अधिक दान देते। वे अपने आपको रामायण के भगवान राम के वंशज मानते थे। यह एक रोचक बात है कि इक्षवाकु वंश की स्त्रियाँ बौद्ध धर्म की अनुयायी थी तथा नागार्जुन कोंडा के मठ और कई प्रसिद्ध स्तूपों के निर्माण के लिए कई बड़े दान दिये। इस क्षेत्र में कई मठ और स्तूपों का निर्माण हुआ।

चित्र 11.4 वशिष्टीपुत्र की पौलमी का चित्र सिक्के पर

भारत उपमहाद्वीप में कुछ प्रमुख साम्राज्य

कुषाण

दो हज़ार वर्ष पूर्व कुषाम चीन से आकर क्रमशः अफ़गानिस्तान में अपना साम्राज्य स्थापित किया। कुषाण राजाओं में कनिष्क प्रसिद्ध राजा था। वह अठहत्तर वर्ष (CE 78) में सिंहासन पर बैठा। आज के पाकिस्तान से लेकर भारत में मथुरा, इलाहाबाद तक के विशाल भू भाग पर उसने शासन किया। अफगानिस्तान के विशाल प्रांत ही नहीं आक्सस नदी प्रवाह प्रांत तक कुषाणों ने शासन किया। भारत, चीन, इरान, रोम को मिलाने वाले बड़े व्यापार मार्गो का सुचारू संचालन किया। इन देशों के बीच व्यापार के विकास युग के नाम से इनके शासन काल को जाना जाता है।

SCERT TELANGANA

उतना ही नहीं धर्मप्रचारक, वैज्ञानिक और कलाकार आते जाते थे। एक के उत्पादन दूसरे खरीदते थे। इतना ही नहं, उन देशों के लोग एक दूसरे को जानने, उनके आचार-विचार, दर्शन, कला, वास्तुशिल्प को जानने इनके द्वारा मौका मिला। इसके कारण भारत नगरों में व्यापार का विस्तार हुआ, जिससे सोना बहने लगा। ज्यादा संख्या में सोने के सिक्के उपलब्ध होना इस बात का प्रमाण है।

शक युग

78ई में कनिष्क से सम्राट बनकर, शासन प्रारंभ होने के वर्ष से ही शक वर्ष आरंभ हुआ। इसी को शकयुग या शकाब्द कहते हैं। दक्षिण भारत के बहुत सारे लोग इस युग का उपयोग करते हैं। यह साधारण युग से 78 वर्ष बाद होता है।

गुप्त साम्राज्य

गुप्त साम्राज्य के राजाओं ने आज के बिहार में एक छोटे से राज्य के प्रशासन द्वारा अपना शासन आरंभ किया। तीन पीढ़ियों में भारत के गुजरात से बंगाल तक, दिल्ली से मध्यप्रदेश तक अपना पूरा अधिकार जमा लिया था। चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, गुमार गुप्त, स्कंद गुप्त इस साम्राज्य के प्रसिद्ध राजा थे। भारते का राजनीतिक व्यवस्था में इन्होंने दो नई पद्धतियों का सूत्रपात किया उनमें एक, वे जिस साम्राज्य को भी जीतते पुनः उस राजा को ही अधिकार सौंप देते कि वो गुप्तों की आज्ञाओं का पालन करें और सामंत बने रहें। इस तरह भारत में पुराने राजवंश ही हारने पर भी अनेक प्रांतों पर शासन करते थे। फिर भी गुप्त शासकों ने उत्तर भारत के अनेक प्रांत अपने अधीन रख लिए। इनकी दूसरी विशेषता यह भी कि, जो सामंत राजा उनसे स्नेहपूर्वक रहते थे, और ब्राह्मण को पूर्ण प्रशासन अधिकार के साथ गाँव उनको दिये जाते थे। इन गाँवों से राजा को किसी प्रकार का कर देने की आवश्यकता नहीं थी। प्रांतीय अधिकारियों को आज्ञा का पालन की आवश्यक नहीं था। इतना ही नहीं वे अधिकारी गाँव की ओर आते भी नहीं थे। ब्राह्मण इन गाँवों में रहते हुए, यज्ञ करते हुए, युव ब्राह्मणों, क्षत्रीय और वैश्यों को वेदों की शिक्षा देते थे। वे सभी को इतिहास और पुराण की शिक्षा देते थे।

मेहरौली लौह स्तंभ

दिल्ली में कुतुबमीनार परिसर में स्थित प्रसिद्ध मेहरौली लौह स्तंभ का निर्माण चंद्रगुप्त द्वितीय ने किया था। पिछले सत्र सौ साल से बाहर हवा में रहते हुए भी ज़ंग न लगने के कारण इसका महत्व अधिक है।

चित्र 11.6: मेहरौली लौह स्तंभ

SCERT TELANGANA

- निम्नलिखित मानचित्र देखिए, क्या तेलंगाना गुप्त साम्राज्य का भाग था?
- गुप्त राजाओं दक्षिण के राजाओं को हराकर पुनः उन्हें ही राज्य कार्य करने की अनुमति क्यों प्रदान की होगी?
- गाँव ब्राह्णों को देने से गुप्त राजाओं को किस प्रकार का लाभ हुआ होगे?

गुप्त राजा भी वैदिक धर्म अपनाकर पौराणिक हिन्दुत्व का पालन करके अश्वमेध यज्ञ जैसे कर्मो का पोषण किया था। इतना ही नहीं पौराणिक धर्म विशेषकर वैष्णव, शिव दुर्गामाता की अवतारों से संबंधित मंदिरों का निर्माण कर, हर दिन उनमें पूजा की व्यवस्था की। गुप्त इन धर्मों का संरक्षण करना, यज्ञ करवाना शिव विष्णु, दुर्गा अवतार वाली स्थानीय देवताओं की उपासना, मंदिरों में जाकर पूजा करने की विधि, ब्राह्मणों को अग्रहार (गाँवदान में) देने को समर्थन करते हैं। इतना ही नहीं गुप्त राजाओं ने जैन, अरामों, बौद्ध स्तूपों के निर्माण में भी सहायता की है।

गुप्त राजाओं ने अपने काल में अनेक सुंदर मंदिरों का निर्माण करवाया। इनमें हम मध्यप्रदेश के दियोगर, उदयगिरि उत्तर प्रदेश के बिट्रगाम, एराण में आज भी देख सकते हैं। भारत के अति सुंदर शिल्पकला इनमें दिखाई देती है। गुप्तों के

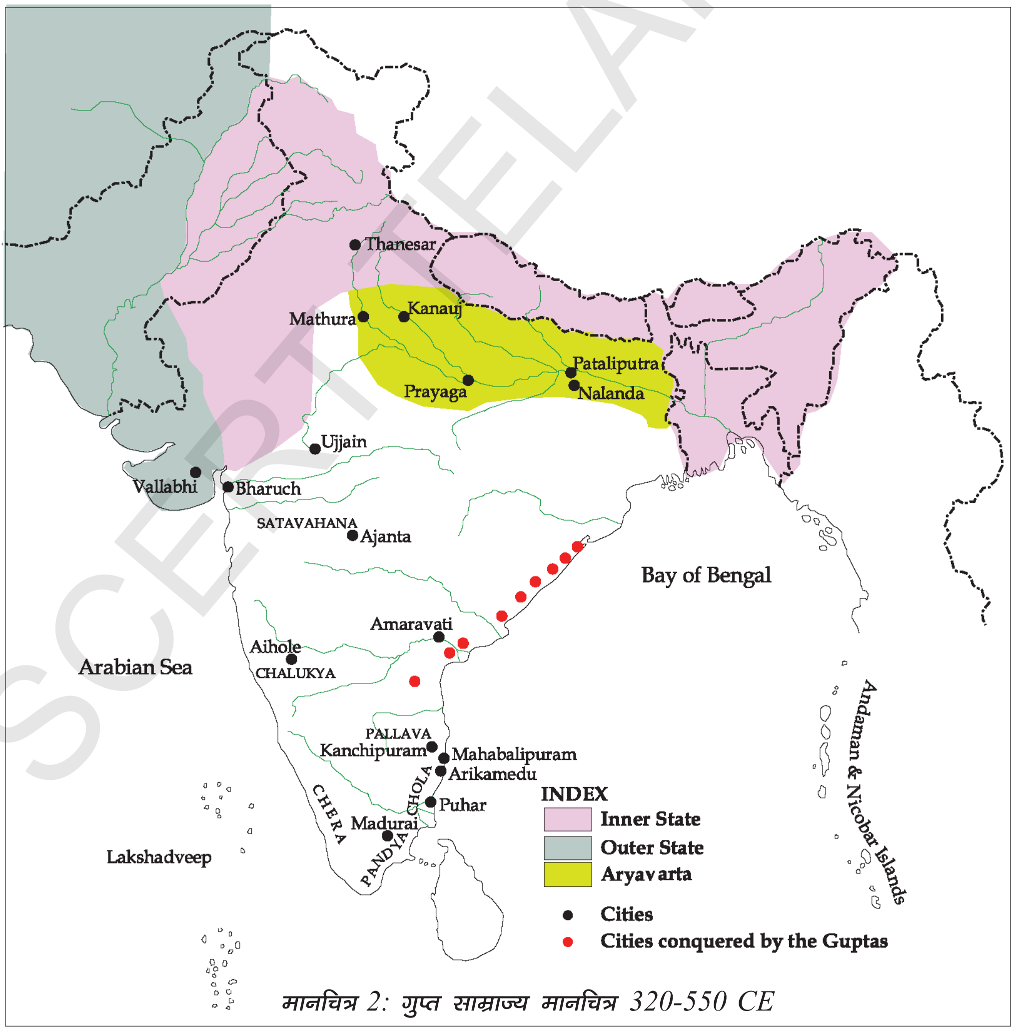

मानचित्र 2: गुप्त साम्राज्य मानचित्र 320-550 CE

SCERT TELANGANA

काल के मंदिर अधिकतर विष्णु और शिव की हैं। बौद्ध शिल्प के लिए प्रसिद्ध सारनाथ भी इनके काल की है।

- गुप्त राजाओं ने वैदिक कर्म और मंदिरों में पूजा के साथ, बौद्ध, जैन आरामों की सहायता क्यों की?

मुख्य शब्द

साम्राज्य	अर्थशास्त्र	मौर्य	धमा	शातवाहन
इक्षवाकु	यज्ञ	मठ	उपखंड	

आपकी शिक्षा में सुधार

1. क्या तुम्हें लगता है कि इक्षावाकु वंश के राजाओं को विविध जातियों के मुखियों ने सहमति दी ? (AS_1)
2. क्या तुम्हें लगता है कि अशोक एक असाधारण शासक था ? (AS_6)
3. किन परिस्थितियों के कारण लगभग 2000 वर्ष पूर्व दक्कन में साम्राज्यों की स्थापना हुई ?(AS_1)
4. मानचित्र 1 में तीन नदियों और दो प्रादेशिक राजधानियों को दर्शाएँ। (AS_5)
5. अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद युद्ध न करने का निर्णय लिया। क्या आप समझते हैं कि ऐसे निर्णय विश्व शांति की स्थापना में सहायक है। कैसे? (AS_6)
6. विश्व मानचित्र में निम्न स्थान दर्शाएँ। (AS_5)
   अ) सिरिया आ) मिस्र इ) ग्रीस ई) श्रीलंका उ) भारत
7. अशोक के काल में परिवार उत्तराधिकारी शासन था। आज का शासन उस ज़माने के शासन से कैसे अलग है? (AS_4)
8. पृष्ट 97 में 'जनता का अशोक का संदेश' पढ़िए, अपने विचार लिखिए। (AS_2)
9. गुप्तराजाओं के समय की सामाजिक पद्धतियों की चर्चा कीजिए। (AS_1)

परियोजना

- अगर आपको अपने अड़ोस-पड़ोस में कोई पुराना शिलालेख मिले तो उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करें।

SCERT TELANGANA

अध्याय 12

प्रजातांत्रिक सरकार

Democratic Government

समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक देखिए। आप को सरकार द्वारा किये गये विभिन्न कार्यों की रिपोर्ट मिलेगी। यह सभी देश की आम जनता के प्रबंध से संबंधित होते हैं।

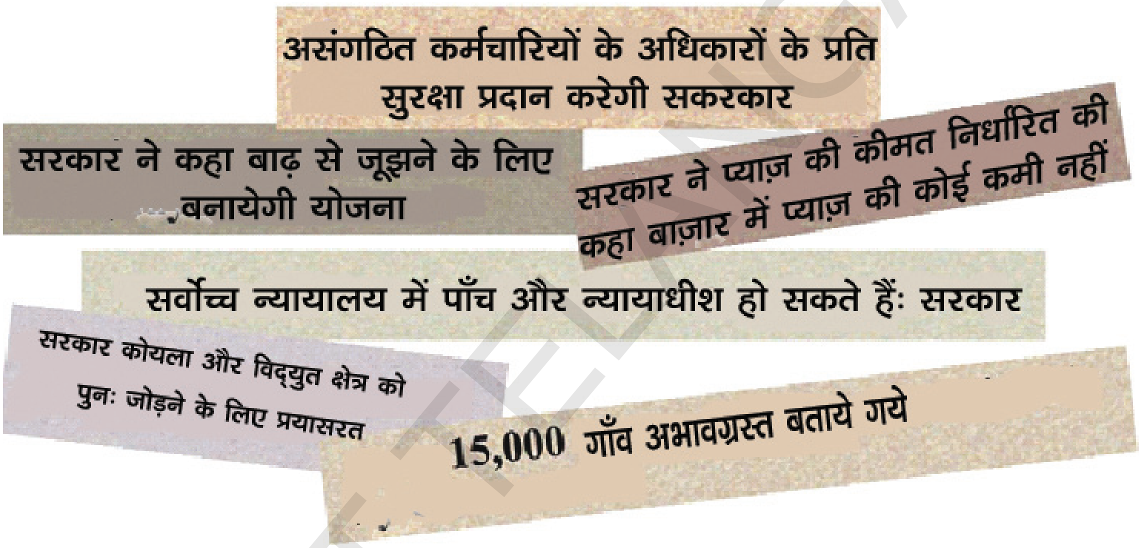

SCERT TELANGANA

सरकार क्या करती है?

हमारे समय में प्रत्येक देश को निर्णय लेने और कार्य पूर्ण करने के लिए एक सरकार की आवश्यकता होती है। इनमें कुछ निर्णय जैसे सड़क और विद्यालय कहाँ बनाए जाए या प्याज के दाम कैसे कम किए जाए, जब वे अधिक महंगे हो जाएं या बिजली वितरण को कैसे बढ़ाना, आदि। सरकार कई सामाजिक विषयों पर भी निर्णय लेती है।

उदाहरण जैसे गरीब की मदद के लिए कई कार्यक्रम। इसके अतिरिक्त कुछ और प्रमुख कार्य जैसे रेल सेवा और डाक चलाने का भी कार्य करती है।

देश की सीमाओं की सुरक्षा करना और दूसरे देशों से शांतिपूर्वक संबंध बनाये रखना भी सरकार के कार्य है। यह अपनी समस्त जनता के लिए अश्वासन चाहती है कि नागरिकों को पर्याप्त भोजन और अच्छी स्वास्थ्य सुविधा प्राप्त हो। जब कभी प्राकृतिक विपत्ती जैसे सुनामी या भूकंप आ जाए उस समय केवल सरकार ही प्राथमिक सहायता का प्रबंध एवं उनकी मदद करती है। यदि कोई विवाद या कोई अपराध करता है, लोग न्याय के लिए न्यायालय जाते हैं। न्यायालय भी सरकार का एक भाग

है। संभवतः आप यह आश्चर्य करेंगे कि सरकार इन सभी कार्यों का प्रबंध कैसे करती है और उनके लिए यह सब क्यों करना जरूरी है? जब मनुष्य एक साथ मिलकर रहते और काम करते हैं, उन्हें सही निर्णय लेने के लिए कुछ संस्थाओं की आवश्यकता होती है। कुछ नियम ऐसे बनाने पड़ते हैं, जो सब के लिए लागू हो। उदाहरण के लिए संसाधनों पर नियंत्रण और देश की भूमि की सुरक्षा करना, जिससे लोग सुरक्षित अनुभव करें। सरकार एक नेता के रूप में निर्णय लेती है और उनके हित के लिए उन निर्णयों को लागू करती है, जो उनके क्षेत्र में रहते हैं।

- आप जिस विद्यालय में पढ़ते हैं, उसे कौन चलाता है?
- सरकार के कार्यकलाप के बारे में लिखिए।

सरकार के प्रकार

हमने अध्याय 9 में पढ़ा है कि जनजाति समाज में रहने वाले लोग कैसे स्वयं शासन करते हैं– कैसे उन जनजाति के विभिन्न परिवार के पुरुष सदस्य विचार-विमर्श और निर्णय लेने के लिए एकत्र होते हैं और कैसे मुखिया इन निर्णयों को लागू करता है और बदले में कुछ लोग उसको मुफ्त में काम कर देते हैं। इस प्रकार की स्थिति उचित रहती थी, जहाँ

चित्र 12.1 काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन

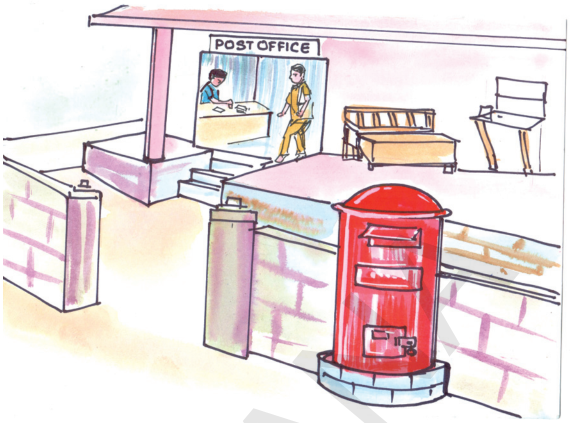

चित्र 12.2 डाकघर

चित्र 12.3 सर्वोच्च न्यायालय

कुछ संस्थाओं के उदाहरण जो सरकार के अंग हैं।

जनसंख्या कम हो, लेकिन जिस समाज में हजारों या लाखों परिवार बसते हैं, तो क्या इस प्रकार का कार्य संभव है?

उन्हें किस प्रकार की समस्यों का सामना करना पड़ेगा? उसी प्रकार से यदि समाज के सभी सदस्यों की संस्कृति (धर्म, जाति, भाषा, आदि) समान हो तब इस प्रकार की व्यवस्था उचित रहेगी।

समाज के लोगों की संस्कृति में यदि विभिन्नता होगी, तो क्या यह संभव है कि जनजाति की स्थिति उचित रहेगी? तीसरा जहाँ लोगों की रुचि एक समान हो अर्थात जहाँ कोई अमीर या गरीब न हो। लेकिन कुछ समाज के

SCERT TELANGANA

लोगों की रूचि में भिन्नता होती है, जैसे कुछ लोग कृषक होते हैं, तो कुछ व्यापारी, कुछ साहूकार, कुछ उद्योगपति, तो कुछ श्रमिक,

चित्र 12.4 शालीवाहन राजा चक्रवर्ती

चित्र 12.5 विधानसभा

आदि। जिससे अधिक विरोध होगा और कोई समस्या का समाधान नहीं निकाल पाएँगे, जो सभी को मान्य हो।

हमने ऐतिहासिक समय से यह देखा है कि कैसे राजा, रानी और सम्राट मिलकर कानून बनाते तथा सेना और अधिकारी की सहायता से उन्हें लागू करते हैं। वे यह भी निर्णय लेते थे कि सड़क कहाँ बनाना है और जनता से कितना कर वसूल करना है, आदि। यदि कोई उनके कानून का उल्लंघन करते, तो उन्हें राजा द्वारा दण्ड दिया जाता था। किसे भी प्रश्न करने का अधिकार नहीं था। यह सभी राजा की इच्छा पर निर्भर रहता था। कई राजा अपने साम्राज्यों की सीमा से संतुष्ट नहीं थे, इसलिए अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए हमेशा युद्ध करते थे।

इस प्रकार की सरकार को राजतंत्र कहते हैं। राजतंत्र में सरकार चलाने और निर्णय लेने का अधिकार राजा या रानी को ही होता था। सम्राट ही अंतिम न्यायाधीश के रूप में प्रमुख विवादों पर निर्णय देता था। राजा को विचार-विमर्श के लिए कुछ लोग सहयोग देते थे, लेकिन अंतिम निर्णय लेने का अधिकार राजा को ही होता था। राजा को अपने कार्य या निर्णय का ब्यौरा स्पष्ट नहीं करना पड़ता था।

- जनजाति लोकतंत्र से राजतंत्र की तुलना कीजिए ?

i. इनमें से आप की राय में जनता के विचारों को कौन अधिक आदर देते हैं ?

ii. इनमे से आपके विचार से कौन सी सरकार उचित रहेगी। जहाँ समाज बड़ा हो या समाज में जनता की रुचि या विचार में भिन्नता हो ?

iii. इनमें से कौनसी सरकार का अत्याचारी और अन्यायपूर्ण शासक बनने का भय रहेगा ?

- क्या आप कोई ऐसी सरकारी प्रणाली सोच सकते हैं, जो जरूरतमंद और पेचीदा समाज को अपने हाथ में ले और साथ-साथ अन्यायपूर्ण या अत्याचारी को रोक सके ?
- क्या आप यह सोचते हैं कि राजतंत्र या जनजाति समाजों में अधिक युद्ध होते हैं ? कारण बताइए ?

SCERT TELANGANA

प्रजातांत्रिक सरकार

समाज में रहने वाले सभी लोगों के विचारों को अनुकुल बनाना और सरकार के अन्यायपूर्ण और अत्याचारी बल को नियंत्रित करने के इस मार्ग को प्रजातांत्रिक सरकार कहते हैं। विश्व के लोगों द्वारा किये गये संघर्ष से यह सरकार संभव हुई है। यह एक प्रकार की सरकार है, जहाँ जनता के हित के लिए कार्य करते है।

आज भारत एक प्रजातांत्रिक देश है। लेकिन हम यह कैसे सिद्ध करेंगे कि हमारी सरकार जनता के हित के लिए कार्य कर रही है, जिसमें लोगों की संस्कृति और रूचि में भिन्नता है। हमारे देश में लाखों लोग निवास करते हैं। सभी नागरिकों की निर्णय लेने में भागीदारी अनगिनत विचारों को उत्पन्न करेगी। ज्यादातर सभी नागरिकों की स्थिति ऐसी नहीं है कि वे अपना अधिक समय धन, शक्ति, सार्वजनिक विषयों पर दे सके। इस समस्या को कैसे सुलझाया जाए ?

अमेरिका के अब्राहम लिंकन ने प्रजातंत्र की परिभाषा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि 'यह जनता के द्वारा जनता के हित एवं जनता की अपनी सरकार है'। इन शब्दों पर विचार कीजिए और देखिए कि आप उनसे सहमत हैं।

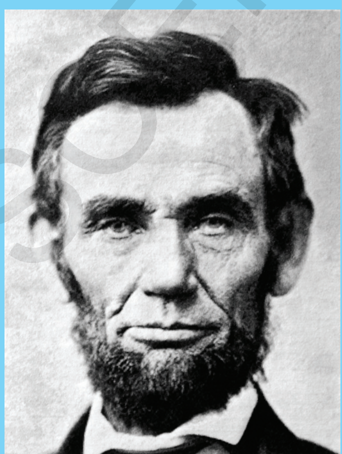

चित्र 12.6 अब्राहम लिंकन

हम दो सिद्धांतो द्वारा इसे जानेंगे 'प्रतिनिधि-प्रजातंत्र' और 'बहुमत प्राप्त शासन'। आइए इन दो विचारों को बेहतर समझे।

हमारे समय में प्रजातांत्रिक सरकार को प्रतिनिधि प्रजातंत्र से संबोधित किया जाता है। इस प्रतिनिधि प्रजातंत्र में जनता अपने प्रतिनिधि का निर्वाचन चुनाव द्वारा करती है। उदाहरण के लिए एक ग्राम में दो से पांच हजार लोग बसते हैं। इस ग्राम को अनके वार्डों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक वार्ड में सौ या दो सौ लोग होते हैं। प्रत्येक वार्ड से एक व्यक्ति प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित किया जाता है। सभी प्रौढ़ व्यक्ति जिनकी आयु 18 वर्ष से अधिक है, चाहे स्त्री या पुरूष, धनी या निर्धन, शिक्षित या अशिक्षित, **किसी** भी जाति, धर्म या भाषा का हो, चुनाव में मत दे सकता है। जिस व्यक्ति को अधिक संख्या में मत प्राप्त होते हैं, उसे समस्त दल का प्रतिनिधि चुना जाता है। यह सभी निर्वाचित प्रतिनिधिगण मिलकर समस्त जनता की भलाई के लिए निर्णय लेते हैं।

चित्र 12.7 ग्रामीण क्षेत्र में मतदान। अंगुली पर निशान लगाया जाता है, जिससे वह एक ही मत दे सकता है।

SCERT TELANGANA

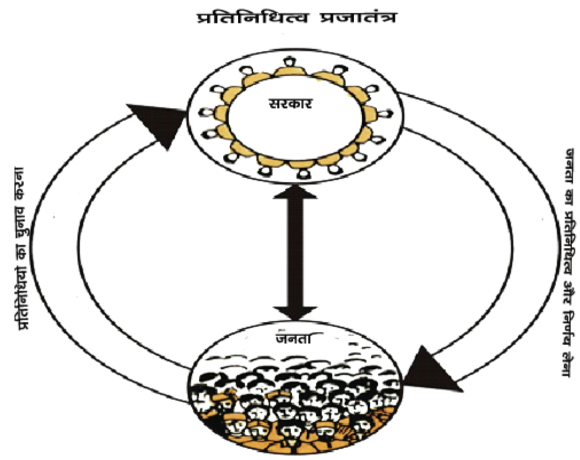

चित्र 12.8 प्रतिनिधित्व प्रजातंत्र

प्रजातांत्रिक प्रणाली में स्वेच्छा**नुसार** प्रतिनिधियों का निर्वाचन होता है। निर्वाचन से पूर्व जनता से यह आशा **की** जाती है कि किस विषय पर सरकार कार्य करे, इस पर विचार-विमर्श करना चाहिए। विभिन्न दल के लोग अपने विभिन्न मुद्दे पर खुले आम विचार अभिव्यक्ति करते हैं। इससे मतदाता यह निर्णय ले पाते हैं कि कौनसा मुद्दा उनके लिए उचित रहेगा और किस उम्मीदवार को प्रतिनिधि के रूप चुने। प्रतिनिधि**गणों** से यह आशा की जाती है कि **वे** व्यक्त किये गये विचार और प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे और समय-समय पर जनता की समस्याओं पर विचार करे और उनसे संपर्क रखे। प्रतिनिधिगण को एक निश्चित अवधि के लिए ही **चुना** जाता है, सामान्य रूप से पाँच वर्ष के लिए। उसके बाद फिर से नया निर्वाचन होगा और जनता अपने नए प्रतिनिधि ा को चुनने के लिए फिर से विचार-विमर्श करेगी।

- आप ऐसा क्यों सोचते है कि जनता के लिए निर्वाचन के समय विभिन्न उम्मीदवारों के विचार जानना आवश्यक है?

- अगर हमेशा के लिए प्रतिनिधि को चुना जाए, तो क्या होगा?
- क्या आप यह सोचते हैं कि प्रतिनिधिगण उस जनता की इच्छा और रुचि के विरुद्ध जाएंगे, जिन्होंने उन्हें चुना है?

आपने गौर किया होगा कि प्रतितिधियों का चुनाव सरल बहुमत पर आधारित है। अधिक मत प्राप्त करने पर चाहे एक मत ही क्यों न अधिक मिले, वह निर्वाचित होता है। जिन्होंने दूसरों के लिए मत दिया था वे बहुमत प्राप्त प्रतिनिधि को स्वीकार करने पर बाधित होते हैं। इसी प्रकार निर्वाचित प्रतिनिधियों को अपने निर्णय को पारित करने के लिए बहुमत के सिद्धातों को मानना पड़ता है। अगर निर्णय को आधे से अधिक सदस्यों की सहमति मिले, तो ही उसे पारित किया जाता है।

उदाहरण के लिए- गाँव में ग्राम पंचायत में 20 सदस्य है और प्रस्ताव को केवल 11 लोगों द्वारा सहमति मिले, तो 9 सदस्यों की असहमति के बावजूद भी वह पारित होकर लागू किया जाता है। आधुनिक प्रजातंत्र में समस्त सहमति

चित्र 12.9 कीमतें बढने के विरोध में सार्वजनिक आंदोलन

SCERT TELANGANA

आवश्यक नहीं होती, लेकिन बहुमत का महत्व अधिक होता है।

कई लोगों का यह विश्वास होता है कि इस प्रकार की प्रणाली जिसमें अल्पसंख्यकों (जो संख्या से कम हो) को नजरअंदाज किया जाता है, **क्या यही न्यायोचित है?**

- क्या आप सोचते है कि वे सही हैं? उदाहरण सहित चर्चा कीजिए?
- कक्षा में व्यवहार संबंधी नियम पालन के लिए विद्यार्थी परिषद (बाल परिषद)बनाइए इसका ध्यान रखिए कि दोनों पद्धतियों पर प्रयास कीजिए तथा देखिए की सभी विद्यार्थी निर्णय लें तथा परिषद के प्रतिनिधियों को चुनिए व सभी बच्चों को अपने अनुभव के आधार पर विचार प्रकट करने दें।

निर्वाचित प्रतिनिधियों पर दृष्टि

निर्वाचित प्रतिनिधि किसी पर भी दबाव न डाले, इसके लिए क्या करना चाहिए?

प्रजातंत्र में चुने हुए व्यक्तियों को भी कुछ सिद्धांतों के अंतर्गत कार्य करना पड़ता है, जो कि देश के संविधान द्वारा बनाए गए हैं। अगर वे इन सिद्धांतों या रीतियों के विरुद्ध जाते हैं, तो न्यायालय उनके निर्णयों को अमान्य कर देता है।

जो इन चुने हुए प्रतिनिधियों के विरोधी होते हैं, वे खुलेआम अपने विचार प्रकट कर उनके कार्यों की निंदा कर सकते हैं। बैठकों, टी.वी., समाचार पत्र, आदि द्वारा यह किया जा सकता है।

समानता और प्रजातंत्र

स्त्री या पुरुष, निरक्षर या साक्षर, अमीर या गरीब, भिखारी और अधिकारी, प्रत्येक को अवकाश लेकर सार्वजनिक विषयों के बारे में सोचना चाहिए। यह भी आवश्यक है कि वे संपूर्ण जानकारी प्राप्त कर उचित निर्णय ले। इसके लिए यह जरूरी है कि वे अपना मत बिना किसी हस्तक्षेप के स्वेच्छापूर्वक दे। दुर्भाग्य से यह सभी देशों में पूरी तरह से संभव नहीं है। उदाहरण के लिए कई लोगों के पास समाचार पत्र पढ़ सके ऐसी न्यूनतम शिक्षा भी नहीं होती। कई लोग सूचना अधिकार अधिनियम को उपयोग भी नहीं करते, जिससे वे विभिन्न प्रणालियों का निरीक्षण कर सकें।

इसका असरदार उपयोग सही मार्ग की तकनीकी जानकारी देता है। महिलाएं एवं दरिद्र व्यक्ति के पास समय नहीं होता कि वे इन विषयों में भाग ले सके। वे लोग जीविका के लिए आय कमाने में या परिवार के कार्यों में व्यस्त रहते हैं। कई बार शाक्तिशाली या धनी व्यक्ति लोगों को मत देने के लिए विवश करते हैं या चुनाव के पहले थोड़ा लाभ दिखाते है। कभी–कभी अपनी जाति या धर्म से भावुक होकर अपना मत न्यायसंगत नहीं देते है। यही सब कारणों से वे अपना प्रजातांत्रिक मत देने के अधिकार का उपयोग नहीं पाते, चूँकि कि उन्हें मान्यता देकर दिया गया है।

- अपने माता-पिता से जानिए कि उन्हें चुनाव पद्धति में किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं को हल करने के उपाय और उन उपायों की सूची बनाइए।
- असमानता से आप क्या समझते हैं? उदाहरण द्वारा समझाइए?

SCERT TELANGANA

मानचित्र – देश की राजधानी

चित्र 1 राष्ट्रीय स्तर पर सरकार

Map - The States of India

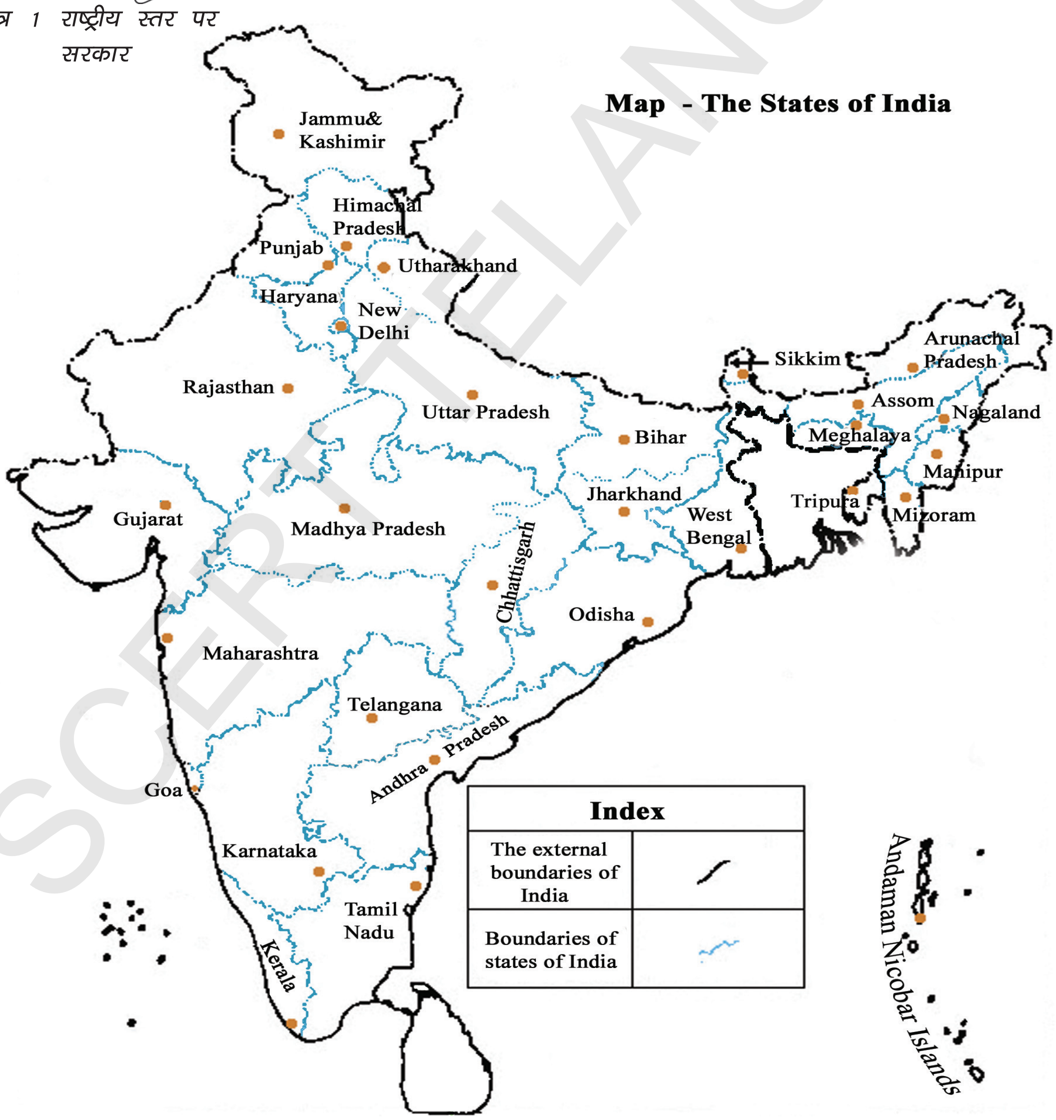

चित्र 2 प्रादेशिक स्तर पर सरकार

SCERT TELANGANA

चित्र 3 जिला स्तर पर सरकार

- सही व्यक्ति के चुनाव में क्या–क्या बाधाएँ हो सकती हैं क्या आप जानते है।

विभिन्न स्तरों पर सरकार

सरकार विभिन्न स्तरों जैसे स्थानीय स्तर, प्रादेशिक स्तर तथा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है। स्थानीय स्तर का अर्थ है तुम्हारा गाँव, शहर या मुहल्ला, प्रादेशिक स्तर का अर्थ है समस्त प्रदेश के लिए जैसे तेलंगाना या आसाम और राष्ट्रीय स्तर का अर्थ समस्त देश के लिए कार्य करती है। आप जब अगली कक्षाओं में जाओगे, तो आप जानोगे कि सरकार कैसे प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करती है।

तीन या चार समूह बनाइए और प्रत्यके समूह को एक विषय पर अभिनय करने के लिए कहिए–

- चुनाव सभा तथा उम्मीदवारों के साथ चर्चा।
- उचित जानकारी के अभाव में कैसे लोग मत देने के समय निर्णय लेते है।
- प्रजातांत्रिक और राजतांत्रिक सरकार में अंतर।
- गाँवों में शक्तिशाली और धनी लोग मतदाता को कैसे बहलाते है।

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द

प्रजातंत्र — राजतंत्र — संविधान

चुनाव — निर्णय लेना — प्रतिनिधि

अपनी शिक्षा में सुधार

1. गोंड जनजाति गौंड प्रशासन एवं आधुनिक प्रजातंत्र में समानता व असमानता पर चर्चा कीजिए। (AS_1)
2. क्या आप सोचते है कि अल्पसंख्यकों के विचारों को निर्णय लेने में जोड़ा जाना संभव है? उदाहरण के साथ चर्चा कीजिए। (AS_1)
3. अगर विधार्थी एवं अध्यापकों द्वारा आपका विद्यालय चलाया जाए, तो कैसा होगा? क्या आप चाहोगे कि सभी निर्णय लेने में भगीदार बने या आप प्रतिनिधि चुनना चाहेंगे? कारण बताइए? (AS_6)
4. क्या आप सोचते हैं कि आपके घर में प्रजातांत्रिक निर्णय लिए जाते हैं? क्या सभी इसमें बोलते हैं? (AS_4)
5. दुकान लगाने के लिए गोपाल के पिताजी ने परिवार के सभी सदस्यों से संपर्क किया, परंतु सभी के अलग-अलग विचार थे। अंत में उन्होंने दुकान लगाने का निश्चय किया। क्या आप सोचते हैं कि वे प्रजातांत्रिक थे? (AS_1)
6. मेरी की मां ने भी बच्चों से पूछा कि रविवार को कहां चलेंगे। दो सिनेमा जाना चाहते थे, तीन बच्चे पार्क में खेलने जाना चाहते थे। अगर आप मेरी के स्थान पर होते, तो आप क्या निर्णय लेते। (AS_1)
7. सरकार को स्तरों पर वर्गीकृत कीजिए (केंद्रीय, प्रादेशिक, स्थानीय) एम.पी., एम.एल.ए., सरपंच, मेयर, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री। (AS_1)
8. दैनिक समाचार पत्रों से विधात्मक, संसद, मुख्यमंत्री के मुखचित्र संग्रह कीजिए। (AS_3)
9. पृष्ठ 109 में भारत का मानचित्र देखकर, भारतसीमा मानचित्र बनाइए। (AS_5)

परियोजना

1. एक सप्ताह तक समाचार पत्र पढ़िए। सरकारी कार्यक्रमों को समाचार एकत्रित कीजिए। उन्हें चार्ट पर या कापी में चिपकाएँ। इस समाचारों के आधार पर सरकार जो कार्य कर रही है। उसकी तालिका बनाइये। इसके बारे में कक्षा में बाहर चर्चा कीजिए और सरकार जो कर रही है जानकारी प्राप्त करें।
2. आपके गाँव में मतदान अधिकार प्राप्त दस व्यक्तियों से मिलकर पता कीजिए कि वे मतदान देते समय किन अंशों को महत्व देते हैं। प्रतिवेदन लिखकर कक्षा में चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 13

ग्राम पंचायत

Village Panchayats

जन सुविधाओं की उपलब्धता

एक गाँव में एक पम्पसेट की मरम्मत करवानी है। दूसरे गाँव में मल निकासी का पानी सड़क पर बह रहा है, जिससे सड़क पर कीचड़ जमा हो गया है। इन समस्याओं को कौन दूर करेगा ? चाहे वह सड़क, पम्पसेट या मार्ग प्रकाश हो, यह सभी गाँव के लोगों से संबंधित होती हैं। उन्हें जन सुविधाएँ या आवश्यकताएँ कहते हैं। इन सभी को कौन उपलब्ध करवाएगा ? इन सभी की रख-रखाव की जिम्मेदारी कौन लेगा ? इसी कारण ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत तथा शहरों में नगर पालिकाएँ होती हैं।

- आपके क्षेत्र की जन सुविधाओं के नाम बताइए ?
- पंचायत या नगर पालिका द्वारा आपके क्षेत्र में दी गयी सुविधाएं या योजनाओं पर चर्चा कीजिए ?

ग्राम स्तर पर प्रजातंत्र

सभी प्रकार की सुविधाएँ सरकार द्वारा उपलब्ध करावायी जाती है परंतु उन्हें उच्च अधिकारियों द्वारा दिये गये आदेशों का पालन करना पड़ता है तथा राज्य सरकार की सहमति आवश्यक होती है। इस प्रकार के प्रबंधों में ग्रामीण जनता अप्रत्यक्ष रूप से अपना योगदान देती है। स्थानीय लोग ही उनकी आवश्यकताओं की अपेक्षा वे अपनी समस्याओं को आसनी से हल कर पाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि एक साधारण व्यक्ति भी सार्वजनिक कार्यों में भाग ले सकता है। इसीलिए हमारे द्वारा ग्राम पंचायत एवं नगर पालिक के लिए सदस्य स्थानीय स्तर पर नियुक्त किये जाते हैं, जो मौलिक सुविधाएं उपलब्ध करा सके।

इस प्रकार के प्रजातांत्रिक विकेन्द्रीकरण के मौलिक स्तर पर ग्राम के मतदाताओं द्वारा 'ग्राम सभा' कार्यरत होती है। ग्राम सभा पंचायत के कार्यों का सर्वेक्षण करती है और ग्राम जन कल्याण योजनाओं में अपना निर्णय भी सुनाती है। ग्राम के सभी व्यक्ति ग्राम पंचायत के अन्य सदस्य तथा सरपंच का चुनाव भी करते हैं, जो पंचायत के दैनिक कार्यों का प्रबंध करता है।

ग्राम सभा

पिछले अध्याय में हमने प्रजातांत्रिक सरकार एवं जन कार्यक्रमों में जनता की भागीदारी के बारे में पढ़ा था। यह संभव नहीं है कि प्रादेशिक या राष्ट्रीय स्तर पर सभी व्यक्ति भाग ले सके, परंतु ग्रामीण स्तर पर यह संभव हो सकता है। ग्रामसभा या ग्रामीण मतदाताओं के गठन से यह संभव हो सकता है। पिछले कुछ वर्षो से हमारे देश में हमने इस प्रकार के प्रयास के शोध कार्य आरंभ किये है।

कनकम्मा ग्राम सभा के कार्यों में रूचि लेती थी, क्योंकि उसे यह सूचित किया गया था कि उसे कुछ कूपन दिये

SCERT TELANGANA

चित्र 13.1 ग्राम सभा

जायेंगे, जिससे वह सरलता से राशन कार्ड प्राप्त कर सकती है। उसे यह पता नहीं था कि सभा का आयोजन क्यों किया जाता है। और उसका क्या परिणाम होता हैं। उसमें 70 व्यक्तियों में से 20 महिलाएं कनकम्मा के समान अपने कूपन प्राप्त करने शामिल हुई।

सरपंच द्वारा पिछले वर्ष के पंचायत के कार्यों की रिपोर्ट का वाचन किया गया तथा आगामी वर्ष की योजनाओं की संभावनाओं को बताया गया। उन्होंने सभा के अतं में यह घोषणा की कि 'मैं आशा करता हूं कि इसमें आप सभी की सहमति है।' उपस्थित व्यक्ति ध्यानपूर्वक सुने बिना ही तालियां बजाने लगे। उसके पश्चात उन्होंने गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत करने वालों की नामावली बताई, जो सरकारी सहयोग पाने के अधिकारी थे।

जैसे ही सभा समाप्त हुई, कनकम्मा ने कहा कि उसका नाम इसमें जोड़ा नहीं गया है, जबकि उसके पास जमीन, आय के अन्य स्त्रोत या संसाधन नहीं है। सरपंच ने उसे आश्वासन दिया कि वह इसकी जाँच करेगा। कनकम्मा को प्रसन्नता हुई कि उसने भी ग्राम सभा में भाग लिया। अंत में सभी राशन कार्ड पाने वालों को कूपन वितरित किये गये।

यह ग्राम सभा के कार्यों का एक उदाहरण है। व्यक्तियों को सही जानकारी नहीं रहती और बहुत ही कम संख्या में लोग आते हैं। प्रजातंत्र में सभी ग्रामीणों की ग्राम सभा में भागीदारी आवश्यक होती है। पिछले वर्ष किये गये कार्यों पर सभी को चर्चा करनी चाहिए तथा बताना चाहिए कि वाकई में संतोषजनक कार्य किया गया है, जो । आगामी वर्ष की योजनाओं पर चर्चा करना चाहिए, अन्य प्रस्तुत योजनाओं पर चर्चा करना चाहिए, अन्य किया जाने वाले कार्यों की जानकारी दी जानी चाहिए या उसे पूरा करने के नए तरीके बताना चाहिए। जब दरिद्रता रेखा से नीचे वाले व्यक्तियों की सूची बतायी गयी, तो सभी को यह विश्वास हो गया कि गरीब लोगों को ही इन योजनाओं से लाभ प्राप्त होगा। ग्राम सभा द्वारा 'महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना' (एमएनआरईजीए) तथा अन्य योजनाओं के कार्यों का निरीक्षण किया जाना चाहिए।

वास्तव में ग्राम सभा उन सभी व्यक्तियों से नहीं मिलती, जो वाकई में रूचि लेते हैं।

- अगर आप गाँव में रहते हैं, तो अपने माता-पिता से ग्राम सभा कैसे काम करती है, चर्चा कीजिए। पता करिए कि क्या लोगों को सभा की जानकारी पहले ही हो जाती है। कितने पुरूष एवं कितनी स्त्रियाँ भाग लेती हैं, पंचायत

में कितने कस्बे आते हैं। सभा में होने वाली चर्चा की पूर्व सूचना पाना, सभी ग्रामीणों द्वारा वास्तविक रूप से भाग लेना या नाम मात्र से सहमति देना।

- आप क्यों सोचते हैं कि ये सभी चर्चाएँ स्वस्थ पंचायत राज प्रणाली में **क्यों** आवश्यक है।
- क्या आप लोगों को पंचायत कार्यों में भाग लेने के लिए कुछ नारे लिख सकते हैं, जो उन्हें प्रोत्साहित कर सके?

ग्राम पंचायत का गठन

ग्राम पंचायत का गठन चुनाव द्वारा होता है। राज्य चुनाव संघ इसका निर्वहण करता है।

मतदाता सूची

सभी ग्राम निवासी जिनकी आयु 18 वर्ष या उससे अधिक हो, वे अपना नाम सूची में लिखवाएं। अधिकतर सरकारी कर्मचारी सभी घरों में जाकर जानकारी एकत्रित करते हैं। वे सूची में नाम जोड़ने या घटाने के लिए उनकी राय भी लेते हैं।

- क्या आप सूची में जोड़े या घटाए गये कारणों की आवश्यकता का उदाहरण दे सकते हैं?
- पता करिए कि आपके परिवार के सभी सदस्य जिनकी आयु 18 वर्ष या उससे अधिक है, उनके नाम सूची में लिखे गये हैं?
- अपने अध्यापक से जानिए कि कौन सूची तैयार करता है और कब?

- जिन बच्चों की आयु 18 वर्ष से कम है, वह चुनाव में क्यों भाग नहीं ले सकते हैं?

वार्ड (क्षेत्र)

गांव को इस प्रकार वार्डों में विभाजित किया जाता है कि सभी वार्डों में मतदाताओं की संख्या समान होती है। प्रत्येक वार्ड से ग्राम पंचायत के लिए एक सदस्य को चुना जाता है, जिसे 'वार्ड सदस्य' कहते हैं। इससे यह निश्चित होता है कि प्रत्येक मुहल्ले से व्यक्ति प्रतिनिधित्व करते है। एक पंचायत में कम से कम पांच वार्ड सदस्य और अधिक से अधिक 21 वार्ड सदस्य पाये जाते हैं। 21 वर्ष या उससे अधिक आयु वाले व्यक्ति चुनाव लड़ सकते हैं।

ग्राम पंचायत में आरक्षण

वार्ड सदस्य या सरपंच पद के लिए एक स्त्री का चुना जाना बड़ा कठिन कार्य है। इसिलिए सभाएं पुरूष प्रधान होती हैं। परिणामतः आधी या उससे अधिक जनता का प्रतिनिधित्व नहीं होता है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए संसद ने यह निर्णय लिया है कि 1/3 महिलाएं सरपंच या वार्ड सदस्य के लिए आरक्षित रहे।

उसी प्रकार गिरिजन, हरिजन तथा पिछड़े वर्ग के लिए भी आरक्षण दिया गया है, ताकि समाज के वर्गों से व्यक्ति चुने जा सके। इस प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत प्रतिनिधि के रूप में कार्यरत हैं।

चुनाव

प्रति पांच वर्षों में ग्राम पंचायत में चुनाव का आयोजन किया जाता है। इन चुनावों में प्रत्येक मतदाता दो मत देता है–एक वार्ड सदस्य के लिए, दूसरा सरपंच के लिए। जिस व्यक्ति को

SCERT TELANGANA

सबसे अधिक मत प्राप्त होते है, वह विजयी घोषित किया जाता हैं।

> अगर आप गाँव के निवासी हैं, तो निम्न जानकारी प्राप्त कीजिए–
>
> - आपके पंचायत में कितने वार्ड सदस्य हैं ?
> - आपके घर में कितने मतदाता हैं ?
> - आपका घर किस वार्ड में हैं ?
> - आपके वार्ड सदस्य का नाम बताइए।
>
> आपके माता–पिता से यह जानकारी प्राप्त कीजिए कि चुनाव में कौन–कौन भाग ले रहा है और पिछले चुनाव का परिणाम क्या हुआ। अपनी कक्षा में जानकारी प्रस्तुत कीजिए ?

सरपंच, उपसरपंच एवं सचिव

सरपंच ग्राम पंचायत का मुखिया होता है। पंचायत के सभी निणर्यो को लागू करता है तथा दैनिक कार्यो की जानकारी रखता है। पंचायत की आय एवं व्यय की जानकारी रखता है। इस प्रकार सरपंच विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारी निभाता है। कई गाँवों में देखते हैं कि कई ऐसे सरपंच होते हैं, जो गांववासियों की किस्मत भी बदल देते हैं।

उप सरपंच– सरपंच एवं सदस्य प्रत्येक वार्ड को उप सरपंच के लिए नियुक्त करते हैं। सरपंच की अनुपस्थिति में उप सरपंच कार्य करता है।

> ***सचिव एवं कार्यकारिणी अधिकारी–***
>
> प्रत्येक पंचायत में एक सचिव जो कि सरकारी होता है। वे हिसाब–किताब एवं सभा के सार का प्रस्तुतीकरण करते हैं। पंचायत जिनकी आय अधिक होती है, उनके लिए एक कार्यकारी अधिकारी सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।

पंचायत क्या कार्य करती है?

जनता की सुविधाएँ जैसे ग्रामीण सड़कों का रख–रखाव ? नालियों का निर्माण एवं मरम्मत, पेयजल का वितरण,मार्ग प्रकाश व्यवस्था, सड़कों की सफाई, राशन दुकान चलाना, आदि सभी ग्राम पंचायत का उत्तरदायित्व होता है। विद्यालय चलाना, आंगनवाड़ी, महिला एवं बच्चों के कल्याणकारी कार्यक्रम, आदि भी उनका दायित्व होता है। योजनाएँ तैयार करना, गाँव के लिए विकासशील कार्य जैसे लघु सिचांई योजनाएँ, भूमि सुधार कार्यक्रम, आदि भी पंचायत के कार्य है।

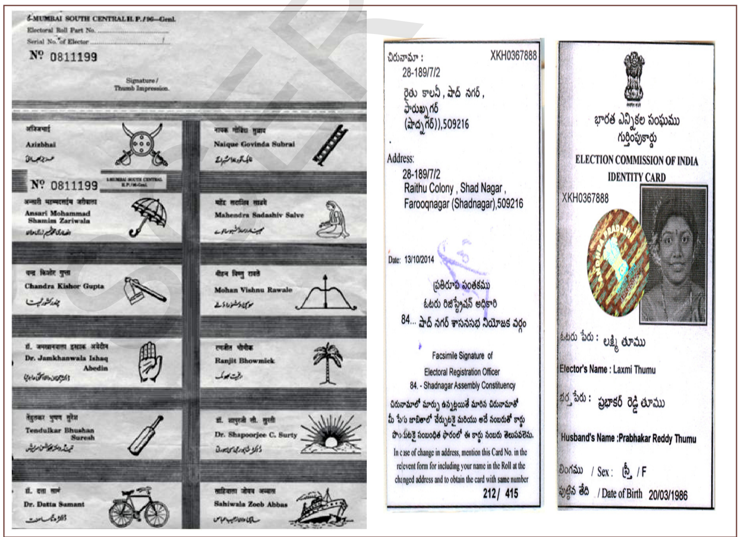

चित्र 13.2 नमूना बैलेट पेपर का चित्र

SCERT TELANGANA

कुछ प्रदेशों द्वारा पंचायतों को अधिक कार्य एवं महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान की जाती हैं। कुछ प्रदेश जैसे तेलंगाना में आज तक कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं सौंपा गया, जैसे बाजारों एवं मूल्यों पर नियंत्रण, भूमि विकास, वन उत्पादन, लघु स्तरीय उद्योग, कमजोर वर्ग के लिए गृह, विद्युत योजना, गरीब परिवारों के लिए दरिद्रता निर्मूलन कार्यक्रम, अपंगों के लिए चिकित्सालय, आदि। जब तक ऐसे कार्यक्रम ग्राम पंचायत को नहीं दिये जायेंगे, तब तक वे ग्रामीणों की समस्याओं को वास्तविक रूप से दूर नहीं कर पायेंगे। प्रभावशाली योजनाओं द्वारा ही इनका विकास किया जा सकता है।

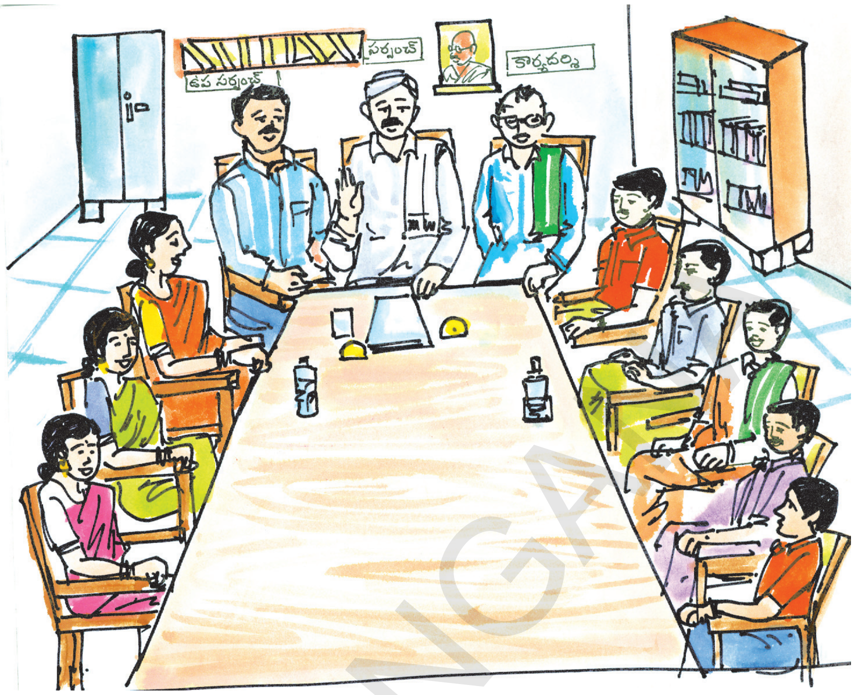

चित्र 13.3 ग्राम पंचायत सभा

प्रत्येक महीने में पंचायत की एक बार सभा का आयोजन किया जाता है। सभा में कम से कम आधे सदस्यों की संख्या आवश्यक होती है, अन्यथा वह सभा मान्य नहीं होती। सभा का आरंभ अधिकतर विगत रिपोर्ट के वाचन से होता है। (इस रिपोर्ट वाचन को 'मिनट' कहते हैं।) तत्पश्चात सरपंच पिछले महीने में किये गये कार्यों की जानकारी एवं उस पर खर्च की गयी राशि का ब्यौरा प्रस्तुत करते हैं। किसी सदस्य को इससे संतोष न हो, तो वह उस पर चर्चा भी कर सकता है। वार्ड सदस्य अपने क्षेत्र के लिए विकास कार्य का सुझाव दे सकते हैं तथा कार्य के पूर्ण न होने पर कारण भी पूछ सकते हैं।

प्रत्येक वर्ष अप्रैल के पहले विभिन्न वार्डों से सुझाव जानकर उस पर चर्चा कर, बजट तैयार किया जाता है। सरपंच एवं कार्यकारी अधिकारी धन राशि की जानकारी प्राप्त करता है, जिससे ये कार्य पूरे किये जा सकें। तत्पश्चात पंचायत की वार्षिक योजना तैयार की जाती है। उस पर ग्राम सभा में चर्चा कर सुझाव लेकर उसे अंतिम रूप दिया जाता है। इसे मंडल एवं जिला पंचायत में प्रस्तुत किया जाता है। धन प्राप्त कर उसका दुरुपयोग भी किया जाता है, क्योंकि योजना, बजट एवं कार्यों की जानकारी बहुत कम लोगों को होती है। इसीलिए यह अति आवश्यक होता है कि प्रत्येक सदस्य सभा में भाग ले, योजनाओं की जानकारी प्राप्त करे एवं उसके लागू होने की जानकारी प्राप्त करे।

SCERT TELANGANA

- अपनी पंचायत में जाकर पिछली सभा कब हुई तथा उसमें क्या चर्चा हुई, जानकारी प्राप्त कीजिए ?
- प्रत्येक सभा में कम से कम आधे सदस्यों की उपस्थिति **क्यों** अनिवार्य है ?
- अपने वार्ड की वार्षिक योजना में आप क्या सुझाव प्रस्तुत करेंगे ?

ग्राम पंचायत के कार्यों के लिए कोष

कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए ग्राम पंचायत कहां से धन प्राप्त करती है ?

ग्राम पंचायत को गांवों में कुछ कर लागू करने का अधिकार प्राप्त होता है, जैसे गृह कर, भूमि कर, आदि। इससे उन्हें 1/3 आय प्राप्त होती है।

प्रादेशिक एवं केंद्रीय सरकार द्वारा दिये गये अनुदान से ही उनकी वास्तविक आय होती है और विशेष कार्यक्रमों को पूरा किया जाता है। कुछ अनुदान 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगारी गारंटी अधिनियम' (एमएनआरइजीए) से प्राप्त होते हैं।

अनुभवों से यह ज्ञात हुआ है कि प्राप्त अनुदान से विकास कार्यों को आंशिक रूप से पूरा किया जाता है। पंचायत स्वयं निर्णय लेकर अपने पास की थोड़ी सी धन राशि से इन कार्यक्रमों की योजना तैयार करती है।

मंडल एवं जिला परिषद

पिछले भाग में हमने ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ा था। मंडल परिषद के अंतर्गत 20 ग्राम पंचायतें आती हैं। सभी मंडल परिषद जिले के स्तर पर जिला परिषद के अधीन आते हैं। मंडल परिषद क्षेत्रीय चुनावी इकाईयां गांव वासियों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से चुने जाते हैं और कुछ मनोनीत किये जाते हैं। जिला परिषद के सदस्य भी इसी प्रकार निर्वाचित किये जाते हैं। जिला परिषद और मंडल परिषद मिलकर जिला एवं मंडल स्तर पर पंचायत के कार्य निरीक्षण, योजनाओं को स्वीकृति एवं धन राशि का वितरण भी करते हैं।

हाजीपल्ली की जंगम्मा

चित्र 13.4 भारत के राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा जंगम्मा को निर्मल ग्राम पंचायत प्राप्त होना।

रंगारेड्डी जिले के हाजीपल्ली एक छोटा सा गांव है। सरपंच जंगम्मा ने पंचायत की सहायता से कंकर की सड़कें एवं भूमिगत मल निकासी मार्ग का निर्माण किया। उसने सभी ग्रामवासियों को अपने घर, विद्यालय, आंगनवाड़ी, आदि स्थानों में शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया। उन्हीं के नेतृत्व में पंचायत ने पूरे गांव वालों के लिए पीने के पानी के लिए पानी की टंकियों का निर्माण किया। इसके अलावा शहरों के समान भूमिगत मल निकासी मार्ग भी बनाया गया। पंचायत ने उन्हें आश्वासन दिया कि उन्हें सभी उचित लाभ प्राप्त करवाये जायेंगे। इन्हीं कार्यों के

SCERT TELANGANA

लिए प्रादेशिक सरकार ने 2008 नवंबर में 'शुभ्रम' पुरस्कार तथा दिसंबर 2008 में 'निर्मल ग्राम पुरस्कार' भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल ने प्रदान किया।

(नोट– यह पुरस्कार उन गाँवों को दिये गये, जिन्होंने प्रत्येक घर, कार्यालय, विद्यालय में शौचालय का निर्माण किया तथा पूर्ण रूप से खुले क्षेत्र के प्रयोग पर रोक लगा दी। प्रदेश के कई गाँवों को ऐसे पुरस्कार मिले हैं। आपके क्षेत्र के गाँवों की जानकारी प्राप्त कीजिए।)

- हाजीपल्ली की जन सुविधाओं की जानकारी प्राप्त कीजिए ?
- हाजीपल्ली की सड़कों तथा मल निकासी मार्ग की क्या विशेषता है ?
- आपके विद्यालय एवं गाँव में शौचालय, मल निकासी मार्ग एवं जल व्यवस्था कैसी है ?

क्या और कोई गाँव है, जिसने ग्राम सभा को सफल बनाया ?

ऐसे कई गाँव हैं, जिन्होंने ग्राम सभा की सहायता से गाँववासियों को विकास कार्य में भागीदार बनने के लिए प्रोत्साहित किया।

हमारे राज्य में वरंगल जिले में 'गंगादेवपल्ली', करीमनगर जिले में 'रामचंद्रपुरम', निजामाबाद जिले में 'अंकापुर' सफल रहे हैं। इसी प्रकार महाराष्ट्र में अहमदनगर जिले मे 'हिवारे बाजार' भी अच्छा उदाहरण है।

गंगादेवीपल्ली

पंचायत

ग्राम सभा द्वारा गंगादेवीपल्ली गाँव में 18 विभिन्न समितियों का गठन किया गया, जैसे पेयजल समिति, स्वच्छता समिति, स्वस्थ समिति, संचार समिति, आदि समितियाँ गाँव को अच्छी सेवाएँ प्रदान करती हैं। इस गाँव ने निम्न कार्य किये–

- 100% विद्यालयों में प्रवेश
- 100% साक्षरता
- सभी परिवारों के लिए सुरक्षित पेयजल व्यवस्था
- योग्य दंपत्तियों द्वारा परिवार कल्याण योजना को अपनाया जाना
- बच्चों को टीके लगवाना
- 100% परिवारों को बैंक में बचत खाते खुलवाना
- पूर्ण स्वच्छता की व्यवस्था
- मदिरापान पर पूर्ण प्रतिबंध

प्रत्येक ग्रामवासी को 18 समितियों में से किसी एक समिति में नामांकित होना चाहिए। ग्राम सभा में ग्राम विकास विषय पर चर्चा अनिवार्य होती है। सभी ग्राम सभा के कानून मानने के लिए बाधित होते हैं।

चित्र 13.5 गंगादेवीपल्ली ग्राम सभा

SCERT TELANGANA

- गंगादेवीपल्ली किस जिले में है?
- गंगादेवीपल्ली में कुल कितनी समितियाँ हैं?
- गंगादेवीपल्ली पंचायत के संदर्भ में आपके क्या विचार है?
- गंगादेवीपल्ली की सफलता का क्या कारण है?
- आप अपने ग्राम पंचायत की तुलना गंगादेवीपल्ली से कैसे करेंगे?

मुख्य शब्द

ग्राम सभा

सार्वजनिक सुविधाएँ

चुनाव

स्थानीय स्वशासन सरकार

शिक्षा में सुधार

1. अगर आप अपने स्थानीय सरकार के प्रतिनिधि है तो आप किस विषय को सभा में उठायेंगे? (AS_4)
2. क्या आप समझते हैं कि साधारण व्यक्ति पंचायत/नगरपालिका के निर्णयों में भागीदार बन सकता है? उदाहरण द्वारा आपका उत्तर दीजिए? (AS_1)
3. ग्राम सभा के अधिवेशन में कुछ लोग ही **क्यों** शामिल होते हैं? (AS_1)
4. ग्राम सभा की मीटिंग में दरिद्रता रेखा से नीचे (बी.पी.एल.) वालों के नाम **क्यों** पढ़े जाने चाहिए?(AS_1)
5. आपके क्षेत्र के दलित पंचायत सदस्य और सरपंच की समस्याओं को जानकार लिखिए? (AS_4)
6. पंचायत को गाँव से अधिक कर लेकर विकास कार्य पूरे करने चाहिए या सरकार पर निर्भर करना चाहिए? (AS_4)
7. सरपंच को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? (AS_6)
8. आपके गाँव के वार्ड सदस्य, उप सरपंच, सरपंच, पंचायत सचिव के विवरण एकत्रित करके तालिका बनाइए। (AS_3)
9. पृष्ठ सं-118 में 'गंगदेविपल्ली ग्राम पंचायत' अंश पढ़कर अपने विचार बताइए। (AS_2)

परियोजना–

1. आपके विद्यालय में सरपंच या मंडल पंचायत परिषद के अध्यक्ष को आमंत्रित कीजिए और पंचायत के कार्यों पर चर्चा कीजिए।
2. आपके सरपंच/वार्ड सदस्य से संपर्क बनाकर उनके कार्यों को समझाइए। अपने विद्यालय में उनके द्वारा किये गये कार्यों के चित्र बनाकर लगाइए।
3. विद्यालय परिसर में कागज़ आदि दिखाई दें तो तुम्हें कैसा लगता है? पाठशाला में स्वच्छता, पेड़-पौधे लगाने के लिए समूह बना लें, हर एक समूह प्रतिदिन 'स्वच्छता-हरियाली' कार्यक्रम का निर्वाह करें।

SCERT TELANGANA

अध्याय 14

नगरों में स्थानीय स्वशासन सरकार

Local Self-Government in Urban Areas

नीचे दिये गये चित्र में शहर की झलक देखिए। शहरों में और गाँवों में क्या अंतर होता है? किस प्रकार की सुविधाएँ शहरों में आवश्यक होती हैं और पायी जाती हैं? शहरी क्षेत्र में मनुष्य का जीवन स्तर कैसा होता है? इस प्रकार के कार्यों के लिए कैसी सुविधाएँ चाहिए? इन बातों पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

चित्र 14.1 एक शहर की झलक

नगर एवं शहर में अधिक लोग रहते हैं। शहर में सड़कें की दुकानें, वाहन और उद्योग होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा उन्हें अधिक योजनाओं एवं सुविधाओं की आवश्यकता होती हैं। प्रत्येक वर्ष अधिक से अधिक लोग जीवन निर्वाह एवं रोजगार के लिए शहरों में आकर बसने लगे हैं। इसी कारण शहरों का आकार बड़ा हो रहा है तथा नई-नई बस्तियाँ बन रही हैं। कई बस्तियों में झोपड़ पट्टियाँ बन रही है।, जहाँ गरीब लोग रहते और काम करते

SCERT TELANGANA

हैं। इन सभी लोगों को पानी, विद्युत, यातायात, विद्यालय, अस्पातल इत्यादि सुविधाएँ देने का आश्वासन दिया जाता है। इन शहरों की सबसे बड़ी समस्या बेकार सामान, कचरा, गंदा पानी फेंकने की होती है।

इसीलिए नगर एवं शहर में सार्वजानिक सुविधाएँ प्रदान करना जटिल कार्य है। अच्छे प्रंबध की आवश्यकता होती है। यह संस्था नगर पालिका कहलाती है। तीन प्रकार की नगर पालिकाएँ जनसंख्या आकार पर निर्भर करती है।

नगर पंचायत 20,000 से 40,000 जनसंख्या, नगर परिषद 40,000 से 3,00,000 जनसंख्या तथा नगर निगम 3,00,000 से अधिक जनसंख्या।

नगर पालिका की रचना

ग्राम पंचायत के समान चुनाव द्वारा इसकी रचना की जाती है। नगर को वार्डो में विभाजित किया जाता है और जनता प्रतिनिधि को चुनती है। नगर पालिका में इन्हें 'कौंसिलर' कहते हैं तथा शहरों में कार्पोरेटर कहते हैं। वार्ड कौंसिलर के अलावा मेयर या सभापति होते हैं, जैसे ग्राम पंचायत में सरपंच होते हैं।

- पंचायत की तरह ही नगर पालिका के चुनावी नियम होते हैं। पंचायत की जानकारी द्वारा तुलना कर गलत धारणा को सही कीजिए।

i. प्रत्येक पाँच वर्षों में नगर पालिका के चुनाव होते हैं

ii. मतदाता की आयु 18 वर्ष या अधिक।

चित्र 14.2 पीने का पानी

iii. प्रत्येक वार्ड का एक प्रतिनिधि होता है।

iv. गांव के वार्ड की मतदाता सूची में उसका नाम होता है।

v. वार्ड के सभी सदस्य पुरूष होते हैं।

vi. 21 वर्ष से अधिक आयु वाला कोई भी व्यक्ति चुनाव लड़ सकता है।

- आपके जिले में आपके अध्यापक की सहायता से नगर या नगर पालिका को पहचानिए।

नगर पालिका कैसे कार्य करती है?

नगर पालिका के कई कार्य होते हैं, जैसे जल वितरण, मार्ग प्रकाश, सड़कों का निर्माण, राशन दुकान, अस्पताल, आदि के अतिरिक्त नए विकास कार्यो का आयोजन। यह सभी कार्य कार्पोरेटर या कौंसिलर या कुछ व्यक्तियों द्वारा संभव नहीं है। इसीलिए नगर पालिका अनेक लोगों को कार्य पर रखती है, जैसे, मजदूर, अधिकारी, क्लर्क और लेखा अधिकारी। प्रत्येक नगर पालिका में अनेक विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग में एक अधिकारी होता है, जो उस विभाग द्वारा किये गये कार्य के लिए जिम्मेदार होता है।

SCERT TELANGANA

उदाहरणार्थ जल वितरण विभाग, विद्युत वितरण विभाग, शिक्षा विभाग, कचरा समाप्त करने का विभाग, आदि।

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि कौंसिलर का कार्य क्या होता है? वास्तव में कौंसिलर वार्ड की जनता से संपर्क में रहता है। उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं को नगर पालिका की सभा में प्रस्तुत करता है। विभिन्न प्रकार के कार्यों का आयोजन सुचारू रूप से सोच समझकर किये जाने के लिए कौंसिलर समितियों से स्वीकृति देता है। इन समितियों का कार्य नगर पालिका विभाग कार्यों का नवीनीकरण करना तथा नए कार्यों की योजना तैयार करना होता है। वे प्रस्ताव तैयार कर नगर पालिका की सभा में प्रस्तुत करवाते हैं। ये सभी निर्णय नगर पालिका के अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा लिये जाते हैं।

कौंसिलर निर्णय लेने के समय सभा में उस क्षेत्र के लोगों की आवश्यकताएँ प्रस्तुत करता है। समस्याग्रस्त लोगों से संपर्क बनाए रखते हैं। एक उदाहरण की सहायता से हम जानेंगे कि कैसे वार्ड के व्यक्ति अपनी समस्याएँ कौंसिलर से हल करते हैं।

- क्या आप पंचायत एवं नगर पालिका में अंतर बता सकते हैं?
- नगर पालिका के कार्यों में विभाग कैसे सहायता करते हैं?
- अगर आप विद्यालय के लिए समितियाँ बनाना चाहते हैं, तो कौनसी समितियाँ बनायेंगे?

चित्र 14.3 स्वच्छता विभाग को एक पत्र देना

क्षेत्रप्रतिनिधि

यासमिन खाला कहते हैं, 'पहले हमारे मुहल्ले में कचरा (गंदगी) इधर-उधर बिखरा रहता था। इसे उठाए न जाने पर कुत्ते, चूहे, मक्खियाँ जमा हो जाते थे। महिलाएँ ऐसी स्थिति से नाराज थी। गंगाबाई ने कहा कि हम वार्ड कौंसिलर से मिलेंगे और उसका विरोध करेंगे। वह कुछ महिलाओं के साथ उनके घर पहुँच गयी। उसने बाहर आकर कारण पूछा। गंगाबाई ने अपने मुहल्ले की स्थिति की जानकारी दी। उसने कमिशनर से अगले दिन मिलने का आश्वासन दिया। उसने गंगाबाई से कहा कि उस मुहल्ले के सभी प्रौढ़ व्यक्तियों से कचरा साफ न किए जाने वाले शिकायत प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करवाए। उस शाम सभी बच्चों ने घूम-घूम कर सभी परिवारों से हस्ताक्षर लिए।

दूसरे दिन सुबह कई महिलाएँ वार्ड कौंसिलर नगर पालिका कार्यालय पहुँचे। कमिशनर ने मिलकर बताया कि उनके पास लॉरियाँ कम है। गंगाबाई ने प्रत्युत्तर में कहा कि 'अन्य मुहल्ले के कचरे को उठाने के लिए आपके पास लॉरियाँ हैं?'

तब उन्होंने वादा किया कि वे इस बारे में शीघ्र कार्य करेंगे। यास्मीन खाला ने कहा कि 'अगर दो दिन में नहीं हुआ, तो फिर विरोध किया जायेगा।' रेहाना जो अपने कार्यों को अधूरा नहीं छोड़ती, पूछा, 'तो क्या सड़कों की सफाई की गयी।'

हाँ उस दिन के बाद उस मोहल्ले में स्वच्छता सेवा नियमित रूप से होने लगी।

- वार्ड कौंसिलर को उस क्षेत्र की सुविधाओं के कार्यों की जानकारी कैसे प्राप्त करनी चाहिए ?
- अगर आपके घर के सामने कचरे का ढेर जमा हो जाए, तो आप क्या करेंगे ?

नगर पालिका की आय

नगर पालिका कई प्रकार के कर जैसे गृह कर, पानी एवं मार्ग प्रकाश पर कर, दुकानों पर कर, सिनेमा टिकट पर कर, आदि लगाती है। परंतु इन करों द्वारा प्राप्त आय बस नहीं होती हैं। उन्हें सरकारी अनुदान पर निर्भर रहना पड़ता है। सरकार कई प्रकार के कार्यक्रमों (जैसे सड़क निर्माण) तथा नियमित कार्यों के लिए धन देती है।

चित्र 14.4 स्वच्छता कार्य

कार्यों का ठेका देना

उचित रूप से कार्य को पूरा करने के लिए संपूर्ण देश में नगर पालिका ठेकेदारों को कचरा जमा कर उनका दूसरा उपयोग करने के लिए पारिश्रमिक देती है। इसे कार्यों का ठेका देना कहते हैं। इसका अर्थ है कि जो कार्य पहले नगर पालिका के कर्मचारी करते थे, अब निजी कंपनियाँ करती हैं। कचरा इकट्ठा करना भी जोखिम भरा कार्य होता है, इसीलिए अधिकारी वर्ग इस बात का ध्यान रखते हैं कि वे इस कार्य को करते समय मास्क एवं ग्लौसेस का उपयोग करें।

- अगर आप शहर में रहते है, तो पता लगाइए कि नगर पालिका में कितने कर्मचारी कार्यरत हैं तथ कितने व्यक्ति ठेकेदार द्वारा कार्यरत हैं। किस प्रकार की समस्याओं का सामना वे कर रहे हैं ?
- नगर पालिकाएँ कार्यों को ठेके पर क्यों देती हैं ?

नगर पालिका कर्मचारी

अब हम नगरपालिका के दिनचर्या को जानेंगे–

आज सोमवार सुबह 5 बजे का समय है। चिन्ना उठकर काम पर नहीं जाना चाहती है। पिछले दिन भी रविवार के कारण उसे काम नहीं था। परंतु इसका अर्थ था उसे अधिक झाड़ू लगाना तथा अधिक डिब्बे साफ करने होंगे। स्टार कॉलोनी में रहने वालों को भी अवकाश था, इसीलिए उन्होंने

SCERT TELANGANA

भी अधिक कचरा डिब्बों में डाला था। सड़कों पर खरीददारी करने के बाद फेंकी गयी प्लास्टिक थैलियाँ होती हैं। अधिक कचरा फेंके जाने के कारण चिन्ना के लिए चुनने का कार्य कठिन हो जाता था। उसके मुहल्ले में डिब्बे नहीं होते थे, केवल ढेर होते थे। उसका पड़ोसी झोपडी में रहने वाला जो गंदे पाइप के पास रहता था, दूसरी ओर से तर-बतर होकर आ रहा था। हैंड पम्प के पास गन्दा पानी जमा हो गया था। बड़ी मुश्किल से चिन्ना अपने घर के लिए पानी ला पायी तथा खुद की सफाई की। नजमा उसके दरवाजे पर पहले ही खड़ी थी। 'जल्दी करो। अगर हम 10 मिनट में स्टार कॉलोनी पहुँच कर कचरा साफ नहीं करेंगे, तो 6.45 को आने वाली लॉरी चली जाएगी।' चिन्ना ने थोड़ा गरम पानी पिया। अपनी बेटी के कंधे को हिलाकर कहा 'मैं काम पर जा रही हूँ, स्कूल के लिए देर मत करना।'

चिन्ना और नजमा पैदल स्टार कॉलोनी गए। उनके घर एवं स्टार कॉलोनी के रास्ते में कोई बस सुविधा नहीं थी। उन्होंने झाड़ू और गाड़ी ले ली। पुरानी गाड़ी होने के कारण आवाज आ रही थी। दोनों सड़क के किनारे झाड़ू लगाने लगे। वहाँ कई प्रकार बेकार सामान था। एक ही दिन में कूड़े के डिब्बे ऊपर तक भरे हुए थे। लोगों ने कूड़े के डिब्बे के बाहर भी सामान फेंक दिया था। खुले में कचरा फैला था। घरेलू समाप्त हुई चीजें, दुकानों के कवर्स, दर्जी के कपड़ों के टुकड़े......

सड़कों पर झाड़ू लगाना एक काम था। कचरा भर कर लारियों में डालना उन्हें कई बार हाथों में प्लास्टिक की थैलियाँ, बोतल, दूध की थैलियाँ, आदि तथा रसोई घर का व्यर्थ, सब्जी के छिलके, हड्डियाँ तथा अन्य सामान उठाना पड़ता था। कुछ वर्षो पहले सड़कों के किनारे हरे रंग के कूड़े के डिब्बे और नीले रंग के डिब्बे यह सोच कर रखे गये थे कि लोग कचरे को अलग-अलग डिब्बों में बेकार कचरा फेंका। लेकिन अब नजमा और चिन्ना यह करते हैं। उन्हें कुछ गाड़ियाँ दी गयी, ताकि वे आस-पास से कूड़ा जमा कर सके। चिन्ना जानती थी कि लोग उनके कार्य को अस्वच्छ मानते हैं, जबकि नगर पालिका के कर्मचारी उस स्थान को साफ कर उनके रहने लायक बनाते हैं। तब भी उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं होता ।

सफाई वालों के अतिरिक्त लॉरी चालक तथा अन्य सहयोगी भी ठेकेदार के द्वारा नियुक्त किये जाते हैं। शहर कि विभिन्न भागों से कूड़ा निर्धारित स्थान पर जमा किया जाता है।

- चिन्ना कहाँ काम करती थी ? उसकी नियुक्ति किसने की ?
- कॉलोनी की सफाई के लिए वे क्या कार्य करती हैं ?
- क्या समाज द्वारा चिन्ना और नजमा के कार्यों को सम्मान दिया जाता है ?
- इन दोनों कॉलोनी की स्थिति के मध्य विशाल अंतर के बारे में आप क्या सोचते हैं ?
- कल्पना के आधार पर दो विभिन्न कॉलोनी के चित्र बनाइए ?

SCERT TELANGANA

वेमुलवाडा नगर पंचायत - एक अध्ययन

वेमुलवाडा नगर पंचायत राजन्ना जिला केंद्र से 33 कि.मी. की दूरी पर है। 20 वार्ड वाली यह नगर पंचायत 2011 तक बड़ी ग्राम पंचायत थी। यहाँ श्री राजराजेश्वरी मंदिर प्रसिद्ध पुण्यस्थल है। मंदिर में अनेक यात्री आते रहते हैं। मंदिर के अधिकारी मंदिर के इलाके को स्वच्छ रखने विशेष प्रबंध करते हैं।

नगर में पीने के पानी की विशेष व्यवस्था है, जिसे आकाश गंगा कहते हैं। यह 2003 में चालू हुई। सांभों के आधार पर ऊपर से पाइप लाइन द्वारा पानी पहुँचाया जाता है। 'स्वजल धारा योजना' के द्वारा व्यवस्थित पाइप लाइन के द्वारा हर दस, पन्द्रह परिवारों के लिए एक नलकूप लगाया गया है। इस तरह ९ हज़ार परिवारों को सुरक्षित पेयजल पहुँचाया जा रहा है। एक दिन के अंतराल से पानी पहुँचाया जाता है।

नगर में हर रोज कचरा इकट्ठा किया जाता है। सफ़ाई कर्मचारियों को चक्र वाहन, हाथ और मुँह के मास्क, विशेष कपड़े दिये जाते हैं। हैड्रालिक डंपरबिन्स, ट्राली ओटो, ट्राकटरों के उपयोग से कचरा डंपिंग यार्ड पहुँचाते हैं। यह डंपिंग यार्ड नगर से 5 कि.मी. की दूरी पर है। कचरे से प्लास्टिक को अलग करके, कचरे से बिजली निर्माण की प्रस्तावना है।

लग-भग सभी घरों में व्यक्तिगत शौचालय हैं। सरकारी व गैर-सरकारी संस्थाओं को अनुदान से इन्हें बनाया गया है।

नगर से लगे हुए नाले में बतुकम्मा के लिए किए गए प्रबंध नगर के लिए एक विशेष आकर्षण है। त्योहार के समय इस प्रांत में विशेष सुरक्षा एवं विशेष रोशनी का प्रबंध किया जाता है।

चित्र 14.5: पेयजल की पाइप लाइन (आकाशगंगा)

चित्र 14.6: बतुकम्मा के फूल

मुख्य शब्द

स्वशासन सरकार
नगर परिषद
नगर निगम
ठेकेदार
जैविक–अभाव सामान

SCERT TELANGANA

आपकी सीख में सुधार

1. आपके मुहल्ले में कचरा कैसे एकत्रित करते हैं? इसका क्या होता है? (AS_1)
2. नगर निगम द्वारा क्या सुख सुविधाएँ उपलब्ध करायी जाती है तथा पंचायत उपलब्ध नहीं करवाती? (AS_1)
3. पिछले दो वर्षों में नगर पालिका द्वारा किये गये कार्यों की सूची तैयार कीजिए? (AS_3)
4. पोचम्मा कहती है कि पिछले डेढ़ घंटे से सड़क के नल में पानी आता है तो बाल्टी लेकर कई लोग पानी भरने तैयार हैं। इस समस्या को हल करने के लिए आप क्या सुझाव देंगे? (AS_4)
5. जेवियर मार्ग के प्रकाश की खराबी को ठीक करता है। विद्युत ठेकेदार ने उसे नियुक्त किया था, जो नगर पालिका द्वारा बाधित था। काम के समय जेवियर को विद्युतघात लग गया और उसका हाथ जल गया। वह दो महिने तक काम नहीं कर पाया। उस समय के लिए उसे कोई मजदूरी नहीं मिली और ठेकेदार द्वारा काम से निकाल दिया गया। आप उसे क्या करने की सुझाव देंगे? (AS_4)
6. गरीबों की मदद के लिए पालिका क्या सेवाएँ करती है? (AS_1)
7. क्या आप शहर और गाँव में अंतर कर सकते हैं? कैसे? (AS_1)
8. गाँवों और शहरों में आपको कौनसी चीज़ें पसंद हैं? (AS_6)
9. अपने जिले के मानचित्र में नगर पालिकाओं को दर्शाएँ। (AS_5)
10. स्थानीय कार्पोरेटर/सदस्य नगर पालिका से मिलकर नगरपालिका की सेवाओं को जानने के लिए कुछ प्रश्न तैयार कीजिए। (AS_4)
11. पृष्ठ सं-124 में 'सफाई वालों के अतिरिक्त लारी चालक' वाला अनुच्छेद पढ़कर अपने विचार बताइए। (AS_2)
12. कुछ लोग सोचते हैं कि नगर पालिका का कार्य है कम दाम पर सुख सुविधाएँ प्रदान करना, परंतु कुछ यह समझते हैं कि नगर पालिका में कार्यरत लोगों को सम्मानीय स्थिति का प्राप्त होना। आप क्या सोचते हैं? (AS_4)

परियोजनाएँ

1. आपके करीब वाले नगर पालिका के पास जाइए, जैसे बस स्टैंड, अस्पताल, विद्यालय, बाजार, सार्वजनिक शौचालय, आदि और वहाँ की स्थिति पर अपनी रिपोर्ट तैयार कीजिए। उस पर चित्र बनाइए।
2. दो नगर पालिका कर्मचारी से साक्षात्कार कर उनके नियमित कार्यों तथा समस्याओं के चित्र बनाइए।
3. समाचार पत्र से एक हफ्ते में किये गये नगर पालिका के कार्यों का सार जमा कर उस पर सारांश लिखिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 15

हमारे समाज में विविधता

(Diversity in Our Society)

पिछले अध्यायों में हमने देखा कि जिस भूमि पर हम रहते हैं, वह कितनी अलग-अलग होती है तथा मनुष्यों के जीवन में कितना अंतर होता है। विविधता केवल स्थानों में नहीं होती, बल्कि हमारे कक्षाओं और मुहल्ले में भी होती है।

हमारे पड़ोस में विविधता

अपनी कक्षा में चारों ओर देखिए। आपके जैसा कोई आपको दिखाई दे रहा है? इस अध्याय में हम यह देखेंगे कि व्यक्ति एक दूसरे से कई रूपों मे भिन्न होते हैं। यह विविधता हमारे जीवन में उतर जाती है और अधिक आनंद देती है। यह सभी भिन्न व्यक्ति, जो अपनी पृष्ठभूमि से जुड़े होते हैं, अनेक धर्मों और संस्कृति से जुड़े होते हैं, भारत को रोचक एवं विविध बनाते हैं। विविधता हमारे जीवन में क्या जोड़ती है? भारत ऐसे कैसे बना? क्या यह भिन्नताएँ विविधता के कारण है? इन उत्तरों को जानने के लिए यह अध्याय पढ़िए।

इस चित्र को देखिए। आपकी उम्र के तीन बच्चों ने यह चित्र बनाया है। इस रिक्त डिब्बे में आप मानव चित्र बनाइए।

SCERT TELANGANA

क्या आपकी चित्रकला किसी एक के समान है ? उन तीनों चित्रों से आपका चित्र अलग होने के अवसर अधिक है। यह इसलिए कि हम सभी विशेष है तथा सबकी चित्रकारी अलग होती है।

आपके संदर्भ की जानकारी रिक्त स्थान में भरिए-

1. जब मैं बाहर जाता हूं, तो..............पहनना चाहता हूं।
2. घर पर मैं .... भाषा में बात करता हूं।
3. मेरा प्रिय खेल ....है।
4. मैं........................... किताबें पढ़ना पसंद करता हूं।

अब अपनी अध्यापिका की सहायता से यह जांचिए कि कितने बच्चों के उत्तर समान है। क्या कोई ऐसा है, जिसके उत्तर आपसे मिलते हैं ? शायद नहीं। लेकिन कुछ उत्तर समान भी हो सकते हैं। अपनी जानकारी के आधार पर चर्चा कीजिए। उदाहरण के लिए कितने बच्चे एक जैसी पुस्तकें पढ़ना चाहते हैं ? कितनी भाषाएँ आपके पड़ोस में बोली जाती हैं ? आदि। इससे आपको पता चलेगा कि आप अपने सहपाठियों से कितने समान है तथा कितने अलग हैं।

मित्र बनाना

क्या आप समझते है कि जो आपसे अलग हैं, उसे मित्र बनाना आसान है ? यह कहानी पढ़िए–

सुमन की माँ मदनापल्ली के भीड़ वाले स्थान पर सब्जी की दुकान चलाती है। उसे सभी 'सब्जी सुमन' पुकारते हैं, क्योंकि वह अपनी माँ की मदद करता था।

एक दिन उसी की उम्र का एक बालक साईकल पर सवार वहाँ आकर रुक गया। सब्जी सुमन ने पूछा कि 'क्या चाहिए ?' स्कूल पोशाक वाले बालक ने कहा 'आधा किलो लेडीज फिन्गर।' 'अर्थात आधा किलो भिंडी।' सब्जी सुमन ने कहा। बालक ने सिर हिलाया। उसने पैसे देकर सब्जी ली और साईकल पर चला गया।

चित्र 15.1 सब्जी की दुकान पर सुमन

दूसरे दिन फिर वही विद्यार्थी सब्जी की दुकान पर आया। सुमन ने मुस्कुराकर पूछा, 'भैया क्या चाहिए।' बदले में स्कूल का बालक भी मुस्कुराया और पूछा 'क्या सब्जियाँ हैं ?' सुमन ने कहा, 'कद्दू, तुरई, भिंडी, टमाटर, आलू, प्याज।' उस स्कूल के बालक ने पूछा, 'क्या तुम तेलुगु नहीं जानते हो ? तुम कहाँ के हो ?' 'हम बिहार के हैं। घर में हम हिंदी बोलते है। मुझे तेलुगु थोड़ी–थाड़ी आती है।' सुमन ने उत्तर दिया। विद्यार्थी ने पूछा, 'तुम्हारा नाम क्या है ?' सब्जी सुमन ने कहा, 'मेरा नाम सुमन है। सभी मुझे सब्जी सुमन कहते हैं।' विद्यार्थी ने कहा, 'ओह! मेरा नाम भी सुमन है।'

और हाथ मिलाया। इसके बाद दोनों मित्र बन गये। जब कभी रविवार को बच्चे

क्रिकेट खेलते तो स्कूल सुमन सब्जी सुमन को साथ खेलने के लिए कहता। सब्जी सुमन बहुत अच्छा फील्डर था। वह मजाक में कहता कि वह सब्जी को नीचे गिरने या सड़क पर लुढ़कने नहीं देता।

कुछ दिनों बाद जब विद्यार्थी सुमन सब्जी सुमन से मिलता है, तो वह उसे उदास लगता है। वह पुकारता है 'क्या हुआ ?'

सब्जी सुमन कहता है कि 'नगर पालिका वाले हमें यह स्थान खाली करने के लिए कह रहें हैं। कहते हैं कि यह अधिक्रमण है। वे हमें बड़े बाजार में जाने के लिए कह रहे हैं। हम गरीब होने के कारण वहाँ का किराया नहीं दे सकते। मुझे पता नहीं अब हम कहाँ जायेंगे ?' विद्यार्थी सुमन चिंतित वापस घर लौटा। वह सोच में डूब गया कि अपने मित्र की मदद वह कैसे करेगा ? दो दिन बाद जब वह सब्जी लेने बाजार गया, तो वह दुकान वहाँ नहीं थी। उसे पता चला कि अधिक्रमण क्षेत्र को नगर पालिका ने साफ करवा दिया है। विद्यार्थी सुमन उदास हो गया।

दोनों सुमन में कई भिन्नताएँ थी, जैसे – मातृभाषा, प्रदेश, कार्य। फिर भी वे अच्छे मित्र बने।

- क्या आप दोनों मे अंतर की सूची बना सकते हो ?

- बिहार (या कोई और प्रदेश) के त्यौहार और खान–पान की जानकारी प्राप्त कीजिए ?
- आप कौनसे त्यौहार का निरीक्षण करते हैं तथा विद्यार्थी सुमन का भोजन क्या है ?
- वे किस प्रकार के घरों में रहते हैं ?
- आपने गौर किया होगा कि अन्य अंतर भी उनमें थे। जैसे सब्जी सुमन विद्यालय नहीं जाता था। सब्जी बेचता था। क्या आप सोचते हैं कि वह विद्यालय जाने लायक नहीं था ?
- अगर वह विद्यालय जाना चाहता, तो उसके सामने क्या समस्याएँ आती ?

भारत में विविधता

हम उस देश में रहते हैं, जहाँ विभिन्न योग्यताएँ, भाषा, संस्कृति, धर्म, आदि के लोग साथ मिलकर रहते हैं। यह विविधता जीवन को धनी और अलग बना देती है। भारत में 29 प्रदेश हैं, प्रत्येक की अपनी भाषा, संस्कृति एवं खान–पान, आदि होता है। एक ही प्रदेश में रहने वाले अलग–अलग भाषाएँ बोलते हैं, अलग धर्म को मानते हैं, अलग भोजन करते हैं, अलग त्यौहार मनाते हैं और अलग प्रकार की पोशाक पहनते हैं। रोचक बात यह है कि धीरे–धीरे एक–दूसरे की पोशाक, खान–पान, त्यौहार, भाषा और धार्मिक विचारों को भी

अपनाने लगते हैं। इस कारण सभी का जीवन अधिक समृद्ध और विविध होता है। आप अपने पड़ोस के कई ऐसे उदाहरण दे सकते हैं।

- आप उस खाने की सूची बनाइए, जिसका आनंद आप ले रहे हैं, परंतु आपके पूर्वज नहीं ले पाए।

चीजें	**वह कहाँ से आयी**
भोजन	
पोशाक	
खेल	
त्यौहार	

अब हम देखेंगे कि यह अनेकता कहाँ से आयी। उदाहरण दूरस्थ स्थानों से।

विविधता कैसे आती है?

लोग हमेशा ही नए स्थान की तलाश कर वहाँ बसने लगे। कभी व्यापार के लिए, कभी बाढ़, सूखे या महामारी के कारण, कुछ युद्धों और लड़ाईयों के कारण दूसरे स्थान चले जाते थे। वे लोग अपने साथ अपनी भाषा, धर्म और संस्कृति लाते थे और उसको उपयोग नए स्थान पर भी करते थे। इसी कारण वे लोग उस स्थान के लोगों के साथ घुल-मिल जाते और उनकी चीजें अपनाते और उन्हें अपनी सिखाते। हम देखेंगे कि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों का जीवन विविधता से पूर्ण हो जाता है।

- 12वें अध्याय में भारत का मानचित्र में प्रदेश और केन्द्रीय शासित प्रदेश को देखिए। तेलंगाना, राजस्थान और सिक्किम को पहचानिए।

थार मरूस्थल

भारत एवं पाकिस्तान की सीमा पर थार मरूस्थल है। इसका अधिकांश भाग राजस्थान के मारवाड़ में स्थित है। इस क्षेत्र में बहुत कम वर्षा होती है और अधिक नदियाँ भी नहीं बहती । इसी कारण बहुत ही कम वृक्ष और फसल होती है। केवल यहाँ घाँस उगती है। यहाँ के लोग मुख्यतः भेड़, बकरी, ऊंट को चराते हैं। वे बड़ी सावधानी से वर्षा के पानी को पशुओं, व्यक्तियों और कृषि उपयोग के लिए जमा करते हैं। पशुओं को चराने वाले कई राज्यों (राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात) में पशुओं को ले जाते हैं और वर्षा ऋतु के पहले थार लौट आते हैं। वे बकरियां और ऊन को बेचकर जीवन चलाते हैं।

चित्र 15.2 थार मरूस्थल

SCERT TELANGANA

चित्र 15.3 जैसलमेर का किला

कई व्यापारी जो ईरान और अफगानिस्तान आते या जाते हैं, वे इस मरूस्थल से गुजरते हैं। वे विश्राम के लिए आरामदायी स्थान पर रुकते हैं। धीरे-धीरे यह स्थान महत्वपूर्ण नगर और शहर बनने लगे, जैसे जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर। कई यात्री जो गुजरात में द्वारिका या अरब के मक्का, मदीना, अजमेर, पुष्कर झील जाते हैं, वे व्यापारियों के साथ इधर से गुजरते हैं। कई शताब्दियों से अनेक धर्मो के लोग जैसे बोहरा मुसलमान, सुन्नी मुसलमान, शिया मुसलमान, जैन, शैव, वैष्णव, सिक्ख, इन नगरों और शहरों में बसने लगे। इसी प्रकार कई मारवाड़ी व्यापारी भारत के अन्य प्रदेशों में जाकर बस गये। लगभग 50 वर्षो पहले थार मरूस्थल के लिए पंजाब नदी पर एक बड़ी नहर बनायी गयी। उसी नहर के साथ जुड़े समृद्ध गाँवों में हरियाणा और पंजाब से आकर बसने लगे।

पहले लोग केवल बाजरे की रोटी, मूंग की दाल या उड़द की दाल और कुछ सब्जियाँ जो पेड़ (सांगरी) और कंटीली झाड़ियों में उगती थी, वह खाते थे। इनको उन्हें सूखा लेते थे और साल भर खाते थे । आज तो सभी प्रकार का खाना ईडली साम्बर से लेकर पीजा और आईस-क्रीम भी मिलती है।

इस क्षेत्र के पशु अधिक दूध देते है और मारवाड़ी व्यापारी जो बंगाल जाकर आए, उन्होंने कई स्वादिष्ट मिठाईयाँ बनाना सीखा। विशेषकर थार मरूस्थल का बीकानेर आज इन मिठाईयों और नमकीन के लिए प्रसिद्ध है।

जो भी व्यक्ति थार आकर रहने लगा, अपने साथ नई कला, नए प्रकार की वेशभूषा और नाना प्रकार का खान-पान लेकर आया। आज विश्व के हजारों दर्शक थार मरूस्थल की विविधता का आनंद लेने आते हैं।

सिक्किम

हिमालय पर्वत के पूर्वी भाग में सिक्किम छोटा सा प्रदेश है। सिक्किम मे हिमालय की एक ऊँची चोटी कंचनजंगा भी है। इस भाग में कई घाटियाँ, पर्वत, बर्फीली झीलें

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरण 2018-19

और घने जंगल है। यह क्षेत्र साल भर ठंडा रहता है और शीतऋतु में बर्फ से ढका रहता है। मानसून में अधिक वर्षा होती है और घाटियों में नदियाँ बहती है। पहाड़ी ढलान में लोग मक्का, धान,गेहूँ, दालचीनी, अदरक, आदि उगाते हैं। चाय और संतरे के बगीचे भी होते है। भेड़ और याक जैसे पशुओं का पालन भी करते हैं, जिनसे माँस, ऊन और दूध प्राप्त होते हैं।

चित्र 15.4 कंचनजंगा

भारत, नेपाल, भूटान और तिब्बत (चीन) की सीमा पर सिक्किम है। इसीलिए इन सभी क्षेत्रो से लोग यहाँ आकर बस गये हैं। कुछ नेपाली, कुछ तिब्बती और कुछ भूटानी है। सिक्किम के लोगों द्वारा 11 भाषाएँ बोली जाती हैं वे लोग बौद्ध धर्म को लाने वाले तिब्बती लामा से अधिक करीब है। उन्होंने कई सुंदर मूर्तियाँ सिक्किम में स्थापित की है।

सिक्किम 1975 तक च्योग्यल्स राजाओं द्वारा शासित स्वतंत्र देश था। उसी वर्ष भारत का राज्य बना और प्रजातंत्र सरकार की स्थापना की गयी।

चित्र 15.5 रामटेक स्मारक

थार और सिक्किम दोनों भारत में है। थार एक मरुस्थल है, तो सिक्किम हिमालय में स्थित है। प्राचीन सांस्कृतिक विविधता बहुत महत्व रखती है। हम वर्तमान समय में भी एक स्थान से दूसरे स्थान भ्रमण करते हैं। प्रत्येक प्रवास हमारे रीति–रिवाज, संस्कृति तथा रहन–सहन उस नए क्षेत्र का अंश बन जाता है। उसी प्रकार हम विभिन्न जातियों वाले पड़ोसियों के साथ रहते हैं। हमारे दैनिक जीवन मे मिलकर किये जाने वाले रीति–रिवाज, परंपरा, आदि का प्रभाव लागू हो जाता है।

अनेकता में एकता

पिछली कई शताब्दियों से भारत विभिन्न संस्कृति, धर्म एवं राजनीतिक प्रणालियों व विविधताओं के साथ मिलकर पनप रहा है। भारतियों की यह एकता अंग्रेजी उपनिवेशी सरकार के विरुद्ध सर्व संघर्ष का परिणाम है। इस संदर्भ को राष्ट्रीय आंदोलन भी कहते है।

दिन ख़ून के हमारे प्यारे न भूल जाना,
ख़ुशियों में अपनी हम पर आंसू बहाते जाना।

सैयाद ने हमारे चुन-चुन ने फूल तोड़े,
वीरान इस चमन में अब गुल खिलाते जाना।

गोली को खा के सोए जलियान बाग में हम,
सूनी पड़ी क़बर पर दीपक जलाते जाना।

हिंदू व मुस्लिमों की होती है आज होती,
बहते हमारे रंग में दामन भिगोते जाना।

कुछ क़ैद में पड़े हैं, कुछ क़ब्र में पड़े हैं,
दो बूंद आंसू इन पर बहाते जाना।

जलियांवाला बाग मृत्युकांड के बाद यह गीत गाया जाने लगा। अमृतसर में शांतिपूर्वक ब्रिटिश सरकार के प्रति विरोध में हो रही सभा पर ब्रिटिश जनरल के आदेश से गोली चलाई गई थी जिससे कई लोग मारे गए और बहुत सारे घायल हुए। विरोध प्रकट करने के लिए स्त्रि-पुरुष, हिंदू, सिख, मुस्लिम, अमीर-गरीब सब जमा होकर उन शहीदों की याद में यह गाना लिखा, जो गाय जा रहा है।

अनेकता का आदर करने की परंपरा को स्वतंत्रता आंदोलन में लिखे गए गीत सूचित करते हैं। क्या राष्ट्रीय झंडे की कहानी तुम्हें मालूम है? जनता ने सारे देश में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध असंतोष जताने के लिए इसका प्रयोग किया है।

जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक 'भारत की खोज' में कहा हैं कि ''इस एकता की कल्पना कभी किसी बाहर से आरोपित वस्तु या बाहरी तत्वों के या विश्वास के मानवीकरण के रूप में नहीं की गई। इसके अंतर्गत विश्वासों और रीतिरिवाजों के प्रति अपार सहिष्णुता का पालन किया गया और साथ ही हर तरह की विविधता को मान्यता हीं नहीं प्रोत्साहन भी दिया गया। हमारे देश की महानता बताने वाले ''भिन्नता में एकता'' का नारा नेहरू जी ने दिया।

- भारत की एकता बताने वाले राष्ट्रीय गान की रचना रवींद्रनाथ टैगोर ने की है। इस एकता का वर्णन राष्ट्रीय गान कैसे करता है?

चित्र 15.6 स्वतंत्रता दिवस के दिन लाल किले से राष्ट्र की संबोधित करते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू

मुख्य शब्द

अनेकता
उपनिवेश
संस्कृति
लामा
राष्ट्रीयता

SCERT TELANGANA

अपनी सीख में सुधार

1. कोई दो उदाहरण दीजिए, जिससे आपके पड़ोसियों में अंतर नज़र आये ? (AS_1)
2. विभिन्न धर्मों में समान चीजों की तालिका बनाइए, जो एकता को दर्शाती है ? (AS_3)
3. आप कैसे कह सकते हैं कि राष्ट्रीय खेल अनेकता में एकता विकसित करते हैं ? (AS_6)
4. आपके मोहल्ले में मनाए जाने वाले त्यौहार की सूची बनाइए। इस समारोहों को किन क्षेत्रों और धर्मों के लोगों द्वारा भागीदारी दी जाती है ? (AS_6)
5. भारत में रहने पर किस प्रकार अनेकता की विरासत का प्रभाव आपके जीवन पर पड़ता है ?(AS_6)
6. पृष्ठ 133 में 'अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया' वाला अनुच्छेद पढ़कर अपने विचार बताइए। (AS_2)
7. विभिन्न क्षेत्रों के स्वतंत्रता सेनानियों के चित्र जमा कीजिए और उनकी आत्मकथा पुस्तक में लिखिए। (AS_3)
8. एक ऐसा करपत्र बनाइए, जिसमें उदाहरणों सहित भारत की अटूट विशेषता अनेकता में एकता को दर्शाइए। (AS_6)
9. निम्न तालिका को भरिए– (AS_3)

क्र.सं.	वस्तुएँ	मैं	मित्र (पुरुष)	मित्र (महिला) ....
1	खाना			
2	पोशाक			
3	घर			
4	मातृभाषा			
5	धर्म			
6	त्यौहार			
7	अन्य			

क्या आप अपनी मित्रता में इन विविधता को रुकावट मानते हैं ? अपने मन का समर्थन कीजिए।

10. भारत के मानचित्र में निम्न स्थान दर्शाएँ। (AS_5)
    अ) थार रेगिस्तान आ) सिक्किम इ) बिहार ई) आंध्र प्रदेश उ) तेलंगाना ऊ) पंजाब
11. पृष्ट सं-130 में 'विविधता कैसे आती है?' पढ़कर अपने विचार बताइए। (AS_2)

SCERT TELANGANA

अध्याय 16

लिंग में समानता की ओर

(Towards Gender Equality)

तेलंगाना में महिलाएँ घर से बाहर जाकर काम ढूँढ़ने लगी है। आज अधिक महिलाएँ जनजीवन जैसे चुनाव आयोजन और पुरुषों के साथ महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने में भाग्यदार बन रही हैं। यह उनका सामूहिक रूप से संघर्ष तथा सरकार द्वारा 1980 और 1990 में किये गये अग्रिम सरकारी कार्यक्रम का यह परिणाम है। फिर भी तेलंगाना में महिलाएँ लक्ष्य प्राप्ति से दूर है, जैसे समानता और जीवन क्षेत्र में सम्मान पाना। उदाहरण के लिए पहले की अपेक्षा पुरुषों की तुलना में लड़कियों की संख्या घट रही थी। इस अध्याय में पुरुषों और महिलाओं के मध्य समानता पर चर्चा करेंगे।

- क्या आप उन महिलाओं के बारे में जानते हैं, जो खेतों, कारखानों या कार्यालयों में काम करती हैं ? वे किन कठिनाइयों का सामना कर रही हैं ?
- पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों की अलग-अलग सूची बनाइए।

महिलाओं को अधिकतर घरेलु कार्य जैसे सफाई, रसोई, कपड़े धोना, बच्चों का ध्यान रखना, आदि, जबकि पुरुष बाहर जाकर कार्य करते हैं, जैसे खेतों में, कारखानों में, खरीददारी करना, आदि। कई परिवारों में जहाँ महिलाएँ भी काम करने बाहर जाती हैं, तो भी उन्हें घर के काम करने पड़ते हैं। कई परिवारों में पुरुष पी कर भी आते हैं और औरतों एवं बच्चों को मारते हैं फिर भी वे चाहते कि औरतें यह सब सहन करें।

स्वाभाविक रूप से क्या लड़कियाँ ऐसी ही होती है?

कुछ लोगों का मानना है कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा शारीरिक रूप से कमजोर होती है, वे अधिक सुरक्षित और आत्मीय होती है, उनका स्वभाव झगड़ालू नहीं होता। वे भोजन बनाने, सफाई करने और सिलाई में दक्ष होती हैं। औरतें बच्चों की देखभाल करती हैं- वे अकेले ही प्यार और ध्यान पाते हैं। इसीलिए महिलाएँ पूरे घरेलू काम करती है, क्योंकि वह उसके लिए उचित होती है।

- अगले पृष्ठ पर कुछ कथन मनुष्य के स्वभाव पर आधारित दिये गये हैं। क्या आप बता सकते हैं कि कौनसे केवल पुरुषों के लिए सही हैं, कौनसे केवल महिलाओं के लिए सही है और कौनसे दोनों महिलाओं और पुरुषों के लिए सही है। कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी अपने विचार के आधार पर तालिका को भरिए।

क्र.सं.	गुण/विशेषता	महिलाएं	पुरुष	दोनों
1	साहसी– आक्रमक, लड़ने में निपुण			
2	पटु – गणित एवं विज्ञान में निपुण			
3	कलाकार– चित्रकला, नृत्य एवं संगीत में निपुण			
4	पढ़ाकू– पढ़ने में चतुर			
5	बलवान– भारी काम करने में निपुण			
6	कमजोर– हल्के कामों में निपुण			
7	भावुक– रोने के लिए तैयार तथा भयंकर क्रोधी			
8	शर्मीले– बाहर आना पसंद नहीं करते			
9	बातूनी– हमेशा बाते करते रहना			
10	स्वयं में रहना– कम बात करना और चुप रहना			
11	आत्मीय– बीमारों की सेवा तथा बच्चों की देखभाल में दक्ष			
12	ऊंचे और तगड़े– खेल में निपुण			
13	कपड़े पहनने का शौक			

- सभी विद्यार्थियों द्वारा भरे जाने के बाद अध्यापक बहुमत वाले विचारों को श्यामपट पर लगाए।
- सभी विशेषताओं पर चर्चा कीजिए और जाचिंए कि अधिक विचार सत्य कौनसे है ? उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।

अगर आप गहराई में जाएँगे, तो देखेंगे कि ये सारे गुण समान रूप से, पुरुष और स्त्री दोनों पर लागू होते हैं। उदाहरण के लिए आप शर्मीले और साहसी दोनों प्रकार के पुरुष और महिलाएँ पाएंगे। आप देखेंगे कि कई पुरुष अधिक आत्मीय और ध्यान देने वाले होते हैं। पर आदतन हम कुछ गुण महिलाओं और कुछ पुरुष में निर्धारित करते हैं, जबकि शारीरिक रूप से ऐसा कुछ नहीं होता। महिला एवं पुरुष की शारीरिक रचना में थोड़ा अंतर होता है, क्योंकि वे बच्चे को जन्म देती है और कुछ महीनों तक स्तनपान कराती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि केवल महिलाएँ ही बच्चों को स्नान कराए या सफाई, कपड़े धोना या खाना बनाने का काम करे। कई स्थानों में पुरुष ये सारे काम अच्छे ढंग से करते हैं। परंतु हम लोग इस बात के आदि हो गये हैं कि हमारे विचार से वे ही स्वाभाविक रूप से उसके गुण हैं।

वास्तव में यह सारे गुण प्रकृति द्वारा महिलाओं को प्राप्त नहीं होते, समाज द्वारा सौ या हजारों सालों से उन्हें सौंपे गये हैं। इन वर्षों में महिलाएँ इन सभी कार्यों को करने के लिए विवश की गयी है और हम उन्हें प्रकृति द्वारा माननीय स्वीकार करते हैं। सत्य में यह सभी समाज द्वारा निर्मित है। शताब्दियों से हम उस समाज के नियम को मानते आ रहे हैं, जिनमें पुरुष की तरफदारी तथा जिसमें पुरुष का सभी ससांधनों पर अधिकार और नियम बनाने का अधिकार

माननीय है। अगर आप इतिहास में झाँके, तो आप जानेंगे कि अधिकांश शासक, धार्मिक नेता या कानून बनाने वाले अधिकतर पुरूष होते हैं। वे इस प्रकार के नियम बनाते थे, जिससे स्त्री पुरूष के अधीनस्त होती थी और भूमि या पशु जैसे उन पर उनका अधिकार होता था।

इस तरह स्त्री और पुरुष में दो प्रकार के अंतर होते थे। पहला स्वाभाविक शारीरिक अंतर, परंतु यह महिलाओं के लिए असमानता का कारण नहीं हो सकता। दूसरा समाज द्वारा बनाया गया अंतर, जो महिला को हमेशा पुरूष के अधीन एवं असमान मानते थे। इस प्रकार की असमानता एवं भेदभाव को लिंग असमानता कहते हैं।

लड़के और लड़की के पालन पोषण में असमानता

जन्म होते हैं, लड़के और लड़की के भेदभाव द्वारा पोषण किया जाता है। लड़के और लड़की में किये जाने वाले व्यवहार पर कुछ बयान प्रस्तुत है, कक्षा में उन पर चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि यह कहाँ तक सत्य है।

- कुछ परिवारों में ऐसा क्यों हैं? बालक के जन्म पर परिवार में जश्न मनाया जाता है और लड़की के जन्म को बोझ माना जाता है।
- लड़कों को बाहर जाने, मित्र बनाने, खेलने के लिए प्रेरित किया जाता है, जबकि लड़कियों को घर में बैठने और घरेलू कार्य के लिए प्रेरित किया जाता है।
- लड़कों को पिस्तौल, कार, लॉरी से खेलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं तथा लड़कियों को गुड़िया के साथ 'घर-घर', रसोई घर या घरेलू चीजों से खेलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

- लड़कों को भागने, चढ़ने और खुले कपड़े पहनने की छूट होती है, जबकि लड़कियों को पूरे शरीर को ढकने वाली पोशाक पहनने दी जाती है, जो उनके चलने-फिरने मे बाधा उत्पन्न करती है।
- लड़कों को पहले भोजन दिया जाता है तथा लड़की को बचा हुआ भोजन दिया जाता है।
- लड़कों को विद्यालय जाकर पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जबकि लड़कियों को विद्यालय भी नहीं भेजा जाता और पढ़ने के लिए समय भी नहीं दिया जाता।
- लड़कों की अपेक्षा बहुत कम लड़कियों को उच्च शिक्षा पाने का अधिकार है ?
- लड़के बीमार पड़ने पर तुरंत उपचार किया जाता है और लड़कियों को नहीं।
- विभिन्न सपने लड़कों के लिए सोचे जाते हैं, जबकि लड़कियों को शादी कर घरेलू जीवन जीने की सलाह दी जाती है।

कम लड़कियाँ कम महिलाएँ

इन सारे भेदभावों के दुःखद परिणाम होता है। उदाहरण के लिए भारतीय जनसंख्या में लगातार स्त्रियों का अनुपात कम हो रहा है। वर्ष 1951 में 1000 पुरुष और 946 महिलाएँ थी। 1981 में 1000 पुरुष और 934 महिलाएँ थी। 2011 में 1000 पुरुष के अनुपात में 940 महिलाएँ हैं।

हमारे प्रदेश तेलंगाना की स्थिति पर सोचेंगे। 1991 में 1000 पुरुष के अनुपात में 969 महिलाएँ थी। 2011 में इस स्थिति में सुधार आया। 1000 पुरुष और 988 महिलाएँ हुई। लिंग अनुपात में हमारा प्रदेश देश में अच्छे स्थान पर है। परंतु सभी बातें हमारे प्रदेश में अच्छी नहीं है। 1000 लड़कों में से जिनकी

आयु छः वर्ष से कम है, लड़कियों का अनुपात तेजी से घट रहा है। इस तालिका द्वारा आप देख सकते हैं।

वर्ष	लड़के	लड़कियाँ
1991	1000	978
2001	1000	963
2011	1000	933

इसका अर्थ है स्थिति में कोई सुधार नहीं है, लेकिन दूसरी ओर धारणा है कि कम से लड़कियाँ जीवित है, जिनके साथ ऐसा भेदभाव न हुआ हो।

साधारणतः समान संख्या में लड़के और लड़की का जन्म होना चाहिए। परन्तु अनुपात में लड़कियाँ कम है, इसका अर्थ है लड़कियाँ और महिलाएँव हमारे देश में स्वस्थ जीवन नहीं जी रही है और पुरुषों के पहले मर जा रही है। परंतु यह अनुपात क्यों घट रहा है ?

शायद इसके कई कारण है। कुछ परिवारों में जवान लड़कियों को पौष्टिक आहार नहीं दिया जाता है और जब वे बीमार पड़ती हैं, तो उसका सामना नहीं कर पाती। कुछ परिवारों में लड़कियों में भेदभाव किया जाता है– जैसे उचित चिकित्सा नहीं करवाई जाती। आज के युग में लड़कियों के अनुपात में कमी का कारण भ्रूण हत्या यानि जन्म से पहले लड़की को मार डालना भी है। इसका अर्थ है आधुनिक तकनीकी साधन द्वारा यह सुलभ हो गया है कि वे केवल लड़के को ही जन्म दे सकती है।

- अपने अभिभावकों तथा अध्यापकों से इस पद्धति की जानकारी अपने क्षेत्र में लीजिए और कक्षा में समाचार की दीवार पर रिपोर्ट तैयार कर लगाईए।

साक्षरता स्तर पर अंतर

हम सभी के लिए विद्यालय जाकर पढ़ना–लिखना सीखना अनिवार्य है। चित्र 16.1 को देखिए। साक्षरता अनुपात में दो रंगों की छड़ें दिखाई दे रही है। सात वर्ष की उम्र वाले नर और मादा बच्चों को तेलुगु या अन्य भाषा में लिखना पढ़ना आना बताया गया है। तेलंगाना में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष अधिक साक्षर हैं। 1991 में 100 पुरुषों के अनुपात में केवल 28 महिलाएँ साक्षर हैं। 2011 में यह बढ़कर 58 हुई। जबकि पुरुषों में साक्षरता दर 52 से 75 तक बढ़ी। आपने यह भी ध्यान दिया होगा कि दोनों के बीच का अंतर घट रहा है।

तेलंगाना और आँध्र प्रदेश में विशाल शैक्षणिक व्यवस्था में स्कूल और कॉलेज में 1.50 करोड़ बच्चे पढ़ रहे हैं। विद्यालय छोड़ देना भी बड़ी समस्या है। 30 वर्ष पहले यह समस्या मुख्यता लड़कियों में थी। उदाहरण के लिए अगर 100 लड़कियाँ विद्यालय जाना आरंभ करती हैं, तो पाँचवीं कक्षा तक 65 से अधिक लड़कियाँ नहीं पहुँचती। इसका अर्थ है कि 15 से ज्यादा लड़कियाँ बारहवीं तक नहीं पहुँच पाती।

अन्य भेदभाव का प्रमुख कारण महिलाओं में साक्षरता दर का कम होना है। लड़कियों को विद्यालय जाने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता और उन्हें घर में रखकर घरेलु कार्य, खेतों

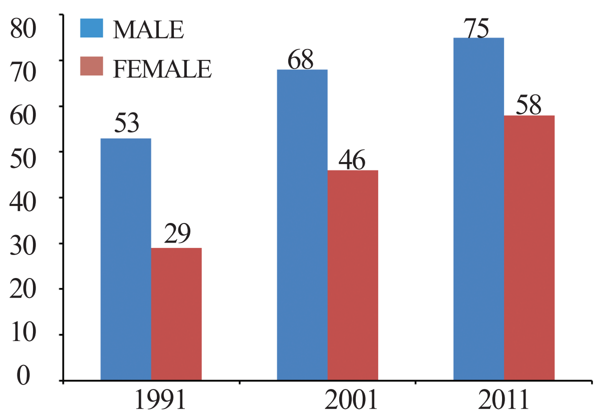

चित्र 16.1 तेलंगाना में साक्षरता % दर

SCERT TELANGANA

में और दुकानों में काम करवाया जाता है। विद्यालय के बाद उन्हें अधिक समय घरेलू कार्यों पर देना पड़ता था, जबकि पढ़ने के लिए कम समय मिलता था। अगर लड़कियां स्कूल जाकर पढ़ने भी लगती हैं, तो उन्हें गणित और विज्ञान जैसे विषयों को लेने से निरुत्साहित किया जाता था। जो कि लड़कों के लिए होते थे। लड़कियों को केवल साहित्य या होम साईन्स विषयों को लेने की सलाह दी जाती है। कई विद्यालयों में केवल लड़कियों को ही होम साईन्स दिया जाता था, लड़कों को नहीं।

अब स्थिति में कुछ सुधार आया है। 1/6 बच्चे लड़का और लड़की दोनों भी कक्षा पाँचवी के बाद विद्यालय जाना रोक दे रहे है। इसीलिए लड़के और लड़की में अब कम अंतर पाया गया है।

- अगर आप विद्यालय में पढ़ते हैं, जहाँ लड़के और लड़कियाँ पढ़ती है। क्या आप भेदभाव किए जाने वाले विषयों पर अपने अनुभव के आधार पर सूची बना सकते हैं?
- प्रत्येक कक्षा में 2 व्यक्तियों से चर्चा करे। दोनों पुरुष और महिला जो विद्यालय कुछ वर्षों के लिए गये थे और क्यों विद्यालय जाना छोड़ दिया। कक्षा में सभी कारणों पर चर्चा कीजिए।
- पता करिए इस वर्ष आपके मुहल्ले या गाँव से कितनी लड़कियों ने स्कूल जाना छोड़ दिया है।

सम्पत्ति के आधार पर भेदभाव

हमारे देश में कारखाने या भूमि पुरुषों के नाम पर ही होते हैं। कानून के अनुसार माता–पिता की सम्पत्ति को समान रूप से सभी बच्चों (पुत्र और पुत्रियों) में बांटा जाए। वास्तव में बहुत ही कम लड़कियों को माँ–बाप की जायदाद में से हिस्सा मिलता है, जो अक्सर लड़कों के नाम पर होती है। इसीलिए उत्पादन संसाधनों पर जैसे भूमि, दुकान या कारखानों पर लड़कियों का अधिकार नहीं या बहुत कम होता है। इसीलिए उन्हें आर्थिक रूप से पिता, पति, बेटे या भाईयों पर निर्भर रहना पड़ता है।

तेलंगाना में वर्तमान समय में स्थिति में सुधार हुआ है। 1980 में बनाए गए कानून के कारण पैतृक संपत्ति का अधिकार अभिभावकों की पुत्रों और पुत्रियों में समान रूप से विभाजित की जाती है। वास्तव में देश में हमारा ही पहला प्रदेश है, जिसने असमानता को दूर करने के लिए कानून बनाया था।

रोजगार

बाहर जाकर महिलाओं द्वारा कार्य करने से वे स्वयं पर निर्भर होने लगी। तेलंगाना में महिलाएं अधिकतर कृषि क्षेत्र, अन्य कार्य और लघु स्तर पर वे अपनी दुकानें, खेत और अन्य कार्यालय में स्वयं कार्य करती है। महिलाओं द्वारा रोजगार प्राप्त करने से वे इस दर्दनाक स्थिति से उभर पा रही है।

हमने देखा कि लड़कियों का पालन–पोषण निम्न स्तर पर तथा न्यूनतम शिक्षा द्वारा किया जाता है। इसीलिए अच्छा वेतन देने वाली कम्पनियों में काम करने का अवसर उन्हें कम मिलता है। योग्य शिक्षित महिलाओं को भी उनके परिवार वाले उस कार्य को करने की अनुमति नहीं देते, जिसके लिए अधिक समय तक घर से बाहर रहना पड़े। उन्हें केवल कम माँग वाले व्यवसाय करने की अनुमति दी जाती है। जिन महिलाओं के पास अच्छी शैक्षिक योग्यता न हो, उन्हें खेतों, खदानों या धनी लोगों के घर में घरेलू कार्यों को करने के लिए विवश किया जाता है।

SCERT TELANGANA

कई महिलाएँ इस प्रकार के शारीरिक कमर तोड़ थकाने वाले को जो असम्माननीय अपमानजनक तथा असुरक्षित होते हैं, करती है। उन्हें हर समय गालियाँ और अपमान सहना पड़ता है।

हमारे देश की राजधानी दिल्ली में घरेलू कार्य करने वाली मालिनी क्या कहती है, आप पढ़िए।

'मैंने अपना पहला काम तीन मंजिल की इमारत में रहने वाले धनी परिवार में किया। वह महिला किसी भी कार्य को करवाने के लिए चिल्लाती थी। मेरा कार्य रसोई घर में था। वहाँ दो अन्य लड़कियाँ सफाई काम के लिए थी। हमार काम सुबह 5 बजे शुरू होता था। हमें नाश्ते में दो बासी रोटियाँ और एक कप चाय मिलती थी-तीसरी रोटी कभी नहीं। शाम के समय जब मैं खाना बनाती तो वे दोनो लड़कियां एक अधिक रोटी की भीख माँगती। मैं उन्हें छिपाकर रोटियाँ देती और अपने *लिए भी बनाती। मुझे उस महिला का भय भी रहता था, परंतु उस पर गुस्सा अपमान भी होता। क्या हम दिन भर काम नहीं करते? क्या हमें थोड़ा आदर पाने का अधिकार नहीं हैं?'*

- क्या आप कुछ और ऐसे लोगों को जानते हैं, उनके साथ कैसा व्यवहार होता है, क्या समस्याएं होती हैं तथा उनकी कमाई कितनी है, विषयों पर चर्चा कीजिए?
- कई घंटों तक कठिन परिश्रम करने के बाद भी मालिनी जैसे लोगों को 100 रूपये रोज भी नहीं मिलते, क्यों?
- अन्य ऐसे कौनसे काम है, जो सामान्यतः महिलाओं द्वारा अपनाए जाते है? उनकी स्थिति पर अपनी जानकारी के आधार पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

पिछले कुछ दशकों में महिलाओं के रोजगार दृश्य में परिवर्तन आया है। आज कई महिलाएँ उच्च शिक्षा पाकर उन व्यवसायों को अपना रही है, जो पहले पुरूषों के लिए ही आरक्षित थे। आज कई महिलाएँ, वैज्ञानिक, गणितज्ञ, डिप्लोमा प्राप्त, इंजीनियर, आदि बन रही है।

आज महिलाओं की आवश्यकता पुलिस, सैनिक, नौसेना और वायु सेना तथा पायलट के रूप में भी है। रेल इंजन ड्राइवर भी हमारे पास महिलाएँ हैं। यह सब महिलाओं द्वारा उच्च शिक्षा पाने के लिए किया गया संघर्ष तथा व्यवसाय में लिंग भेदभाव को दूर किए जाने पर ही संभव हुआ है।

चित्र 16.2 भारत में प्रथम लोको ड्राइवर - सुरेखा यादव

TELANGANA

महिलाओं द्वारा किये गये अदृश्य कार्य

अगर हम महिलाओं के दैनिक कार्यो को देखेंगे, तो पता लगेगा कि वे सारा दिन काम करती रहती है। परंतु कई बार उनके कार्यो को पहचाना ही नहीं जाता और न ही आर्थिक लाभ प्राप्त होता है, इसके बावजूद भी वे कठिन परिश्रम करती, जो अदृश्य होता है।

- नीचे दिये गये रिक्त डिब्बे में क्या आप खेत में काम कर रहे किसान का चित्र बना सकते है। चित्र उतार का अपने अध्यापक को बताइये।

- कितनों ने खेत में काम का रहे पुरुष और कितनों ने महिला का चित्र बनाया है? कितनों ने दोनों पुरुष और महिला को खेत में काम करते दिखाया है?

आप देख सकते है कि जब हम किसान कहते है तो हम पुरुष के रूप में साचते है न कि महिला के रूप में। वास्तव में दस भारतीय कामकाजी महिलाओं में से 8 महिलाएं खेतों में काम करती है। भूमि को खोदकर, बीज बोना, छांटना, अन्य स्थान पर लगाना, काटना, जैसे अनके कार्य करती है। खेतों में कई प्रकार के कार्य भी अवश्य महिलाएँ ही करती हैं, जैसे धान का स्थान परिवर्तन, छंटाई या मूँगफली के दानों को तोड़ना, आदि। कई किसान महिलाएँ खेती का प्रबंध संभालती हैं- पुरुष जब शहरों में, कारखानों में काम की तलाश में बाहर जाता है।

कई महिलाएँ अपने घर में खेतों में काम करती हैं, जहाँ उन्हें किसी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं मिलता । दूसरे के खेतों में काम करने पर उन्हें मजदूरी मिलती है, पर पुरुषों को मिलने वाली मजदूरी से कम होती है।

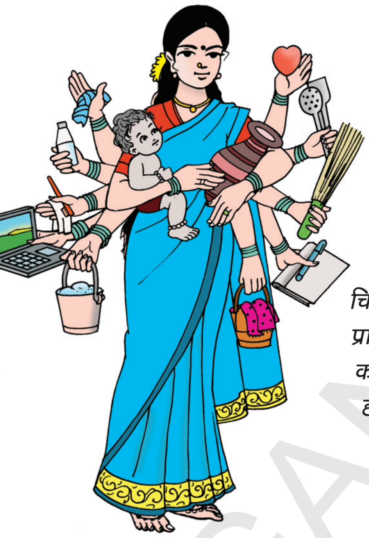

चित्र 16.3 एक रोजगार प्राप्त महिला भी वे सारे कार्य करती है, तो क्या हम समझते हैं कि ये श्रमिक के काम हैं।

क्या आप अपने घर में ही औरतों द्वारा किये गये कामों का अध्ययन करेंगे, तो अनुभव करेंगे कि वे घर चलाने में कितना कठोर श्रम करती है। कल्पना कीजिए कि घर के कामों (सफाई, रसोई, आचार बनाने, बच्चों की देख-रेख, बच्चों को सिखाना, बीमार की सेवा, कपड़े सीना, पानी भरना, किराना खरीदना, आदि) के लिए उन्हें पैसे दिये जाने पड़े तो महीने में उनकी आय कितनी होगी?

वास्तव में इन कामों के लिए उन्हें कुछ आय प्राप्त नहीं होती और निरंतर उन्हें कटु वचन सुनने को मिलते हैं कि उन्होंने कुछ नहीं किया। दूसरों की रुचि के अनुसार समय पर कार्य नहीं किया आदि। जबकि पुरुषों द्वारा किये गये कार्य के लिए उन्हें धन मिलता है और पैसे पर उनका अधिकार होता है तथा अपनी इच्छा अनुसार खर्च करता है।

- क्या आप्ण अपनी माता, बहनों या भाभियों द्वारा किये गये घरेलू कामों की सूची बना सकते हैं। वे कब उठती हैं, कब खाती हैं, कब विश्राम करती हैं और कब सोते हैं?

अब वस्तुएँ बदल रही है-

आपने 13 और 14 अध्याय में तेलंगाना में ग्राम पंचायत और नगर स्वशासन सरकार के बारे में पढ़ा होगा। इसके सदस्य बनने से हम गाँव, समुदाय या जिस स्थान में रह रहे हैं कि स्थिति में सुधार के विषय में निर्णय ले सकते हैं। महिलाएँ जो कि संख्या में आधी है, मुश्किल से कुछ महिलाएँ सक्रिय भाग लेती है या परिवारों द्वारा

SCERT TELANGANA

अनुमति मिलना या पति का सदस्य बनना या राजनैतिक संगठन का नेता बनना आदि। सरकारी कार्यों ने इसे इतना परिवर्तन कर दिया है कि पंचायती राज प्रणाली में महिलाएँ भी आसानी से भाग ले सकती हैं। अधिक से अधिक महिलाएवँ सार्वजनिक कार्यों में भाग लेकर पंचायत एवं अन्य चुनाव भी लड़ रही है।

अध्याय 8 को याद कीजिए कि कैसे सूखी मिर्ची का व्यापारी इन्द्रा दुकान चलाती थी । स्वयं सहायक समूह से ऋण लेती थी। महिलाएँ स्वयं सहायक समूह की रचना गाँव एवं मंडल स्तर पर परिवार को चलाने में सहायक बनने के लिए ऋण देती थी। उनमें से कई अपने पतियों या परिवार के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर महत्वपूर्ण निर्णय लेती थी। स्वयं सहायता समुदाय या गाँव में उत्पन्न समस्याओं पर चर्चा करने में सहायक बनता है। महिलाओं को राजनैतिक दलों में भाग लेने में मदद करता है। महिलाएँ नये पदों को भी सफलता पूर्वक अपनाती है।

मुख्य शब्द

रोजगार	संपत्ति अधिकार
साक्षरता	लिंग अनुपात

शिक्षा में सुधार

1. क्या यह कहना उचित है कि लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ स्वाभाविक रूप से कमजोर होती हैं। आपके कारण दीजिए।(AS_1)
2. आप, अपने भाई या बहन के द्वारा किये गये घरेलू कार्यों की सूची बनाइए। (AS_3)
3. किन्हीं दस रोजगार युक्त महिलाओं के नाम बताइए, जिन्हें आप जानते है। पता लगाइए कि वे क्या काम करती हैं और कितना कमाती हैं। (AS_3)
4. बीस वर्ष पहले विद्यालय गयी हुई कोई अगर बुजुर्ग महिला आपके परिवार में है तो उनके अनुभव से पता लगाइए कि उस समय के विद्यालय एवं आज आपके समय के विद्यालय में क्या अंतर है। (AS_4)
5. क्या आप जानती है माता-पिता की संपत्ति में से पुत्रियों को समान भागीदारी क्यों नहीं दी जाती। (AS_4)
6. महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, सम्मान बढाने में स्वयं सहायक समितियाँ कैसे सहायता करते हैं, अपने प्रांत के SHG स्वयं सहायक समीतियों को देखकर बताइए। (AS_6)
7. पृष्ठ संख्या - 135 में (कुछ लोगों मानना है .... उचित होती हैं) वाला अनुच्छेद पढ़िए, इस प्रश्न का उत्तर लिखिए। क्या लड़कों की अपेक्षा लड़कियाँ कमज़ोर होती हैं, कहना उचित है? इस पर आपके विचार लिखिए। (AS_2)

परियोजना

1. आपके विद्यालय के अभिलेख (रिकार्ड) से पता करिए कि कक्षा 1, 5, 8, 10 में कितनी लड़कियों के नाम दाखिल किये गये है। इससे हमें यह जानने में सहायता मिलेगी की लड़कियों से अधिक लड़के अपनी विद्यालय की शिक्षा पूरी करते हैं।
2. प्रसिद्ध मैग्जीन से यह जानिए कि महिलाएँ वे व्यवसाय करने लगी हैं, जो पहले केवल पुरुषों के लिए आरक्षित थे और एक एलबम तैयार कीजिए और उनके जीवन और संघर्ष की जानकारी दीजिए।
3. अपने गाँव या प्रांत में उन बच्चों के माता-पिता से निम्न जानकारी प्राप्त कों जो बीच में पढ़ाई बंद कर दिए हैं।

क्रम संख्या	छात्र का नाम	सामाजिक वर्ग अ.जा/अ.ज.जा/अ.पि.व/अ.व/अ.सं	किस कक्षा में पढ़ाई छोड़दी	पढ़ाई छोड़ने के कारण

उपरोक्त जानकारी के आधार पर किस सामाजिक वर्ग के छात्र पढ़ाई बीच में छोड़ रहे हैं? इसके क्या कारण हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए और विश्लेषण कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 17

पूर्वकालीन धर्म एवं समाज

(Religion and Society in Early times)

भारत बहुधर्मी देश है। मनुष्य देवी-देवताओं की पूजा अनेक प्रकार से करते थे। कुछ लोग अपने इष्ट देव को फूल चढ़ाते थे, कुछ यज्ञ करते थे, कुछ मौन रूप से श्लोक का उच्चारण करते थे और कुछ किसी की पूजा नहीं करते है। कुछ कोई प्रार्थना भी नहीं करते थे। आइए पूर्वकालीन समाज के लोगों के धार्मिक पद्धतियों एवं विश्वासों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

प्राचीन कालीन शिकारी जमाकर्ता

प्राचीन कालीन शिकारी जमाकर्ता के बारे में आपने पढ़ा होगा। उनके धार्मिक विश्वासों की जानकारी हमें चित्रों एवं खुदाईयों में मिली वस्तुओं से होती है। आज के चेंचु शिकारी जमाकर्ता के धर्म को पढ़कर हम उस समय के शिकारी जमाकर्ता के धर्म को जान सकते हैं।

- आप क्यों सोंचते हैं कि वे प्रार्थना क्यों करते थे? वे प्रार्थना किसके लिए करते थे?

चित्र 17.1 मुखौटा नृत्य

उसके पगड़ी एवं हाथों की सजावट को देखिए।

ऐसा लगता है कि चित्रकारी एवं नृत्य उनके धर्म का प्रमुख भाग था। सम्भवतः वे चित्रों में शिकार के चित्र तथा नृत्य में शिकारी मुद्राएँ प्रस्तुत करते थे, जिससे उन्हें अच्छा शिकार मिल सके। कभी-कभी जानवरों की वेश भूषा पहन कर, मास्क लगाकर नृत्य करते थे। हाथों में हाथ लेकर वे सभी नाचते थे। शिकारी जमाकर्ता को विश्वास था कि जंगल एवं जंगली जानवर पवित्र एवं पूजनीय होते हैं। आवश्यकता के बिना वे जानवरों को नही मारते थे। गुफाओं पर अनेक जानवरों के चित्र बनाकर वे उनकी पूजा करते थे।

चित्र 17.2 भिमभेटका का जंगली सुअर

पुरातत्व खोज हमें यह बताती है कि वे लोग मृतक के साथ कुछ चीजें गाड़ देते थे– सम्भवतः वे सोचते थे कि मृत्यु के पश्चात उसे वह सब उन्हें मिलेगा तथा उनका सम्बन्ध बना रहेगा।

12 वीं सदी की तमिल पुस्तक 'पेरियापुराणम' श्रीकालहस्ती के पास रहने वाले शिकारी जमाकर्ता के धार्मिक पद्धतियों की जानकारी देती है जो कि भक्त कन्नप्पा की प्रसिद्ध कथा है। एक बूढ़ी महिला पुजारिन होती है, जो जंगल के देवी को माँस, शहद, फल और फूल अर्पित करती थी।

नलमल्ला पहाड़ी की चेंचू जाति जंगल की देवी जिसे गरेलामयसम्मा या गंगम्मा कहते हैं, नृत्य द्वारा उनकी आरधना करती है। वे श्रीशैलम के मलय्या और अहोबिलम के नरसिंहा की पूजा भी करते थे। उनका विश्वास था कि देवता ने चेंचू जाति की लड़की से शादी की इसीलिए वे उनके दामाद है।

चित्र 17.3 चेंचू नृत्य

- प्राचीन किसानों एवं पशुपालकों के धर्म में परिवर्तन कैसे हुआ?

प्राचीन किसान एवं पशुपालक

गाँवों में की गई पुरातत्व खुदाईयों से पता चलता है कि वे धरती माता को 'माता देवी' के रूप में पूजते थे। उनका विश्वास था कि फसल एवं पशु संपदा उनके आशीर्वाद से ही पनपती है। छोटी प्रतिमाओं के रूप में माता देवी की पूजा की जाती थी, जो कि पत्थर या पेड़ों पर अंकित होती थी।

चित्र 17.4 मेहरघर में बनायी गयी चिकनी मिट्टी की मूर्तियाँ (5000 वर्ष पुरानी)

दक्खन क्षेत्र के पशु पालक ''राख के ढ़ेर'' पीछे छोड़ते थे। पुरातत्ववेत्ता का विश्वास था कि वे बची हुई चीजों को रीति–रिवाजों के अनुसार आग लगाकर जलाते थे जैसे आज हम होली, दीपावली और संक्रान्ति त्योहार मनाते हैं।

SCERT TELANGANA

चित्र 17.5 चट्टानों पर पशुओं के चित्र (4000 वर्ष पूर्व मस्की)

भारत में आज पशुपालकों को अनेक नामों से जाना जाता है। महाराष्ट्र में 'धंगर', कर्नाटक में 'कुरुबास' तथा आँध्र प्रदेश, तेलंगाना में कुरुमां/गोला/ यादव आदि पशुपालन जाति के हैं। वे मल्लन्ना और भीरप्पा को पूजते हैं। आँध्र प्रदेश एवं कर्नाटक में रेणुका, येल्लम्मा, मैसम्मा, पोचम्मा आदि के रूप में पूजते थे। किसान पशुओं को पालते थे तथा चरवाहों के साथ उनका संबंध रहता था। वे दोनों समान देवताओं की पूजा करते थे। गाँव के कोने में छोटे से मंदिर में देवी-देवता को प्रतिष्ठित करते थे। पूजा विधान एक जैसा था। विशेष अवसरों पर त्योहार मनाया जाता था, तब भैंस, भेड़, मुर्गी आदि की बलि देकर पूरी जाति द्वारा चावल का प्रसाद बनाया जाता था। अच्छी फसल, रोगों से मुक्ति, बच्चों के कल्याण आदि के लिए करते थे।

हमारे लोग कई पेड़ों जैसे पीपल, नीम, जमी तथा बड़ और पौधे जैसे तुलसी की पूजा करते थे। घड़ों पर पीपल के पत्ते का आकार बनाकर रंगते थे, जिससे लगता है कि वे पेड़ों को बहुत मानते थे।

चित्र 17.6 5000 पूर्व अफगानिस्तान में मिले घड़े।

कई कृषक जाति अनेक जानवरों जैसे हाथी, शेर, साँप, बन्दर, की पूजा करते थे। ऐसा लगता है यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।

सिंधु घाटी सभ्यता में धर्म

4600 वर्ष पूर्व सिंधु नदी के मैदानी भाग में कई शहरों को मिला लिया गया था। 900वर्षो पहले इनका विनाश हो गया था। इसे हड़प्पा संस्कृति (प्राचीन खुदाईयाँ सबसे पहले हड़प्पा में हुई थी।) भी कहते हैं। ये नगर कई कारीगरों (कुम्हार, बढ़ई, शिल्पकार, सुनार, जुलाहे, लुहार, मेस्त्री, आदि) द्वारा बसाये गये थे। इनके अलावा यहाँ व्यापारी, प्रशासक एवं शासक भी होते थे। खंडहरों में स्नानाघर, धान्यागर, गोदाम, सार्वजनिक भवन, सड़कें, नालियाँ एवं सामान्य लोगों के घर भी मिले। परंतु कोई बड़ा मंदिर नहीं मिला। कई देवियों की मूर्तियाँ मिली। इससे लगता है कि ये कई पेड़ों जिसमें पीपल भी थे तथा कई जानवरों को पवित्र मानते थे। पुरुष देवता के चित्र भी मिले।

SCERT TELANGANA

- नीचे के चित्र को ध्यानपूर्वक देखकर समझाइए। क्या ये किसी अन्य ईश्वर से मिलते हैं, जिसे आप जानते हैं?

चित्र 17.7 हड़प्पा में पुरुष देवता का चित्र

चित्र 17.8 हड़प्पा संस्कृति की देवी माता

कुछ लोगों का विश्वास है कि ये देवता शिव के समान दिखते हैं, जो बाद में भारत के अनेक क्षेत्रों में पूजे गये। अन्य चित्रों से ज्ञात होता है कि त्योहार में ये लोग पताका द्वारा जुलुस निकालकर भगवान को प्रसन्न करते थे।

वैदिक कालीन धर्म

वेद भारत उपमहाद्वीप के प्राचीन जीवित साहित्य है। चार वेद हैं– ऋग वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व वेद। ऋग वेद 3500 वर्ष पहले लिखा गया प्राचीन ग्रन्थ है। ऋषियों द्वारा कल्याण को दृष्टि में रखकर श्लोक और प्रार्थनाओं द्वारा वेदों की रचना की गई।

ये मंत्र अनेक देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए उच्चारित किए जाते थे। तीन प्रमुख देवता थे– अग्नि, इन्द्रा (युद्ध के देवता), सोम (एक पौधा जिससे शरबत बनाया जाता है) धर्मोपदेशक विद्यार्थियों को प्रत्येक पद, शब्द एवं वाक्य का सही उच्चारण करना एवं कंठस्थीकरण करवाते थे। अधिकतर श्लोक का संकलन, सीखाना और सीखना पुरूष करते थे। कुछ ही स्त्रियों द्वारा रचे गए। अधिकतर मंत्रोच्चारण यज्ञ या अग्नि की बलि के लिए किए जाते थे। एक मंत्र को पढ़िए और देखिए कि उन्होंने किस लिए प्रार्थना की।

इंद्र के लिए प्रार्थना

हे। इन्द्र आओ हमारी आहुतियों को स्वीकार करो । जिस प्रकार शिकारी शिकार की तलाश में निकलता है, वैसे ही हम भी संपत्ति की तलाश में युद्ध करते हैं।

हे इन्द्र, युद्ध में हमारी सहायता करना। हे इन्द्र, हमें अनन्त सम्पति दो। सौ गायों को देकर हमारी इच्छाओं को पूरा करो।

विश्वामित्र और नदियाँ

विश्वामित्र– ओ नदी। पर्वतों से नीचे उतरो जैसे दो फिसलते घोड़े, बछड़ों की चूमती दो चमकती गायें, इन्द्र की शक्ति से समुद्र पर चलने वाले रथ। आपमें पानी भरा हो तथा एक दूसरे से मिल कर रहे।

SCERT TELANGANA

नदियाँ– हम, जो पानी से परिपूर्ण हैं, ईश्वर द्वारा निर्मित मार्ग पर चलती है। एक बार हम बहने लगी तो रुकती नहीं। हे महात्मा, तुम हमारी प्रार्थना क्यों करते हो ?

विश्वामित्र– हे। बहनों, मुझे सुनिये, एक संगीतकार जो बहुत दूर से रथ एवं गाड़ियों में आता है। आपका पानी हमारे पहियों से ऊँचा न हो ताकि हम सुरक्षित रूप से पार कर सके।

नदियाँ– हम तुम्हारी प्रार्थना को सुनेंगे जिससे तुम सुरक्षित रूप से पार कर सको।

- ये दो श्लोक किसके संदर्भ में हैं ?
- ऋषि देवताओं को क्या समर्पित करते थे ?
- वे किसलिए प्रार्थना करते थे ?
- क्या आप समझते हैं कि ये लोग शिकारी समूह, पशु चारवाहा या गाँव या शहर में रहने वाले हैं ?

ऋगवेद में पशुओं, बच्चों (विशेषकर पुत्र), घोड़े आदि के लिए प्रार्थनाएँ हैं। वेदाध्ययन करने वाले इतिहासकार का मानना है कि ये लोग केवल गायों और घोड़ों को पालते थे। वे भारत के उत्तर पश्चिमी क्षेत्र में रहते थे, जो हिन्दुकुश पर्वत और यमुना नदी के मध्य का भाग है।

वेदकालीन लोग छोटे-छोटे समूहों और जनजाति में रहते थे। प्रत्येक का अपना नेता होता था। इन जनजातियों में एक पुजारी होता था। जिसे वे ब्राह्मण कहते थे। वह मंत्रोच्चारण एवं यज्ञ करता था। उन्हें सामान्य जन एवं नेता भेंट देते थे। अधिकतर ये लोग गायों, हरी घाँस एवं पानी स्त्रोतों के लिए आपस में लड़ते थे। युद्ध में घोडों का उपयोग रथों में किया जाता था, कि पशुओं को जीत सके।

कुछ सौ वर्षों बाद ये लोग गंगा एवं यमुना नदी के किनारे गाँवों में निवास करने लगे। उन्होंने चावल एवं गेहूँ की खेती करना आरम्भ किया। इसी समय जनपद की स्थापना होने लगी और जनजाति के नेता शासक बनने का प्रयास काने लगे। इसी समय यजुर्वेद और अर्थव वेदों में वैदिक मंत्र लिखे जाने लगे। वे विस्तार पूर्वक किए जाने वाले धार्मिक संस्कारो विशेषकर यज्ञ जो कि कई हफ्ते ही नहीं बल्कि महीने एवं आर्थिक धन और पशुओं के खर्च वाले होते थे। इन मंत्रों द्वारा राजा अन्य जाति के लोगों पर अधिकार और अच्छी फसल तथा युद्ध में विजय की प्रार्थना करते थे।

इसी समय हम देखते हैं कि समाज कई वर्णों में विभाजित हुआ तथा महिलाओं का महत्व घटने लगा। ग्रंथों में चार वर्णों का वर्णन है– ब्राह्मण जो उच्च स्तर के माने जाते, जो यज्ञ एवं वेदों के अधिकारी होते थे, क्षत्रिय जो दूसरे स्तर के थे, वे अन्य पर शासन करते थे, वैश्य पशुपालन तथा फसल उगाने का कार्य तथा ब्राह्मण एवं क्षत्रियों को भेंट देते थे, अन्त में शुद्र चौथे वर्ण के थे वे कृषि, बढ़ई, कुम्हार जैसे व्यवसायों को अपनाते थे और समाज के दूसरे वर्णों की सेवा करते ते। उसी समय स्त्री व पुरुष मजदूरी का विभाजन हुआ। यह विचार सभी के द्वारा स्वीकारे नहीं गए और उनका विरोध किया गया।

SCERT TELANGANA

मृत पूर्वजों की उपासना तथा दक्षिण के राक्षस गृह

ये बड़ी पत्थर की चट्टानें राक्षस ढेरे (जो कि वास्तव में पत्थर है) कहलाते थे। ये लोगों द्वारा सावधानी से जमाएँ जाते थे और समाधि का निर्माण करते थे। 3000 वर्ष पूर्व इस निर्माण पद्धति का आरम्भ हुआ, जो सारे दक्खन क्षेत्र, दक्षिण भारत, उत्तर पूर्वी भाग तथा कश्मीर में पाई गई।

कुछ समाधियाँ भूमि की सतह पर कुछ भूमि के भीतर दिखाई देती है। पुरातत्ववेत्ता कभी-कभी बड़ा गोल पत्थर या एक बड़ा खड़ा पत्थर पाते है। इसका संकेत केवल यह है कि इसके नीचे कब्र है। कभी-कभी इन ग्रहों एक से अधिक अस्थिपंजर होते है। इससे यह सूचना मिलती है कि एक ही परिवार के कुछ लोगों को साथ में दफनाया गया होगा।

इन सभी कब्रों की समान विशेषताएँ होती हैं। मृतकों को काले और लाल मटके के साथ दफनाते थे। इनके साथ लोहे के औजार और हथियार, कभी-कभी घोड़ों के अस्थिपंजर, घोड़ों की चीजें और पत्थर तथा सोने के आभूषण भी मिले।

इससे यह पता चलता है कि ये लोग सबसे पहले थे, जिन्होंने लोहे के औजारों का

प्रयोग किया था। उन्होंने तालाब से सिंचाई कर चावल की फसल बोई। ये पूर्वजों की पूजा के लिए ऐसे गृहों के निर्माण को महत्वपूर्ण मानते थे।

- क्या आपका परिवार पूर्वजों की पूजा करता है तथा सम्मान देता है? पता करिए कि आपके कौनसे पूर्वज की पूजा की जाती है- स्त्री और पुरुष आपकी कक्षा में बताइए।

तेलंगाणा में महापाषाण युग

पर्वतीय प्रांतों में, खेतों में, तालाबों में अधिक संख्या में महापाषाण कालीन समाधियाँ उपलब्ध हुए हैं। लग-भग तेलंगाना के सभी जिलों में महापाषाण कालीीन निर्माण मेनहिर्स (लंबे पत्थर) गोल पत्थर, शिलाओं से बनाए गए छोटे कमरे के समान बनाए गए समाधियाँ उपलब्ध हुए हैं। निम्न चित्रों का निरीक्षण कीजिए।

इन पाषाण कालीन समाधिों में काले, लाल रंग के अनेक बड़े घड़ और उनके साथ काले चिकने लोहे की वस्तुएँ उपलब्ध हुए है। मृतकों के अवशेष रखे गए लोहे की पेटियाँ या मिट्टी की पेटियां(सर्कोफ़गी), चिता के भस्म रखे हुए घड़े भी कुछ इन समाधियों में पाये गये।

चित्र 17.9: a) टेर्राकोटा मिट्टी से बने सर्कोफ़मी, एलेश्वरम, नलगोंडा (b) मेनहिर्स देवुनिगुट्टा, वरंगल (c) महापाषाणकालीन डोलमेन (छोटे कमरे जैसी समाधि) पोतनपल्ली, महबूब नगर (d) गोल पत्थर, रेपुनि गाँव तरंगल

SCERT TELANGANA

जनपद एवं शहरों के युग में नये प्रश्न

आपने गंगा घाटी के क्षेत्र में जनपद, महाजनपद एवं शहरों के बारे में पढ़ा होगा। इन क्षेत्रों में विभिन्न पृष्ठ भूमि वाले लोग जैसे शिकारी, चारवाहा, कारीगर, वैदिक लोग और अन्य आपस में संपर्क बना कर मिल जुलकर रहते थे। वे एक दूसरे के धार्मिक रिवाजों एवं विचारों का जानकर अपनाते थे। एक मिश्रित धार्मिक संस्कृति का विकास हुआ, जिसमें वैदिक यज्ञ, अग्नि की पूजा, सूर्य, नदियाँ, माता देवी और पशु जैसे बंदर और हाथी, साँप और पेड़ की पूजा भी करते थे। वे अपने पूर्वजों की पूजा भी करते थे और सोचते थे कि मरने के बाद भी उनकी आत्मा उनके साथ रहती है। परंतु लोग इन धार्मिक संस्कारों से संतुष्ट नहीं थे– उनके मन में अनेक प्रश्न उठने लगे, वे उनका उत्तर ढूंढ़ने के लिए आपस में चर्चा करने लगे। वे अन्य कार्यों को छोड़कर इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ने निकल पड़े।

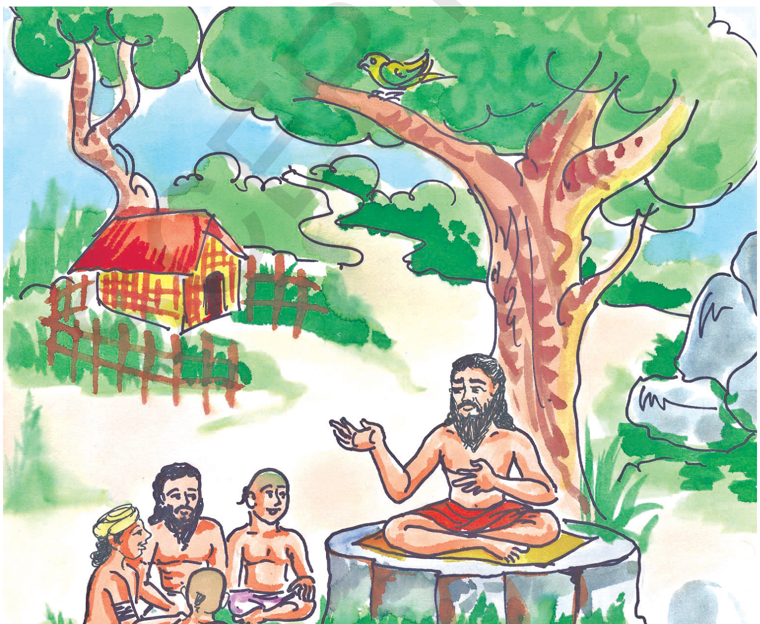

चित्र 17.10 आश्रम में अपने भक्तों को उपदेश देते हुए

मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

यहाँ एक युवा बालक नचिकेता की प्रसिद्ध कहानी प्रस्तुत की गई है। संभवतः आपने यह कहानी सुनी होगी। उसके मस्तिष्क में एक प्रश्न उभरा 'मृत्यु के बाद क्या होता है?' उसने सोचा यम ही मृत्यु के देवता है। नचिकेता सीधे यम से यह प्रश्न पूछने चला। ज्ञान को अर्जित करने के लिए वह मृत्यु के देव यम से भी नहीं घबराता है। नचिकेता यम के पास जाता है और पूछता है, 'मृत्यु के बाद क्या होता है?'

इस कठिन प्रश्न का उत्तर देने से यम बचना चाहते हैं। उसने नचिकेता को बहुत सारा स्वर्ण, चांदी और गायें इसलिए देनी चाहि, ताकि वह यह प्रश्न न पूछे। 'इसका उत्तर ईश्वर भी नहीं जानते।' परंतु नचिकेता अपने प्रश्न पर टिका रहा और यम को उत्तर देने के लिए विवश किया। यह कहानी कठोपनिषद नामक पुस्तक में उपलब्ध है।

- आप इस विषय में क्या सोचते है कि मृत्यु के पश्चात हमारे साथ क्या होता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

वह क्या है जो कभी नष्ट नहीं होती?

उस समय कई लोग जंगल में आश्रमों में रहने चले जाते थे। इन आश्रमों में वे ध्यान धारणा तथा प्रश्नों पर वाद-विवाद करते थे। वे उन लोगों के साथ भी चर्चा करते थे, जो उनसे मिलने आते थे। आश्रम में रहने वाले ऋषि, मुनि कहलाते थे। कई राजाओं के विचार भी यही होते थे। उपनिषदों में ऋषियों और राजाओं के विचार उपलब्ध है। उस समय के प्रसिद्ध ऋषि याज्ञवालव्य और उद्दालका थे।

ये ऋषि उस वस्तु की तलाश में थे, जो कभी नष्ट नहीं होती और न ही कष्टों से प्रभावित होती थी। वे इसे आत्मा या ब्राह्मण कहते थे। उनका विश्वास था कि आत्मा या ब्राह्मण को जानने से अमरत्व की प्राप्ति हो जाती है। आत्मा को जानने के लिए तपस्या आवश्यक थी।

- आपने आत्मा एवं तपस्या के बारे में क्या सुना है, संबंध बताइए।

परिव्राजक

सच्चाई की खोज अन्य लोग भी करते थे, जो एक स्थान पर नहीं रहते थे। ये लोग अपने घरों को छोड़कर गांव-गांव जंगल-जंगल घूमते थे। उन्हें परिव्राजक (घुमक्कड़) या भिक्षुक (भक्त या मांगने वाले) कहते थे। इन परिव्राजकों में वर्धमान महावीर, गौतमबुद्ध, मक्खाली गोशाला और अजीत केशकम्बालीन प्रसिद्ध है।

जन्म-मृत्यु के चक्र से कोई कैसे छूट सकता है।

- वर्धमान महावीर

वर्धमान महावीर का जन्म गणसंघ में हुआ था। 30 वर्ष की उम्र में इन्होंने अपने घर और परिवार को छोड़ दिया था और परिव्राजक बन गये। वे इस प्रश्न के उत्तर ढूंढ़ रहे थे- 'हम इस संसार में जन्म-मृत्यु के चक्र से कैसे मुक्ति पा सकते हैं?' कई वर्षों की ध्यान धारणा एवं तपस्या के पश्चात महावीर को अपने प्रश्न का उत्तर मिल पाया।

महावीर ने लोगों को बताया कि अगर हम दूसरों को दुःखी करेंगे, तो हमारे पाप बढ़ जायेंगे। इसीलिए हो सके जब तक किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं पहुँचाना चाहिए, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो। पहले के पापों से मुक्ति पाने के लिए सादगी, कठोर परिश्रम एवं तपस्या आवश्यक है। इस प्रकार हमारे पापों का बोझ कम होगा और हम मुक्ति पा सकेंगे। महावीर लोगों को उपदेश देने के लिए घुमते रहते थे। कई संख्या में लोगों ने उनकी उपदेशों का पालन करना आरंभ किया। इसी से जैन धर्म का आरंभ हुआ।

इस संसार में दुःख क्यों है? दुःखों से कोई कैसे छूट सकता है।

-गौतम बुद्ध

महावीर की तरह ही गौतम बुद्ध का जन्म भी गणसंघ में हुआ था। उन्होंने लोगों की दुःखी दशा तथा आपस में उन्हें लड़ते देखा। वे सोचने लगे कि 'इस दुखद स्थिति से कौन छूट सकते हैं?'

गौतम भी अपना घर परिवार छोड़कर अपने प्रश्न के उत्तर की खोज में निकल पड़े और परिव्राजक बन गये। ध्यान एकाग्रता एवं तपस्या के बाद उन्हें अपने प्रश्नों का उत्तर मिल गया और वे बुद्ध बन गये।

गौतम बुद्ध के अनुसार दुःख का कारण अधिक इच्छाएँ एवं असंतुष्टि है। अगर हम इच्छाओं पर अधिकार पा लेंगे, तो दुःखों से मुक्त हो सकते हैं। इच्छाओं पर नियंत्रण पाने के लिए हमें संतुलित एवं नियंत्रित जीवन जीना चाहिए और किसी अन्य जीव को कष्ट नहीं देना चाहिए। बुद्ध की उपदेश बौद्ध धर्म कहलाया।

चित्र 17.11 सारनाथ बुद्धा

SCERT TELANGANA

बुद्ध एवं उनके अनुयायियों के उपदेश पीटिका, विनयपीटिका, सुता पीटिका, और अभिधामा पीटिका नामक त्रिपिटिका में संकलित है।

- नचिकेता किस प्रश्न का उत्तर खोज रहा था ?
- ऋषि किसकी तलाश करता करते थे ?
- महावीर क्यों कहते थे कि हमें किसी प्राणी की दुःखी नहीं करना चाहिए ?
- बुद्ध ने दुःखों से उभरने के लिए क्या उपाए बताए ?
- आपने भी कई साधुओं को देखा होगा, जो स्थान-स्थान घूमते हैं। वे क्या करते हैं ? वे क्या उपदेश देते हैं ? कक्षा में चर्चा कीजिए ?

मुख्य शब्द

गण संघ

राख के ढेर

देवी माता

मटके पर चित्रकारी

मंत्र

यज्ञ (बलि)

राक्षसों के गृह

तपस्या

परिव्राजक

त्रिपीटिका

महान मध्य मार्ग

शिक्षा में सुधार

1. **निम्न लोगों के धार्मिक संस्कारों की सूची बनाइए-** (AS$_1$)

शिकारी समूह	**आज का समाज**

2. **बौद्ध धर्म और जैन धर्म** की **समान विशेषताएँ लिखिए-** (AS$_1$)

चर्चा कर कर लिखिए-

3. प्रकृति को हम आभार कैसे व्यक्त कर सकते हैं? (AS$_6$)
4. हम कई बार देखते हैं कि लोग जानवरों को सताते एवं भयभीत करते हैं। आप इस बारे में क्या सोचते हैं ? क्या हमें उन्हें दर्द पहुंचाने का अधिकार है ? (AS$_6$)

SCERT TELANGANA

5. प्राचीन लोग मृतपूर्वजों की पूजा क्यों करते थे? समाधि पर बड़े पत्थर क्यों रखते थे? (AS_1)

6. भारत के मानचित्र में महापाषाण स्थलों को दर्शाएँ और रंग भरिए। (AS_5)

7. अपने प्रांत में विभिन्न धर्मावलंबियों के क्या-क्या रीति-रिवाज हैं बताइए। (AS_4)

8. पृष्ठ संख्या 150 में 'वह क्या है जो कभी नष्ट नहीं होती' अंश पढ़िए। अपने विचार बताइए। (AS_2)

परियोजना–

1. विभिन्न पूजा पद्धतियों के चित्र बनाइए और अपने विद्यालय के पुस्तकालय में रखिए।
2. आपके मुहल्ले के विभिन्न पूजा स्थलों पर जाईए। वहाँ के प्रमुख पुजारी/धार्मिक मुखिया के साथ प्रश्न कीजिए तथा उस जानकारी को प्रस्तुत कीजिए।

a) लोग यहाँ क्यों आते हैं?

b) वे यहाँ किस प्रकार पूजा करते हैं?

c) मोक्ष/मुक्ति पर आपके क्या विचार है?

d) क्या आप सोचते हैं कि इस प्रकार की पूजा पद्धतियाँ मानव के लिए आवश्यक हैं? कैसे?

SCERT TELANGANA

अध्याय 18

ईश्वर के प्रति भक्ति एवं प्रेम

(Devotion and Love towards God)

पिछले अध्याय में हमने जाना कि हम विभिन्न विश्वासों, रीति-रिवाजों, व्यक्तियों द्वारा किये गये धार्मिक कर्मकाण्ड प्राचीन काल से भारत उपखण्ड में मनुष्यों से जुड़े हुए हैं। मौर्यकाल एवं बाद में उपखण्ड के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों के धार्मिक जीवन में तेजी से परिवर्तन आने लगा। यह इसीलिए भी हुआ कि व्यापारी वर्ग छोटे शिकारी एवं कृषक जाति को जोड़ना चाहते थे, ताकि राजा उन सभी पर अपना अधिकार बनाए रख सके। इसी समय ब्राह्मण वेदों को मानते थे, बौद्ध और जैन श्रमणा सारे देश में फैलकर इनके साथ संबंध स्थापित करने लगे।

ब्राह्मणों ने विभिन्न क्षेत्रों में आश्रमों की स्थापना की और यज्ञ तथा धार्मिक चर्चाएँ करते थे। श्रमणो ने भी विहार और स्तूपों की स्थापना की और बौद्ध या जैन धर्म के उपदेश देने लगे। इसी समय ब्राह्मण और श्रमणो ने अन्य लोगों से संपर्क कर उनके धर्म की विशेषताओं को भी अपना लिया। इसी कारण ब्राह्मण, बौद्ध और जैन लोगों द्वारा देवी माता, साँप, जानवर, पेड़ और मृतक पूर्वजों की आराधना को अपनाया गया। पूजा के लिए उन्होंने चित्रों और शिला मूर्तियों को भी अपनाया, जबकि वे पशु बलि के विरोधी थे और अंहिसा के पुजारी थे। इस तरह धीरे-धीरे लोगों ने मिश्रित धार्मिक संस्कारों और विश्वासों को अपनाना आरंभ किया।

- क्या आप अपने घर में अलग-अलग धार्मिक परंपराएँ एवं धार्मिक संस्कारों का मिश्रित रूप देखा है? कक्षा में चर्चा कीजिए।

हिन्दु धर्म

आज हम जिस हिन्दू धर्म को जानते हैं, वह हजारों वर्षों से जुड़ा है। इन वर्षों में कई संतों एवं विचारकों के धार्मिक परम्पराओं से इसकी तुलना की गई। 'हिन्दू' शब्द 1000ई.पू. से वास्तव में उपयोग में लाया गया। इस शब्द का आरम्भ 'सिन्धु' अर्थात सिन्धु नदी जो उत्तर पश्चिमी भारत से गुजरती थी, उसी से हुआ।

500 ई.पू. से हिन्दु धर्म की विशेषताओं ने आकार लेना आरम्भ किया। इसमें मुख्यतः वैदिक यज्ञ, शिव, विष्णु, दुर्गा जैसे देवों की पूजा, मन्दिरों का निर्माण, तपस्या द्वारा मोक्ष प्राप्ति आदि सम्मिलित किया गया। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत (भगवत गीता का अंश) और पुराण आदि को पवित्र पुस्तकों का स्तर मिला। इस गंद्याश में हम भक्ति आंदोलन के बारे में पढ़ेंगे।

SCERT TELANGANA

चित्र 18.1 गुडीमल्लम लिंग

भागवत और शैव

भागवत के अनुयायी विष्णु या नारायण की पूजा करते थे। उनका विश्वास था कि विष्णु ही वे ईश्वर हैं, जिन्होंने सृष्टि की रचना की, सबसे अधिक शक्तिशाली एवं संपूर्ण ज्ञाता है। वे इसमें भी विश्वास रखते थे कि विष्णु ने विश्व को बुराइयों से बचाने के लिए धरती पर अनेक रूपों में अवतार लिया है। उनमें से सबसे महत्वपूर्ण राम और कृष्ण का अवतार था। 2000 वर्षों पहले वे देश के विभिन्न भागों में प्रसिद्ध हो गये।

आपको याद होगा कि बौद्ध, जैन या उपनिषद वेत्ता विचारक ने कहीं भी मोक्ष पाने के लिए ईश्वर को मार्ग नहीं बनाया। उन्होंने ध्यान एकाग्रता, इच्छाओं पर नियंत्रण, तपस्या द्वारा स्वयं को शुद्ध करना आदि की चर्चा की। परंतु भागवत अनुयायियों का यह विश्वास था कि गहराई से भक्ति और विष्णु की पूजा द्वारा ही हम समस्या से बच सकते हैं तथा मोक्ष पा सकते हैं। वे सोचते थे कि यज्ञ करना, ब्राह्मणों को दान देना या वेदों का उच्चारण करना

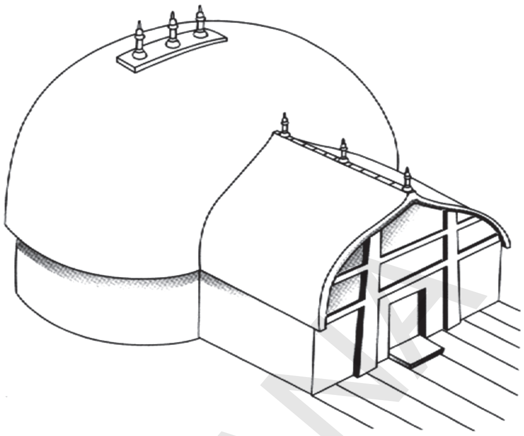

चित्र 18.2 विदिशा का प्राचीन कृष्ण मंदिर

आवश्यक नहीं है। उन्होंने मंदिर बनवाए, कृष्ण की मूर्तियों की पूजा की। पुरातत्व वेत्ताओं को 2000 वर्षों पूर्व बनाए गए मंदिरों के अवशेष मध्य प्रदेश के विदिशा और राजस्थान में उपलब्ध हुए।

उसी समय कुछ और लोगों द्वारा उसी प्रकार से शिव की उपासना आरंभ की गई। उन्होंने भी शिव या लिंग की स्थापना छोटे मंदिरों में की। कुछ लोग दुर्गा माता की पूजा करने लगे। अगर आप चित्तूर जिले के गुड़ीमल्लम जाए, तो 2000 वर्ष पूर्व बने शिवलिंग देख सकेंगे।

विष्णु या शिव या दुर्गा सर्वोच्च सत्ता के रूप पूजे जाने पर भी बौद्ध तथा जैन लोगों ने भी तीर्थांकर (प्राचीन जैन गुरु) की पूजा की। उन्होंने बुद्ध और तीर्थांकर की सुंदर मूर्तियां बनाकर स्तूपों या मंदिरों में स्थापित की, जिन्हें वे चैत्या कहते थे। वे उनकी पूजा करते थे। आँध्र प्रदेश के विभिन्न स्थानों जैसे अमरावती, नागार्जुन कोण्डा, जगय्यापेट, भट्टीप्रोलु, फणीगिरि, नेलकोंडापल्ली, आदि तेलंगाणा स्थानों में बनाये गये, जबकि बुद्ध या महावीर ईश्वर नहीं माने गये, परंतु सर्वोच्च ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में आज भी माननीय है।

SCERT TELANGANA

- क्या आप भागवत अनुयायी, शिवा और बौद्ध अनुयायी में समानता देखते है?
- आपने मंदिरों में ईश्वर की पूजा देखी होगी? मंदिरों की पूजा पद्धति को बताइये। कक्षा में एक- दूसरे के साथ जानकारी पर चर्चा कीजिए।

कथा कहने वाले

बड़ों से कहानी सुनना, धार्मिक कथाएं सुनना या कठपुतली का खेल देखना आपको पसंद होगा।

- क्या आप इन्हें कक्षा में बता सकते है।
- क्या आपने मंदिरों में कहानियां सुनी हैं? अगर हाँ, तो बताइए।

प्राचीन काल में भी लोगों को कहानी सुनने में रुचि थी। उन दिनों कवि, धार्मिक कहानियां कहने वाले (जैसे हरिकथा) अक्सर घूम-घूम कर देवी-देवताओं जैसे शिव, विष्णु, दुर्गा, रामायण और महाभारत की कथाएँ कहते थे। बुद्ध से संबंधित कहानियां भी कहते थे। लोग अधिक संख्या में उन्हें सुनने जमा हो जाते थे। वे केवल बड़ों से सीखी हुई कहानियाँ ही नहीं, बल्कि लोगों द्वारा भी नई कहानियाँ सीखते थे। जैसे अगर कोई सर्प की पूजा करता है और उसकी कहानी जानता है, तो ये कहानी कहने वाले उसे अपनी सीखी कहानियों में जोड़ लेते। इस तरह विभिन्न देवी-देवता, धार्मिक शिक्षाएं और पूजा पद्धतियों आदि कहानियों का मिश्रण बना लेते थे। धीरे-धीरे इन्हें लिखा जाने लगा। जातका कथाओं में बुद्ध की कहानियाँ और विष्णु और शिव की कथाएँ पुराणों में लिखी गयी।

इन पुराणों में विभिन्न धार्मिक प्रथाओं के अलावा किसी एक या दूसरे ईश्वर को सबसे अधिक बलशाली या सर्वज्ञाता, आदि कहते थे। इनका मत था कि ईश्वर की पूजा ही एक सरल मार्ग है, जिससे एक दूसरे की समस्याओं को हल किया जा सकता है और मुक्ति मिल सकती है।

सर्वोच्च ईश्वर पर प्रेम-भक्ति आंदोलन

लगभग 550ई. में ईश्वर के प्रति भक्ति के लिए तमिलनाडु में एक नया आंदोलन आरंभ हुआ। वे विष्णु और शिव के अनुयायी थे। वे किसी भी विस्तृत धार्मिक कर्मकाण्ड जैसे यज्ञ या पशु बलि आदि में विश्वास नहीं रखते थे। वे बौद्ध और जैन धर्म के भी विरोधी थे, क्योंकि वे किसी ईश्वर में विश्वास नहीं करते थे। इसके बजाय वे विष्णु और शिव की सच्ची भक्ति में विश्वास करते थे और उसे ही मुक्ति का मार्ग मानते थे। वे लोग समस्याओं को हल करने, धन या बल की माँग नहीं करते थे। वे भगवान से मिलन और उनके दर्शन चाहते थे। वे ये भी मानते थे कि किसी भी जाति का व्यक्ति भगवान से प्रेम कर सकता है। सभी ईश्वर भजन करते थे और खुशी से नाचते थे।

कई भक्त मंदिरों में जाकर वहाँ की स्थानीय भाषा में भजन गाते थे, जिससे जनता उसे समझ सके। ये सभी गीत पीढ़ियों तक भक्तों द्वारा गाये गए, जब तक कि 1100ई. तक लिखे नहीं गये। उन्हीं के प्रयत्नों के कारण ये

SCERT TELANGANA

मंदिर महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध बन गये। श्रीकालहस्ती, तिरुमला जैसे मंदिर इसीलिए प्रसिद्ध हुए। इन्हीं भक्तों के प्रभाव से लोग शिव और विष्णु की पूजा करने लगे।

- क्या आप शिकारी समूह और भक्ति आंदोलन के धार्मिक विश्वासों की समानता व असमानता को बता सकते हैं?
- क्या आप वैदिक कालीन और भक्ति आंदोलन की समानता और असमानता की तुलना कर सकते हैं?

आलवार और नायनार

विष्णु के प्रमुख 12 भक्त अलवार कहलाते थे, जिनमें प्रमुख थे– पेरियालवार और नामालवार। पेरियालवार की पुत्री अण्डाल एक अकेली महिला थी। उनमें से कई लोग विभिन्न मंदिरों में जाकर भजन बनाकर गाते थे, जिसे पाशुर कहते थे। यहाँ नामालवार के कुछ गीत प्रस्तुत किये गये है, जिन्हें पढ़कर आप समझिए–

रचना

सही क्षण में (विष्णु) वे हमारे
भगवान और पिता है।
जिन्होंने पृथ्वी, जल, अग्नि, हवा और
आकाश और पर्वत का सृजन किया
दो प्रकाश, सूर्य और चंद्र और
अन्य वस्तुएँ
वर्षा और वर्षा से उत्पन्न जीवन
और वर्षा के ईश्वर

इस रचना से हमें वे बताना चाहते हैं कि ब्राह्माण्ड की रचना विष्णु ने की तथा साथ ही यह भी मानते हैं कि वे उनके पिता हैं। इसका अर्थ यह है कि सभी शक्तिशाली ईश्वर भक्तों से पिता और पुत्र के समान करीब रहते हैं।

आँख मिचौली

स्वर्ग की चमक
पवित्र पर्वतों पर ठहरने वाले, समुद्र
पर शयन करने वाले, धरती पर
घूमने वाले
सभी स्थानों में छिपे हो, आप अप्रत्यक्ष
रूप से विकसित होते हो
विश्व में दूर असंख्य रूप में
विचरण करते हो
मेरे हृदय में खेलते हो, परंतु दिखायी
नहीं देते
आप हमेशा आंख मिचौनी खेलते हो।

इस पद में नामालवार ने यह बताया है कि ईश्वर सर्वव्यापी हैं, परंतु स्वयं को प्रकट नहीं करता। वह ईश्वर दर्शन की तलाश में चिंतित है, परंतु ईश्वर उसे दर्शन नहीं दे रहे हैं।

- नामालवार को ऐसा क्यों लगता है कि ईश्वर उनके साथ आँख मिचौनी खेल रहे हैं?
- किस रूप में नामालवार अपना गहरा प्रेम ईश्वर के प्रति कर रहे हैं?

नायनार संख्या में 63 थे, जो शिव भक्त थे। विभिन्न जातियों के जैसे कन्नप्पा जो शिकारी, नंदनार, पुल्लय्या जो बाहरी जाति के थे। इनमें से कुछ अपार, सामबंदर, सुंदर और मनकावासागर मंदिर मंदिर जाकर शिव की प्रशंसा के गीत गाते थे। कारायकाल, अरीयार आदि महिलाएँ थी। तेवाराम और तिरुवासाकम के पद यहाँ दिये गये हैं–

SCERT TELANGANA

हम किसी राजा की प्रजा नहीं है
हमें मृत्यु देव से कोई भय नहीं है
हम नरक की यातनाएँ नहीं भुगतेंगे
इस जन्म में दुखों को नहीं झेलेंगे
हम हमेशा प्रसन्न रहेंगे
हमें पता नहीं बिमारी क्या है
हम किसी के आगे नहीं झुकेंगे
हम हमेशा केवल खुश रहेंगे
हम किसी भी समय दुःखी नहीं होंगे।,
(अप्पर)

इस पद में अप्पर कहते हैं कि शिव के भक्त गण, राजा, मृत्यु, रोग और नरक से नहीं डरते। वे हमेशा खुश रहते है।

दूसरे पद में अप्पर कहते है कि वे धन देने वालों की परवाह नहीं करते। वे उनका आदर करते हैं, जो शिव भक्त हैं, चाहे वे गरीब, बीमार या निम्न जाति के ही क्यों न हो।

शिव ने मुझे पकड़ा,

जब भी मैं गलत मार्ग पर चला

मैंने नमन किया, रोया, नाचा, जोर से रोया।

मैं गाया और मैंने उनकि प्रशंसा की...

जिस प्रकार हरे पेड़ में कांटे चुभते है,

वैसे प्रेम ने मुझे तोड़ दिया

बाढ़ आ गयी, समुद्र में ऊंची लहरें उठने लगी।

(मणिकावासकर)

इस पद में मणिकावासकर ने अपनी खुशी शिव के दर्शन पर प्रकट की।

ईसाई धर्म

भारत उपमहाद्वीप के लोग सर्वोच्च ईश्वर और ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति को मोक्ष का मार्ग मानते हैं, उसी प्रकार के विचार विश्व में अन्य स्थानों में फैलने लगे। मध्य पूर्व क्षेत्र जिसे आज इजराइल, फिलिस्तान कहते हैं, वहाँ ईसा मसीह के बाद इसाई धर्म का विकास हुआ।

इनका जन्म जेरूसेलम (आज ईजराईल) के पास बेतहलम में लगभग 2000 वर्ष पूर्व हुआ। उन्होंने बताया कि सभी समान है। उन्होंने हमें एक दूसरे से प्रेम करना सिखाया। उन्होंने शांति, प्रेम और सहनशीलता का महत्व समझाया। 'जैसे को तैसा' नहीं करने को कहा। उनका विश्वास था कि प्रेम से शत्रु को भी जीता जा सकता है।

चित्र 18.3 थॉमस बेसीलीका, चेन्नई। 1523 में निर्मित।

SCERT TELANGANA

ईसाईयों की पवित्र पुस्तक बाईबल है, जिसमें ईसा के उपदेश संग्रहित है। 'पर्वत पर सरमन' का कुछ अंश नीचे दिया गया है।

गरीबों की भावना को समझने वाले को स्वर्ग का राज्य मिलेगा।

दुखियों को आशीष है कि सभी सुविधाएँ मिलेगी।

दूसरों की इच्छाओं को पूरा करने वाले को भूलोक का राज्य मिलेगा।

भूखे-प्यासे को तृप्त करने से स्वयं संतुष्ट होंगे।

दया दिखाने पर दया मिलेगी।

स्वच्छ हृदय वाले को ईश्वर दर्शन होंगे।

शांति बनाए रखने वाले ईश्वर की संतान कहलाएगी।

नीति के लिए कष्ट झेलने वाले को स्वर्ग का राज्य मिलेगा।

आपने सुना होगा, यह कहा गया है कि 'आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत' परंतु मैं कहता हूँ पापी से विद्रोह मत करो। अगर आपके दाएँ गाल पर कोई चाँटा मारे, तो दूसरा गाल उस ओर कर दो।

शत्रु से प्रेम करो, निंदा करने वाले के लिए प्रार्थना करो, आप स्वर्ग पिता की संतान है, वह अच्छे और बुरे पर प्रकाश फैलाता है, वर्षा न्यायी और अन्यायी पर समान रूप से गिरती है।

उस समय के शासकों द्वारा ईसा बंदी बनाकर निर्दयतापूर्वक मार दिये गये।

ईसा मसीह के अनुयायी, सेंट थॉमस रोम से भारत आए और अपने साथ ईसा के उपदेश भी लाए। दक्षिण भारत में सेंट थॉमस ने ईसाई धर्म का प्रचार किया।

- क्या आपने गिरिजाघार में ईश्वर की पूजा को देखा है? पूजा पद्धित को समझाइए?

इस्लाम

भारत में अप्पर के काल में ही अरब में एक नये धर्म का आरंभ हुआ, जिसमें एक ही ईश्वर को मान्यता थी। यह नया धर्म पैगम्बर मोहम्मद द्वारा इस्लाम नाम से आरंभ किया गया।

570ई.पू. अरब के मक्का में पैगंबर मोहम्मद का जन्म हुआ। उन्होंने बताया कि केवल एक ही ईश्वर है और हम सब उसकी रचना है। जिस प्रकार मां-बाप के लिए बच्चे बराबर होते हैं, उसी प्रकार भगवान के लिए हम सब समान है। ईश्वर या अल्ला का कोई आकार नहीं होता, इसीलिए मूर्ति पूजा गलत है। उन्होंने बताया कि सभी मनुष्य भाई-भाई है। उन्होंने सारे मानवता में प्रेम का महत्व बताया। मोहम्मद साहब को अल्लाह का दूत या पैगम्बर मानते थे। कुरान में अल्लाह के उपदेश लिखे गये हैं। यह इस्लाम की पवित्र पुस्तक है। कुरान के कुछ पद पढ़िए, जिसका अनुवाद है-

SCERT TELANGANA

चित्र 18.4

केरला की चेरमान मस्जिद। ऐसा विश्वास है कि भारत की सबसे पहली मस्जिद है।

अलफ़ातेहा

अल्ला का नाम बहुत लाभकारी है, जो दयालु है। सारे संसार के देशों की प्रशंसा अल्ला के कारण है। अत्यधिक लाभदाय, अत्यधिक कृपानिधान, न्याय का देवता है। केवल उसी की हम प्रार्थना करते हैं, केवल उसी को हम मदद के लिए खोजते हैं। सही मार्ग दिखाता है। जिस पर उसकी कृपा है, उसी को मार्ग दर्शाता है। उन्हें नहीं जो दूसरों का बुरा चाहते हैं, उन्हें नहीं जो गलत मार्ग पर चलते हैं।

"सुरेअल एख़लास"

'यह सच है कि अल्लाह एक है। उसकी सभी को तलाश में है उसे किसी की आवश्यकता नहीं है। कोई उसे नहीं मिला और न मिलेगा। उसके समान कोई और नहीं है।'

भारत के बंदरगाहों से अरब व्यापारियों के द्वारा इस्लाम को भारत लाया गया।

- क्या आपने मस्जिद में ईश्वर की उपासना देखी है? उपासना की पद्धति समझाइए।

सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास

क्या आपने हिन्दुओं, ईसाइयों और मुसलमानों में समान विचार देखे हैं? उन सबका सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास है तथा सभी उसकी पूजा करते हैं। वे समानता, प्रेम और सभी मनुष्यों के लिए आदर भाव रखते हैं। धन, शिक्षा या सामाजिक स्तर के आधार पर अंतर नहीं करते। इस प्रकार की विचारधारा को अधिकतर लोगों ने अपनाया। राजा और शासकों ने भी इन विचारों को अपनाया और अपनी प्रजा को भी इस धर्म को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने विशाल मंदिर, गिरिजाघर या मस्जिद भी बनवाए, जहाँ लोग पूजा कर सके।

इतिहासकारों ने यह पता लगाने का प्रयत्न किया कि ये विचारधारा उस समय कैसे पनपी और लोगों में क्यों इतनी अधिक प्रसिद्ध हुई। उन्हें ऐसे लगा कि जनजाति और छोटे राज्य मिलकर बड़ा राज्य बना लेंगे तथा वे एक ही ईश्वर के प्रति आकर्षित हुए होंगे। यह किसी एक जाति या राज्य के द्वारा नहीं हुआ। शासकों और राजाओं ने भी न केवल इन विचारों को प्रोत्साहित किया, परंतु स्वयं भी इसके प्रतिनिधि बन गये। इस प्रकार वे अपनी प्रजा का विश्वास पाने में कामयाब हुए।

धनी और निर्धन, बलवान और निर्बल के मध्य मतभेद बढ़े। इतिहासकारों का विश्वास है कि कई लोग इन असमानताओं और निर्बल के दमन से नाराज थे। इस प्रकार सर्वोच्च ईश्वर की भक्ति द्वारा वे लोग सभी लोगों में समानता की भावना स्थापित करना चाहते थे। कुछ इतिहासकारों का मानना था कि बौद्ध एवं जैन धर्म में ध्यान एकाग्रता एवं इच्छाओं पर नियंत्रण की बात बतायी गयी है, इसी कारण उनकी प्रसिद्धि कम हो गयी है और समस्याओं को हल करने वाले ईश्वर पर विश्वास घटने लगा है।

हमें याद रखना चाहिए कि इसी समय कई लोगों ने नई विचारधारा को न अपनाकर पुरानी विचारधारा को ही अपनाया। कुछ ऐसे भी थे, जो ईश्वर की शक्ति में विश्वास ही नहीं करते थे।

मुख्य शब्द

शिल्प	जातक कथा
मोक्ष	भगवान के अवतार

शिक्षा में सुधार

1. कल्पना कीजिए कि एक बौद्ध भिक्षुक और शिकारी समूह के बीच चर्चा चल रही है। कैसे वे एक दूसरे से सीखते हैं। दोनों के बीच के संवाद लिखिए? (AS_6)
2. भागवत और वैदिक धर्म में समानता और असमानता को देख सकते हैं? (AS_1)
3. प्राचीन काल के भागवत अनुयायी एवं शैव, बौद्ध और जैन से किस रूप में अलग थे? (AS_1)
4. देश में विभिन्न धार्मिक पद्धतियों को एक साथ जोड़ने में पुराण कैसे सहायक हुए, चर्चा कीजिए? (AS_1)
5. क्या आप भागवत और तमिलनाडु के भक्तों के विश्वासों में महत्वपूर्ण अंतर को ढूंढ़ सकते हैं? (AS_1)
6. मोहम्मद पैगम्बर ने सभी मनुष्यों में समानता को कैसे समझाया है? (AS_1)
7. विभिन्न धार्मिक भावनाओं में समानता और असमानता की सूची बनाइए? (AS_3)
8. पृष्ठ 160 में 'सर्वोच्च ईश्वर में विश्वास' अनुच्छेद पढ़िए। अपने विचार लिखिए। (AS_2)
9. इसी बीच अपने प्रांत में हुए किसी धार्मिक कार्यक्रम के बारे में अपने विचार लिखिए। (AS_4)
10. विश्व मानचित्र में निम्न स्थान दर्शाएँ :-

    अ) जेरुसेलम आ) मक्का ई) केरल राज्य उ) चेन्नै ऊ)सिंधू नदी उ) अमरावती

SCERT TELANGANA

अध्याय 19

भाषा, रचनाएं एवं महान ग्रंथ

(Language, Writing and Great Books)

दीपिका अपने गाँव जाने के लिए नेल्लूर रेलवे स्टेशन पहूँची। रेलवे की घोषणाएँ विभिन्न भाषाओं में सुनकर उसे आश्चर्य हुआ। उसी तरह नेल्लूर रेलवे स्टेशन में 'नेल्लूर' नाम को अनेक भाषाओं में लिखा देखा। इतनी भाषाओं और लेखनी को देखकर आश्चर्य हुआ।

चित्र 19.1 चिह्नपट शादनगर रेल्वे स्टेशन

भाषा क्या है?

आपने सुना होगा कुत्ते भौंकते हैं, पक्षी चहचहाते हैं, केवल हम अकेले धरती पर रहने वाले मनुष्य 'भाषा' बोलते हैं। मनुष्य चाहे जितनी आवाजें अपने मुख से कर सकते हैं, परंतु जानवर या पक्षी नहीं नहीं कर सकते। इस तरह शब्द बोलने की शक्ति भाषा विकास में हमारी सहायता करती है।

- विभिन्न जानवरों, पक्षियों और वर्षा, कार या ट्रक की आवाज निकालने का प्रयास कीजिए। देखिए कि किस तरह के आवाज हम कर सकते हैं।

भाषा जीवन का अभिन्न अंग बन गयी है कि हमने इसके बारे में सोचना ही छोड़ दिया है। हम भाषा की सहायता से सोच और समझ सकते हैं, भाषा की मदद से ही हम एक दूसरे से बात कर सकते हैं, दूसरों से सीख सकते हैं, खेलने के लिए हम भाषा का उपयोग करते हैं। भाषा की सहायता से हम कई चीजें करते हैं।

1. हम भाषा का उपयोग प्रबंध और योजना के लिए करते हैं। क्या आपके द्वारा किये गये कार्य को आप नहीं बताते कि आप उसे कैसे करेंगे ?

2. भाषा का प्रयोग हम लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए करते है और उसे कुछ करने के लिए कहते हैं। 'ओह ! उस पक्षी को देखो।' 'ओ माँ। मेरे लिए वह खिलौना खरीदो।' 'रुको। चलो मत।'

3. भाषा का उपयोग हम नई चीजो बनाने के लिए करते हैं और आनंदित होते है। जैसे हम हास्य वाक्य, हास्य शब्द, हास्य कविताएँ बनाते है, हसते हैं और दूसरों को हसाते है।

4. हमारे आस-पास के विश्व को हम भाषा की सहायता से पहचानते है और जो चीजें नहीं है,

SCERT TELANGANA

उसकी कल्पना भी भाषा की मदद से करते है। क्या हम सोच सकते है कि हमने किसी भाषा का उपयोग नहीं किया? पुरानी कहानियों की कल्पना और स्थानों की जानकारी बिना भाषा के संभव है। हम खोजते हैं और कारणों की सहायता से कुछ जानते है। यह सब बिना भाषा के नहीं किया जा सकता ।

5. हम भाषा का उपयोग अपनी भावनाओं और अनुभवों को प्रकट करने के लिए करते हैं। मान लीजिए कि शिकारी ने एक पके फल वाले पेड़ को देखा तो वह बिना भाषा के अपने मित्र को कैसे बताएगा कि उसने क्या देखा और कहाँ देखा? अगर आपको चोट लगी और दर्द हो रहा है, तो आप अपने माता-पिता को बिना किसी भाषा के प्रयोग के कैसे बताएँगे?

आप कई और उदाहरण सोच सकते है कि कैसे हम भाषा का उपयोग करते है और भाषा कैसे महत्वपूर्ण है। ऐसा लगता है कि मनुष्य अति प्राचीन काल से जबसे वह जंगलों से भोजन इकट्ठा करते थे, तबसे ही भाषा का उपयोग करते थे। भाषा के द्वारा वे अपने बच्चों को सूचना दे सकते है कि उन्होंने क्या देखा, क्या सीखा और क्या अनुभव किया। प्रत्येक पीढ़ी प्राचीन पीढ़ी से सीखती है और उसमें नया जोड़ती है। हम संसार के लोगों से सीख सकते हैं और उन्हें अपनी जानकारी दे सकते है। भाषा दूरस्थ रहने वाले लोगों को करीब लाती है, अतीत के लोगों को वर्तमान लोगों से जोड़ने का काम करती है। आश्चर्यजनक है न!

इतनी सारी भाषाएँ क्यों?

साथ में रहने वाले लोगों के द्वारा ही भाषा विकसित हुई। उन्होंने निश्चय किया कि प्यास को बुझाने वाले पेय को पानी कहेंगे। उनसे कोसों दूर रहने वाले दूसरे समूह ने उस पेय को 'नील्लू' कहा। किसी और ने उसे 'तन्नी' कहा। सभी का अर्थ एक ही है, परंतु आवाज और प्रतीक अलग है। इसी कारण इंग्लिश, संस्कृत, पारसी, चीनी , स्वाहिली, हिंदी, तेलुगु, आदि विभिन्न 'भाषाओं' को लोगों ने विकसित किया।

कई बार यह भी होता था कि लोगों का एक समूह जो समान भाषा बोलता था, अलग उप समूह में मिल जाते थे और कई भाषाओं का विकास प्राचीन भाषा के आधार पर हुआ। हम कहेंगे कि ये सभी भाषाएँ एक परिवार से जुड़ी है। वास्तव में एक समूह द्वारा बोली गयी भाषा भूल द्रविड़ कहलाने लगी। इस भाषा को बोलने वाले अलग-अलग स्थानों में रहने लगे तथा उन्होंने अन्य लोगों के साथ रहकर नई भाषा का विकास किया। उनमें से तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, गोण्डी, आदि भाषाएँ प्रमुख हैं। आज मुख्यतः ये भाषाएँ दक्षिण भारत में बोली जाती हैं। एक और भाषा परिवार जो इण्डो-आर्यन परिवार कहलाता था। इस परिवार की प्रमुख भाषाएँ संस्कृत, हिंदी, बंगाली, मराठा आदि है। भारत में ऐसे कई अन्य भाषा परिवार है, जिनके बारे में आप ऊँची कक्षाओं में पढ़ेंगे।

जैसे-जैसे लोग यात्रा करने लगे, तो एक दूसरे के साथ मिलने लगे तथा एक दूसरे की भाषा के अनके शब्दों को अपनाने लगे। जैसे तेलुगु में आज कई शब्द संस्कृत, मराठी, अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी के है।

रचनाएँ और लिपि

लिपि की सहायता से हम भाषाएं लिखते और पढ़ते हैं। जैसा आप जानते हैं हम कई लिपियों का उपयोग करते है- रोमन लिपि (ABCDEFGH), देवनागरी लिपि (अ आ इ ई उ ऊ), अरबी लिपि. .., तेलुगु लिपि, तमिल लिपि...। वास्तव में हम कोई भी भाषा किसी भी लिपि में लिख सकते हैं।

SCERT TELANGANA

उदाहरण के लिए हैदराबाद शब्द हम सभी लिपियों में जैसे रोमन, देवनागरी, तेलुगु, तमिल, अरबी में लिख सकते हैं।

हम चाहे तो नई लिपि भी बना सकते हैं। क्या आप अपनी लिपि तैयार करना चाहेंगे? कोशिश कीजिए, कुछ मजाआयेगा।

यह शायद आपके लिए सरल एवं आनंददायी है, परंतु इन लिपियों को बनाने में उस समय लोगों को हजारों वर्ष लगे थे, जिसका प्रयोग आज हम कर रहे हैं।

आरंभ में उन्होंने सिर्फ चित्र बनाए न कि लिखा। बकरी भाग रही है, बताने के लिए उन्होंने पहला चित्र बकरी का बनाया और दूसरे चित्र में बकरी को दो भागते पैरों से बनाया। धीरे-धीरे लिपि का विकास होने लगा। चार हजार वर्षों पहले सिंधु घाटी सभ्यता के लोग लिपि का प्रयोग करते थे, परंतु हम उसे पढ़ना नहीं जानते।

मेरा नाम रघु है।	Hindi
నా పేరు రఘు	Telugu
ראַגהו זיא נאָמען |יי"מ	Yiddish
میرا نام رگھو	Urdu
jina langu ni raghu	Swahili
Mi Nombre es Raghu	Spanish

चित्र 19.2 विभिन्न प्रकार की लिपियाँ

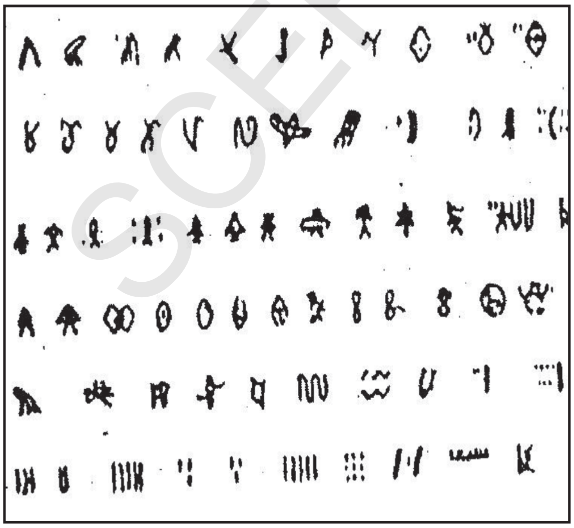

चित्र 19.3 सिंधु सभ्यता की लिपि

भारत में अधिकांश रूप में उपयोग में लायी गयी लिपियां (देवनागरी, तेलुगु और तमिल) मूल रूप से अशोक द्वारा प्रयोग में लायी गयी ब्राह्मी लिपि से निकली है।

प्राचीन लिपियों में से एक लिपि जो आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के भटीप्रोलु स्तूप में मिली है। यह लगभग 200 ई.प. समय में लिखी गयी है।

चित्र 19.5 भट्टिप्रोलु लिपि

आप अपना नाम विभिन्न लिपियों में लिखकर कक्षा में लगाइए।

- तीन तेलुगु के शब्द लीजिए और कम से कम तीन अन्य भाषाओं में लिखिए। आप तेलुगु लिपि का प्रयोग कर सकते हैं, जैसे–
  तेलुगु– अम्मा   तमिल– ताई
  हिंदी– मां   संस्कृत– मातृ
  अंग्रेजी– मदर   मराठी– आई
  पारसी– मादार
- सोचिए कैसे निम्न लोगों ने लिखना चाहा होगा। किसे इसकी अधिक आवश्यकता है।
  राजा और सम्राट,
  व्यापारी, किसान,
  महिला ब्राह्मण पुजारी,
  बौद्ध भिक्षुक, कवि,
  कलाकार महिला,
  श्रमिक, सैनिक।

SCERT TELANGANA

लोग किस पर लिखते थे?

संभवतः आरंभ में लोग कपड़े, पत्ते या लट्ठे पर लिखते थे, जो समय के साथ-साथ समाप्त हो गये। कुछ लोगों ने घड़ों पर उकेरते हुए भी लिखा। उनमें से कुछ आज भी सुरक्षित है। प्राचीन चट्टानों या पत्थरों के स्तंभों पर लिखे विस्तृत ग्रंथ अशोक द्वारा लिखे गये आज भी जीवित है।

दक्षिण भारत में कई लोग ताड के पत्तों पर लिखते थे, जिन्हें एक आकार में काटा जाता था। कलम के समान लिखने के लिए वे पिन का इस्तेमाल करते थे। सूखे पत्ते पर उसे खोद कर काली स्याही से लिखा जाता था। उत्तर भारत में भोज के पेड़ के तने का उपयोग, जो अधिकतर हिमालय में उगते थे, उनका उपयोग करते थे। इन लट्ठों को कागज के समान पतला काटा जाता था। स्याही से उस पर आसानी से लिखा जाता था। उस समय कागज का उपयोग नहीं होता था।

कविताएँ, गीत और कहानियाँ

आपने अपने अभिभावकों तथा दादा-नाना आदि से कई कविताएँ, गीत, कहावतें और कहानियाँ सुनी होंगी। इनमें से कुछ केवल एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को कही गयी है, जैसे आपके अभिभावक कहते हैं, लिखी नहीं गयी है। इसे मौखिक साहित्य कहते हैं, जो साहित्य एक मुख से दूसरे मुख तक जाता है। यह आरंभिक साहित्य का एक रूप है। प्राचीन लोग कविताएँ, गीत और कहानियाँ बनायी जाती थी और उनके बच्चों को कहते थे। उसी प्रकार कहावतें और मुहावरे भी विश्व को समझने के लिए कहे जाते थे।

- कम से कम तीन कहानियों, तीन गीतों और दस कहावतों को अपने बुजुर्गों से जमा कीजिए और उन्हें एक पोस्टर पर लिख कर कक्षा में चिपकाइए।
- चित्रों की सहायता से कहानियाँ बताइए। और एक लिखित पुस्तिका तैयार कीजिए।

वेद

वेद भी आरंभ में केवल कहे और सिखाए गये थे। इसी प्रकार वे लगभग 3000 वर्षो तक सुरक्षित रखे गए। बाद में इन्हें लिखा गया।

यहां ऋग्वेद का एक रोचक पद पढ़िए, जिसमें ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति बतायी गयी है-

कौन जानता था यह निश्चय है- उससे इसका जन्म हुआ और इस सृष्टि की रचना हुई? इस रचना के बाद ईश्वर आए। कौन जानता था, यह धीरे-धीरे कैसे विकसित होगी?

कहाँ से यह रचना हुई, क्या उसने इसे बनाया या नहीं बनाया, वह इस विश्व में निरीक्षक था, जो उच्च स्वर्गवासी था। शायद वह अकेला जानता था या नहीं जानता था।

(नासदिया सूक्ति, ऋग्वेद)

आपको आश्चर्य होता होगा कि विश्व का आरंभ कहाँ से है? इस पद से कल्पना की गयी है कि विश्व के आरंभ के पहले यह क्या था और विश्व का आरंभ कैसे हुआ। इस समस्या पर आप अपने विचार लिखिए।

महाकाव्य

रामायण और महाभारत

महाकाव्य में महान व्यक्तियों की गाथाएँ होती हैं। उसमें अच्छे और बुरी शक्तियों के बीच संघर्ष होते हैं। सभी देशों के महाकाव्य होते है। भारत में दो महाकाव्य रामायण और महाभारत है।

रामायण में राम और सीता की कहानी और राम और रावण के बीच युद्ध, सीता को लंका ले जाना, आदि वर्णित है। रामायण हमें एक आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पत्नी, आदर्श राजा को दर्शाता हैं। यह महाकाव्य पहला संस्कृत का काव्य माना गया है, जो वाल्मिकी द्वारा लिखा गया। आरंभ में यह घुमक्कड़ संतों द्वारा कहा जाता था, बाद में इसे लिखा गया।

महाभारत में दो चचेरे भाईयों के समूह (कौरव एवं पाण्डव) के बीच साम्राज्य पर शासन के लिए युद्ध हुआ। बाद में यह भयंकर युद्ध में परिवर्तित हुआ, जिसमें श्रीकृष्ण की सहायता से पांडवों की जीत हुई। यह संसार का सबसे बड़ा महाकाव्य है, जिसमें कई सौ छोटी कहानियाँ लिखी गयी है। यह व्यास के द्वारा लिखा गया था, बाद में कई संतों ने इसका गान किया और अंत में इसे लिखित रूप दिया गया।

इतिहासकारों का मानना है कि चाहे यह महाकाव्य कई वर्षों पहले लिखे गये होंगे, पर अंतिम रूप इन्हें 1600 वर्षों पहले ही दिया गया।

जातका कथाएँ

आपने पिछले पाठ में गौतम बुद्ध के बारे में पढ़ा था। उनके अनुयायियों का विश्वास था कि इन्होंने मनुष्यों और प्राणियों को उपदेश देने के लिए अनेक जन्म लिये थे। इन्होंने बुद्ध के जनम के बारे में कई कथाएँ लिखी, जिसे जातका कथाएँ कहते हैं। ये मजेदार है, जिन्हें तुम पढ़ना चाहोगे। इन सभी को संग्रहित कर 1600 से 1800 वर्षों पूर्व इन्हें लिखा गया।

किसागौतमी की कहानी–

यहाँ एक बुद्ध की प्रसिद्ध कहानी है। किसागौतमी नाम की एक महिला थी, उसका पुत्र मर चुका था। वह इतनी दुखी थी कि अपने पुत्र को लेकर वह सड़कों पर घुमती हुई, अपने पुत्र को वापस लाने की मांग सबसे कर रही थी। एक दयालु व्यक्ति उसे बुद्ध के पास ले गया।

बुद्ध ने कहा– ''मुझे एक मुट्ठी भर के राई ला दो और मैं तुम्हारे पुत्र को वापस ला दूँगा।''

किसागौतमी खुश होकर उसी समय निकल गई। लेकिन बुद्ध ने कोमलता से उसे रोका और कहा ''वे राई उसी परिवार से लाना जिसके घर में कभी कोई मरा नहीं है।''

किसागौतमी द्वार–द्वार जाती है, परन्तु सभी घरों में कोई न कोई– पिता, माता, बहन, भाई, पति, पत्नी, बच्चा, चाचा, चाची, दादा, दादी, की मृत्यु हुई थी।

बुद्ध उस शोकमयी माता को क्या शिक्षा देना चाहते थे।

तमिल में संगम साहित्य

प्राचीन काल में दक्षिण भारत के विशाल क्षेत्र में तमिल बोली जाती थी। कई कवियों एवं कवयित्रियों द्वारा लिखी गई कविताओं का संग्रह संगम साहित्य है। उन्होंने उन वीरों की कथाएँ लिखी है, जिन्होंने अपनी जनजातियों की सुरक्षा के लिए युद्ध किए थे। वीर साहसी पुरुषों का प्रेम तथा सुन्दर लड़कियाँ, प्रकृति की सुन्दरता, ऋतुएँ और मानव जाति पर उसका प्रभाव दर्शाया है। एक छोटे राजा के लिए लिखी गई संगम की एक कविता को पढ़िए–

SCERT TELANGANA

घने जंगल में चारों तरफ हाथियों के बीच तुम्हारी भूमि है–
ऐसा लगता है वे गाएँ है,
काली–काली फैली हुई, भैसों की तरह लगती है।
मैं कुछ कहना चाहता हूँ– आप अपनी भूमि की रक्षा के लिए इतने सतर्क है जितना कि सन्तान के पालन पोषण के लिए हो।

औषधि एवं शल्य चिकित्सा पर पुस्तकें

प्राचीन काल में कई लोग इसका अध्ययन करते थे कि लोग बीमार क्यों होते हैं, उपचार कैसे किया जाए, लोग युद्ध में कैसे घायल होते हैं और घाव कैसे भरे जाते है। उन्होंने कई पौधों को जमा किया और औषधि तैयार कर उसके बारे में लिखा और बताया कि कैसे स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। उनमें से कुछ पुस्तकें मिली। एक प्रसिद्ध ''चरक संहिता'' और दूसरी पुस्तक जिसमें शल्य चिकित्सा पर प्रकाश ड़ाला गया है, उसे ''सुश्रृता संहिता'' कहा गया। इन पुस्तकों में आयुर्वेद तथा पारंपरिक भारतीय औषधि विज्ञान तथा स्वास्थ्य की जानकारी दी। वे लोग वह केवल बिमारों के उपचार के लिए औषधि ही नहीं बल्कि संतुलित और स्वस्थ जीवन के लिए उपयुक्त शिक्षा भी देते थे।

- अपने घर के प्रांगण में औषधीय पौधों को पहचानिए और उसके उपयोग की एक सूची बनाइए।
- आपके अभिभावकों से स्वास्थ्य एवं औषधि के कथन की जानकारी लीजिए और अपनी कक्षा के लिए एक पुस्तिका तैयार कीजिए।

खगोल एवं गणित पर पुस्तकें

हमारे पूर्वज आकाशीय ग्रह सूर्य और चन्द्र, नक्षत्र एवं अन्य ग्रहों से आकर्षित थे। वे प्रतिदिन उन्हें ध्यान से देखते थे और यह पता लगाया कि समय के साथ इनमें बदलाव आता है। कुछ परिवर्तन क्षण के साथ, कुछ दिन, महीने या वर्ष के साथ होते हैं। उन्होंने सावधानी से इसका अध्ययन किया और पता लगाया कि आकाश में दो या तीन प्रकार के पिण्ड होते हैं–सूर्य जो प्रतिदिन उगता और ढलता है तथा गर्मी प्रदान करता है, चन्द्र जो घटता है और बढ़ता है। ग्रह जो धीरे–धीरे नक्षत्र के चारों ओर घूमते हैं और नक्षत्र चमकते हैं परन्तु अपनी स्थिति नहीं बदलते हैं (धीरे–धीरे लोग यह समझने लगे कि नक्षत्र, ग्रह और सूर्य और चन्द्रमा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के अनेक निगूढ़ बाते हैं, जिनका अध्ययन ध्यान पूर्वक करने पर ही हम उनकी गति की गणना कर सकते हैं। आर्यभट्ट ने ''आर्यभट्टीय'' नामक ग्रंथ में कहा है कि भू–भ्रमण से दिन और रात बनते है। वास्तव में सूर्य पृथ्वी के चारों ओर नहीं घूमता । उस समय लोगों ने उन्हें समर्थन नहीं दिया।

आर्यभट्ट और अन्य प्राचीन गणितज्ञों ने दशमलव प्रणाली तथा अंकों के स्थान महत्व को उसी समय बताया था, जिसका अनुसरण आज हम कर रहे हैं।

प्राचीन रोमन ने सौ और दो इस प्रकार लिखा CII या एक सौ सत्ताईस को CXXVII (C= 100; X = 10; V = 5 and I = 1) ऐसे लिखते थे। उन्होंने शून्य का प्रयोग नहीं किया, जिसके कारण जोड़ने में कई समस्याएँ उत्पन्न हुई। दशमलव प्रणाली या अंक स्थान पद्धती में इसे 102 या 127 के समान लिखा जाता था। आज लिखने का यह तरीका सारे संसार द्वारा अपनाया गया है।

संस्कृत साहित्य

प्राचीन भारत के प्रमुख विद्वानों में पाणिनी भी एक हैं। इन्होंने संस्कृत में अष्टाध्यायी नामक व्याकरण ग्रंथ की रचना की है। यह भाषा का क्रम जानने और दूसरे आसानी से भाषा सीखने में सहायक हुई। पाणिनी द्वारा लिखे गए इस ग्रंथ पर पतंजली ने इसकी व्यापक व्याख्या करते हुए इसको आगे बढ़ाया।

कुषाण काल में अश्वमेघ ने बुद्ध की जीवनी पर 'बुद्धचरित' नामक ग्रंथ की रचना की है। यह संस्कृत में लिखा गया सर्वप्रथम पद्य काव्य है।

गुप्तकाल में संस्कृत के महाकाव्यों की रचना हुई। चंद्रगुप्त द्वितीय के दरबार में अमर सिंह ने अमरकोश नामक प्रसिद्ध संस्कृत कोश का निर्माण किया। इस काल में नाटक का विकास एक साहित्य विधा के रूप में हुआ। और यह जनता में आमोद-प्रमोद के साधन के रूप में प्रसिद्धि पाई। प्रमुख नाटककार भास ने रामायण, महाभारत के आधार पर १३ नाटकों की रचना की है। कालिदास ने महाभारत के शकुंतला और दुष्यंत को प्रेम का वर्णन करते हुए अभिज्ञान शकुंतलम नामक नाटक की रचना की शूद्रक ने नगर के लोगों के जीवन का वर्णन करते हुए मृच्छकटिक नामक आसक्तिदायक नाटक की रचना की है। कालिदास ने पद्य में भी अनेक काव्य लिखे जो विश्व प्रसिद्ध हुए।

- कालिदास की रचनाओं की जानकारी प्राप्त करें, उन्हें कक्षा में बताइए। वे आपको क्यों रुचिकर लगते हैं? कारण बताइए।

मुख्य शब्द

महाकाव्य	शिलालेख
संगम साहित्य	आयुर्वेद

अपनी सीख में सुधार

1) भाषा के महत्व को समझाइए? (AS_1)
2) आप कैसे कह सकते हैं कि आर्यभट्ट खगोल विज्ञान के पिता थे? (AS_1)
3) चरक संहिता और सुश्रुत संहिता मे अंतर बताइए? (AS_1)
4) गणित मे कुछ शोधों को बताइए? (AS_4)
5) मुद्रा को देखिए। उस पर लिखी हुई लिपि को देखिए। वह किस भाषा में लिखी गई है पहचानिए। क्या दूसरी भाषाओं के लिए समान लिपि का प्रयोग किया गया है। वे कौनसी हैं? (AS_3)
6) किसी सामान्य ज्ञान की पुस्तक ढ़िए। तेलुगु भाषा के पाँच प्रमुख ग्रंथों के नाम, पाँच अन्य भाषाओं के प्रमुख ग्रंथों के नामों से तालिका बनाइए। (AS_3)
7) प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने जो अपने क्षेत्र में कार्य किये हैं, वह आज के वैज्ञानिकों को कैसे प्रेरणादायक बने। (AS_6)
8) भारत के मानचित्र में निम्न स्थान दर्शाएँ। (AS_5)
   अ) बिहार आ) तमिलनाडु इ) उत्तर प्रदेश ई) महाराष्ट्र उ) पश्चिम बंगाल
9) पृष्ठ संख्या 165 में 'महाकाव्य' अंश पढ़िए, अपने विचार बताइए। (AS_2)

अध्याय 20

शिल्पकला और भवन

(Sculptures and Buildings)

पुरातत्व वेत्ताओं ने सिंधु घाटी के कई प्राचीन शहरों में खुदाई की, जिसमें उन्हें कई पत्थर एवं पीतल के शिल्पकला की नमूने मिले, इसके अलावा पत्थरों पर नक्काशी एवं पकाई गयी मिट्टी की मूर्तियां मिली। ये लगभग 4000 वर्ष पूर्व बनायी गयी। उसमें के कुछ चित्र आप यहां देख सकते है। आप देख सकते हैं कि इनका आकार प्राकृतिक है। हमें पता नहीं वे किसलिए उपयोग किये जाते थे।

चित्र 20.1 सिंधु घाटी कालीन पुजारी अथवा राजा

चित्र 20.3 खड़ी लड़की की पीतल की प्रतिमा

चित्र 20.2 हडप्पा का सुंदर बैल को दिखाया गया

चित्र 20.4 टेरिकोटा मातृ देवी का चित्र

हड़प्पा के नगर - उपमहाद्वीप के सर्वप्रथम नगर

आपने छटवें अध्याय में पढ़ा है कि मनुष्य बहुत समय तक शिकार और अनाज का संग्रह करते हुए, प्रवासी एवं धुमक्कड़ जीवन यापन करता था। केवल 10,000 वर्ष पूर्व से ही आधुनिक सिरिया और फलस्तीन के निवासियों ने कृषि और जानवरों को वश में करना आरंभ किया है। भारत उपमहाद्वीप में सात से आठ हज़ार साल प्राचीन गाँव बेलूचिस्तान के उत्तर पश्चिम प्रांतों में दिखाई दिए। विभिन्न प्रांतों के लोग कृषि करते हुए, धीरे-धीरे, ग्रामीम जीवन अपनाने पर भी, आज कई लोग शिकार और अनाज का संग्रहण कर रहे हैं। तब तो, सर्वप्रथम नगरों का निर्माण कब हुआ होगा? लगभग 5000 साल पहले, भारत उपमहाद्वीप के उत्तर पश्चिमी प्रांतों जैसे बलूचिस्तान, सिंध, पंजाब और गुज़रात में इनका निर्माण हुआ। पुरातत्व वेत्ताओं ने अपने खुदाइयों में बड़े-बड़े नगरों के अवशेष ढूँढ निकाले हैं। उन नगरों के नाम हमें मालूम नहीं लेकिन जिन आधुनिक गाँवों में खुदाई हुई है उन्हीं नामों से उन्हें जाना जाता है। आपने प्रसिद्ध हड़प्पा, मोहंजोदाडो, कालीबंगन और लोथल नगरों के नाम सुने होंगे। भारत उपमहाद्वीप के प्रसिद्ध प्राचीन नगरों में ये प्रमुख हैं। ये नगर उत्तर के अफ़गानिस्तान से दक्षिण के गुजरात तक, पूरब में पंजाब और हरियाणा से पश्चिम में बलूचिस्तान तक कई नगर एक ही संयुक्त लक्षणों से फैले हुए हैं। इतिहास की इस दशा को पुरातत्व वेत्ता 'हड़प्पा संस्कृति' के नाम से बुलाते हैं। इस संस्कृति के प्रमुख प्रांतों के अधिक भाग सिंधु और उसकी उपनदियों से बने मैदानों में रहने के कारण कभी-कभी इसको सिंधू घाटी की सभ्यता कहकर भी बुलाया जाता है।

- इन प्रांतों में बहनेवाली नदियों के नाम पहचानिए। इन प्रांतों को मानचित्र में दर्शाकर, वे हैदराबाद से कितनी दूरी पर हैं ध्यान दीजिए।
- क्या आप समझते हैं कि तेलंगाना हड़प्पा संस्कृति का भाग है? तेलंगाना में बसने वालों को क्या हड़प्पा संस्कृति के बारे में मालूम है? कैसे?
- यदि आप किसी प्रांत में जाते हैं तो वैसे निर्णय लेते हैं कि वह गाँव है या नगर?
- गाँव से भिन्न होने वाले नगरों में कौन से कार्यकलाप होते हैं?
- आपका मानना क्या है कि, पुरातत्व वेत्ता प्राचीन अवशेषों के आधार पर एक प्रांत गाँव या नगर है का निर्णय कैसे करते हैं? क्या आपका मानना है कि गाँव के अवशेषों में जो विशिष्ट लक्षण नहीं है वह नगरों में होते हैं?

SCERT TELANGANA

नगर किसे कहते हैं?

आजीविका के लिए कृषि या शिकार और अनाज के संग्रह पर निर्भर न होकर जीनेवाले अधिक जनसंख्या वाले प्रांतों को हम 'नगर' कहते हैं। नगरों में मुख्यतः तीन चार प्रकार के लोग रहते हैं। जैसे, हस्तशिल्पी समाज-कुम्हार, लुहार, बढ़ई, भवन निर्माम करनेवाले मिस्त्री, पत्थर फोड़नेवाले आदि; व्यापारी - नगर के अंदर और बाहर वालों द्वारा बनाई गई वस्तुओं का क्रय विक्रय करने वाले व्यापारी ; प्रशासक राजा, कुलीन, पुजारी और प्रशासन अधिकारी; अंत में गरीब श्रमिक या सैनिक हैं जो दूसरों की सेवा करते हैं। इनमें से बहुत सारे लोग ना ही कृषि करते हैं या खेती का काम नहीं करते हैं। इसलिए अनाज की उपज करनेवाले किसानों पर, दूध और मांस उपलब्ध कराने वाले पशुपालकों पर ये लोग निर्भर रहते हैं। नगरों में यह अनाज किसानों पर लगाए गए कर द्वारा या दस्तकारी से उत्पन्न वस्तुओं के बदले में प्राप्त होता है। आज की परिस्थितियों की तरह ही, उस प्राचीन काल में भी अधिक प्रतिशत लोग प्रायः गाँवों या जंगलों में रहे होंगे।

- क्या, प्रशासक और श्रामिकों के शिथिल भवन एक ही तरह के हैं? या भिन्न है? कैसे?
- क्या आप समझते हैं कि, केवल खंडहरों का अध्ययन कर, उस काल में व्यापारी थे या नहीं, उनके आवास कहाँ थे बताना संभव है?
- क्या समझते हैं कि, किसान अपने उत्पादन नगरवासियों को देने के लिए क्यों क्स्वीकार किये हैं?

नगर की विशेषताएँ !

लगभग चार हज़ार छह सौ वर्ष पूर्व हड़प्पा के नगरों का निर्माण शीघ्रता से होकर लगभग सात सौ साल तक देदीव्यमान रहे। क्रमशः तीन हज़ार नौ सौ वर्ष पूर्व लुप्त हुए। इन नगरों की एक प्रमुख विशेषता यह कि हड़प्पा नगरों के भवन निर्मित आकार और परिमाण बनाई गई जली हुई ईंटों से बनाए गए। लगभग सभी नगर सावधानी से योजनबद्ध नगरविकास की दृष्टि से, शतरंज की बिसात की तरह, एक दूसरे से खंडित करते हुए सीधे रास्तों से इनका निर्माम हुआ। मार्गों का निर्माण इस तरह हुआ है कि घरों से आनेवाले गंदे पानी की निकासी, वर्षा के पानी के निकासी के लिए नालियों का निर्माण किया गया था। लगभग सभी नगरों का निर्माम दो भागों में विभाजित होकर निर्माण हुआ। एक भाग में ऊँचे भवन, राजप्रसाद (किले), आवास स्थान, कार्यालय, धान्यागार हैं तो दूसरे भाग में हस्तशिल्पियों, व्यापारी और अन्य सामान्य जनता के आवास होते थे। प्रशासक राजप्रसादों में रहते हुए, काम करते हुए अन्य सामान्य जनता से अलग रहते हुए अपनी पहचान बनाए हुए रहते थे।

- आज के नगरों में धनवान और सामान्य जनता के आवासों में कोई अंतर अपने देखा है? यह अंतर क्यों है?

हड़ेप्पा के नगरों में किस प्रकार के हस्त शिल्पी रहते थे? भवन, उनके निर्माण में ईंटों के महत्व के आधार पर हस्त शिल्पियों के काम वालों मे ृंक प्रकार का अनुमान आप लगा सकते हैं - ईंट बनाने वाले या भवन निर्माम मिस्त्री या मिट्टी के बर्तन बनाने वाले। हड़प्पा काल के मिट्टी के बर्तन बनाने वाले भारत के इतिहास में बढ़िया मटके, विभिन्न प्रकार के मिट्टी के पात्र, चित्र तैयार करने वाले थे। हड़प्पा के लोग विभिन्न प्रकार के मिट्टी के पात्र, चित्र तैयार करने वाले थे। हड़प्पा के लोग विभिन्न प्रकार के लौह पदार्थों से बने, अर्थात तांबा, जस्ता, चांदी और पीतल आदि से बने वस्तुओं का उपयोग ज्यादा करते थे। फिर भी, भारत में विलंब से

चित्र 20.5: लोथल में नौका निर्माण केंद्र - यहाँ के उपयुक्त नौका परिमाण का अनुमान कीजिए। (मापः पूर्व-पश्चिम के बीच की दूरी 37.मी., उत्तर-दक्षिण की दूरी 22 मी.)

उपयोग में आये हुए लोहे का प्रयोग इन लोगों ने नहीं किया। तांबा दुर्लभ था इसका उपयोग सीमित था। हड़प्पा के लोग अपनी दैनिक जरूरतों के लिए पत्थर और लकड़ी से बने औज़ारों का उपयोग करते थे। काटने के काम के लिए पत्थर से बने विशिष्ट लंबे रंपाओं का, व्यापार के लिए पत्थर से बनी मुद्राओं का, आभरणों के लिए पत्थर से बनी मोतियों का, व्यापार में मापन के लिए पत्थर से बने बाटों का उपयोग करते थे। कपास, उन के कपड़े बनाते थे। इनमें बहुत कम मात्रा में इतहासकारों को उपलब्ध हुए। दैनिक उपयोग की वस्तुओं चमचे, चूड़ियां तैयार करने के लिए समुद्र में उपलब्ध शंख और सीपों का उपयोग करते थे। पत्थर की मुद्राएँ, परिमाण तोलने के बाटों के उपयोग का निरीक्षण करने से यह पता चलता है कि उस समय विभिन्न प्रदेशों के बीच व्यापार-वाणिज्य अधिक संख्या में होता था।

वास्तव में, वे लोग कई विकसित नगरों वाले इराक जैसे सुदूर देशों से नौकाओं में यात्रा करके उनसे व्यापार करते थे। सामान के यातायात के लिए बैलगाड़ी और नौकाओं का प्रयोग अवश्य किये होंगे।

- आप क्यों मानते हैं कि, यह वस्तुएँ एक ही काम वाले बनाते है? या विभिन्न कारीगर बनाते हैं?

भाषा

हाड़प्पा के लोगों द्वारा लिखी गई पुस्तकें हमें नहीं मिली हैं। कुछ छोटे-छोटे शिलाफलक, मुद्राएँ मात्र उपलब्ध हुए हैं। लेकिन उन्हें कैसे पढ़ा जाए वह हमें आजतक नहीं मालूम हुआ। उन्होंने किस भाषा का प्रयोग किया है। क्या सभी प्रांतों में एक ही भाषा का उपयोग किया है, यह बात भी नहीं मालूम हुई। वे किन नामों से संबोधित करते थे, देवताओं, राजाओं कैसे बुलाते थे, अंत में उनके

चित्र 20.6: मोहनजोदाडो का किला

SCERT TELANGANA

चित्र 20.7: मोहनजोदाडो का विशाल स्नान गृह (माप : 11.8 मी. x 7 मी.)

नगरों के नाम भी नहीं मालूम हैं। उनके धार्मिक विश्वासों के बारे में आप अगले पाठ में पढ़ेंगे।

प्रशासक

यह पता नहीं कि इन नगरों पर किसने शासन किया। नगर बहुत विशाल प्रांतों में निर्मित हुए हैं। लगभग सभी नगरों में रहने वाले सामान्य अंश एक जैसे होने के कारण, कुछ लोगों का मानना है कि इनके नियंत्रण के लिए कोई केंद्रीय व्यवस्था रही होगी। इस केंद्रीय व्यवस्था का नियंत्रण राजा, पुजारी या चयनित कुछ नेता करते थे, इसका पता नहीं चला। प्रायः वे बड़े-बड़े किलों में रहते हुए नगर के लोगों पर राज्य किये होंगे।

आजीविका में बदलाव

लगभग सात सौ वर्षों के बाद महान नगरों में विकसित शहरों में, व्यापार-वाणिज्य, हस्तशिल्पियों के उत्पादन की कमी के कारण यहाँ के लोग नगर छोड़कर गाँवों की ओर चले गए। कुछ इतिहासकारों के अनुसार, इस प्रांत में बहनेवाली नदियों के सूख जाने से, यहाँ के लोगों ने पूरब में गंगानदी की ओर प्रस्थान किया। वे वहाँ पर कृषकों, पशुपालकों से मिल गए।

जो कुछ भी हो, हड़प्पा संस्कृति के महान नगर लुप्त होकर भूगर्भ में विलीन हो गए। विलुप्त हुए इस सभ्यता के बारे में पुरातत्ववेत्ताओं ने बीसवीं शताब्दी में इसकी जानकारी प्राप्त करके इसके क्रमिक अध्ययन करना आरंभ किया।

- क्या आप जानते हैं कि किसी ने किसान होते हुए रोजगार के लिए उद्योग श्रमिक, कार्यालय सेवा या दुकानदार बना हो? या किसी उद्योग श्रमिक ने बाज़ार में छोटे-छोटे काम करने लगा है? या रोजगार के लिए किसी ने अपने पूर्वजों के स्थान को छोड़कर नए प्रांतों को स्थानांतरित हुए हैं? उनके जीवन और उनकी समस्याओं और चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

चित्र 20.8: मोहनजोदाड़ो में गंदे पानी की निकासी की व्यवस्था

SCERT TELANGANA

सिंधु घाटी सभ्यता के बाद शिल्पकला

कुछ समय पश्चात महाराष्ट्र में धातु से आकृतियाँ बनाए जाने लगे। खुदाई के समय अति सुन्दर ताँबे की मूर्तियाँ उपलब्ध हुई। यह लगभग 3000 वर्ष पहले बनाई गई। क्या आपको लगता है कि वे खिलौने हैं?

चित्र 20.9 दैमाबाद के तांबे की मूर्ति

मौर्य काल में इसका महत्वपूर्ण पहलु दिखाई देता है जो कि लगभग 2200 वर्ष पहले का है। अशोक ने ऊँचे, साफ पालिश के स्तम्भ कई स्थानों पर बनवाए। ये अधिकतर एक पत्थर के टुकड़े से बनाए जाते थे। अशोक के संदेश उन पर खोदे जाते थे। उनके सिरों पर जानवर के आकार बनाए जाते थे। उन्हें राजचिह्न कहते थे। इन सब में सबसे प्रसिद्ध सारनाथ का सिंह केपिटल था, आशोक के द्वारा उसे वहाँ स्थापित किया गया, जहाँ बुद्ध ने सबसे पहले उपदेश दिया था। चार दिशाओं में चार सिंह धर्म चक्र को सिर पर धारण किए हुए सम्माननीय है।

- आपको क्या लगता है कि ये सिंह प्राकृतिक दिख रहे है या शिल्पकला के कृतिम नमूने दिखाई दे रहे हैं।
- आपने इसे बहुत बार देखा होगा। कहाँ आपने सिंह के चित्र देखे?

ये स्तूप और सिंह केपिटल मौर्य राजा की शक्ति और आदर को दर्शाते हैं। रामपुरवा के बैल केपिटल से इसकी तुलना कीजिए। आपको लगेगा कि बैल अधिक प्राकृतिक दिख रहे है और हडप्पा चिह्न के बैल जैसे दिख रहे हैं।

चित्र 20.10 सारनाथ का सिंह राजचिह्न

चित्र 20.11 रामपुरवा का वृषभ

SCERT TELANGANA

बौद्ध स्तूप और विहार

भारत के एक प्रसिद्ध स्तूप साँची स्तूप के चित्र को नीचे दिखाया गया है आप देखेंगे कि यह अर्ध गोलाकार, (आधा गोल) वैसे ही जैसे ऊपर देखने पर आकाश दिखता है।

यह स्तूप समतल भाग पर बनाया गया है। स्तूप के मध्य में बुद्ध के अवशेष (अवशेष अर्थात शरीर के अंग जैसे, दाँत, हड्डियाँ, केश, आदि)। यह अर्धगोलाकार सभी तरफ से बन्द रहता है, जिसमें हम मन्दिर के समान अन्दर नहीं जा सकते। इसके ऊपर एक स्तंभ जिस पर छतरी होती है, बनाया जाता है। यह स्तूप चारों ओर पत्थरों की सीमा बाँधी जाती है जिसे सजाया जाता है। अशोक के समय में इन्हें मिट्टी, ईंट या लकड़ी से बनाया गया, बाद में इसे पत्थर से बनाया गया।

स्तूप के कई अर्थ है–यह बुद्ध का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरी तरफ यह विश्वास है कि गुंबज ब्रह्माण्ड का प्रतीक है और स्तंभ उसके ध्रुव है, जिसके चारों ओर सब कुछ घूमता है। संसार से संबंध बनाता है, जैसे धरती और स्वर्ग। यात्री स्तूप की पूजा फूल आदि चढ़ाकर करते हैं और उसकी प्रदिक्षणा कर कर उसके सामने एकाग्रचित्त बैठ्ते हैं।

- क्या आप स्तूप की तुलना मन्दिर से कर सकते हैं और बता सकते हैं कि दोनो में समानताएँ और असमानताएँ क्या है और लोग कैसे उपासना करते हैं ?

आँन्ध्र प्रदेश के अमरावती, भाट्टी प्रोलु, रामतीर्थम, सालीहुण्डम आदि स्थानों में पुरातत्व वेत्ताओं को खुदाईयों में अवशेष प्राप्त हुए हैं। भाट्टीप्रोलु में स्फटिक पेटी मिली, जिसमें बुद्ध के शरीर के अवशेष पाए गए।

चित्र 20.12मध्य प्रदेश का सांची स्तूप। यह अशोक द्वारा निर्मित स्तूपों में महत्वपूर्ण है। अर्ध गोलाकार, बुनियाद, छतरी और चारों तरफ की बनाई गयी बाढ को क्या आप देख सकते हैं ?

SCERT TELANGANA

चित्र 20.13 सालीहुण्डम के अवशेष। क्या आप चक्र को देख रहे हैं, जिसका आकार स्तूप जैसा है।

चित्र 20.14 अमरावती स्तूप

आन्ध्र प्रदेश में गुंटूर जिसके पास अमरावती का स्तूप अति प्रसिद्ध है। 1900 वर्ष पहले शातवाहनो के समय इसका निर्माण किया गया।

चित्र 20.15 स्तूप शिल्पकला के अद्‌भूत नमूने हैं। आप ऊपर कुछ उड़ते हुए चित्र देख सकते हैं। माना जाता है कि वे ईश्वर है, जो बुद्ध की उपासना के लिए स्वर्ग से आए हैं। नीचे कुछ पुरुष और स्त्रियाँ नतमस्तक होकर प्रार्थना कर रहे हैं। द्वार मार्ग पर आप चार सिंह भी देख सकते हैं। वह किसके प्रतीक हैं?

आज अमरावती स्तूप केवल पत्थरों के टुकड़ों के ढ़ेर है। 1900 वर्ष पूर्व यह कैसा होगा, सिर्फ इसकी कल्पना की जा सकती है। जैसा आप चित्र में देख रहे हैं कि यह बुद्ध के उपदेशों की अद्‌भूत शिल्पकला का नमूना है। जब अंग्रेजो को इसका पता चला तो वे इसे अपने साथ लंदन ले गए। कुछ नमूने आज भी चेन्नई के संग्रहालय में उपलब्ध है।

इन्हीं तथ्यों के आधार पर लोग कल्पना करते हैं कि वह कैसा दिखाई देता होगा। पुनः निर्मित के साथ इसकी तुलना कीजिए।

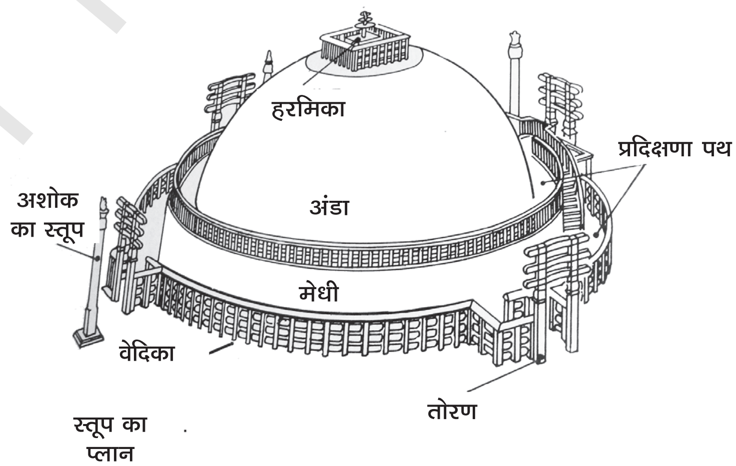

चित्र 20.15 अमरावती स्तूप का पुनःनिर्माण

एक और महत्वपूर्ण स्तूप नागार्जुन कोंडा का है। इक्ष्वाकु राजाओं की राजधानी विजयपुरी का एक हिस्सा है। यह कृष्णा नदी के किनारे निर्मित है। विजयपुरी में कई स्तूप, विहार और महल है। यहाँ एक बिना छत का हाल और नदी के किनारे घाट भी है। दुर्भाग्य से आज पूरा शहर पानी में डूब गया है, जिस पर नागार्जुन सागर बाँध बनाया गया है। कई शिल्पकला के नमूने और निकालकर संग्रहालय में रखे गए हैं।

नीचे कुछ अमरावती और नागार्जून कोण्डा की शिल्पकला के नमूने हैं। ये शिल्पकला के नमूने हमें दक्षिण भारत की तत्कालीन गतिविधियों की याद दिलाते हैं। तत्कालीन लोगों की दृष्टि से हमें देखना चाहिए।

चित्र 20.16 अमरावती का एक नमूना
बुद्ध द्वारा हाथी को शांत किया जाना।
यह राजघराने का हाथी अनियंत्रित हो गया था, जिससे गांव वाले परेशान थे। जैसे ही उस हाथी ने बुद्ध को देखा, वह शांत होकर नतमस्तक हो गया। इस चित्र में उन्होंने किस प्रकार कहानी को दिखाया है। कहानी से क्या संदेश मिलता है।

चित्र 20.17 नागार्जूनकोण्डा से प्राप्त चित्र में छः राजकुमारियों को दिखाया गया है और उपाली नाई है। राजकुारियों को शिक्षा देने के लिए उपाली को पहले शरण में लिया तथा बाद में राजकुमारियों को। आप देख सकते हैं कि बुद्ध के पास उपाली छोटी कुर्सी पर बैठा है।

चित्र 20.18 सांची के चित्र में गांव के रोज के जीवन के बारे में बताया है। इस कला खंड में गांव में बुद्ध के आगमन के बारे में बताया गया है। क्या आप लोगों के कार्यो की सूची बना सकते हैं। क्या आज हम ऐसा दृश्य गांव में देख सकते हैं?

जैसे–जैसे समय बीतने लगा शिल्पकला में छोटे आकारों के स्थान पर बड़ी प्रतिमाएँ बनाई जाने लगी। बुद्ध की बड़ी प्रतिमाएँ लोगों में शान्ति, मौन बुद्ध की विशेषताएँ बताने लगी। उत्तर पश्चिम में गाँधार तथा उत्तर प्रदेश के मथुरा और सारनाथ के बुद्ध की प्रतिमाएँ अधिक हुई। नागार्जुन कोण्डा में भी कुछ उपलब्ध है।

SCERT TELANGANA

विहार बौद्ध भिक्षुओं या अनुयायियों के रहने का स्थान था। विहार में छोटे कमरे तथा खुला क्षेत्र और स्तूप तथा बुद्ध की प्रतिमा एक किनारे पर होती थी। इस भवन को चैत्य कहते थे, जहाँ भिक्षुक प्रार्थना करते थे।

करले और नासिक में गुफा विहार भी पाए गए। इस पर सुन्दर शिल्पकारी की गई है। आप उसके बारे मे नीचे पढ़ेंगे।

अन्य विहार ईंट और पत्थरों से बनाए गए, जैसे तक्षशिला, नागार्जुन कोण्डा और नालन्दा में हैं, जो आज शिक्षा केन्द्र बन गए हैं। भिक्षुक यहाँ पर भक्तों को उपदेश देते हैं। शिक्षा के अलावा यहाँ लोगो का शारीरिक रोग का उपचार भी किया जाता था। साधारण स्त्री–पुरुष, किसान, व्यापारी, सैनिक और कलाकार आदि की जानकारी हमें शिलालेखों से प्राप्त होती है। लोग खुले मन से विहार के खर्च एवं निर्माण के लिए दान देते थे।

बौद्ध के पवित्र शिक्षा केन्द्रों ने अन्य देशों के यात्रियों को आकर्षित किया। चीनी यात्री फाह्यान, इटसिंग और ह्यूनसांग ने बुद्ध के जीवन से जुड़े स्थानों की यात्रा की और सुन्दर मठ भी देखे।

'यात्री' वे होते हैं, जो उपासना के लिए पवित्र स्थलों पर जाते हैं।

ह्यूनसांग ने नालंदा (विहार) में रहकर पढ़ाई में समय व्यतीत किया, जो उस समय का प्रसिद्ध मठ था। इसे उन्होने इस प्रकार बताया है..............

शिक्षक उच्च योग्यता एवं दक्ष व्यक्ति है। वे ईमानदारी से बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करते हैं। मठ के नियम कड़े है। सभी को उसका पालन करना पड़ता है, बुजुर्ग और युवा वर्ग में सामन्जस्य होता है। अन्य शहरों से शिक्षित लोग आकर अपनी शंकाएँ दूर करते हैं। चौकीदार नए व्यक्ति से कई जटिल प्रश्न पूछता है। उन प्रश्नों के उत्तर देने के बाद ही उन्हें अन्दर जाने दिया जाता है। दस में से सात या आठ उत्तर ही नही दे पाते हैं।

चट्टानों के चैत्या और प्राचीन मंदिर

शातवाहन के समय के कई व्यापारियों, कलाकरों तथा राजाओं ने खुले दिल से महाराष्ट्र के करले, भाजा, कनहेरी और नासिक में विहार और चैत्या बनाने के लिए दान दिया। ये पर्वतीय क्षेत्र में गुफा के समान बनाए गए। जिस प्रकार बढ़ई लकड़ी को काटकर आकार देता है, उसी प्रकार शिल्पी छैनी और हथौड़े से चट्टानों को काटकर आकार देते थे। इन चट्टानों में उन्होने विशाल प्रार्थना गृह, स्तूप और भिक्षुकों के लिए छोटे कमरों को बनाया। उन्होंने सुन्दर मनुष्यों, जानवरों की सुन्दर प्रतिमाएँ भी बनाई, यहाँ तक कि बुद्ध की भी। 2100 वर्ष पहले बनाई गई करले के चित्र को देखिए।

- शिल्पकला में पुरुष और स्त्री के जो चित्र बताए गये हैं, क्या उनमें सामाजिक समानता थी? कारण बताइए?
- आपको क्या लगता है कि चैत्या का कौनसा भाग पहले नक्काशी किया गया और कौनसा बाद में।

SCERT TELANGANA

चित्र 20.19 करले चैत्य का बाहरी द्वार

उस समय के बढ़ई और मिस्त्री भी मंदिर और चैत्य मिट्टी, लकड़ी और पत्थर से बनाते थे। कुछ लोग मन्दिर में कृष्ण की प्रतिमा तो कुछ बुद्ध की प्रतिमा बनाते थे। परन्तु ये अभी नहीं है। मध्य प्रदेश के साँची में हमें पत्थर से बना एक मंदिर मिला है। ये एक छोटा सा शिल्पकला नमूने का कमरा है, (उसे गर्भगृह) जिसमें बुद्ध की प्रतिमा रखी गई है, एक छोटा खुला मंडप बना हुआ है, जिसके दीवारें नहीं हैं, परन्तु स्तंभ है। द्वार और स्तंभों पर सुन्दर नक्काशी की गई है। मन्दिर की एक समतल छत है, जिस पर कोई शिखर नहीं है। यह लगभग 1600 वर्ष पहले बनाया गया है।

चित्र 20.21 चैत्य का आतंरिक क्षेत्र

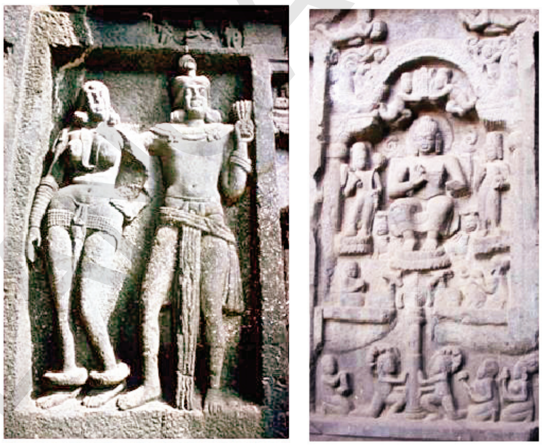

चित्र 20.21 और 20.22 करले के शिल्प कला के नमूने

चित्र 20.23 सांची का प्राचीन बौद्ध मंदिर

मुख्य शब्द

चैत्य
विहार
अवशेष
स्तूप
भवन

शिक्षा में सुधार

1. अशोक ने अपने स्तम्भों की नक्काशी के लिए गाय और तोते के बजाय सिंह और बैल को क्यो चुना? उसकी जगह पर आप किसका चुनाव करते? अपने चुनाव के कारण बताइए। (AS_1)
2. आन्ध्र प्रदेश में कई स्तूप नदी के किनारे हैं। (जैसे सालीहुण्डम, नागार्जुनकोंडा, अमरावती आदि) भिक्षु ने स्तूप बनाने के लिए इन्हीं स्थानों को क्यो चुना होगा, आपका क्या विचार है। (AS_1)
3. हाथी को शांत करने वाला चित्र देखिए। इस घटना को लोग ऊँचाई से देख रहे हैं। आपके विचार में ये लोग कौन होंगे? (AS_1)
4. क्यों केवल चट्टानों को काट कर बनाए गए चैत्य और विहार ही आज जीवित है। (AS_1)
5. चैत्य और मंदिर की विशेषताओं की तुलना कीजिए। क्या आप सोचते है कि चैत्य और मंदिर की उपासना पद्धति में अन्तर है? क्यों? (AS_1)
6. बौद्ध स्तूप एवं चैत्य क्यों पवित्र हैं? (AS_6)
7. बौद्ध भिक्षु किस प्रकार विहार और चैत्य का उपयोग करते थे? (AS_1)
8. तेलंगाना के मानचित्र में बौद्ध, जैन प्रांतों को दर्शाएँ? (AS_5)
9. पृष्ठ संख्य 177 में 'विहार बुद्ध भिक्षुओं ..... जहाँ भिक्षुक प्रार्थना करते थे'। अनुच्छेद पढ़कर व्याख्या कीजिए। (AS_2)

परियोजना–

आप अपने गाँव या शहर के पूजा स्थल पर जाइए। उसका एक चित्र बनाइए। शिल्पकला के नमूने के सभी भाग के नाम पता करने की कोशिश कीजिए तथा उनका उपयोग और अर्थ क्या है, पता कीजिए। एक रिपोर्ट तैयार कर-कर कक्षा में प्रदर्शनी रखिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 21

तेलंगाणा में हरियाली
(Greenery in Telangana)

नीचे दिये गये चित्रों का निरीक्षण व दोनों की तुलना करे।

चित्र -1

चित्र -2

- क्या आप पहले चित्र के स्थितियों के कारण के बारे में सोच सकते हैं?
- अपने क्षेत्र के संबंध में उपरोक्त परिस्थितियों की तुलना करें।
- हम अपने क्षेत्र को दूसरे चित्र की तरह बनाने के लिए क्या करेंगे?

तेलंगाणा $15^{0}46'$ और $19^{0}47'$ उत्तर अक्षांश और $77^{0}16'$ और $81^{0}43'$ पूर्वि देशांतर के बीच स्थित है। यह अर्ध-शुष्क क्षेत्र में दक्कनी पठार में स्थित है। यहाँ की जलवायु के रूप से गर्म और शुष्क है। अनियमित और कम बारिश ने झाड़ियों के साथ अपने अर्धशुष्क जंगलों को स्थान दिया।

भारत की राष्ट्रीय वन नीति 1988 के अनुसार जीविका स्थिरता और पारिस्थितिक संतुलन बनाये रखने के लिए वृक्ष विस्तार के तहत कुल भौगोलिक क्षेत्र में 33% होना चाहिए। सभी जीवन रूपों, मनुष्य और पशुओं के संरक्षण के लिए यह बहुत जरूरी है। लैकिन तेलंगाणा में वन क्षेत्र, पेडों की कटाई के कारण लगभग 24% है। जिसके परिणाम स्वरूप कम बारिश और लगातार जल की समस्याएँ बनी है। वनों की कटाई जंगलों के क्षरण, अवक्रमित जंगलों में मिट्टी का क्षरण से आहार और पानी की अलभ्यता के कारण जंगली जानवर जैसे बंदर, भालू, चीता, गाँवों में प्रवेश कर रहे हैं और परिवारों को परेशान कर रहे हैं।

तेलंगाणा सरकार ने कुल भौगोलिक क्षेत्र की अनुमानित 33% हिस्से को वन विस्तार करने के लिए वृक्षारोपण कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसे दो तरीके में नियोजित किया है।

i) अधिसूचित वनक्षेत्र में कार्य पहल।

ii) अधिसूचित क्षेत्रों के बाहर के क्षेत्रों में कार्य पहल।

SCERT TELANGANA

सड़क के किनारे, नदी और नहरों के किनारे, निर्जीव पहाडों, तालाब के किनारे और स्कूल, कॉलेज, धार्मिक स्थानों आवास कॉलनियों, समुदाय भूमि, नगर पालिका, औद्योगिक पार्क तथा खेती के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण की गतिविधियों को अपनाया जा रहे है।

चित्र 3 पौधारोपण करते बच्चे

- आपके विद्यालय में वन महोत्सव कार्यक्रम कैसे मनाया गया।
- आपके विद्यालय में लगाये गये विभिन्न पौधों की सूची बनाएँ।

राज्य में 230 करोड़ पौधों को लगाने का प्रस्ताव है। राज्य में वन और अन्य सरकारी विभागों द्वारा 4000 से अधिक नर्सरी स्थापित की गई थी। नर्सरी से पौधों को उन्हें स्वतंत्र रूप से वितरित किया जाता है, जो हरियाली कार्यक्रम में भाग लेते हैं। जीवन के सभी क्षेत्रों सरकारी एजेंसियों, जिले कलेक्टर प्रमुख नागरिकों, लोगों के प्रतिनिधियाँ न्यायाधीशों, पुलिस कर्मियों, प्रसिद्ध खिलाडी, कलाकार आदि इस कार्यक्रम में भाग लेकर सफल बनाते हैं।

औषधीय पौधे जैसे नीम, तुलसी आदि। फल और अखरोट वाले पौधे जैसे चमेली, गेंदा, गुलाब, गुलमोहर और कई अन्य पौधे जैसे बलूद, पीपल बरगद, जामून आदि। ऊपर वर्णित क्षेत्रों में लगाये जा रहे हैं।

यदि हम अधिक पौधों और पेडों को विकसित करते है तो वह तापमान की स्थिरता तथा वर्षा होने में उपयोगी होगा। सतह और भूजल स्तर में वृद्धि होगी। तालाब और कुएँ पानी से भरा होगा और कृषि के लिए बेहतर सिंचाई प्रदान की जाएगी। भेड, बकरिया और गायों को प्रचुर मात्रा में चारा होगा। घास के मैदानों चरी के लिए इन जानवरों के लिए हरा घास का मैदान उपलब्ध होगा। उद्योगों, वाहनों और जीवाश्म ईंधन जल से उत्सर्जव के कारण प्रदूषण कम हो जाएगा। जंगलों सी लकडी का ईंधन, शहद, फल और अखरोट उपलब्ध होंगे। पक्षियों और जंगली जानवरों के लिए आश्रय मिलेगा और वे बस्तियों में प्रवेश नहीं करेंगे।

- आप यह कैसे कह सकते हैं कि वन आच्छादन में बढ़ोतरी अधिक वर्षा में मदद करेगी?
- अपने गाँव/शहर या अपने क्षेत्र में स्थितियों की कल्पना करे यदि वह पेड़ों और हरियाली ने पूरी तरह हुआ हो।

पौधारोपण हम में से बहुत लोगों का जूनुन हैं, लेकिन समस्या पौधों की सुरक्षा के संबंध में है। आमतौर पर अधिक पौधे लगाये जाते है। लेकिन उनमें से बहुत से पौधे हमारी लापरवाही की वहज से नहीं पनपते है।

SCERT TELANGANA

चत्र 4 ट्री गार्ड्स

भारत का वन आदमी

जाधव मोलाई पेएंग ज़ोरहाट जिले में एक जंगल मजदूर था। उन्होंने 1979 में 16 वर्ष की आयु में 'सामाजिक वन महोत्सव' कार्यक्रम में भाग लिया जो पाँच साल तक चला। परियोजना पूरा होने के बाद सभी मजदूरो ने वन छोड दिया। लेकिन उन्होंने अपने दम पर अधिक पेड़ लगाए उन्होंने 20 वर्ष की अवधि में लगभग 1360 एकड क्षेत्र के ब्रह्मपुत्र नदी के रेतबार पर वृक्ष लगाए और उनकी परवरिश की। उनके काम से पूरी जगह एक जंगल में बदल गई जो उसके नाम से 'मोलईवन' कहलाया। उसे ''भारत का वन आदमी'' कहा जाता है और उन्हें देश का चौथा उच्चतम नागरिक सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया।

राज्य सरकार ने इन पौधों को जियो टैगिंग (geo tagging) करने की शुरुआत की है ताकि सभी पौधों का संरक्षण किया जा रहा है या नही पता चले। स्कूलों कार्यालयों और अन्य जगहों पर आवश्यकता वहाँ ट्री गार्ड्स की आपूर्ति की जा रही है। इन पौधों का संरक्षण करना हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी है।स्कूल में शिक्षकों और छात्रों में सामुदायिक भागीदारी के साथ पौधे लगाते हैं। छात्रों और शिक्षकों को कुछ पौधों को अपनाना है, या तो वर्गवार या समूहवार और वे इन पौधों की देखबाल कर रहे हैं। अपने अवकाश के समय, विद्यालय समय से पहले या बाद में पौधों को पानी देते हैं और संरक्षण के लिए वृक्षारोपण की बाड़ लगाते हैं। विद्यालयों द्वारा इस प्रकार के हरियाली कार्यक्रम को पुरस्कृत कर राज्य सरकार द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है।

कुछ विद्यालयों में शिक्षक विद्यार्थियों को उनके संबंधित बस्तियों में पौधे लगाने के लिए दे रहे हैं, इस तरह अप्रत्यक्ष रूप से माता-पिता, समुदाय भी इस कार्यक्रम में शामिल है। 230 करोड पौधे लगाये जाने के बड़े पैमाने पर कार्यक्रम तभी हासिल होगा यदि समुदाय के सभी लोग रुचि और इच्छा से शामिल हो। कुछ अन्य स्कूलों में ''प्रत्येक एक-पौधा एक'' कार्यक्रम शुरु किया गया है।

- वृक्षारोपण आपके इलाके में कैसे किया जाता है? कक्षा में चर्चा कीजिए।
- अपने शहर/गाँव या क्षेत्र में उपलब्ध पेड़ो, उद्यानों के बारे में चर्चा करे।

SCERT TELANGANA

वनजीवी रामय्या

तेलंगाणा राज्य के खम्मम् ग्रामीण मंडल के रेड्डीपल्ली के स्तर वर्ष के 'दरिपल्ली रामय्या' 'वनजीवी रामय्या' के नाम से प्रसिद्ध हुए। 'पौधे लगाओ-प्राण बचाओ'। इस कथन पर नारे, भाषण देने व उस से होने वाले लाभ बताने के साथ वह उन पर अमल किया। स्थानीय लोग अपनी साइकिल पर पौधे तथा बीजों से भरे जेब के साथ मीलों दूर तक जाने वाले व्यक्ति के रूप में उन्हें जानते हैं। वे सही मायने में पौधारोपण का महत्व तथा पर्यावरण को बचाने में पौधारोपण की आवश्यकता को जानते हुए अपने मार्ग में कही थी बंजर भूमि मिले तो वहाँ पर पौधे लगाते हुए जाते है। पौधे लगाना ही नहीं दूसरे व्यक्तियों, संस्थाओं को भी पौधे लगाने की प्रेरणा देते हुए उनका संरक्षण करे, पर्यावरण की रक्षा के लिए अनवरत प्रयास हरियाली को बढ़ाने के लिए उनके उत्कृष्टयोगदान ने उन्हें देश के प्रतिष्ठित पुरस्कार पद्मश्री जीता।

मुख्य शब्द

पारिस्थितिक संतुलन   प्रदूषण   भूजल स्तर   हरियाली

अपनी सीख में सुधार

1. तेलंगाणा में हरियाली बढ़ाना क्यों आवश्यक है? (AS_1)
2. वनों के क्या महत्व है? (AS_1)
3. पौधों की सुरक्षा हेतु कुछ सुझाव बताइए? (AS_1)
4. सड़कों के दोनों किनारों पर पेड़ हमारी कैसे मदद करते है। (AS_1)
5. समाचार पत्रों में से पौधारोपण संबंधी समाचार के कतरनों को इकट्ठक़ कर एक अलबम बनाइए। (AS_3)
6. आपके मोहल्ले में वनमहोत्सव कैसे मनाया गया? (AS_4)
7. वनीकरण संबंधित कुछ नारे बनाइए। (AS_6)

आभार प्रदर्शन

हम उन सभी को धन्यवाद देना चाहेंगे, जिन्होंने इस पाठ्य पुस्तक निर्माण में अपना योगदान देकर इस पुस्तक को अधिक गुणशाली बनाया। हम धन्यवाद करते हैं डॉ. के.एन. आनन्दन भाषाज्ञाता केरल, डॉ. पी.दक्षिणा मूर्ति, सेवानिवृत उपनिर्देशक, तेलुगु अकादमी, श्री ए.आर.के. मूर्ति, सेवा निवृत उपनिर्देशक तेलुगु अकादमी, दीपा श्रीनिवासन, कार्तिक विश्वनाथ, जिन्होंने हमारे कार्य को सफल बनाया। योजनाबद्ध कार्यकर्ता व चित्रकारों को हमारा धन्यवाद। तेलंगाना सरकार के शिल्पकला संग्रहालय विभाग को भी धन्यवाद। पुस्तक में प्रयुक्त कुछ चित्रों को इन्टरनेट स्त्रोत द्वारा प्राप्त किया गया है। ये सभी चित्र 28 फरवरी, 2012 से पहले लिये गये हैं।

SCERT TELANGANA

शैक्षिक मापदण्ड (AS)

कक्षा वर्ग विधान : इस बात को समय दीजिए कि छात्र दिए गए पाठ को ठीक से समझ सकें। पाठ के बीच में कई महत्वपूर्ण प्रश्न दिए गए हैं। वे अलग प्रकार के हैं, जैसे शोध, कारण एवं परिणाम, न्यायपूर्ण मस्तिष्क चित्र या संदर्भ मानचित्र, निरीक्षण, जानना, सोचना, कल्पना करना उसका प्रतिबिंब आदि हैं। मुख्य धारणा को उपधारणा में चर्चा उदाहरण के साथ प्रत्येक अध्याय में दी गई है और मुख्य शब्द भी दिए गए हैं।

1) **अवधारणा को समझना** (AS1) : पूछताछ, चर्चा, प्रतिबिंब, उदाहरण आदि के द्वारा मूल विषय को समझना।

2) **पाठ को पढ़ना, समझना एवं उसकी व्याख्या** (AS2) : जगह-जगह पर किसान, श्रमिक या प्रतिमाओं के बारे में पाठ्य पुस्तक में दिया गया है, जो प्रत्येक रूप से विषय से नहीं जुड़े हैं। बच्चों को समय देकर उसके प्रमुख विचार एवं अर्थ जानने के लिए कहिए।

3) **सृजनात्मक कौशल** (AS3) : सामाजिक अध्ययन के सभी भागों को केवल पाठ्य पुस्तक में नहीं दिया जा सकता । उदाहरण के लिए शहर मे रहने वाला बच्चा अपने क्षेत्र से चुने गए प्रतिनिधि की जानकारी एकत्रित कर सकता है। गाँव का बच्चा उस क्षेत्र के सिंचाई/तालाब सुविधा आदि की जानकारी पा सकता है। यह सूचनाएँ पाठ्य पुस्तक से मेल नहीं खा सकती, उसे स्पष्ट किया जाना चाहिए। मान लीजिए उन्होंने तालाब की जानकारी प्राप्त की, तो वे उसे चित्र द्वारा लिखित रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। चित्र एवं प्रतिमाओं से भी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। सूचना कौशल के अन्तर्गत प्राप्त जानकारी का तालिका रूप/रिकार्ड या अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है।

4) **समकालीन विषयी को दर्शाना एवं प्रश्न करना** (AS4) : छात्रों को प्रेरित करें कि वे अपने जीवन स्तर की तुलना दूसरे क्षेत्रों में रहने वाले या विभिन्न समय में रहने वाले लोगों से करें। इस तुलनात्मक स्थितियों के लिए सभी का उत्तर एक नहीं होगा। उदाहरण घटने वाली घटनाओं के लिे कारण बताने और जानकारी की न्याय संगत व्याख्या करने के लिए सभी छात्रों के उत्तर अलग-अलग होंगे।

5) **मानचित्र एवं चित्र अध्ययन योग्यता** (AS5) : पाठ्य पुस्तक में अनेक प्रकार के मानचित्र एवं चित्र दिए गए हैं। मानचित्र संबंधी योग्यता, स्थानों का महत्व प्रस्तुत करना है। इसका विकास विभिन्न स्तरों पर किया जा सकता है, कक्षा वर्ग का मानचित्र ऊँचाई और दूरी को भी समझना। चित्रों की पुस्तकें, पोस्टर्स और फोटो का प्रयोग पाठ्य पुस्तक में किया गया है, ये प्रसंग के साथ जुड़े होते हैं न कि केवल देखने के लिए।

6) **प्रशंसा और संवेदनशीलत** (AS6) : हमारे देश में कई प्रकार से विविधताएँ पाई गई हैं- जैसे भाषा, संस्कृति, जाति, धर्म, लिंग आदि। सामाजिक अध्ययन हमें विविधताओं को जानकर एक दूसरे के प्रति संवेदनशील बनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

SCERT TELANGANA

परिशिष्ट

आवश्यकतानुसार इन मानचित्रों का उपयोग करें।

World Political Map

India Physical Map

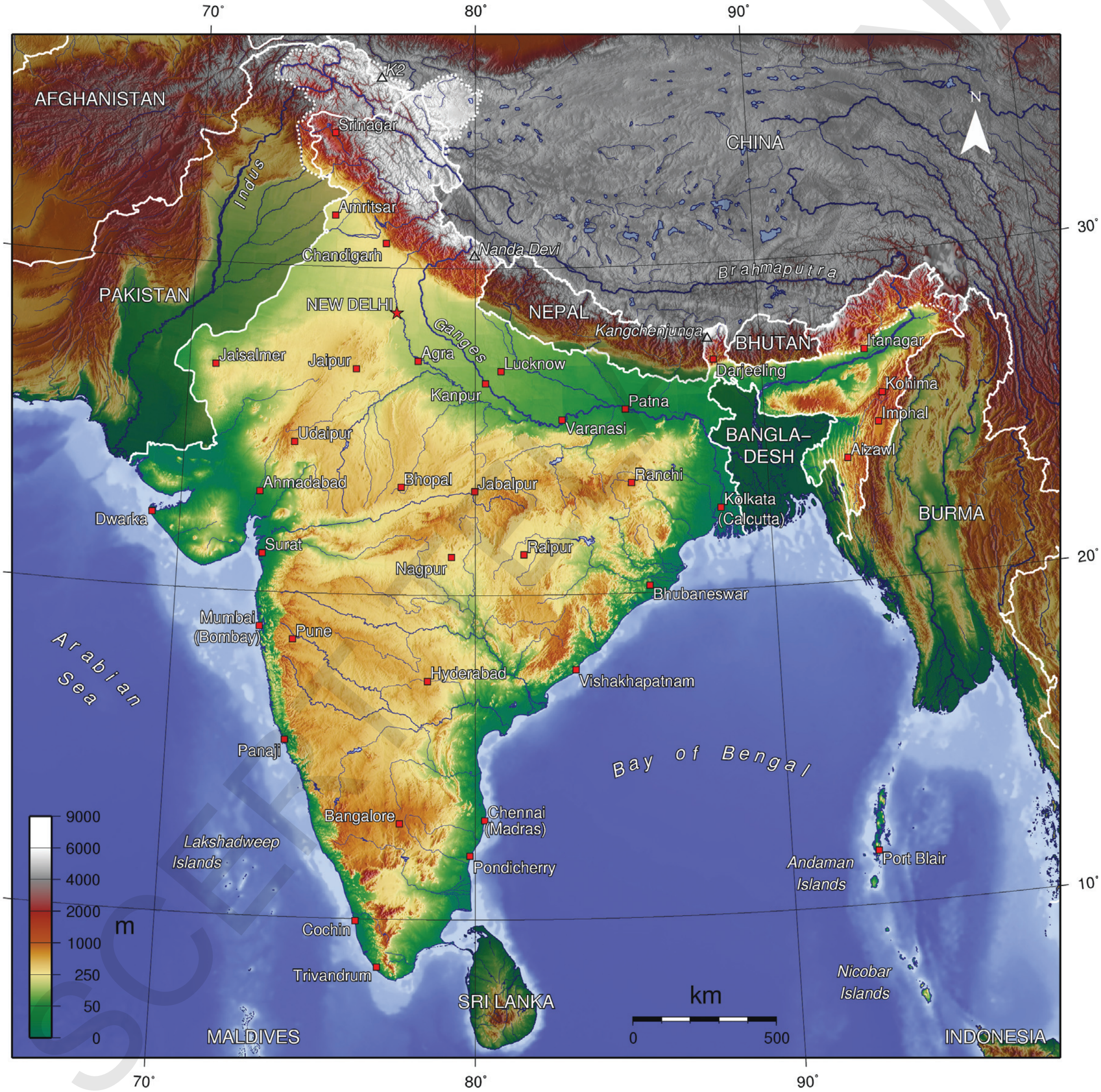

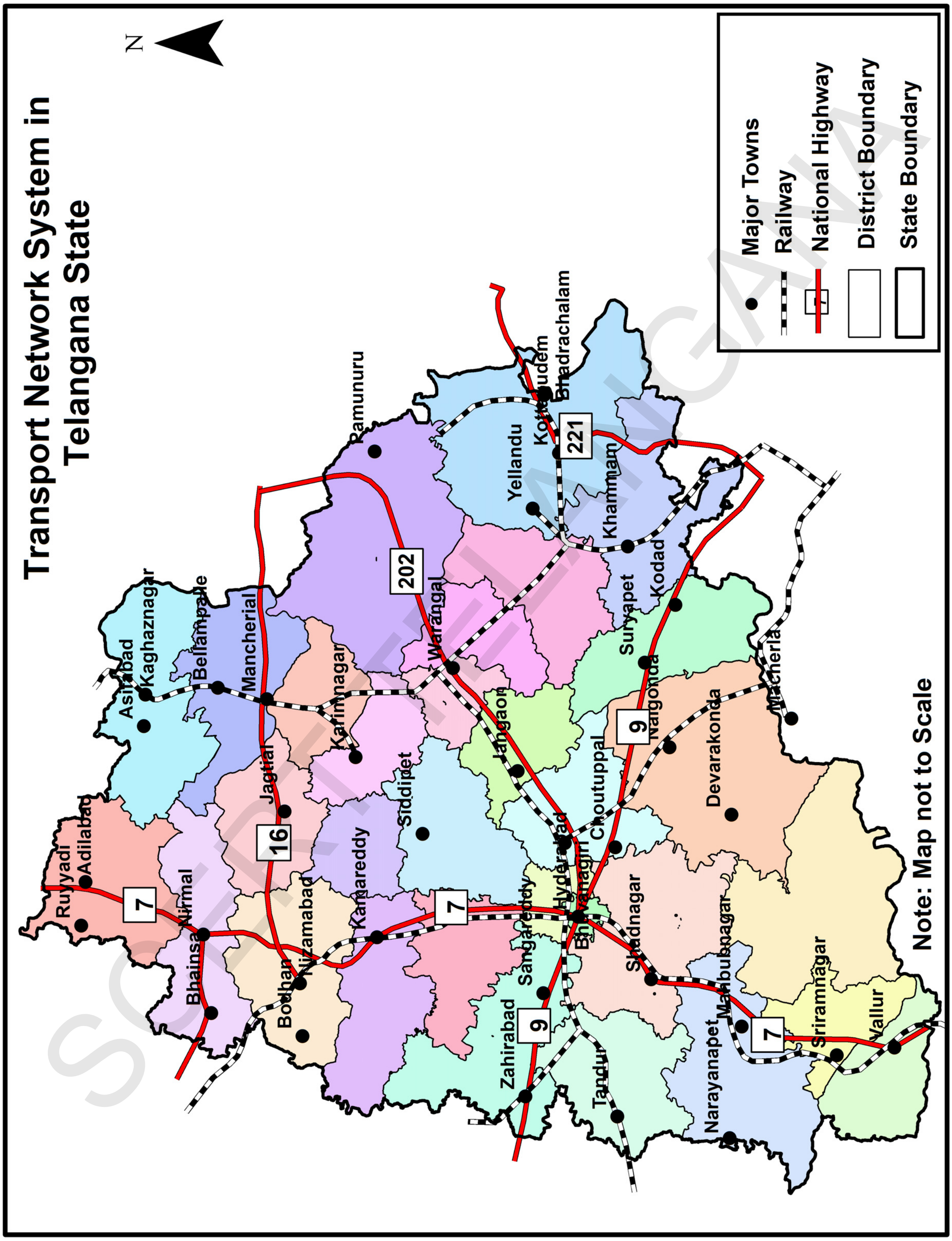

Transport Network System in Telangana State
N
Major Towns
Railway
National Highway
District Boundary
State Boundary
Note: Map not to Scale
Ruyyadi
Adilabad
Asifabad
Kaghaznagar
Bellampalle
Mancherial
Nirmal
Bhainsa
Jagtial
Karimnagar
Nizamabad
Bodhan
Kamareddy
Siddipet
Warangal
Ramununuru
Jangaon
Yellandu
Bhadrachalam
Khammam
Kodad
Suryapet
Nalgonda
Choutuppal
Hyderabad
Sangareddy
Zahirabad
Tandur
Shadnagar
Mahbubnagar
Narayanapet
Devarakonda
Macherla
Sriramnagar
Vallur
7
16
202
221
9

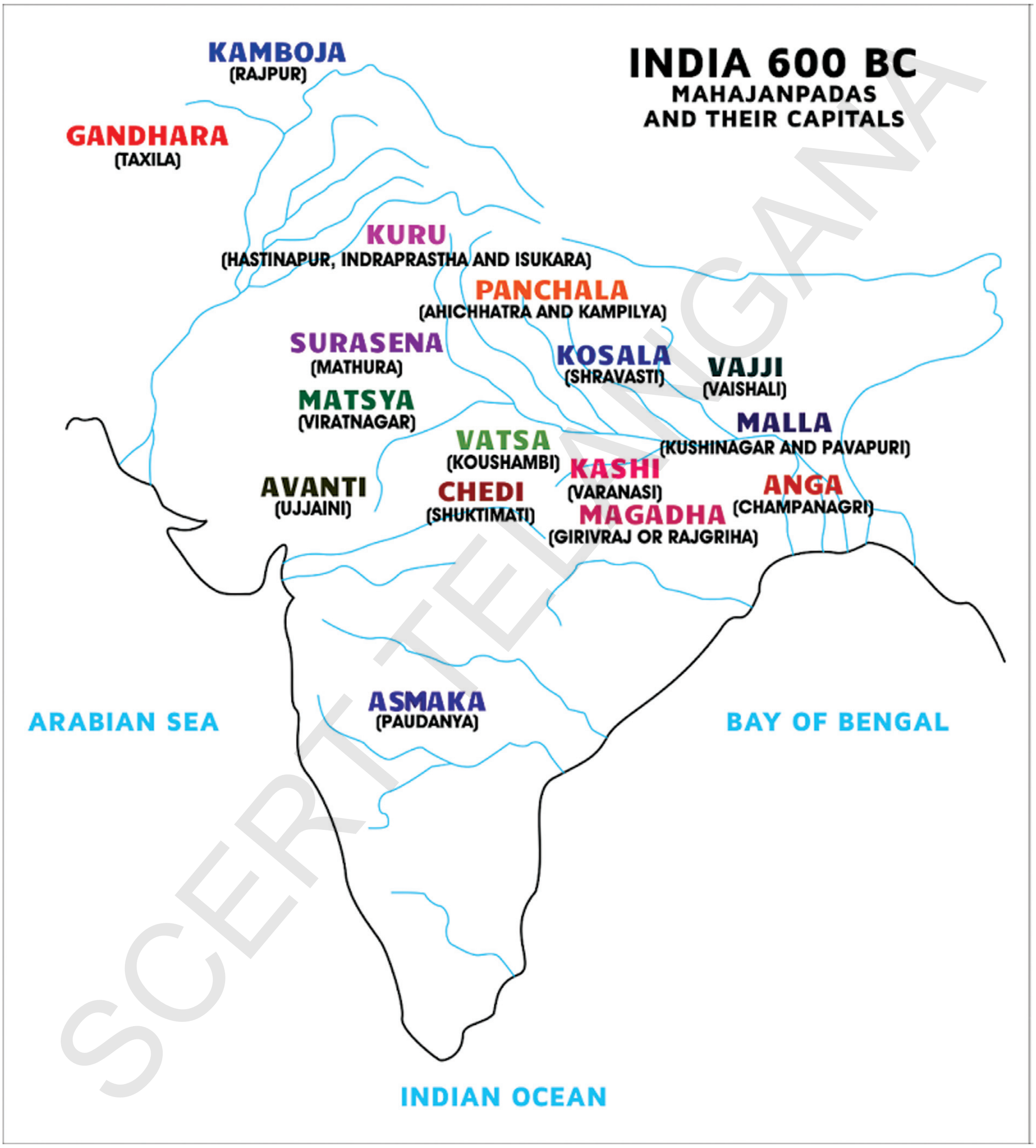

SCERT TELANGANA

Telangana Political Map

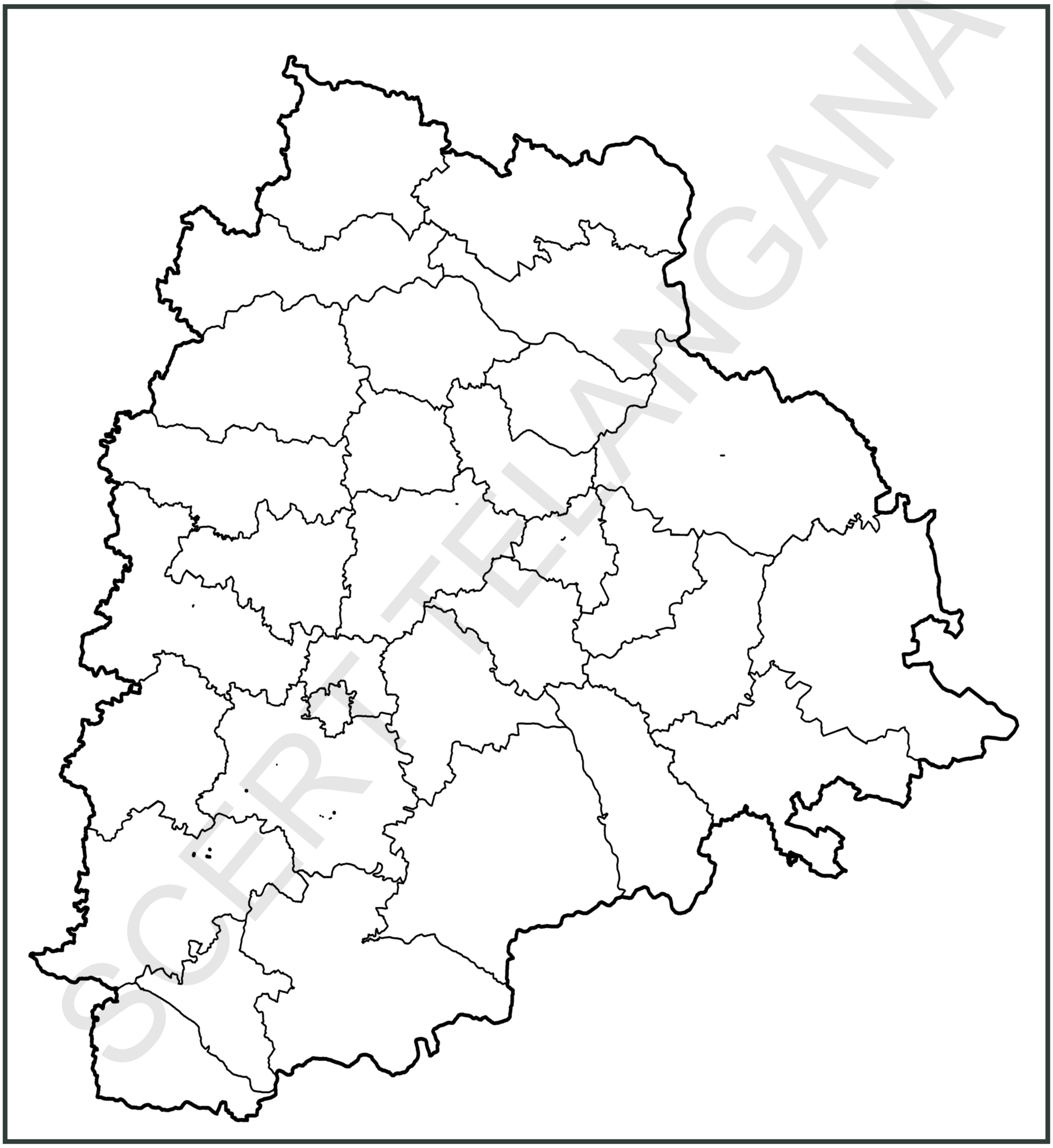

SCERT TELANGANA

India Political Map

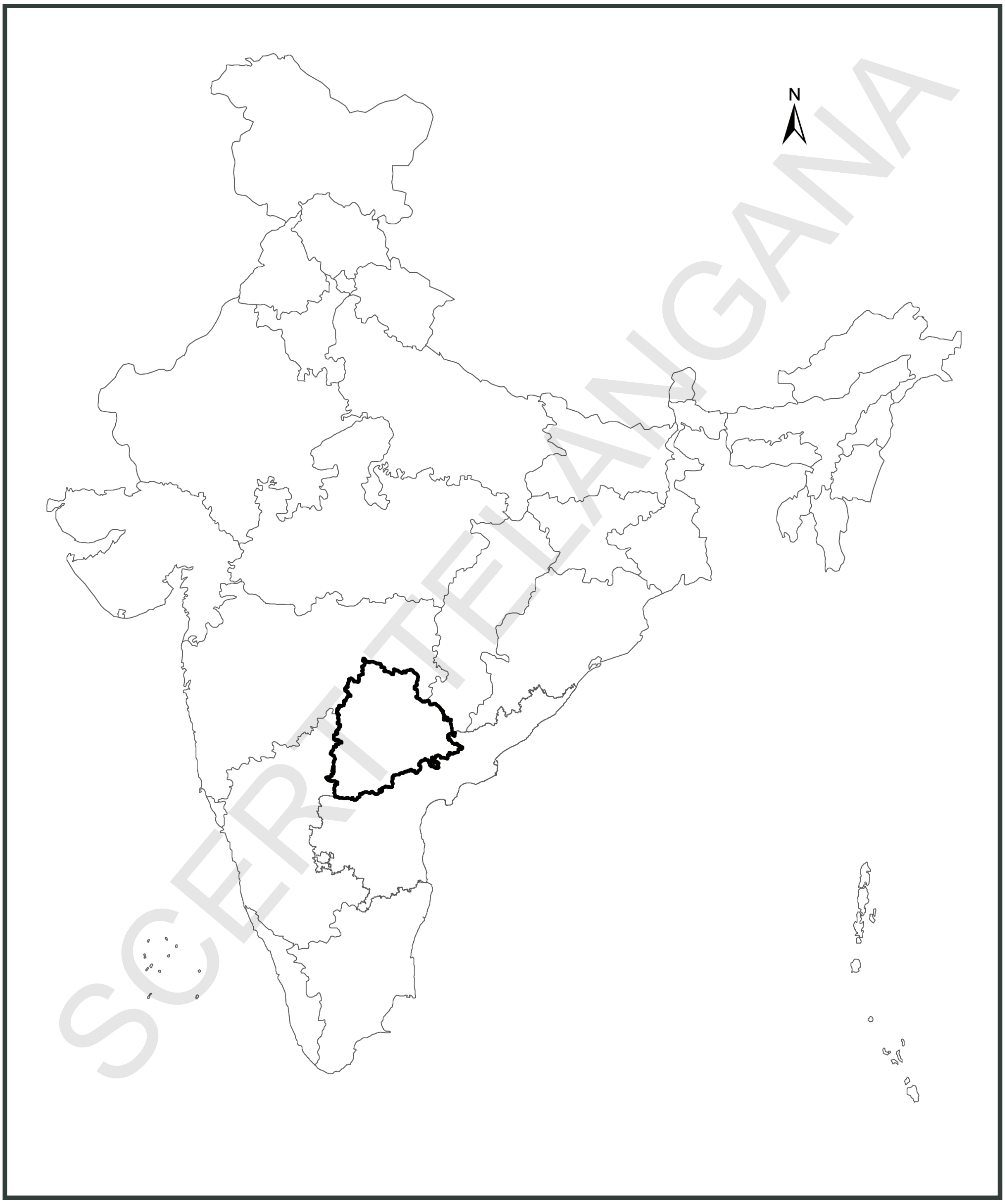

SCERT TELANGANA

Telangana State Symbols

Sl. No.	State Symbol	Common Name	Telugu Name
1.	State Animal	Spotted Deer	Jinka
2.	State Bird	Indian Roller	Pala Pitta
3.	State Tree	Jammi Chettu	Jammi
4.	State Flower	Tangedu	Tangedu

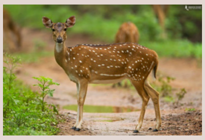
State Animal

State Bird

State Tree

State Flower

State Logo

National Symbols of India

National Flag : Designed by Sri Pingali Venkaiah

National Symbol : Lion Capital - Adopted from the Emperor Asoka's dharma stupa established at Saranath.

National Tree : Banyan tree

National Flower : Lotus

National Language : Hindi

National Fruit : Mango

National River : Ganges

National Animal : Royal Bengal Tiger

Jana gana mana...

National Anthem : Written by Sri Ravindranath Tagore.

National Bird : Peacock

National Song : Vande Mataram Written by Sri Bamkim Chandra Chaterji

National Aquatic Animal : Dolphin

National Calendar : Based on Shaka Samvatsara (Chaitra masam to Phalguna masam). We follow the Gregorian Calendar officially.

Indian National Calendar (Saka calendar)

S. No.	Month	Length	Start date (Gregorian calendar)	Ritu	Season
1	Chaitra	30/31	March 22	Vasanta	Spring
2	Vaishākh	31	April 21		
3	Jyaishtha	31	May 22	Grishma	Summer
4	Āshādha	31	June 22		
5	Shrāvana	31	July 23	Varsha	Monsoon
6	Bhādrapad	31	August 23		
7	Āshwin	30	September 23	Sharat	Autumn
8	Kārtik	30	October 23		
9	Agrahayana	30	November 22	Hemant	Winter
10	Paush	30	December 22		
11	Māgh	30	January 21	Sishira	Cold & dewy season
12	Phālgun	30	February 20		

National Heritage Animal : Elephant

Indian Standard Time (IST) : Based on 82 1/2 degrees East Longitude. Our local time is 5hrs.30min. ahead of Greenwich mean time(GMT).

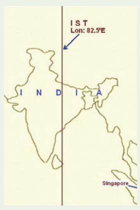

SCERT TELANGANA